अनंत यात्रा

भाग-3

अनंत यात्रा

अनंत यात्रा

पूज्य श्री बाबूजी

एवं

बहिन कस्तूरी

के

मध्य पत्र व्यवहार

1948 से 1960 तक

भाग–3

3 नवम्बर 1953 से 19 जुलाई 1955

प्रथम संस्करण : सितम्बर 1996
500 प्रतियाँ

© : सर्वाधिकार सुरक्षित

मूल्य : 55/- रुपये

प्रकाशक : श्री जी.डी. चतुर्वेदी
सी. 830-A, पारिजात
एच-रोड, महानगर
लखनऊ

मुद्रक : शिवम् आर्ट्स
211, पाँचवीं गली
निशातगंज, लखनऊ

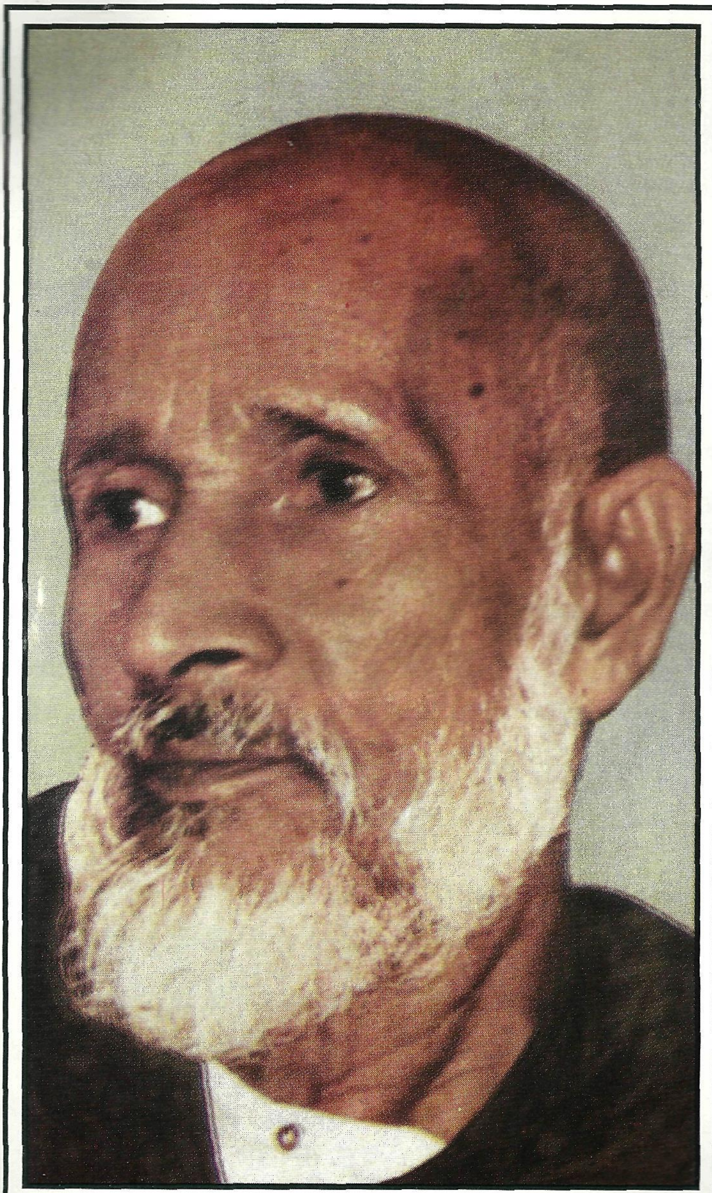

श्री राम चन्द्र जी महराज

शाहजहाँपुर (उत्तर प्रदेश)

दो शब्द

प्रिय अभ्यासी–वृन्द,

आज 'अनन्त–यात्रा' का तृतीय भाग आपके हाथों में देते हुए अति हर्ष हो रहा है। 'अनन्त' तक पहुंचने की यात्रा भी अनन्त है। पृथ्वी पर मानव मात्र के लिए सहज–पथ उतारने वाले श्री बाबू जी महाराज अनन्त–शक्ति अर्थात् अल्टीमेट–पावर पर स्वामित्व लेकर धरा पर अवतरित हुए हैं और आज भी वातावरण में व्याप्त हुआ उनका दिव्य प्रकाश जाने–अनजाने में भी प्राणिमात्र के हृदय को पुनः पुनः इसमें डुबोये रखने में प्रयत्नशील है। श्री बाबू जी महाराज के कथन ने इस परम–सत्य को भी प्रत्यक्ष कर दिया है कि 'यदि हम एक बुझे हुये कोयले का दूसरे जलते हुए कोयले से बार–बार योग देते रहने का प्रयत्न करते रहें तो एक दिन ऐसा अवश्य आयेगा कि जब बुझा हुआ कोयला भी प्रकाशित हो उठेगा। सहज–मार्ग साधना ने उनके इस कथन की यथार्थता को स्पष्ट करके अभ्यासी–हृदयों के लिए सार्थक भी बना दिया है। ध्यान में जब हमारा यह सतत् प्रयास रहने लगता है कि ईश्वरीय–प्रकाश हमारे अन्दर मौजूद है और हम बार– बार अपने हृदय को उसमें डुबोये रखने का प्रयास करते हैं तो हृदय ही क्या कुल ज़र्रा–ज़र्रा मानों ईश्वरीय–प्रकाश से प्रकाशित हो उठता है और गति में अनन्त–शक्ति का आभास सहज ही मिलने लगता है।

पुस्तक 'अनन्त–यात्रा' मेरे श्री बाबू जी की कृपा एवं अभ्यासी के प्रति उनके बाल्यवत्–प्रेम का दैविक नमूना है। दैविक–सौंदर्य द्वारा मुझे संजोते हुए 'अंतिम–सत्य' की ड्योढ़ी में प्रवेश दे कर मानों समस्त के लिए उन्होंने 'अनन्त–देश' (भूमा) का द्वार खोल दिया है। अब इसमें प्रवेश कर आप सभी जीवन के परम – लक्ष्य को पायें यही मंगल–कामना है।

कस्तूरी चतुर्वेदी

(कस्तूरी चतुर्वेदी)

कु० कस्तूरी चतुर्वेदी

पत्र-संख्या-351

मेरे परम पूज्य तथा श्रद्धेय श्री बाबूजी, कानपुर

सादर प्रणाम स्वीकृत हो। 3.11.53

आशा है मेरा पत्र पहुंचा होगा। न जाने क्यों, करीब 5-6 दिन हुए, अचानक तोपों की गड़गड़ाहट सुनाई पड़ने लगी। आग और हाय हाय तो जो हो रही है, 'मालिक' की कृपा से सामने था ही। केसर से मालूम हुआ कि 'आपका' इलाज एक यूनानी वैद्यकर रहे हैं, कृपया लिखियेगा कि लाभ है या नहीं। 'मालिक' की कृपा से जो कुछ भी आत्मिक दशा है, सो लिख रही हूँ ।

भाई, अब तो यह दशा है और दशा क्या है, दशा तो बहुत भारी चीज़ है, अब तो वह ऐसी है कि उसे केवल अनुभूति (एहसास) मात्र कह सकते हैं, क्यों कि जब हालत को एहसास करने की कोशिश करती हूं या एहसास करती हूं तो इतना हल्का डूबना पड़ता है, जितना डूबती हूं, वह कम ही मालूम पड़ता है।वैसे स्वयं चाहे डूबी रहूं। यदि हालत एहसास करने की natural condition में रहती हूं तो भी इस condition में बिना डूबे या गहरे पैठे बिना शुद्ध, साफ़ बिलकुल clear (साफ़) हालत नहीं एहसास में आती और एहसास करूँभी क्या इन सब हालतों के पीछे एक न जाने कैसा श्रोत बह रहा है, उसी में डूबती, उतराती हूं। उस श्रोत में , या अब कुछ ऐसी दशा है कि आनन्द का मूल्य न जाने क्यों जाता रहा। अब तो कुछ ऐसी भीनी सी अनुभूति है, जिसमें आनन्द के लिये ठौर ही नहीं रह गई है। परन्तु भीतर कुछ ऐसा रहता है कि कभी-कभी ऐसा लगता है कि यदि कुछ छलक पड़े तो हृदय की बर्दाश्त के बाहर हो जावे और वह फट जावे, किन्तु 'मालिक' की कृपा की बन्दिश ऐसा होने ही नहीं देती। न जाने क्यों कल से तबियत उदास बेहद है। अकसर रुलाई आने लगती है। दशा बिल्कुल शून्य और सूनी सी लगती है, उजाड़ और बेरौनक।

कृपा -पत्र लिफ़ाफ़ा 'आपका' अभी मिला - पढ़कर अत्यन्त प्रसन्नता एवं सन्तोष हुआ। आपका आर्शीवाद और कृपा ही मेरा जीवन है और जीवन 'आपके' ही लिये है। 'मालिक' की कृपा से सब ठीक हो रहा है, बिलकुल भी चिन्ता 'आप' न करें। बृक्ष और जीव के विषय में जैसा 'आपने' समझाया है, वैसा सम्भव है कहीं कभी न समझाया गया हो। ज्ञानयोग में स्वामी विवेकानन्द जी ने भी बहुत अच्छा समझाया है, परन्तु क्षमा करियेगा, सम्भव है, ऐसा वे भी न समझा सके हों। भाई, कोई यह कह ले तो कह ले कि 'आपका' समझाया हुआ मेरी समझ में आता ही अधिक है। श्री बाबूजी, स्वर्ण युग-बीत रहा है, परन्तु हमारी नींद नहीं टूटती। लखीमपुर में भी सत्संग में शौक नहीं के बराबर है, शुक्ला जी को समय जैसा 'आपने'लिखा है, सचमुच कम है। मैं ही अब न जाने क्यों चाहते

हुए भी शीघ्रता नहीं करपाती । 'आप' कुकरा जा रहें हैं, उन सब का बड़ा सौभाग्य है। 'आप' मेरी हारी बीमारी की परवाह न करें, मुझे तो 'मालिक' में मर मिटना है, यही ध्येय है। मेरे लिये तो जीवन–मृत्यु बराबर हैं, क्यों कि जिन्दगी ही जिन्दगी है। परन्तु मैं तो सेविका हूं और सदैव 'मालिक' की ऋणी हूं।

सदैव केवल आपकी ही स्नेहसिक्ता
सेविका–कस्तूरी

पत्र–संख्या – 352

मेरे परम पूज्य तथा श्रद्धेय श्री बाबूजी, कानपुर
सादर प्रणाम स्वीकृत हो। 10–11–53

लिफ़ाफ़ा 'आपका' मिल गया – पढ़कर अत्यन्त प्रसन्नता हुई। 'आपकी' तबियत अब यूनानी वैद्य के इलाज से कैसी है। (मेरे कल 30 इंजेक्शन लगेंगे। अक्सर मेरी तबियत बहुत ऊब जाती है। शायद लेटे रहने की वजह से, यद्यपि मैं थोड़ा बहुत तो चलती ही हूं) 'आप' कुकरा गये थे या नहीं। 'आप' कुकरा गये होंगे तो शायद लखीमपुर भी गये होंगे। मैं यही सोचकर और केवल इसी खुशी में सारी बीमारी खुशी –खुशी झेले जा रही हूं कि जब मैं यहाँ से लखीमपुर जाऊंगी तो अपने 'श्री बाबूजी' के पास शाहजहाँपुर जाऊंगी । वैसे तो भाई, आजकल के जमाने और स्थिति में सच में मैं अपने परिवार में श्राप रूप आई हूं, परन्तु ईश्वर की यह कृपा ज़रूर है, कि वह किसी न किसी ज़रिये काम तो बनाता ही है। मैं ने यह बेकार ही लिख दिया है,'आप' बिल्कुल ध्यान न दीजियेगा। अब 'मालिक' की कृपा से जो कुछ भी मेरी आत्मिक दशा है, सो लिख रही हूं।

अब तो कुछ यह दशा है कि जैसे पहले मैं ने लिखा था कि ब्रह्म में सुहानेपन की बू है, परन्तु अब देखती हूं कि उस दशा में ज्यों घुस रही हूं, वह बू समाप्त होती जा रही है। अब कुछ ऐसी दशा लगती है कि 'मालिक' ने प्रकृति में मुझे ऐसा घोल दिया है कि बिल्कुल उसी condition में, और कुछ यह भी है कि प्रकृति का हर movement मानो मेरी ही निगाह से होता है, किन्तु 'मालिक' ने उस ओर से मानो मेरी आँखे मूंद दी हों, मुझे कुछ मतलब नहीं, परन्तु मैं तो इसके अतिरिक्त बहुत दूर अपने 'मालिक' के पास पहुँच चुकी हूं। सम्भव है इस दशा को clear साफ़ –साफ़ न लिख पाई हूं। अब तो ऐसा लगता है कि हल्कापन भी यदि मैं कहूं कि समाप्त हो चुका है, तो बिल्कुल ठीक है। अब तो दशा भी कुदरती ही होती है। मेरे 'श्री बाबूजी' कुछ ऐसी दशा है मानो जीव को अपने वतन की खुशबू मिलने लगी है और ऐसा लगता है कि जिस कारण से जीव 'जीव' हुआ वह चीज़ 'मालिक' की कृपा से अदृश्य होती जाती है और वह अपना स्वरूप पाने लगा है। अब तो कुछ यह हाल है कि पहले जैसे मैंने लिखा था कि खुद को अपनी महक मिलने लगी है और

अब तो उस महक में महव होने लगी हूं। कुछ ऐसा लगता है कि हर तार उसी Condition से तारी हो चुका है और अपनी तो कहने मात्र को है। हर तार-तार 'मालिक' के heart में लय सा हो चुका है। मेरे 'मालिक' यही थोड़ा सा हाल मेरा है। ज्ञानयोग में अधिकतर बातें जो 'आपकी' ही बातों से एक-एक शब्द मिलता है। धर्म वगैरह के बारे में बातें बिल्कुल मिलती हैं। अक्सर मुझे इस बात का ध्यान आ जाता है कि हमारे सत्संगी भाई, बहिनों को कभी इतनी फ़ुर्सत मिलेगी कि वे ज़रा आंखें खोल कर अपने सर्वस्व को देखने की कोशिश करेंगे। मुझे तो सब फुर्सत ही फुर्सत में दीखते हैं। हाँ Time की कीमत हम नहीं समझते। फूलो जिज्जी तथा केसर 'आपको' प्रणाम कहती है। इति :-

सदैव केवल आपकी ही स्नेहसिक्ता
सेविका - कस्तूरी

पत्र -संख्या-353

मेरे परम पूज्य तथा श्रद्धेय श्री बाबूजी, कानपुर
सादर प्रणाम स्वीकृत हो 21-11-53

कृपा पत्र अबकी से 'आपका' कई दिनों से नहीं आ रहा है, सो क्या बात है। कृपया अपनी तबियत का हाल शीघ्र दीजियेगा। बीमारी रुपये में चार आना भर रह गई है। 'मालिक' की कृपा से जो कुछ भी आत्मिक दशा है, सो लिख रही हूं।

भाई, अब तो ऐसा लगता है कि अंतर के कण-कण छितर कर बिखर गये हैं और एक समानान्तर condition लिये हुए और condition क्या, एक अजीब सा अनुभव -मात्र है। कुछ ऐसी दशा है कि ये कण-कण माया से रहित हैं। शुद्धता या अशुद्धता तो मैं कुछ नहीं जानती। श्री बाबूजी, न जाने क्यों अनुभव ही समाप्त हो गया है। कुछ यह हाल है कि ऐसा लगता है कि हर कण बिखरे से हैं, ऐसा मालूम पड़ता है कि हर कण में एक- अजीब निश्छल सी या शब्द से परे ऐसी कैफ़ियत मौजूद हैं। 'मालिक' की कृपा से एहसास तो मुझे अवश्य होता है, किन्तु लिखने से परे है। यह अवश्य है कि वे कण आईना समझ लीजिए।

मेरे 'श्री बाबूजी' यदि मैं यह लिखूं कि ऐसा लगता है कि प्रत्येक कण में एक अजीब दुनियाँ की झलक है। न जाने क्यों, भाई, ऐसा लगता है कि एक-एक कण को यदि जोड़ा जावे तो पूरा ब्रह्माण्ड तैयार हो जावे, या भाई , ऐसा लगता है, मेरे रोम-रोम में से एक एक दुनियाँ तैयार हो सकती है। यद्यपि दशा यह है कि किसी प्रकार की शक्ति या क्या लिखूं, इसका तो गुमान तक नहीं है। यदि यह लिखूं कि यहाँ पर Force नाम की चीज़ सो चुकी है, नहीं, नहीं, मर चुकी है तो ठीक होगा। होश भी मर चुका है। पवित्रता

यदि है तो ऐसी कि जिसकी, जैसे जान खिच चुकी हो। सब सौदा ही सौदा है। बिना चीज़ का सौदा है, सम्भव है, इसलिये 'श्री बाबूजी' खरीददार मुश्किल से मिलता है। फिर आजकल यदि खरीददार हिम्मत भी बाँधे तो वहाँ ले जाने वाला नहीं मिलता, परन्तु मुझे तो मिल गया और ऐसा मिला कि जो ले भी जा रहा है और हिम्मत भी देता है। परन्तु अभी यह कुछ नहीं, मुझे तो ऐसा लगता है कि अभी तो न जाने क्या प्रदान करने को 'मालिक' मुझे पात्र ही बना रहा है। बस 'उससे' यही प्रार्थना है कि ईश्वर कभी ऐसा दिन लाये कि पात्र बनकर तैयार हो जावे और होगा तो ऐसा ही, बस देर –सबेर की बात है। जरा सी कमजोरी है कि पत्र 'आपको' शीघ्र नहीं डाल पाती हूं। मेरी यह समझ में आ गया कि मनुष्य केवल मनुष्य नहीं, बल्कि जाने क्या –क्या होता जाता है। मुझे ऐसा लगता है कि ब्रह्म भी मानों मेरे लिये घिसता जाता है, नहीं, नहीं, बल्कि 'मालिक' ही मुझे जाने क्या काट –छाँट कर बना रहा है। ऐसा ले जा रहा है कि जहाँ अब मुझे न जीव का एहसास है और न ब्रह्म का गुमान, यही कुछ दशा है।

शुक्लाजी से न जाने क्यों बहुत आशा बंधती है। उन्हें Time मिले या न मिले उनके अन्दर कोई ऐसी चीज़ है, जिससे मिशन को अवश्य सहायता मिलेगी। जजी का क्या हुआ, उन्हें मिली या नहीं मिली। फूलो जिज्जी तथा केसर आपको प्रणाम कहतीं हैं। इतिः

सदैव केवल आपकी ही स्नेहसिक्ता
सेविका–कस्तूरी

पत्र संख्या –354

प्रिय बेटी कस्तूरी, शाहजहाँ पुर
खुश रहो। 22.11.53

पत्र तुम्हारा व केसर का मिल गया। मैं दीवाली में कुकरा रहा, लखीमपुर न जा सका। चौबेजी, मास्टर साहब और कई लोग वहीं आ गये थे। अंग्रेज़ी किताब का proof इलाहाबाद से आ रहा है, इसलिये बिल्कुल फुर्सत नहीं है। खत पहुंचने की इत्तिला दे दी। वैसे उस खत का जवाब यदि लिखाया जाय, तो बहुत लम्बा–चौड़ा हो जावेगा। तुम्हें भी इस वक्त सब काम छोड़ कर सिर्फ़ तन्दुरुस्ती बढ़ाने की फ़िक्र करनी चाहिये। चौबे जी ने भी मुझसे कहा था कि वह लखीमपुर तुम्हें साथ लेकर शाहजहाँपुर ठहरते हुए जावेंगे। बड़ा अच्छा है, तुम आ जाओ। मैं अपना इलाज एक हकीम का कर रहा हूं, और उससे कुछ फ़ायदा भी है। तुमने अपनी उन्नति, सच पूछो तो खुद ही की है। थोड़ी बहुत मदद मैं ज़रूर देता गया और देता रहूंगा। इसलिये कि अगर मुझमें काब्लियत होती तो

जितने सत्संगी है, सब तरक्की खूब कर गये होते। ईश्वर तुम्हें जल्द तन्दुरुस्त कर दे। केसर, फूलो व उनके बच्चों को दुआ।

शुभचिंतक
रामचन्द्र

पत्र -संख्या-355

मेरे परम पूज्य तथा श्रद्धेय श्री बाबूजी, कानपुर
सादर प्रणाम स्वीकृत हो। 27.11.53

कृपा -कार्ड 'आपका' मिला - समाचार मालूम हुआ। अंग्रेज़ी किताब के proof के कारण 'आपको' फ़ुर्सत नहीं मिलती, तो न सही, बस 'आपका' कार्ड भर मिलता रहे, बस मैं खुश हूं। मेरे आने का कोई निश्चित नहीं, क्योंकि Injections की कोई Limit नहीं है। फिर बिजली वग़ैरह का देखा जायेगा। 'आप' बिल्कुल चिन्ता न करें। बड़ा अच्छा हुआ कि अंग्रेज़ी किताब छपने लगी। 'आपको' हक़ीम की दवा से लाभ पढ़कर सब को बहुत प्रसन्नता हुई। ईश्वर करे 'आपको' यह दमे की तकलीफ़ कभी न होवे। मेरी तो सारी आत्मिक -उन्नति के एकमात्र कारण 'आप' ही हो। मेरी सी झींझरी, टूटी-फूटी नैया को केवल 'आप' ही ऐसे हैं, जिन्होंने कृपा कर पार लगा देना मंजूर कर लिया। केवल 'आप' ही हैं, जिन्होंने अपने क़दमों में लेकर मुझे निर्द्वन्द कर दिया। 'मालिक' की कृपा से जो कुछ भी आत्मिक-दशा है, सो लिख रही हूं।

कुछ ऐसा लगता है कि अंतर भी टूट-फूट कर बिखर गया है। कुछ ऐसा हो गया है कि बिखरे हुए ज़र्रे-ज़र्रे में 'मालिक' को ही पाती हूं। मेरे 'श्री बाबूजी' कुछ ऐसी दशा हो गई है कि ऐसा लगता है कि अब ऐसे मैदान में बढ़ती जाती हूं कि जहाँ पर वाइब्रेशन होते हुए भी हरक़त महीन पड़ते-पड़ते समाप्त हुई जाती है। अब तो कुछ ऐसा लगता है कि मेरे लिये मानों प्रकृति ही शान्त हो चुकी है। या यों कह लीजिये कि ज़र्रा-ज़र्रा, कण-कण में मानों हरक़त लगभग शान्त पड़ चुकी है। कुछ ऐसी दशा है कि ऐसा लगता है कि समस्त विश्व या प्रकृति के कण-कण में मैं व्याप्त हो चुकी हूं और इस 'मैं' - के बारे में मैं क्या लिखूं, हाँ इतना कहूंगी कि माया से रहित बेदम हो चुका है। मेरा रोआँ-रोआँ ज़र्रा-ज़र्रा ऐसा लगता है कि बिखर गया, छिन्न-भिन्न हो गया है और माया से रहित हो चुका है। सब हरक़त शान्त हो चुकी है। सेवक और स्वामित्व भाव विदा हो चुके हैं। भाई, ऐसा लगता है कि आन्तरिक दृष्टि की भी दृष्टि समाप्त हो चुकी है। अब तो ऐसा लगता है कि सारे रंग व रूप समाप्त हो चुके हैं। मैं तो कोरी की कोरी ही होती चली जाती हूं।

केसर को फ़ुर्सत नहीं मिलती, वह आपको प्रणाम कहती है और कहती है कि मैं तो कुछ कर नहीं पाती हूं, 'आप' कृपया मुझ पर कृपा बनाये रखियेगा। फूलो जिज्जी 'आपको' प्रणाम कहतीं हैं। इतिः—

सदैव केवल 'आपकी' ही स्नेहसिक्ता
सेविका—कस्तूरी

पत्र – संख्या – 356

परम पूज्य एवं श्रद्धेय श्री बाबूजी, कानपुर

सादर प्रणाम स्वीकृत हो। 5.12.53

आशा है, मेरा पत्र मिला होगा। मुझे ऐसा लगता है कि ईश्वर ने इस बीमारी के द्वारा मेरे अन्तर की सफ़ाई कर दी है। ताकि मैं 'उसे' अन्तर में और अधिक बैठा सकूं। 'मालिक' की कृपा से जो कुछ भी आत्मिक—दशा है, सो लिख रही हूं।

अब तो ऐसा लगता है कि कुछ ऐसी दशा मुझमें फ़ना हो रही है, जो न ऐसी कही जा सकती है और न वैसी। मुझे लगता है कि प्रकृति भी मेरे लिये लय हुई जा रही है, या मिटती चली जा रही है। अब ऐसी जगह है, जहाँ पर कि हर तरफ़, हर चीज़ मौन है। ऐसा लगता है कि मैदान क्या है, श्मशान – भूमि है। आशा है, आप स्वस्थ होंगे।

सदैव केवल 'आपकी' ही स्नेहसिक्ता
सेविका—कस्तूरी

पत्र—संख्या— 357

प्रिय बेटी कस्तूरी, शाहजहाँपुर

खुश रहो। 7.12.53

पत्र तुम्हारा मिला। तुमने अपने खत में मर—मिटने का अक्सर ज़िक्र किया है। मर—मिटने के यह मानी नहीं हैं कि जिस्म छोड़ने की कोशिश की जाय, जिसका तन्दुरुस्त रखना भी अपना धर्म है, बल्कि इसके मतलब यह है कि अपना आपा या शुद्ध और भद्दे अहंकार को दूर कर दे और जब आपा जाता रहे, तो इन्सान वही रह जाता है, जो वाकई है और इसी की कोशिश में तमाम महात्मा लगे रहते हैं। अब मर—मिटने के मानी तुम समझ गई होगी। इस वक्त तुम्हें तन्दुरुस्त बनने की ही कोशिश करना चाहिये। एक मर्तबा तन्दुरुस्ती बन गई तो सोचो तो सही कि यह अभ्यास और मिशन के काम में कितना काम देगी। तुम ख्याल बाँधो कि तुम्हारी सब बीमारियाँ जा रहीं हैं और तुम तन्दुरुस्त हो रही हो। इससे सेहत बहुत जल्द होगी।

शुभ चिंतक
रामचन्द्र

पत्र-संख्या -358

परम पूज्य तथा श्रद्धेय श्री बाबूजी, कानपुर

सादर प्रणाम स्वीकृत हो। 11.12.53

आशा है, मेरा पत्र मिला होगा। आजकल आध्यात्मिक-दशा तो 'मालिक' की कृपा से मध्यम सी पड़ गई है। या तो शायद यह है कि पाइंट (Point) बदलने की दशा है। किताब का Proof(प्रूफ) आता होगा। किताब कैसी छप रही है। अम्मा 'आपको' शुभाशीर्वाद कहतीं हैं।

सदैव केवल 'आपकी' ही स्नेहसिक्ता

सेविका-कस्तूरी

पत्र - संख्या - 359

प्रिय बेटी कस्तूरी, शाहजहाँपुर

खुश रहो। 14.12.53

तुम्हारा ता 5.12.53 का खत मिल गया। जिस्म का तन्दुरुस्त रखना भी हर एक का धर्म है। जब जिस्म तन्दुरुस्त होता है तो उसी लिहाज से सूक्ष्म शरीर भी तन्दुरुस्त बनता है और दिमाग़ सोच-विचार के लिये बहुत अच्छा काम करता है। पिछले खत में मैंने यह लिखा था कि मर मिटने के मानी यह है कि अपना आपा या अहंकार न रहे। इसके यह मानी नहीं कि जिस्म की परवाह छोड़ दी जाय और वह कमज़ोर होकर जल्द ख़त्म हो जाये। इसी आपा को मेटने के लिये लोग बड़ी मेहनत करते हैं और हमारे यहाँ बहुत सहज में मिट सकता है और उसकी तरकीब वही है जो तुमने की है। वैसे और और भी तरकीबें हैं, मगर वह ज़रा मुश्किल हैं। चूंकि लोगों को इसका शौक नहीं, इसलिये कौन करे और हर एक को यह चीज़ बताई भी नहीं जा सकती, जब तक कि पूरा Faith (विश्वास) न हो जाये और बतायें भी तो करता कौन है। सिखाने वाले को इसमें बहुत कुछ अहंकार रहित ज़रूर होना चाहिये, वरना तरकीब अच्छा काम नहीं देगी। मेरी फ़िक्र न करो, मेरी मौत अभी नहीं है। किताब का Proof आ रहा है।

शुभ चिंतक

रामचन्द्र

पत्र – संख्या– 360

परम पूज्य तथा श्रद्धेय श्री बाबूजी, कानपुर

सादर प्रणाम स्वीकृत हो। 14.12.53

आज कृपा – कार्ड 'आपका' ता 7.12.53 का लिखा हुआ मिला – पढ़ कर प्रसन्नता हुई। 'मालिक' की कृपा से Energy दिन – दिन बढ़ रही है। मैं 'आपके' परिश्रम को बेकार नहीं जाने दूंगी, चाहे कुछ भी हो। आपकी कृपा को Receive करना ही मेरी पूजा है। मर – मिटने का मतलब जो 'आपने' लिखा है, बहुत अच्छा है, परन्तु इसमें 'मालिक' की कृपा से मैं गलती पर नहीं थी। मेरे बाबूजी, मिशन मेरा है, मेरा रोआँ – रोआँ इसकी सेवा करेगा, क्योंकि यह मेरी Duty है और फिर 'मालिक' को पूर्णतया प्राप्त करना है, अतः तन्दुरुस्ती बनानी है, इसमें सन्देह नहीं। अभ्यास को भी बीमारी से नुकसान पहुंचता ही है, परन्तु 'आप' से मेरी प्रार्थना है कि 'आप' अधिक परिश्रम व फ़िक्र न करें, क्योंकि स्वयं आपका भी शरीर कमज़ोर है।

सदैव केवल आपकी ही स्नेहसिक्त ।

सेविका – कस्तूरी

पत्र – संख्या – 361

ओ मेरे श्री बाबू जी साहब, लखीमपुर

सादर प्रणाम स्वीकृत हो। 27.12.53

मेरा पत्र मिला होगा। मास्टर साहब जी भी पहुंच गये होंगे। आशा है 'आप' स्वस्थ होंगे। आज दिनभर तो कान 'पंडितजी' ऐसी आवाज़ सुनने को सत्याग्रह कर–कर बैठते थे। पैर पुनः पुनः दफ़्तर तक दौड़ जाने को मचल उठते थे। हाथ स्वतः ही आपस में जुड़कर मानों अपनी एकता की दुहाई दे रहे थे। परम सौम्य तथा सुमधुर चेहरे के दर्शन को आँखे लालायित थीं, पलक–पाँवड़े बिछाकर अपने 'इष्ट' के स्वागत में विलीन थीं। परन्तु अब रात हो चुकी और 'आपके' आने का समय निकल चुका, इस लिये पत्र लिख रही हूं। खैर, मुझे लगता है कि Proof और कमज़ोरी की दशा के कारण शायद 'आप' नहीं आ सके। खैर, मुझे यह विश्वास है कि 'आप' जहाँ भी हैं, मेरे हैं, और रहेंगे। और अब तो बस बसंत पास ही आ गया है, तब तो अवश्य ही 'आपके' दर्शन होंगे।

मेरे 'श्री बाबूजी' अब तो यह हाल है कि भूल की अवस्था का ही सब ओर निवास है। कुछ यह दशा हो गई कि दशा में सुहानेपन की बू भी नहीं रह गई है। न उदासी है, न कुछ। ऐसा लगता है कि दशा सूनेपन में खोती सी चली गई है ।होशी, बेहोशी जैसी दशा

आती रहती है और होशी, बेहोशी क्या कुछ तबियत कहीं गोते लगाती रहती है, परन्तु पाती कुछ नहीं। अब तो कुछ ऐसी दशा है कि हृदय में कुछ लिखा ही नहीं, तो पढ़ूं क्या। मेरे 'श्री बाबूजी' कहीं लगाव की डोरी में कमी तो, ढीलापन तो नहीं आ रहा है, यद्यपि इस मन से ऐसी रंचमात्र भी आशा नहीं है और फिर मन का तो यह स्वयं ही न जाने क्या हाल हो गया है कि देखती हूं कि मन सब जगह है, और कहीं नहीं है, इस लिये कहीं नहीं है। परन्तु सम्भव है, कहीं आह दबी रह गई और यह वही (मन) हो। कुछ ऐसी दशा है कि रूप है नहीं, और रंग भी धुल चुका है। भाई, अब तो ऐसी दशा है कि जैसे बुझते हुए दीपक की लौ कभी स्वतः ही तेज़ और फिर मद्धिम पड़ जाती है। सम्भालना 'आप' ही को है मैं तो जैसी हूं, सामने हाज़िर हूं। मेरी तो यह दशा है कि जैसे न बिगड़ी हूं, न बनी हूं।

तबियत का हाल इसलिये नहीं दिया कि ठीक ही है और ताऊ जी बता ही देंगे। परन्तु अब ताऊ जी नहीं आ रहे हैं। अम्मा 'आपको' आशीर्वाद तथा केसर, बिट्टो और लल्लू प्रणाम कहते हैं। इतिः-

सदैव केवल आपकी ही स्नेहसिक्ता
सेविका - कस्तूरी

पत्र - संख्या - 362

मेरे परम पूज्य तथा श्रद्धेय श्रीबाबू जी, लखीमपुर
सादर प्रणाम स्वीकृत हो। 3.1.54

आज मास्टर साहब जी से 'आपकी' तबियत का हाल सुनकर सन्तोष हुआ। मेरा एक पत्र पहुंचा होगा। भाई मेरे 'श्री बाबूजी' मुझसे अब धीरे-धीरे की उन्नति सहन नहीं होती, और अपना हाथ अधिक काम नहीं देता, इसलिये ऐ मेरे मेहरबान 'मालिक' ! अब पहले की तरह या उचित समझें तो कुछ और भी हाथ खोल दीजिये। मेरा जी ऊब-ऊब उठता है, धीरे-धीरे चलने से। केवल दबने से या वैसे भी केवल पेट की नसों में दुःखन ही होती है, वह धीरे-धीरे ठीक हो जावेगी, 'आप' चिन्ता न करें, और एक प्रार्थना मेरी यह भी है कि Working (कार्य) मैं ने अपना पहले की तरह शुरू कर दिया है। मुझे ज़रा भी तकलीफ़ नहीं होती। 'मालिक' की कृपा से मेरी जो कुछ भी आत्मिक - दशा है, सो लिख रही हूं।

भाई अब तो कुछ यह दशा है कि ऐसा लगता है कि अब जहाँ भी मैं हूं, वहाँ साँस का भी गुजर नहीं है। अन्तर - बाहर समाप्त हो चुके हैं। सूक्ष्मता ओझल सी होती जाती है। सूक्ष्मता भी गल चुकी है। साँस की गुज़र नहीं है, परन्तु फिर भी ज़िन्दगी कुछ ज़रूर है। हाँ, यह बात ज़रूर है कि दीपक का तेल समाप्त होता आता है। कुछ ऐसा लगता है

कि सूक्ष्मता भी गल कर भिंदती जा रही है। सूक्ष्मता भी पानी हो चुकी है और मुझमें सोखती चली जा रही है और मेरा क्या हाल है कि 'मालिक' की नस–नस में भिद चुकी हूं, मुझे ऐसा ही लगता है। मेरे 'श्री बाबूजी' अब सूक्ष्मता लिखती ज़रूर हूं , परन्तु अब तो यह है कि न कहने में, न सुनने में, और न अनुभव में ही उसकी कैफ़ियत, उसका Weight (वजन) निगाह में आता है। ऊपर जो मैंने ज़िन्दगी लिखी है वह ज़िन्दगी भी ज़िन्दगी नही है, बल्कि वह 'मालिक' की तरफ़ से बख्शी हुई ज़िन्दगी है, जो मुझे आगे बढ़ायेगी। भाई, ऐसा लगता है कि मेरा सूक्ष्म–रूप 'मालिक' में भिद चुका है। न जाने क्या दशा है कि हाथ पर हाथ रखे बैठी हूं परन्तु Touching (स्पर्श) के एहसास से दूर और अछूती ही बनी रहती हूं और बेहोशी सी भी दशा नहीं रहती है। यही दशा सूक्ष्म – रूप की हो चुकी है कि अपने सूक्ष्म – रूप से अछूती ही रहती है और इसके आगे या भीतर कह लीजिये, अब घुस रही हूं या 'मालिक' स्वयं भिदता या घुसता चला जा रहा है। पहले जैसे मैं 'मालिक' से हर समय अन्तर से Touch में रहती थी, परन्तु जब न जाने कैसे Touching (स्पर्श) एहसास से मैं अछूती ही रहती हूं, मेरे अनुभव में वही सिहरन की अनुभूति नहीं आती, बल्कि जो कुछ भी है जैसे भी है, केवल 'मालिक' ही है। नहीं, नहीं बीच में से Touching हटकर वह और एक और अंतस् में भिद रहा है। अब तो ऐसा लगता है कि भीतर की इन्द्रियों में से भी Touching की अनुभूति निकाल कर साफ़ हो चुकी है। बे Touching की 'मालिक' की कृपा से दशा आज से ठीक चल निकली लगती है। अम्मा 'आपको' शुभाशीर्वाद तथा केसर, बिट्टो प्रणाम कहती हैं। इति :

सदैव केवल 'मालिक' की ही अनुग्रह कांक्षिणी
सेविका – कस्तूरी

पत्र – संख्या – 363

मेरे परम पूज्य तथा श्रद्धेय श्री बाबूजी, लखीमपुर
सादर प्रणाम स्वीकृत हो। 5.1.54

एक पत्र लिख चुकी हूं। एक बात यह लिखने को भूल गई थी कि एक चतुर्वेदी लखनऊ में हैं, उनका बड़ा लड़का या कोई और है, वह बहुत पागल हो गया है, सो उन्होंने यहाँ ताऊजी को लिखा था उसे लाने को और 'आपके' पास ले जाने को, परन्तु ताऊ जी ने उन्हें मना लिख दिया था, तो उन्होंने अभी छोटे चाचा लखनऊ आये थे, उनसे 'आपका' पता लिख लिया है, सो शायद वे उसे आपके पास लावें, परन्तु अम्मा तथा हम सब का यही कहना है कि 'आपकी' Health (सेहत) बहुत वैसे ही कमज़ोर है, इसलिये 'आप' केस को हाथ में न लें। 'मालिक' की कृपा से जो कुछ भी आत्मिक दशा है, सो लिख रही हूं।

भाई, मुझमें देखते ही देखते पागलपन, बावलापन, जो लिखा करती थी, नहीं रहा, समाप्त ही हो गया। कुछ ऐसी दशा है कि वह तो शून्यता की दशा से भी अछूती सी

हो गई है। या यों कह लीजिये कि ख्याल या अनुभव Touching–Less (स्पर्श विहीन) हो गया है। हाँ Vacuum (खालीपन) की Condition का असर 'मालिक' देता जा रहा है। भाई, मैं क्या हूं केवल Vacuum जिसमें इस अनुभव की भी Touching नहीं है। न कोई, कैसी भी हवा ही इस दशा को छू पाती है। आध्यात्मिक हवा से भी रहित है और 'मालिक' की कृपा से ऐसा लगता है कि अब इसी में भिदती चली जा रही हूं और भिदती भी क्या, जब कि केवल Vacuum ही Vacuum है। मेरे 'श्री बाबूजी' Condition क्या है, ऐसा लगता है कि मानों 'मालिक' ने चीज़ को Vacuum करके रख दिया है मेरे 'मालिक' ने जाने कैसे Vacuumise कर दिया। अब 'वह' चाहे जो करे, जैसी मर्ज़ी हो करे।

आज शुक्लाजी आये हुए हैं, अभी यहाँ तो नहीं आये, परन्तु उनमें प्रेम के कारण आकर्षण अधिक मालूम पड़ रहा है। लय–अवस्था भी अच्छी मालूम पड़ती है। मेरा अब कुछ यह हाल है कि शून्यता थी, परन्तु अब तो किसी की गुज़र नहीं है। अम्मा 'आपको' शुभाशीर्वाद तथा केसर बिट्टो प्रणाम कहती हैं। अम्मा के दिमाग़ में कमज़ोरी है, कुछ खुश्की है, इसलिये कभी कभी चक्कर सा आ जाता है, चिन्ता की बात नहीं है। ईश्वर की कृपा से सब ठीक हो जायेगा। इति :–

सदैव केवल 'आपकी' ही कृपाकांक्षिणी
सेविका – कस्तूरी

पत्र – संख्या –364

मेरे परम पूज्य तथा श्रद्धेय श्री बाबूजी, लखीमपुर
सादर प्रणाम स्वीकृत हो। 10.1.54

'आपका' कृपा–कार्ड पूज्य मास्टर साहब जी के लिये आया– समाचार मालूम हुए (अम्मा आज से जो 'आपने' उन्हें खाना खाने के बाद बताया है, सो खायेंगीं। दादी शायद कल गई होंगी) ।'मालिक' की कृपा से जो कुछ भी आत्मिक–दशा चल रही है, सो लिख रही हूं।

अब तो भाई यह दशा है कि यदि 'मालिक' को अपने में भिदा हुआ या 'मालिक' को अपने में भिदा हुआ पाने वाली दशा को लाऊं, तो भी Condition (दशा) में न जाने क्यों न तो सुहावनापन ही आता है और न कुछ और ही एहसास होता है, बस जैसी है, बस वैसी ही Untouching (स्पर्श विहीन) दशा ही रहती है। ब्रह्म वाली दशा से भी दूर और अछूती सी मेरी दशा चल रही है।

मेरे 'श्री बाबूजी' कुछ ऐसी दशा है मेरी कि ऐसा लगता है कि ईश्वरीय–धारा तक मुझे छू नहीं पाती, मुझमें घुस ही नहीं पाती, या घुसती ही नहीं। यही हाल न जाने क्यों मेरे

लिये 'मालिक' का हो गया है, कि यदि मैं 'मालिक' का ध्यान करती हूं, तो भी ऐसा लगता है कि मैं उसे स्पर्श तक नहीं कर पाती हूं। वह मुझे न जाने क्यों स्पर्श नहीं होता है। सम्भव है इसलिये सुहानापन जाता रहा। अब 'मालिक' ही जाने।

मेरे 'श्री बाबूजी' कुछ ऐसी दशा है कि 'मालिक' की नस नस में भिदी होने पर भी मैं 'उसको' स्पर्श की Feeling से अलग ही, अपने को अछूती सी ही पाती हूं। एक कुछ यह भी है कि 'मालिक' ने मुझे Vacuumise (खाली) करके रख दिया है, उसी तरह 'मालिक' भी मुझे बिल्कुल Vacuumise ही हरदम लगता है। शक्ल ध्यान करूँ तो उसमें भी कुछ नहीं, बिल्कुल खाली, सफ़ा सी अनुभव होती है। सम्भव है इसी कारण मेरा पहले का एहसास कि 'मालिक' स्वतंत्र होते हुए भी बन्धन में आ गया है स्वप्न के समान समाप्त हो गया है। ऐसा लगता है कि Heart (हृदय) बन्धन – रहित है, इस लिये Vacuumise ही एहसास कर पाती हूं। यही नहीं, बाहर – भीतर यही Condition समान रूप से हो रही है। न ब्रह्म–दर्शन, न अखण्ड अविचल सी दशा है। अब तो मेरे 'श्री बाबूजी' दशा सहित नहीं रहित है। नहीं, नहीं, भाई अब तो दशा न सहित है न रहित है।

('मालिक' की कृपा से फूलो जिज्जी को ता 30.12.53 को लड़का हुआ है। तथा इलाहाबाद में बंगा भाई साहब को भी ताः 6.1.54 को लड़का हुआ है) अम्मा 'आपको' शुभाशीर्वाद कहती हैं। इधर 7–8 दिन से मुझे रात–रात भर न जाने क्या हाल है कि नींद नहीं आती। औंघा नींदी सी ऐसी रहती है कि मैं रात भर मानों जागती रहती हूं, किन्तु कोई विशेष तकलीफ़ दे नहीं मालूम पड़ती। पेट दाहिनी ओर तो बिल्कुल ठीक लगता है, बस बाईं ओर दबने से ही कुछ दुखन सी होती है। वैसे अब विशेष तकलीफ़ नहीं है। फ़िक्र न कीजियेगा। इतिः–

सदैव केवल 'आपकी' ही स्नेहसिक्ता
सेविका- कस्तूरी

पत्र – संख्या – 365

मेरे परम पूज्य तथा श्रद्धेय श्री बाबूजी, लखीमपुर
सादर प्रणाम स्वीकृत हो। 18.1.54

मेरा पत्र पहुंचा होगा। अम्मा, छोटे भइया और बिट्टो ता : 20 या 21 को इलाहाबाद जा रहे हैं। वहाँ से सबने और बड़े भइया ने भी बहुत बहुत बुलाया है। वहाँ से अम्मा वगैरह ता : 6 को उत्सव के लिये शाहजहाँपुर पहुंच जायेगीं और यहाँ से हम लोग भी ता : 6 की रात को 11 बजे वहाँ पहुंच जायेंगे। अबकी से 'श्री बाबूजी' यद्यपि मैं ने लेख "राज–योग में प्रेम और भक्ति का सामन्जस्य" लिख तो लिया है, किन्तु यदि 'आप' आज्ञा दें तो मैं

अबकी से बोलने की कोशिश कर रही हूं। बोल मैं अवश्य ले जाऊंगी, क्योंकि देखिये, 'आपने' कहा था कि "बिटिया! तुम लिख सकती हो, लिखा करो" बस मैं लिखने लगी। पारसाल आपने कहा था कि "बिटिया ! तुम बोल सकती हो" तबसे मुझे कुछ धुन है कि मैं बोल लूंगी, वैसे जैसा 'आप' कहें। यदि हिन्दी में Allowed होता, तो मैं पार्लिमेन्टरे लिजन में भी अपने मिशन को Represent (प्रतिनिधित्व) करने की कोशिश करती, खैर देखा जावेगा। 'मालिक' की कृपा से जो कुछ भी आत्मिक – दशा है, सो लिख रही हूं।

भाई अब तो यह दशा है कि जैसा मैंने लिखा था कि ईश्वरीय–धारा मुझे स्पर्श ही नहीं हो पाती, वैसे ही पवित्रता, शुद्धता का हाल हो गया है कि अपने आस–पास तक इसका पता ही नहीं पाती हूं। न नम्रता, न कुछ मुझे स्पर्श नहीं हो पाते। मेरे Heart(दिल) का यह कुछ भी Touch (स्पर्श) ही नहीं होता। यदि Condition लाऊं तो ऊपर ही जैसे तैरती रह जाती है और मुझे या मेरे heart को कोई चीज़ Touch ही नहीं कर पाती है। यही नहीं, बल्कि कुछ यह है कि 'मालिक' का ध्यान करती हूं तो न जाने क्यों तब भी पवित्रता तक भी कुछ अनुभव नहीं कर पाती हूं, बस केवल खाली Vacuumise शक्ल सी तैरती मालूम पड़ती है। बस वही शक्ल ही अब मेरी Condition (दशा) है, वही मेरा रूप कह लीजिये, वही मैं हूं या भाई कुछ यह दशा है कि "रूप मिलयो ,रंग बिसर्यो"। और कुछ ऐसा है कि चाहे वह ('मालिक' का स्वरूप) खाली है, Vacuumise है, बस वह भी ऐसी स्वतंत्र कि चाहे उसे अपना रूप मॉनू तो वैसी, चाहे heart मानूं तो वैसी ही, चाहे सामने रखूं तो वैसी ही, चाहे अन्तर में रखूं तो वैसी ही रहती है। इतनी हल्की ही कहिये कि तैरती मालूम पड़ती है। ऐसा ही इतना खाली सा मेरा रूप हो गया है, कि जैसे कहते हैं, कि फूंक मारो तो उड़ जाय। सम्भव है एक तिनका भी भारी बैठेगा। बस कुछ ऐसी ही दशा में मैं रमती जा रही हूं। बस ऐसे ही अपने में मैं आप ही भिदती जा रही हूं, और मैं इस दशा के लिये क्या लिखती, जैसे–तैसे कुछ लिख दिया है। यद्यपि कुछ मेरी Condition से सम्भव है ठोस ही पड़े। यह है कि रोआँ भी सम्भव है भारी बैठेगा। कुछ ऐसा ही खाली मैदान मुझमें समाया हुआ है। कुछ ऐसा लगता है कि मेरा सूक्ष्म रूप भी सफ़ाचट मैदान हो गया है, वह भी Vacuumise (रिक्त) हो गया है।

अम्मा आपको शुभाशीर्वाद तथा केसर, बिट्टो और लल्लू आपको प्रणाम कहते हैं। इति :–

सदैव केवल आपकी ही स्नेहसिक्ता
सेविका– कस्तूरी

पत्र-संख्या- 366

मेरे परम पूज्य तथा श्रद्धेय श्री बाबूजी, लखीमपुर

सादर प्रणाम स्वीकृत हो। 23.1.54

आशा है, मेरा पत्र मिला होगा। 'आपका' कृपा-कार्ड पूज्य मास्टर साहब ने सुनाया। सुनकर अत्यन्त हर्ष हुआ। सचमुच मास्टर साहब जी के धन्य भाग हैं जो अपने 'मालिक' की सेवा तथा अपना कर्त्तव्य पालन करने में सदैव अग्रणी हैं। उन्होंने लखीमपुर का नाम उज्जवल कर दिया और 'मालिक' की कृपा ने ही यह सुअवसर दिया है। उनका बहुत-बहुत धन्यवाद है।

न जानें क्या बात है कि 'आपकी' कृपा तथा स्नेह ने मुझे Work (कार्य) पहले ही से बता दिया तथा काम से पहले ही सचेत कर दिया था। वैसे Work तो सारा 'मालिक' के इशारे मात्र से ही हो चुका है और 'उनकी' कृपा तथा मास्टर साहब जी के परिश्रम से पूर्ण सफल होगा। मेला Ground (ग्राउंड) में मास्टर साहब जी का Work काफ़ी तेज़ और बिखरा हुआ मालूम पड़ता है, समा अच्छा बंधा मालूम पड़ता है। वैसे 'आप' तो सब जानते ही हैं, 'मालिक' की कृपा ही खूब है।

'मालिक' की कृपा से वहाँ के लोगों के अन्तर की सफ़ाई का काम मैं अवश्य संभाल लूंगी, जरा भी परिश्रम मुझे नहीं पड़ रहा है, और न जाने क्या यह नई बात देख रही हूं कि मेला Ground (ग्राउंड) में निगाह जाती हैं, तो अपनी छाया को वहाँ Work में लगी हुई पाती हूं और छाया में 'मालिक' की उपस्थिति पाती हूं। यह बात मैं 'आपके' पत्र आने से पहले ही से देख रही थी।

हम लोग भी उत्सव की प्रतीक्षा कर रहे हैं। अब धीरे धीरे उत्सव आ ही रहा है। आत्मिक दशा तो अगले पत्र में लिख चुकी हूं, इतना कुछ और हो गया है कि लय-अवस्था का एहसास मुझे नहीं होता। इतना हल्का लफ़्ज यह है कि मैं इसमें तैरती ही रहती हूं, किन्तु इस अवस्था का अनुभव नहीं कर पाती हूं। मिशन के काम में इलाहाबाद में पूर्ण सफलता हो, ईश्वर से यही प्रार्थना है। वैसे तो यथार्थ प्रकट होने का समय है और यह हो कर ही रहेगा, इसमें सन्देह नहीं। केसर 'आपको' प्रणाम कहती हैं कि श्री बाबूजी मैं तो पूजा में अभी कम परिश्रम कर पाती हूं, बस आपकी ही कृपा का भरोसा है। इति।

सदैव केवल आपकी ही
सेविका-कस्तूरी

पत्र-संख्या- 367

मेरे परम पूज्य तथा श्रद्धेय श्री बाबूजी, लखीमपुर

सादर प्रणाम स्वीकृत हो। 31.1.54

'आपके' दो कृपा-कार्ड आये- सुनकर प्रसन्नता हुई। भाई मेरे पास यदि कुछ है तो 'आपका' ही दिया हुआ है। नॉलेज या इल्म भला मैं क्या जानूं, मुझे इनसे भला क्या मतलब और उनका भी भला मुझसे क्या काम। हाँ, मेरा इनका तभी साथ है, जब कुछ 'उसकी' ही याद में लिखूं या पढ़ूँ। तबियत तो श्री बाबूजी वहाँ जल्दी पहुंचने के लिए बेकाबू हो जाती है, किन्तु धैर्य रखना पड़ता है। यदि रुपया यहाँ जैसा ताऊ जी ने मास्टर साहब से चाचा को जल्दी के लिये कहलाया है, आ गया तो ता : 5 की रात को नहीं तो ता : 6 की रात को पहुंचेंगे। मेहमान (फोड़े) तो विदा हो गये। बस परसों और नरसों दोनों फूट तो गये हैं, किन्तु अभी कुछ पतला पानी सा निकलता है, सो भी होम्योपैथिक दवा से आशा है, परसों-नरसों तक बिल्कुल साफ़ होकर ठीक भी हो जायेंगे। पूज्य मास्टर साहब जी आज डेढ़ बजे दोपहर को इलाहाबाद जा रहे हैं, कल सवेरे 5 बजे पहुंच जायेंगे।

लेख जैसा 'आपने' लिखा था, अभी साफ़ नही उतार पाई हूं, कोशिश करूँगी दो-एक दिन में उतार लूंगी। इधर Condition तो अच्छी ही चल रही है। लेख के बजाय Condition fair (दशा शुद्ध) हो गई है। इधर ऐसा लगता है कि ज़रा सी बोझ वाली दशाओं से Free (स्वतंत्र) हो गई हूं। मेरी तो जैसी हालत है कि मौत के बाद जैसा मनुष्य Free या जो उसके साथ जाता होगा, उससे भी गई बीती, उससे भी हल्की ही हालत है। यदि अंतर टटोलती हूं, तो खोखला बाहर तो वह भी खोखला। न अन्तर में बंधी हूं, न बाहर ही। ऐसा समझ लीजिये कि एक जरा सी डोंगी बड़े समुद्र में निधड़क तैरती चली जा रही है। समुद्र में लहरें नहीं, जिनसे उलटने का डर हो, वायु भी माफ़िक ही आती है, जीव नहीं, जन्तु नहीं, कहीं डोरी भी बंधी नहीं, जिनसे उलझने का डर हो, स्वच्छ, निर्मल, खाली समुद्र पड़ा है। यह मेरे 'श्रीबाबूजी' मेरी दशा की दशा है और 'मालिक' की क्या कहूं उससे तो कुछ ऐसा सम्बन्ध हो चुका कि 'मालिक' कहूं तो कुछ सोचना नहीं पड़ता है। और न कहीं देखना या टटोलना पड़ता है और न कुछ इसका Weight (वजन) न कुछ। ऐसा लगता है कि उस चतुर 'केवट' ने धीरे से डोंगी की सारी डोरियाँ काट दीं और उसे प्रशान्त-सागर में छोड़ दिया कि यह चली जावेगी और स्वयं उसमें हो कर भी डोंगी को 'अपने' होने के एहमास के बारे से भी स्वतंत्र कर दिया जिसमें बस चलती चले। परन्तु कुछ एक इतनी हल्की सी हवा आती है, जिससे डोंगी को 'उसके' होने की अनुभूति की हवा मिलती जाती है और 'उसके' होने की हवा या अनुभूति के सहारे ही चली जा रही है। मेरे 'मालिक' कुछ ऐसी ही दशा है कि जहाँ भी मैं हूं, न जाने क्यों वहाँ से अपनी अब कुछ

खोज खबर नही पाती हूं, कुछ पता नहीं मिलता है। केसर, मंजू, मुन्नी 'आपको' प्रणाम कहतीं हैं।

सदैव केवल 'आपकी' ही स्नेहसिक्ता
पुत्री– कस्तूरी

पत्र–संख्या–368

प्रिय बेटी कस्तूरी, शाहजहाँपुर
खुश रहो। 2.2.54

तुम्हारा खत मिला। यह तुमने खूब लिखा कि "मेरे पास जो कुछ भी है, सब आपका ही दिया हुआ है"। अगर देने–लेने का सवाल है तो, जब मैं सोचता हूं तो मुझे यह मालूम होता है कि मेरे पास जो कुछ है, वह सब तुम्हारा दिया हुआ है। तुम्हारी हालत पढ़कर मुझे ऐसा प्रतीत होता है, वैसे सही बात ईश्वर जाने कि तुम बन्धन से छुटकारा पा चुकी हो। इसमें भी अभी जाने कितना पैराव बाकी है। मतलब तो तुमने अपना बना लिया और इन्सान अगर बहुत उपज चाहता है तो यहीं पर उसकी दौड़–धूप समाप्त हो जाती है, मगर मेरी आँखें तो आँख ही नहीं रहीं। अब देखूं तो किससे देखूं । न मालूम मेरी क्या हालत है। शुक्र हर हाल में है।

शुभ चिंतक
रामचन्द्र

पत्र–संख्या– 369

मेरे परम पूज्य तथा श्रद्धेय श्रीबाबूजी, लखीमपुर
सादर प्रणाम स्वीकृत हो। 16.2.54

हम सब कल बहुत आराम से यहाँ पहुंच गये।

मेरे 'श्रीबाबूजी' वहाँ से तो चला ही नहीं जाता, किन्तु चलना तो पड़ता ही है। सच में उत्सव हो तो ऐसा हो। मैंने वहाँ के कण या एक जर्रे की Reading (पढ़ने की शक्ति) में जो कुछ भी अपनी थोड़ी सी Capacity के मुताबिक अनुभव किया है, सो लिख रही हूं, किन्तु मुझे Sure (विश्वास) है कि अधिक ऊंची Capacity वाले को इससे अच्छा Read हो सकता है। मैंने यह पाया कि एक कण में वह हालत थी जो समस्त ब्रहाण्ड का आत्मिक–पालन कर सकती है। या समस्त ब्रहाण्ड का आत्मिक– Force (शक्ति) से पालन कर सकती है। मैंने पाया कि हर सत्संगी के Heart (हृदय) एक ऐसी Condition (दशा) से चिपके हुए हैं, जो सम्भव है हजार वर्ष की तपस्या के बाद यदि सचमुच एक

सद्गुरु की शरण अभ्यासी हो तो शायद पा सके या नहीं, सन्देह है। मैंने तो 'आपकी' Transmission (प्राणाहुति-शक्ति) को अभी केवल इतना ज़रा सा ही अनुभव कर पाया है, किन्तु मेरा दृढ़ विश्वास है कि 'मालिक' की कृपा से मैं 'उसमें' अधिक से अधिक पैर सकूंगी। कहाँ मिलते हैं ऐसे आत्मिक-दृश्य और कहाँ मिलती है ऐसी Transmission Power कि जिसमें सांसारिक मनुष्यों को केवल उत्सव में सम्मिलित होने के नाते ऐसी दशा से, जो शब्दों की गम्य से बाहर हैं और जहाँ ख़ालिस Purity (पवित्रता) और खालिस दशा का ही राज्य है, चिपका देने की शक्ति आज क्या सम्भवतः किसी में कभी न होगी। यह तो अवश्य पढ़ा और सुना भी है कि जब वर्षों की तपस्या, और संयम और साधना के पश्चात साधक योग्य हो जाते थे, तभी महात्मा लोग एकाध शिष्य को ही ऊंची दशा पर पहुंचा देते थे। मैं तो बारम्बार अपने समर्थ 'श्री लाला जी' के चरणों में शत-शत प्रणाम करती हूं कि जिन्होंने आजकल के समय में हमें ऐसी 'रोशनी' दी जो बराबर आत्मिक-प्रकाश कर रही है, चाहे हम जाने या न जाने। मैं अपनी दशा के बारे में क्या लिखूं "श्रीबाबूजी"?

मेरा तो यह हाल है कि चैन की हवा में मुझे साँस लेना भी दूभर मालूम पड़ता है। भाई, अब तो ऐसा लगता है कि दशा इतनी हल्की ही कहिये कि उसमें अब साँस की भी गम्य नहीं रह गई है। ऐसा लगता है कि श्वाँस अलग है, मानों मुझे स्पर्श नहीं कर पाती है, मुझ तक पहुंच ही नहीं पाती है। मैं तो, बस यह लगता है कि अपने में 'मालिक' के रमें होने की अनुभूति (एहसास) की वायु सी ही आती है, बस उसी वायु की साँस में रहती हूं, उसी से मैं पल रही हूं। किन्तु वह ऐसी वायु है कि यदि दोनों को मिला दिया जावें, तो भी वे एक दूसरे के स्पर्श तक से अछूती ही रहेंगी, जैसे गंगा-यमुना की धारा। 'मालिक' की कृपा वग़ैरह, मैं कहती जरूर हूं, किन्तु सच में तो मुझे अब केवल 'उसी' के अब इस ओर, यानी 'उसकी' कृपा की ओर निगाह नहीं ठहराती क्योकि मेरे 'श्रीबाबूजी' 'उसकी' कृपा तो मानों मुझ-मय ही हो चुकी है। भाई ऐसा लगता है कि हालत खुलती चली आती है और उसी निर्मल दशा में मैं मिलती या धुलती चली जाती हूं। ऐसा लगता है कि ऊपर लिखी उस दशा में कि जो 'मालिक' के अपने में रमा होने की अनुभूति या एहसास की वायु है, मेरा ज़र्रा-ज़र्रा भींग चुका है और अब सूखने या सोखने लगा है। जब से आई हूं, कुछ ऐसा लगता है कि सूक्ष्म शरीर के बन्धन लगभग साफ़ हो गये हैं। कुछ ऐसा लगता है कि अंतर की भी आँखे खुली या फैली रह गई हैं। खुशी या तड़प ऐसी उठती है कि कभी-कभी कलेजा थाम कर रह जाती हूं। अम्मा 'आपको' शुभाशीर्वाद कहती हैं।

सदैव केवल 'आपकी' ही स्नेहसिक्ता
सेविका-कस्तूरी

पत्र–संख्या– 370

मेरे परम पूज्य प्रभुवर, लखीमपुर

सादर प्रणाम स्वीकृत हो। 18.2.54

मेरा एक पत्र पहुंचा होगा। अम्मा की तबियत भी काफ़ी ठीक है। अब 'मालिक' की कृपा से जो कुछ भी आत्मिक–दशा है, सो लिख रही हूं।

भाई, अब तो यह दशा है कि अक्सर ऐसी दशा होती है कि अंतर में जाने क्या होता है, कि जी चाहता है कि कलेजा कूटती फिरूँ, नोच डालूं, ऐसी कचोटन सी मचती है किन्तु हाय–हाय करने को तबियत नहीं चाहती है, और न इससे कुछ सन्तोष ही मुझे हो सकता है। सम्भव है इसी कारण अक्सर कलेजे में, जाने Heart (हृदय) में कभी धीमा और कभी एकदम से ज़ोर दर्द उठ कर फिर दब जाता है। किन्तु यह कोई नई या तकलीफ़ देह बात नहीं है। यह तो भाई जब से 'मालिक' के चरण पकड़े हैं, तब से ही शुरू हो गया, खैर। मेरे 'श्री बाबूजी' कुछ ऐसा लगता है कि नम्रता की दशा धुल–धुलाकर शुद्ध आईना की तरह हो गई है और कुछ ऐसा है कि यहीं नहीं कि मेरा रूप ही ऐसा हो गया है, बल्कि ऐसा ही बस एक यही आईना निगाह में जड़ गया है। हर तरफ़, हर चीज़ से ऐसा ही प्रकाश निकल रहा है या यों कह लीजिये कि सब ओर इसका ही राज्य है। ऐसा लगता है कि मेरी निगाह इसी में धुलकर फैल गई या देखने की ताक़त इसी में धुलकर या यही देखने की ताक़त में धुलकर फैल गई है। भाई, अब तो ऐसा लगता है कि पुतली ही पुतली सब ओर फैली हुई है। मेरे 'श्री बाबूजी' अब यह हाल है कि जिधर देखो, बस अपनी ही शक्ल दिखाई पड़ती है। धुल–धुलाकर कहने में Pressure (दवाब) और कुछ ठोसता सी आ जाती है, इसलिए केवल धुली हुई उसे (शक्ल को) कहूंगी। भाई, यह हाल है कि ऐसा लगता है कि कुल आँख ही आँख फैली हुई है, फिर क्या देखूं और किसको देखूं। देखने की ताक़त तो कुल फैली हुई है, इसलिये हर चीज़ से रोशनी ही निकल रही है। मेरा तो यह हाल है कि मैं तो यही कहूंगी कि "मैं क्या जागूँ, मेरा मनुंवा जागे"।

अम्मा ने 'आपको' शुभाशीर्वाद तथा फूलो जिज्जी ने 'आपको' प्रणाम लिखा है। केसर, बिट्टो 'आपको' प्रणाम कहती हैं। दादी की तबियत अब कैसी है?

सदैव केवल 'आपकी' ही

सेविका–कस्तूरी

पत्र- संख्या- 371

मेरे परम पूज्य श्री बाबूजी, लखीमपुर

सादर प्रणाम स्वीकृत हो। 21.2.54

दोनों पत्र साथ ही भेज रही हूं। 'मालिक' की कृपा से जो कुछ भी आत्मिक-दशा है, सो लिख रही हूं। भाई, वैसे तो केवल एकता का ही साम्राज्य है, किन्तु अंतर में बंदगी जाग रही है, जो मानो आगे बढ़ने का मार्ग है और जो खुद ही मानों 'मालिक' की कृपा से या 'उससे' ही प्रकाशित है। अंतर में या Vision में केवल और एक ही मार्ग दिखाई पड़ता है, और इसी पर मैं चली जा रही हूं और ऐसा लगता है कि जिसके छोर का अंदाज़ तक नहीं पड़ता है। Vision में बस इसी सीधे एवं सहज-मार्ग में से मैं चली जा रही हूं। न मोड़ है न चौराहा बस चलती ही जा रही हूं। यदि कोई कहे क्यों ? तो इसका उत्तर इस भिखारिणी के पास अब यही है कि इस बंदगी को भी जो उसी 'मालिक' की ही देन है, तो इसे (यानी बंदगी को) भी उसे ही सौंपने के लिये। 'उसकी' इस देन को भी 'उसे' ही सौपने चली जाती हूं क्योंकि मेरे पास अब इसके सिवा कुछ दिखाई नहीं देता। मेरे 'श्री बाबू जी' मैं तो मानो बन्दगी-रूप हो गई हूं। मेरा ज़र्रा-ज़र्रा बन्दगी की ही दलील है और अन्तर के कण-कण से बंदगी ही बंदगी की आवाज़ आ रही है। यदि लिखूं कि मेरे में बन्दगी भिद गई है, तो भिदना शब्द अब भारी पड़ता है। केवल इतना कहती हूं कि चाहे यों कह लीजिये कि मैं बन्दगी में फैली हुई हूं , नहीं यों कहिये कि बन्दगी मुझमें फैली हुई है। सब ओर, बाहर-भीतर, सबसे बस ऐसा ही निर्मल प्रकाश आ रहा है।

'श्री बाबूजी' एकता भी कैसी है, कि मेरा कण-कण उसमें फैल चुका है, समाया हुआ है। ऐसा कि एकक्षण भी इसके (एकता के) विरुद्ध , या इससे अलग देखना असम्भव है। अब तो यह हाल है कि झाड़-झंकार ऐसे साफ़ हुए कि निशान भी नहीं, मानो सदैव से ऐसा ही स्वच्छ मार्ग बिछा हुआ है। शरीर से मेरा मतलब स्वप्न में भी नहीं, यह तो गल-गलाकर साफ़ हो चुका, अब अन्तर में हल्के बंद तक का पता नहीं। 'मालिक' ने ऐसा लगता है कि सूक्ष्म से सूक्ष्म बन्द भी मानों साफ़ करके अंतर को आज़ाद फैला दिया है। भाई, न जाने कुछ यह हाल है कि जन्म-जन्मान्तरों के संस्कारों या झाड़-झंकाड़ों को भी कृपालु 'मालिक' ने साफ़ करके मानों बुहार दिया हो। शरीर में, हर चीज़ में, इन्द्रियों, Senses(वृत्तियाँ) मन तक इतना धुंधला पड़ गया है कि होने और न होने का भी होश नही। ऐसा लगता है कि 'मालिक' ने आज़ाद करके बन्दगी के निर्मल स्वच्छ प्रकाशित मार्ग में छोड़ दिया है और छोड़ क्या मैं 'उसके' अतिरिक्त हूँ ही नहीं। यदि मैं हूं तो वह उसमें समाया हुआ पहले है। वही सब कुछ मार्ग में दिखाता हुआ लिये जा रहा है। केसर

की दशा इतनी हल्की तथा स्वच्छ लगती है कि बेचारी जान नहीं पाती और बात बात में झल्ला पड़ती है। खैर, सब 'मालिक' की मेहरबानी है। इतिः-

सदैव केवल 'आपकी' ही
पुत्री - कस्तूरी

पत्र-संख्या- 372

मेरे परम पूज्य प्रभुवर, लखीमपुर
सादर प्रणाम स्वीकृत हो। 22.2.54

दो पत्र डाल चुकी हूं-मिले होंगे। 'मालिक' की कृपा से जो कुछ भी आत्मिक-दशा है, सो लिख रही हूं।

भाई, अब तो भिखारनी ही कहूंगी, इसका यह हाल है कि ऐसा लगता है कि प्याला ही प्याला सब ओर फैला हुआ है। धुला धुला शुद्ध प्याला ही सब ओर फैला हुआ है और ऐसा कि भिखारनी को होश नहीं कि प्याला कौन पकड़े है, कैसे टिका हुआ है किन्तु आँखें मानो मुंद चुकी हैं, बस एक प्याला ही सर्वत्र फैला हुआ महसूस होता है। मेरे 'श्री बाबूजी' हृदय में कचोटने का यह हाल है कि कभी क्या तबियत अक्सर ही ऐसी हो जाती है कि गला काट कर फेंक दूं। कपड़े-लत्ते सब अपने नोंच-फाड़ डालूं। हृदय से आवाज़ नहीं निकलती, वह तो मानों मौन है। बस तबियत में फड़फड़ाहट है। बस एक 'मालिक' की माधुरी मूर्ति सामने है और उसी का सहारा है। अक्सर ऐसा लगता है कि इसी बेचैनी के परमाणु भी मुझसे निकले हैं। बस ऐसा लगता है कि 'मालिक' हृदय को थामे हुए है, जो मुझे ऊपर लिखे कोई कर्म करने को मजबूर नहीं होने देता। वही Mind को Upset नहीं होने देता। किन्तु अन्तर में वह हाल है कि हृदय को खसोटने और मारने-पीटने को तबियत मजबूर हो ही जाती है, किन्तु लाभ इससे कुछ नहीं होता। भीतर तो किलौनी लग चुकी हैं। देखती हूं कि प्याले के तह में यह चीज़ या दशा छुपी हुई है।

पूज्य महात्मन् ! इधर दो-तीन दिन से जाने क्या बात है कि शाम होते ही जानें क्यों डर सा लगा करता है। क्यों ? यह समझ में नहीं आता, किन्तु कमरे से निकलने तक में भी भय सा लगता है, चाहे सब लोग जगते भी हों तो भी। अंधेरा तो बर्दाश्त नहीं होता। यह न जाने क्या बात है, यह तो डरना मेरे स्वभाव के विरुद्ध बात थी। अब दो-तीन दिन से न जाने क्या बात हो गई है। तबियत तो बिल्कुल सादा व इतनी हल्की रहती है कि बस कुछ इधर मुझे ही हो गया है। डर इधर कुछ, केसर कहती है कि उसे भी लगता है किन्तु श्री बाबूजी डर से कुछ हल्की चीज़ है। हृदय सिहरता सा रहता है, शायद भय से

ही किन्तु भय का कारण कुछ नहीं मिलता और क्यों लगता है, यह भी नहीं मालूम। कभी उदासी, कभी बेचैनी, यही मेरा हाल है।

ताऊजी, केसर व बिट्टो 'प्रणाम' कहते हैं। इतिः-

आपकी ही सदैव सेविका
पुत्री-कस्तूरी

पत्र-संख्या - 373

प्रिय बेटी कस्तूरी — शाहजहाँपुर

खुश रहो। — 27.2.54

तुलसी दास आये थे और कोई चालीस मिनट तक मेरे पास रहे। उन्होंने 16 फरबरी सन् 54 का खत दिया। इस खत में तो मैं समझता हूं कि सब हमारे लालाजी की तारीफ़ थी और वह वाकई सराहने के लायक हैं। उत्सव में उन्हीं का चमत्कार है। तुम्हारी Reading जो कुछ भी है बहुत ठीक है। असल में मेरे ज़रिये से जो कुछ हो जाता है उसका पता मुझको भी नहीं हो पाता। यहाँ तो खैर कोई बात नहीं है, मगर Tour (यात्रा) की दशा में मुझ पर अक्सर डाट भी पड़ी है, इसलिए कि मुझे अन्दाज़ा अक्सर ठीक नहीं हो पाता और बेजान चीज़ को जब मैं Charge (चार्ज) करता हूं तो अक्सर मैं उससे बहुत ज्यादा कर देता हूं। गो घर पर यह ख्याल रखा था कि बच्चे भी मौजूद हैं। एक गलती मुझसे पहली मर्तबा गोवर्धन पहाड़ पर हुई थी, उस वक्त मुझे यह अन्दाज़ न था कि मुझमे ऐसी चीजें भी हो सकती थीं, क्योंकि मेरा पहला मौका था। इसका लिखना बेकार है, हमारे नोट में सब कुछ मौजूद है।

मेरे पास लोग आते हैं। सत्संग तो उन्हें मैं कराता हूं, मगर जब कोई कुछ दिनों ठहरता है तो अक्सर मुझे सही हिट (Hit) हो जाता है कि क्या करना चाहिए और उसे समझ कर जब मैं करता हूं तो नतीजा बहुत अच्छा होता है। बस तुम्हारा यही हुआ है, जिसका नतीजा यह हुआ कि Soul (आत्मा) के bondage (बंधन) बहुत कुछ मध्यम पड़ गये हैं। यहाँ तक कि मुश्किल से अनुभूति होती है।

जिसका हाल तुमने 18 व 22 फरवरी में लिखा है। उसका भी मैं संक्षेप के साथ जवाब देता हूं। शुद्धताई तो तुममें ऐसी है, मेरा भी जी इस शुद्धताई के लिये ललचाता है। मुझमें अगर कोई शुद्ध चीज़ है तो, वही है, जो लालाजी ने प्रदान की है, बाकी भाई मुझे ऐसा समझो, मिसाल की तौर पर कि जैसे कुल Universe (सृष्टि) मेरे पेट में हो, जितनी खटक कि होती रहती है, वह सब मुझमें टकराती रहती है। शुद्धता और अशुद्धता सब उसमें शामिल रहती है इसलिये और भी जब मैं तुम में शुद्धता देखता हूं तो उसी को देखकर

खुश हो लेता हूं। क्या कहूं, ईश्वर के धन्यवाद के लिये मेरे पास कोई शब्द नहीं है। बहुत Higher Approach (ऊंची पहुंच) यानी वह आध्यात्मिक उन्नति जो अपने आखिर दर्ज़े तक पहुंची हुई हो, में जो बात है, वह कुछ ऐसी है कि कहते नहीं बनता और यह भेद भी है। जी मेरा छुपाने को भी नहीं चाहता और पूरे तौर से यों नहीं खोलता कि कोई शख़्स इसको मानने के लिये तैयार नहीं होगा और अगर होगा भी तो ऐसी तरक्की को कोई पसन्द नहीं करेगा और वह तरक्की भी ऐसी कि जिसको ईश्वर पहुंचा दे तो उससे हटने को जी नहीं चाहता। बहुत कोशिश करता हूं, आगे ज़बान खोलने को जी नहीं चाहता, दिल रोकता है। खैर रहने दो, यह तो इतना बड़ा राज है कि शायद इसका इशारा ही मैं किसी एक को कर जाऊंऔर जो पहुंच गया, वह तो जान ही लेगा। मगर ख़ुश तो तब हूं कि जब मेरी ज़िन्दगी में ही एक काना और बने। तुमने लिखा है कि जिधर देखती हूं अपनी ही शक्ल दिखाई देती है। यह तो बड़ी अच्छी हालत है। इसी को महात्माओं ने Realization (साक्षात्कार) कहा है और इस हद तक पहुंचे हुए लोग Natural Course (स्वाभाविक रूप) में शायद ही कोई मिले और मिलेगा तो शायद कोई इससे एक Step (कदम) आगे मिले और यह Perfection (पूर्णत्व) है। सब की दौड़ धूप यहाँ पर ख़त्म हो जाती है और मेरी राय में यह Realization की पहली सीढ़ी है। अगर मैं Realization को नापूं तो तबियत मेरी यही कहेगी कि तुमने A,B,C,D,(ए.बी.सी.डी.) अब शुरू की है। यह बातें किसी से अगर कहूं तो, मुझे बावला समझेगा और उसे यह मालूम हो कि यह भी कुछ रुहानियत में कदम रखे हुए हैं तो वह यह कहेगा कि अपनी बड़ाई जता रहा है। यह शख़्स कुछ नहीं जानता, मगर मैंने अपनी किताबों में किसी न किसी तरीके पर कह सब कुछ दिया है। मौजूदा हालत को तुम निखरी हुई तुरीयावस्था कह सकती हो।

21 फरवरी सन् 1954 के पत्र में जो बन्दगी करना लिखा है, यह बड़ी बात है। बन्दा फिर भी बन्दा रहेगा। इस लिहाज से जो उसको मालिक मानते हैं, इसीलिये हममें बन्दगी का ख्याल रहना बड़ा अच्छा है। आज मुझे दिन भर यह ख्याल रहा और बड़ी कोशिश की मुझसे भी बात निभ जाये, क्यों कि यह अच्छी है। मुझे इस बात का कभी पता न चला और चला हो तो याद नहीं। बन्दगी जहाँ तक हो छोड़ना कभी न चाहिये, अब यही चीज़ आगे पहुंचायेगी। तुम सोचकर लिखना, चाहे मास्टर साहब से भी मशिवरा ले लेना कि मैं अब इस बात को अपने में कैसे लाऊंअथवा बन्दगी, कैसे करूँ? चीज़ बड़ी अच्छी है।

अम्मा को प्रणाम

शुभ चिंतक
रामचन्द्र

ऊपर का खत खत्म कर चुका तो 23.2.54 का लिखा हुआ खत भी मिल गया। तुमने जो यह लिखा है कि तबियत चाहती है कि कपड़े नोच डालूं, वगैरह। मैं समझता हूं कि यह सब बातें बेचैनी हटाने के लिये मजबूर करती होंगी। यह भी दर्द की एक हालत है। तुमने लिखा है कि यह मालूम होता है कि दिल कोई थामे रहता है ताकि ऊपर की बातें न हों सकें। यह सब हमारे लाला जी का करिश्मा है। वरना ऐसी हालत पर और खास तौर पर जो चन्द महिने पहले आ चुकी है, अवधूत हो जाने का अन्देशा रहता है। हमारे यहाँ कोई अवधूत नहीं होता।

तुमने डर और खौफ़ के बारे में जो लिखा है, यह बड़ी अच्छी हालत है। इसके बारे में शायद 6 या 7 महीने हुए हों या ज़्यादा मैंने या तो किसी खत में लिखा है या जुबानी पूछा है कि तुम्हें खौफ़ तो मालूम नहीं होता। तुमने शायद कहा था कि हाँ, कुछ मालूम होता है। उस वक्त यह हालत उभार पर न थी अब पूरे उभार पर है। इस हालत को "खुदा–तरसी" हालत कहते हैं। तरस के माने डर के हैं, अर्थात् ईश्वर से खौफ़ पैदा हो जाना। जब यह हालत पैदा हो जाती है, तो शास्त्र विरुद्ध काम अगर मन कराना चाहे तो इस भय की वजह से नहीं हो पाते और इस हालत की फ़कीरों ने बड़ी तारीफ़ की है। तुम्हें यह हालत ईश्वर मुबारक करे। मैं इसको कम नहीं करूँगा। अपने आप जैसी सूरत उसकी होगी ठीकमठीक आ जायेगी। हमने जो काम चलते समय सुपुर्द किया है और जिसकी याद मास्टर साहब ने भी की होगी, उसका ध्यान रखना।

शुभ चिन्तक
रामचन्द्र

पत्र–संख्या – 374

मेरे परम पूज्य प्रभुवर, लखीमपुर
सादर प्रणाम स्वीकृत हो। 27.2.54

'आपका' कृपा– कार्ड जो पूज्य–मास्टर साहब के लिये आया, सुनकर फ़िक्र है। ईश्वर से प्रार्थना है और 'वह' हमारी अवश्य सुनेगा। मैं मंगल के सवेरे ताऊजी के साथ इलाहाबाद जा रही हूं। चाचा व अम्मा की भी इच्छा थी, वैसे विशेष बात कुछ नहीं है। मिस्टर और मिसेज सिन्हा का शौक 'मालिक' की कृपा से काफ़ी अच्छा चल रहा है। Faith (विश्वास) और अनुभव भी काफ़ी अच्छा है, वैसे तो 'मालिक' सब जानते ही हैं। दोनों जने शाहजहाँपुर से आने के बाद करीब–करीब रोज़ ही पूज्य मास्टर साहब या मेरे यहाँ आते भी रहते हैं। मेरे पेट में बाईं ओर जो 'आपने' पूछा, सो दर्द तो नहीं, किन्तु कुछ कुसकुसाहट व थोड़ा सा ही भारीपन अभी लगता है। वैसे आँतों में ताकत व पेट में आराम

काफ़ी महसूस होता है। 'मालिक की कृपा से जो कुछ भी आत्मिक–दशा है, सो लिख रही हूं। 'आप' कृपया मुझे अब जो पत्र डालें, वह इलाहाबाद ही डालें।

भाई, कुछ ऐसी दशा लगती है कि मानों देने–लेने का अब होश ही समाप्त हो चुका है। फिर प्याला ही तो प्याला फैला है, यह 'उसकी' मर्ज़ी है, चाहे सो दे, मन चाहे सो ले, किन्तु प्याला उथला है। मेरी निगाह, सारे Senses(वृत्तियाँ) वगैरह, सब ऐसा लगता है कि ऊपर ही कहीं 'स्थित' हैं, हृदय में कुछ नहीं। फिर मेरे 'श्री बाबू जी' प्याला भी कैसा है कि जिसका कण–कण 'मालिक' की कृपा–मय है। या यों कह लीजिये कि शायद उसका कण–कण 'मालिक' की याद से ही पिरोया गया है, इसलिये कण–कण बस 'वहीं' हो गया है या कण–कण में 'वहीं' ओत–प्रोत है। कुछ यह दशा है कि ऐसा लगता है कि मेरा ज़र्रा–ज़र्रा मानो अब केवल याद ही याद रह गया है या यों कह लीजिये कण–कण, रोम–रोम जो यदि है बस 'उसी' मय ही है या यों कह लीजिये कि मैं में 'वह' लय हो चुका है,मिट चुका है। भाई कुछ ऐसा है कि अपना कण–कण यदि पसार कर देखती हूं तो केवल एक 'वहीं' महसूस होता है और कण–कण को पसारना क्या, वह तो ऐसा लगता है कि मेरा कण–कण स्वतः ही पसर चुका है। शरीर तक का, सूक्ष्म तक का ऐसा लगता है, मानो ज़र्रा–ज़र्रा फैल गया है, सिमटाव कहीं है ही नहीं और बस उस हर कण के फैलाव में 'उसका' ही पसारा या पसार है या यों कह लीजिये कि निगाह में देखने की जो ताकत है, उन बिन्दुओं की जगह 'वहीं' जड़ा हुआ है और जड़ना क्या बल्कि कभी ऐसा था ही नहीं जब 'वह' नही था और भाई मैं उसकी था और है के विषय में क्या कहूं, मुझे तो कुछ ऐसी बयार लग चुकी है, जो 'उसी' के होने की सिहरन दिलाती है। मेरे क्या बल्कि कण–कण में इतनी शुद्ध और Free तथा हल्की Condition है जो 'उसी' का एहसास दिलाती है। इतनी नाजुक दशा है, जो 'उसी' बयार में रहती है और उसी बयार से 'उसके' होने का एहसास पता लगता है, नहीं तो या ऐसी ही बयार में मैं हूं या ऐसे मैदान में जहाँ केवल उससे ओत–प्रोत ही बयार बहा करती है, नहीं तो मुझे होश नहीं 'वहीं' सब जाने। मेरे 'श्री बाबूजी 'ऐसा लगता है कि मानों बीज ही जल चुका है। अब बहाव ही बहाव है। और दशा क्या है, आतिशी शीशा है, जिसमें मेरी तस्वीर खिंच चुकी है। अब तो यह हाल है कि–

"हर दिल में है तस्वीरे यार, जब ज़रा गर्दन झुकाई, देख ली"।

डर लगना जो मैं ने लिखा था, वह 'आपको' उस पत्र लिखने के दिन से ही समाप्त हो गया, किन्तु कभी–कभी उसकी ज़रा सी झटक या सिहरन सी आ जाती है, फिर दूर चली जाती है। मेरी कुछ यह दशा है कि जाने–अनजाने में मेरा स्वभाव, मेरी रहन,चाल,ढाल मानों Nature या प्रकृति से ही मिली रहती है। नेचर (Nature) ही मानों मेरा heart,मेरी रहन हो गई है।

सदैव केवल 'आपकी' ही स्नेहसिक्ता
सेविका–कस्तूरी

पत्र–संख्या – 375

मेरे परम पूज्य 'श्री बाबूजी' लखीमपुर

सादर प्रणाम स्वीकृत हो। 2.2.54

कृपा–पत्र 'आपका' लिफ़ाफ़ा कल मिला– पढ़कर प्रसन्नता हुई। 'आपने' चलते समय जिस काम के बारे में कहा था, वह तो मेरा ही समझिये, भला उसे भूलती कैसे ? और ईश्वर की कृपा से सफलता ही अनिवार्य है। मैं कल दोपहर में इलाहाबाद जाऊँगी। 'मालिक' की कृपा से अब जो कुछ भी आत्मिक–दशा है, सो लिख रही हूं।

अब तो कुछ यह हाल हो गया है कि यद्यपि सर्वत्र दृष्टि ही दृष्टि फैली हुई है, किन्तु जैसे दिखाई नहीं पड़ता, बल्कि यों कहिये कि जो मैंने लिखा था कि देखने की ताकत ही फैली हुई है, किन्तु उनमें जैसे प्रकाश अब नहीं है या यों कह लीजिये कि अंतर–दृष्टि का भी प्रकाश समाप्त हो चुका है। भाई, ऐसा लगता है कि मानों दीपक का तेल समाप्त होता आता है, बत्ती सारा तेल जैसे चूसे लेती है, कुछ ऐसा हो गया है कि यदि मैं लय–अवस्था में होने की कोशिश करूँ तो लय–अवस्था नहीं, बल्कि ऐसा ही लगता है कि हर कण–कण में 'उसी' के रमे होने की अनुभूति की केवल बयार मात्र ही बह रही है। मेरे 'श्री बाबूजी' ऐसा लगता है कि मानों लय–अवस्था ने अपनी अवस्था को मुझमें लय कर दिया है और स्वयं Free हो गई और मुझे भी अपने बन्धन के एहसास से Free कर दिया है। कुछ यह है कि 'उसकी' याद में लगना अब खुद एक बन्धन सा बन जाता है। अब तो भाई, यह है कि प्याला या शुद्धता ही 'उसकी' याद मौजूदा की दलील है। ऐसा लगता है कि इस शुद्धता को भी दशा जैसे चूसे लेती है या हज़्म किये जाती है।

अब तो 'श्री बाबूजी' 'मालिक' की कृपा से दूसरों की भी दशा करीब करीब पूरी तौर से अनुभव हो जाती है। 'आपने' जो Realization रियलाइजेशन के बारे में लिखा है, वह अब तो मुझे भी यही दिखाई पड़ता है कि A,B,C,D, ए,बी,सी,डी ही शुरू है और भाई, शुद्धता की भी अब ही शुरुआत होते दिखाई देती है। 'आपने' बंदगी के बारे में जो लिखा है, सो भाई, जहाँ तक मेरा शुद्ध विचार है, बंदगी बंदे के लिये होती है, मास्टर के लिये नहीं, फिर मास्टर भी कैसा कि कुल विश्व (Universe) जिसके हस्त–गत हो। परन्तु जिसे इसके होने का गुमान तक नहीं। फिर भाई, जिससे (Mastery) स्वामित्व का (Weight)भार भी नहीं निभ सकता, वह कैसे सम्भव है कि बंदगी को निभा सकेगा। जिसमें ॐ की शक्ति पैदा कर देने की (जहाँ तक मेरी निगाह है,और यह ठीक है) शक्ति मौजूद है, वह बंदगी को किस कोने में ठौर दे सकेगा।

ताऊजी 'आपको' प्रणाम कहते हैं। इतिः–

सदैव केवल 'आपकी' ही
सेविका–कस्तूरी

पत्र-संख्या - 376

प्रिय बेटी कस्तूरी, शाहजहाँपुर

खुश रहो। 6.3.54

तुम्हारा खत 27.2.54 का भी मिल गया। पिछला खत जो मैंने भेजा था उसमें एक बात तुम्हारी जानकारी और तजुर्बे के लिये लिखने को रह गई थी, वह यह है कि जब ईश्वरीय भय की हालत शुरू होती है, तो भय एहसास होता है, मगर उसमें यह पता नहीं चलता कि किससे भय है। बस यही और भय में और इस भय में फ़र्क है।

तुम्हारे कुल खत से और इस हालत से यह अन्दाज़ होता है कि तुम्हारी हालत Realization की है और जिसकी तलाश थी, वही अब चीज़ है। मुझे बड़ी खुशी है कि किसी को Realization हुआ तो। मैं बिटिया क्या करूँ? मेरी कोई सुनता ही नहीं। नहीं तो अब तक जितने लोग भी मेरे पास आ रहे हैं पहिले के, उनमें से कुछ और लोग Realized हो चुके होते। मोती मैं बिखेरना चाहता हूं, मगर दामन कोई अपना फैलाता नहीं। यह मेरी किस्मत है। उन लोगों की खता भी क्या हो सकती है। मगर तुम्हारे लिये इतना और कहूंगा कि हालत तुम्हारी ज़रूर Realization की है, मगर इसको काफ़ी न समझ बैठना। अभी जाने कितना और चलना बाकी है। मुझे तो भाई अभी तक उसका छोर न मिला, न मालूम कैसे लोग परम सन्त और परम हंस अपने को ख़्याल करने लगते हैं। यहाँ तो मैंने यह हाल देखा है कि सन्यासियों में और दूसरे सम्प्रदायों में भी यह बात होगी, कि पढ़-पढ़ाकर और कीर्तन वगैरह करके और जप और पूजा करके अपने आपको ब्रह्म समझने लगते हैं। मैंने 'W' स्थान से आगे नहीं बढ़ाया, इस लिये कि कुछ तन्दुरुस्ती का भी ख़्याल है कि कुछ ज़रा और अच्छी हो लो। यह ज़रूर है कि इस स्थान की सैर अब जल्द खत्म हुआ चाहती है और यह सब हाल जो कुछ तुमने लिखा है, सब इसी स्थान का खेल है। तुम्हारी तन्दुरुस्ती का हाल मुझे मिल गया।

आध्यात्मिकता की मुझे ज़्यादा ज़रूरत नहीं, इस लिये कि यह तो लालाजी के बाँयें हाथ का खेल है।

तुम्हारा खत 2.3.54 का लिखा हुआ आज अभी मिला। जब लय-अवस्था हो जाती है, तो उसकी कोशिश में बंधन महसूस होता है। Realization के बाद उसकी याद में कोशिश करने में दिल घबरा जाता है। तुम्हारे खत से मालूम हुआ कि तुम अब Realization के दूसरे Chapter में क़दम रख रही हो।

शुभ चिंतक

रामचन्द्र

पत्र-संख्या - 377

मेरे परम पूज्य तथा श्रद्धेय 'श्री बाबूजी' इलाहाबाद

सादर प्रणाम स्वीकृत हो। 9.3.54

कृपा-पत्र 'आपका' आया-पढ़कर प्रसन्नता हुई। 'आपको' मैं केवल शत-शतधन्यवाद के और क्या लिखूं, समझ में नहीं आता। मुझे तो 'आप' ऐसा ही आशीर्वाद दें कि मैं तो 'उसकी' ही खुशी (इच्छा) में बह जाऊं, न्योछावर हो जाऊँ।मैं तो अपने को हार चुकी हूं, क्योंकि 'आपकी' इतनी कृपा व इस बालिका के प्रति स्नेह ने इसे खरीद लिया है। कश्मीर वाले सज्जन अपने एक और मित्र के संग दो दिन से आ रहें हैं, पूजा भी की और प्रश्न भी पूछे, 'मालिक' की कृपा से सन्तुष्ट हैं। मेरी आँतो में भारीपन कतई नहीं है, बल्कि ऐसा लगता है कि आँतों में जैसे ताकत को हज़म कर लिया है। 'आपकी' ग्लानि की बात पढ़कर मुझे कुछ अफ़सोस हुआ कि मैंने क्यों लिख दिया। खैर, मेरे 'श्री बाबूजी' 'आप' इस बात पर हरगिज़ कृपया ध्यान न दें। मुझे तकलीफ़ तो सचमुच नहीं हुई और न अब है, भारीपन भी क़तई नहीं है। भय की तो जो 'आपने' लिखी,वैसी हालत थी कि किससे भय लगता है, इसका पता नहीं। 'मालिक' की कृपा से जो कुछ भी आत्मिक-दशा है, सो लिख रही हूं।

ता. 3 को सवेरे आठ बजे पूजा में बैठी थी तो बीच सिर में एकदम से जाने क्या हुआ कि ऐसा लगा कि एकदम से कुछ खुल कर एक भीनी सी कैफ़ियत कुल सिर में फैल गई और सिर में ही नहीं, इसका असर कुल शरीर पर था। वह कोई इतनी हल्की भीनी कैफ़ियत थी, जिससे कुल शरीर तक affected था। ऐसा लगता था कि सिर से सम्बन्धित नसों द्वारा वह कैफ़ियत कुल शरीर में फैल गई। कोई इतनी Slight दशा खुली, उसीसे कुछ सनसनाहट या कुछ भनभनाहट सी दो मिनट तक हुई, फिर कुल शरीर पर Injection की तरह असर हो जाने पर शान्त हो गई। कुछ यह हो गया है, कि कोई कहे आज व्रत है तो मुझे ऐसा लगता है कि मानो हमेशा से व्रती हूं, और कोई खाने को कहे तो एक क्षण ऐसा होता है, मानों मैं कभी भूखी न थी, खाती ही रहती हूं।

मेरे 'श्री बाबूजी' कुछ यह दशा है कि ऐसा लगता है कि जो बंदगी का साम्राज्य फैला था, वह सिमट कर मेरे हृदय या मन में समाता चला जा रहा है और कुछ ऐसा लगता है कि शुद्धता भी, जो आईना की तरह मानों मेरा वस्त्र ही बनी हुई थी, उसको भी मन ने जैसे चूस लिया है और वह कोई एक खाली चीज़ रह गई है। भाई, कुछ ऐसा लगता है कि अब आध्यात्मिकता के साम्राज्य की तो मुझे झलक भी नहीं दिखलाई पड़ती है। वह तो ऐसा लगता है कि पीछे छूट गया है। मेरे 'श्री बाबूजी' कुछ ऐसा लगता है मानों अब निचुड़ी हुई शुद्धता के मैदान में हूं। शुद्धता और बंदगी का साम्राज्य ऐसा लगता है कि

सिमट चुका है और इतना ही नहीं, वह तो भाई, खुली हुई दशा तो हज़म हो चुकी, अब जाने क्या है। भाई, ऐसा लगता है कि अब तो जैसे Soulके मैदान में चल रही हूं। अम्मा 'आपको' शुभाशीर्वाद कहती है। इति :-

सदैव केवल 'आपकी' ही सेविका
पुत्री- कस्तूरी

पत्र- संख्या- 378

प्रिय बेटी कस्तूरी, शाहजहाँपुर
प्रसन्न रहो। 13.3.54

अम्मा की तबियत के बारे में अक्सर फ़िक्र रहती है। ईश्वर जल्द आराम करें। X, Y स्थान पर अर्थात् इन दोनों के दरमियान कुछ गुजंलक थी, अब वह साफ़ हो गई। Left corner पर कुछ थोड़ी सी अब भी है, वह भी एक दो रोज़ में साफ़ हो जावेगी। तुमने जो हालत 9 मार्च सन् 54 के खत में लिखी है, वह उसी स्थान की हालत है। सैर शुरू हो गई है, मगर X Y दोनों स्थानों की मिली-जुली हालत की सैर है। तुमने जो यह लिखा है कि अगर कोई व्रत का ख्याल दिलाये तो मुझे यह मालूम होता है कि व्रती हूँ। यह तो बड़ी उम्दा हालत है। इससे यह मालूम होता है कि ईश्वर या Reality कहना अच्छा होगा की हालत से सम्बन्धित हो चुकी हो। इसलिये कि इसका एक गुण यह भी है कि वह कभी नहीं खाता। अगर कोई खाने को कहे तो यह मालूम होता है कि मैं खाती ही रही हूं। इसके मानी यह है कि तुममें उस गुण वाले से निस्बत हो गई है, जैसा कि ऊपर लिखा है कि जो बिना खाये हुए अपने आपको खाया हुआ समझता है यानी दोनों हालतें उसके लिये एक सी हैं।

आगे जो लिखा है बन्दगी के बारे में कि वह बन्दगी समाती चली जा रही है, इस चीज़ का कुल समा जाना Reality की ही अच्छी हालत है । एक बात मैं और लिखे देता हूं बतौर इशारे के। सम्भव है कि इस Writings को किसी समय लोग सोंचे। जब तक कि बन्दगी है, हम बन्दे हैं। और जब इस चीज़ में हम समा गये तो फिर बन्दे नहीं रहे, मगर इन्सानी शराफ़त यही है कि हम मालिक को मालिक समझते रहें। इसके यह मानी भी नहीं कि लोग बन्दगी करना छोड़ दें, यह समझकर कि बन्दगी करने से हम बन्दा ही रहेंगे। यह तो एक हालत है कि जो बन्दगी करने से ही मिलती है, इसके बाद मुमकिन है कि 'Z' स्थान पर इससे भी अच्छी हालत मिलेगी, ईश्वर ने चाहा। यह तुम्हारा ख्याल सही है कि Spirituality से आगे तुम्हारा क़दम है, जैसा मैं ने Reality At Dawn में कहा है" शुद्धता की अनुभूति न रहना ही असल शुद्धता है और जब सब कुछ गायब हो जाये जो फिर असलियत ही असलियत है।"

यह तो सब तुम्हारी तारीफ़ थी। अब आगे मैं क्या लिखूं। चाहता तो यही हूं कि तुम्हारी तरह हर अभ्यासी सब नुक़्ते समझता चले। इस इल्म का कहीं छोर नही और सच पूछो तो मुझे भी पता नहीं। जब कोई इन हालतों में पहुंचता है तो पता हो जाता है। Self Thinking से ही Intelligence बढ़ती है, तो यहाँ तो लोगों को इतनी फ़ुर्सत ही कहाँ? और फ़ुर्सत भी हो जाती, अगर शौक़ पैदा हो जाता मैं चाहता तो यही हूं कि मुझे जो कुछ थोड़ा बहुत आता है, अपनी ज़िन्दगी में ही सबको सिखा जाऊं, उसके बाद फिर वह उससे आगे तरक्की करते रहें। मगर एक दो के सिवा कोई हिम्मत करके सामने आता हुआ दिखाई नहीं देता। कितनी सहज चीज़ और कितने सहज तरीके से बताई जाती है, फिर भी लोग अपने आप को उस हद तक तैयार नहीं करते। यह ज़रूर है कि ज़्यादातर ऐसा ही देखा गया है, अभी तक ऐसी तरक्की करने वाले इक्का-दुक्का ही मिलते हैं।

अम्मा को प्रणाम।

शुभ चिंतक
रामचन्द्र

पत्र- संख्या- 379

मेरे परम पूज्य 'श्री बाबूजी' इलाहाबाद
सादर प्रणाम स्वीकृत हो। 13.3.54

कृपा-पत्र 'आपके' दो आये-पढ़कर हर्ष हुआ। ईश्वर का बहुत बहुत धन्यवाद है जो उसने सबकी सुनली। प्रार्थना तो 'श्री बाबूजी' क्या बताऊं, जब से लखीमपुर से चली थी, निगाह ही नहीं जाती थी, ऐसा ही लगता था कि काम हो गया, इसलिये क़रीब-क़रीब सब छोड़ दिया। X तथा Y Point के लिये 'मालिक' को बहुत बहुत धन्यवाद है। मैं 'उन्हें' क्या दे दूं, समझ में नहीं आता, जब कि लेना- देना का भी होश 'मालिक' ने ही सम्भाल लिया है। जैसे 'आपकी' मर्ज़ी हो, मुझे ले चलिये। मुझे बस यही आनन्द और यही खुशी है।

X और Y दोंनों स्थान खुल रहे हैं और सैर भी होने लगी है, परन्तु दशा अभी पूर्ण एहसास में नहीं, किन्तु कुछ तो आ रही है। यहाँ यह ताज्जुब है कि मैं Point Cross होने के धन्यवाद में प्रार्थना की तैयारी की राह देख रही थी। 'आपके' कृपा-पत्र की राह थी, ख़ैर, मेरे 'मालिक' की कृपा ही ऐसी है।

डाक्टर सिन्हा ने जाने कैसे मेरी तबियत खराब लिख दी, जब कि मैं 'आप' से झूठ नहीं बोलूंगी कि जब से लखीमपुर से आई थी, तब से हर हालत अच्छी ही है। आँतों और मेदों में शक्ति है, हाँ, अन्तर इतना है कि उन्होंने शक्ति को चूस लिया है, इसीलिये जो

मेदों में शक्ति है, हाँ, अन्तर इतना है कि उन्होंने शक्ति को चूस लिया है, इसीलिये जो धीमी-धीमी सी दुखन थी, वह भी शान्त हो गई। भूख पहले से अधिक बार लगती है, केवल इतना है कि भारी चीज़ व ज़्यादाएक बार खाने से ज़रूर भारीपन व बेचैनी हो जावे परन्तु ऐसा मैं होने तो नहीं देती हूं पूज्य बाबूजी !कुल शरीर में भी ताकत अभी ऐसी मालूम पड़ती है कि कभी अधिक कभी कम। जैसे 'आप' लिखते जाते हैं, मैं शरीर के भी लिए करीब करीब वैसे ही कोशिश करती हूं कि ठीक रहे। विमला, उमा व बड़ी भाभी भी पूजा में उत्साह बढ़ाने की कोशिश कर रही हैं। विमला के संस्कार एकदम से पूजा कराते में सामने आ गये, तमाम गुदे हुए थे। जो कुछ भी थोड़ी सी आत्मिक-दशा समझ में आई है, सो लिख रही हूं।

भाई, कुछ ऐसा लगता है कि अब तो Soul के मैंदान में चल रही हूं। अब न पूजा है, न लय-अवस्था। बस जैसी दशा है, वही पूजा है और वही लय-अवस्था। पूजा से आँख बन्द करते ही तबियत घबराने लगती थी, किन्तु अब तरीका समझ में 'मालिक' की कृपा से आ ही गया। न निगाह अब शुद्धता के मैदान में है, न बंदगी के। निगाह को इनसे परे हल्की मुर्दनी सी दशा में पाती हूं। दशा पूरी तौर से Vision में जो आई है, अब की पत्र में लिखूंगी। अम्मा 'आपको' शुभाशीर्वाद कहती हैं। इतिः-

सदैव केवल 'आपकी' ही सेविका

पुत्री-कस्तूरी

पत्र-संख्या- 380

मेरे परम पूज्य तथा श्रद्धेय श्री बाबूजी, इलाहाबाद

सादर प्रणाम स्वीकृत हो। 24.3.54

आशा है मेरा एक पत्र पहुंचा होगा। आशा है, पूज्य मास्टर साहब होली में वहाँ 'आपके' पास आये होंगे। 'मालिक' की कृपा से जो कुछ भी आत्मिक-दशा है, सो लिख रही हूं।

इधर तो कुछ ऐसी सुस्ती रही कि चार-पाँच दिन चाहकर भी पत्र लिख न सकी। दशा क्या है 'श्री बाबूजी' कुछ यह हो गया है कि तड़पना शब्द हृदय पर बर्छी की सी चोट करता है। मीरा पद हृदय को चीरने लगते हैं, किन्तु लगते बहुत अच्छे हैं। यहाँ तक कि सिनेमा के गाने में भी ऐसे शब्द या भाव सुनकर तबियत भीतर ही भीतर अधीर सी होने लगती है। बस कुछ 'मालिक' की कृपा रूपी सुई और हाय शब्द की डोर मानों हृदय को दो टुकड़े होने से रोके रहती है। दुनिया का कुछ ऐसा दृश्य दिखलाई पड़ता है कि मानो मुर्दानगी छाई हुई है। कहीं मार-काट, कहीं Trains लड़ीं, कहीं आग की लपटें सी, पृथ्वी

में ज्वालामुखी और भूचालों के लक्षण मालूम पड़ते हैं। इंग्लैण्ड में लन्दन में मानों हाल में ही ज्वालामुखी फटने वाला है, क्योंकि कुछ मामूली ही कसर बस शेष लगती है और समुद्र उसकी जगह लेने वाला ।बस यह समझिये समस्त पृथ्वी रक्तमय बन चुकी है, क्योंकि हर जगह ऐसे ही परमाणु पाती हूं, किन्तु साथ में भाई, आगामी बहार का यह हाल है कि ऐसा लगता है कि भारत मानों रानी की तरह सजा हुआ है। हरी–भरी लताऐं बन्दनवारों की तरह शोभित हैं और मानों दूध की नदियाँ बह रहीं हैं। किन्तु फिर भी ऐसा लगता है कि कहीं 'मालिक' की Will Force और कहीं परमाणुओं में ऐसे ही Creations मौजूद रह कर काम कर रहे हैं।

कुछ यह हो गया है कि अंतर पत्थर सा हो गया है, क्योंकि चाहे कुछ हो, उसमें कुछ होता ही नही, ज्यों का त्यों रहता है। भाई, पहले मैं लिखा करती थी कि मेरा ह्रदय मानों संगमरमर और आईना की तरह चमकता रहता है, किन्तु अब देखती हूं कि वह कोरा पत्थर मात्र सा ही रह गया है, हाँ परन्तु इसके (यानी पत्थर के) अंतर में अवश्य सिलसिलाहट है, जो दशा को Read करवाती है। अब 'मालिक' जानें, जो कुछ 'उसने' दिया हो।

बड़े चाचा की हालत तो अच्छी चल रही है। मुझे माथे के चक्रों पर भी अब काफ़ी असर लगता है। इतिः–

सदैव केवल 'आपकी' ही कृपा कांक्षिणी

पुत्री–कस्तूरी

पत्र–संख्या – 381

प्रिय बेटी कस्तूरी, शाहजहाँपुर

आशीर्वाद। 26.3.54

आज करीब दो बजे दिन के मुझे तुम्हारी बराबर याद आ रही है और विचार भी अक्सर काम करता है। चार बजे दिन के करीब तो मेरी यह हालत थी कि इलाहाबाद जाने के लिये जी बहुत चाहता था, तुम वापसी डाक जवाब दो, क्या बात है ? मुझे स्वतः फ़िक्र हो रही है। अम्मा का भी हाल लिखना।

अम्मा और तुम्हारे चाचा जी को प्रणाम।

शुभचिंतक

रामचन्द्र

पत्र-संख्या -382

मेरे परम पूज्य श्री बाबू जी, इलाहाबाद

सादर प्रणाम स्वीकृत हो। 29.3.54

कृपा-कार्ड 'आपका' अभी मिला। समाचार मालूम हुए। पूज्य 'श्री बाबूजी' 'आपके' कार्ड में जो मेरी याद आने के बारे में लिखा है, यह मेरा सौभाग्य है। मुझे कभी यह मालूम न था कि इस नाचीज़, की भी याद में 'मालिक' का जी यहाँ आने को चाहने लगेगा। मेरे 'श्री बाबूजी' 'आपकी' जो मेहरबानी इस गरीब पर है, और होगी, उसका ऋण क्या कभी चुकाया जा सकेगा। 'आपने' जो याद का कारण पूछा है, उसका उत्तर भला मैं क्या दे सकती हूं। कोई विशेष बात केवल अपनी कुछ बेचैनी के और कुछ समझ में नहीं आ रही है। कुछ याद नहीं आ रहा है। मेरी करबद्ध स्वयं 'आपसे' ही प्रार्थना है कि यदि 'आप' उचित समझें तो मुझे इसका कारण अवश्य लिखने की कृपा करें। मुझमें कुछ कमी तो नहीं आ गई। मुझसे कोई धोखे से ग़लती तो नहीं हो गई, कृपया लिखियेगा। मुझे तो 'मालिक' की कृपा का ही भरोसा है और यही मेरा जीवन है। 'आप' मुझे ज़रूर लिखने की कृपा करें। श्री (आपके) चरणों में आकर मेरा तो जीवन बन गया। यदि भूले से या सुस्ती के कारण कोई कमी आ गई हो तो लिखियेगा। कृपया उत्तर शीघ्र दिलवा दीजियेगा।

मेरा तो यह हाल है कि याद से मेरा जी घबराता है। पूजा तो Automatically होती थी उससे बन्धन हो गया। दीनता, गरीबी का मुझमें नाम नहीं है। नम्रता भी महसूस नहीं होती। किन्तु कुछ तरह की Condition से ज़रूर Touch है, इससे अलावा मुझसे कोई पूजा नहीं होती। इधर न जानें क्यों चाल ज़रूर मध्यम सी पड़ती है और दशा न जाने क्यों उतना साफ़ Read नहीं कर पाती हूं, यद्यपि अनुभव तो साफ़ है, और Feelings भी उसके साथ-साथ है। कुछ यह हो गया है 'श्री बाबूजी' कि चाहे Condition हो या कभी-कभी Working तक, सत्य बात मुझसे यदि उसके विषय में कोई कुछ चलावे तो छुपती नहीं। क्योंकि 'आपके' देन को कहाँ सम्भाल कर रखूं। जब हृदय को 'मालिक' ही ख़रीद चुका है। दशा क्या है, आकाश तत्व उससे भारी ही पड़ेगा। धुएँ से हल्की ही होगी। अपने को खाली छोड़ने से भी अच्छी दशा नहीं लगती। भाई, न जाने क्या बात है कि निगाह के अंतर की ओर जाते ही, जी सा घबराने लगता है। 'आपका' कार्ड आने से ऐसा लगने लगा है कि मानों यदि मुझमें कुछ कमी आ गई हो, सो दूर हो चुकी, यद्यपि मुझे कोई कमी या गलती एहसास में नहीं आई और न आ रही है। इस समय मैं भी Anxious हूं, जानने के लिये। कृपया लिखियेगा ज़रूर। इतिः-

सदैव केवल 'आपकी' ही कृपा कॉंक्षिणी
सेविका पुत्री- कस्तूरी

पत्र- संख्या- 383

प्रिय बेटी कस्तूरी, शाहजहाँपुर

प्रसन्न रहो। 31.3.54

तुम्हारा पत्र 24 मार्च सन् 54 का मिला। तुमने जो कुछ होने वाली बातें जल्दी होने को लिखी हैं, वह ठीक ही होगा। आज 29 मार्च'54 का भी पत्र मिल गया। मुझे स्वयं आश्चर्य है कि मुझे इतनी बेचैनी क्यों पैदा हुई, कि इलाहाबाद आने की तबियत चाहती थी। अब वजह जब तुम पूछती हो तो यही मालूम होता है कि यह आकर्षण तुम्हारी ओर से था। सम्भव है कि तुम्हें मेरी याद किसी कारण से कुछ तीव्र हो गई हो। याद जब Sub-concious mind में पहुंच जाती है, तब उसमें बहुत तीव्रता और आकर्षण बढ़ जाता है। Sub-concious mind की खोज(Research) का मुझे इसी समय विचार पैदा हुआ। Research कहाँ तक की जावे अब इसको तुम्हीं सब सोचो। इतना इशारा किये देता हूं कि Sub-concious mind ऐसी जगह है, जहाँ पर कि एक प्रकार की बिजली सी बनती है। जिसका ख़्याल किया जाय उस ओर तीव्रता बहुत बढ़ जाती है। मंत्रों का जाप ख़ामोशी से करने को यों ही बताया जाता है कि उस कैफ़ियत में यह चीज़ आ जावे कि उसका प्रभाव उसके नतीज़े पर ज़्यादा पड़े और यहाँ पर ख्याल बाँधने से इच्छा-शक्ति बहुत तेज़ काम करती है। Special Will इसी Sub-concious mind से होती है, गो इससे भी Higher एक Region है, वहाँ की बनी हुई Special- Will चन्द मिनट या सेकण्ड ही में दुनियाँ का नक्शा पलट सकती है। Special Personality जब कहीं ईश्वर के हुक्म से आ जाती है, तो इसी स्थान पर शक्ति अधिक होती है और कहीं ईश्वर की अनुकम्पा कहीं किसी पर अधिक हो गई और बड़े खास कार्य करने को हुए तो इससे आगे Special Will के तीन स्थान और हैं, जहाँ पर इन्तहाई Power है। यहाँ तक तो बन्दा पहुंच जाता है, इसके आगे वह एक ही स्थान है, वह बिल्कुल ईश्वर के Willकी जगह है और यह उसी के पास रहती है। इस वस्तु का हक़दार मुमकिन है कि अभी तक कोई न हुआ हो, मगर उसका हक़दार बनने की तरकीब बस यही हो सकती है कि अपनी हालत ऐसी बना लें, जैसी कि होनी चाहिये, अर्थात् अपने आपको वास्तव में बिल्कुल लय कर दे। इस क़दर जितना बन्दे कि लिये सम्भव है। और एक साधारण बात मैं तुम्हें लिखता हूं, जिसको समझ लेने से ईश्वर और जीव के फ़र्क जो लोग पूछते हैं, समाप्त होते हैं और इच्छा शक्ति की बहुत सी बातें हल हो जाती हैं। हमें दर हक़ीकत Higher Pressure से Lower Pressure में जाना है। हवा सब जगह एक ही है, मगर उसका Pressure पृथ्वी की ओर Higher है, और ज्यों हम ऊपर जाते हैं, हवा का Pressure Low हो जाता है, अर्थात् हवा भारी से हल्की हो जाती है। यहाँ तक कि आगे चलकर Pressure रहता ही नहीं बल्कि Vacuum हो जाता है। मैंने तुम्हें ब्रह्म और जीव

का एक मज़मून लिखकर कर भेजा था, अब यह दो वाक्य और लिख दिये। Higher Pressure जब है वह, तो जीव-गति है और Lower Pressure जो है, वह ब्रह्म-गति है। वस्तु एक ही है। चौबीस प्रकार के ब्रह्म जो वेद में लिखे हैं, उन सबको इसी में घटित कर लो। जितनी हल्की हवा है, उतनी ही ब्रह्म-दशा समझनी चाहिये। बस इशारे के तौर पर लिख दिया, इस लिये पढ़े-लिखे लोग संभव है, कि जीव और ब्रह्म के प्रश्न करें।

तुमसे कोई ग़लती नहीं हुई, इस विचार को दूर करो। पूजा अब तुमसे होना बड़ा कठिन है, इसीलिये मैंने बहुत पहिले से पूजा की पाबन्दी के लिये मना कर दिया था। तरकीबें नई निकालती रहो, मगर वह थोड़े ही थोड़े दिनों काम देगी और अंत में परिणाम यही होगा। आंख से यह कहो कि वह अपने आपको देखे, तो यह कैसे हो सकता है या आईना मुंह खुद देखे, तो यह कैसे सम्भव है। तुमने लिखा है कि दीनता, ग़रीबी और नम्रता भी महसूस नहीं होती, यह सब रास्ते की बातें हैं। बस ऐसे समझ लेना चाहिये कि मनुष्य संसार में रहता हुआ हर वस्तु से प्रेम रखता है और जब मृत्यु होती है तो कोई वस्तु साथ नहीं जाती। इसी प्रकार से लय-अवस्था समझनी चाहिये कि उस दशा में मनुष्य कुछ अपने पास नही रखता और महा-प्रलय की भी तारीफ़ यही है कि कुछ न रहे। तुमने लिखा है कि 'इधर चाल मन्द सी प्रतीत होती है'। गति मन्द नहीं है, बल्कि वहाँ का भान इस कदर मन्द है कि ठहराव सा दृष्टिगोचर होता है। दशा में तुम्हारे ईश्वर की कृपा से कमी नहीं, प्रत्युत्तर बढ़ती ही है।

ईश्वर को धन्यवाद है कि अम्मा को सेहत हो रही है। पण्डित लक्ष्मी चन्द्र, पण्डित रामेश्वर प्रसाद का जन्म दिन अपने मौज़ा लखनौर में 15 अप्रैल को मनावेगें, सब सत्संगियों को निमंत्रित किया है।

अब हिन्दी के लिखने वाले दो मिल गये हैं, उसमें एक बहुत काबिल हैं। अब हिन्दी के पत्रों के उत्तर बहुत सुगमता से पहुंच सकेंगे। तुम अपना खत अपने चाचा को पढ़कर सुना देना, शायद कोई बात उनके काम की इसमें निकल आवे।

शुभ चिंतक

रामचन्द्र

पत्र- संख्या -384

प्रिय बेटी कस्तूरी, शाहजहाँपुर

प्रसन्न रहो। 6.4.54

तुम्हारा खत 4.4.54 का लिखा हुआ आज मिला। पूजा अब तुमसे होना मुश्किल है। इसलिये मैंने पाबन्दी हटा ली है। अब तो तुम्हारी वह हालत है कि दूसरे लोग तुम्हारी पूजा करें। मगर इससे अहंकार नहीं होना चाहिये, इसलिये कि ऐसा तो

होना सबका धर्म है। अहंकार का तो तुममें गुज़र भी नहीं हो सकती। पूजा में जब हम किसी की पूजा करते है तो दुई बढ़ती है और हालत तुम्हारी Non-duality की है और ऐसी हालत में पूजा करती हो तो Duality की तरफ़ जाना पड़ता है, इसलिये घबराहट पैदा होती है, क्योंकि जब दूसरा माना जायेगा, तब तो हम पूजा करेंगे। जब दूसरों को सत्संग कराती हो, तो तुम दुई का ख़्याल ले लेती होगी। इसी वजह से उस वक्त घबराहट पैदा होती है। यही वजह है, जैसा कि तुमने लिखा है कि जब याद करती हूं तो उससे Touch नहीं हो पाती। यहाँ Touching का सवाल ही नहीं, जिसकी तुम याद करती हो वह तुम ही खुद हो। इसलिये तुम्हारा यह ख़याल पैदा होता है कि तुम Touch नहीं कर पातीं कोई दूसरी चीज़ होती तो याद Touch करते हुए दिखाई पड़ती। तुमने- यह लिखा है कि कहीं ठहराव तो नहीं हो गया है। यद्यपि यह है तो असम्भव बात पर यह दोनों बातें सही हैं। ठहराव हो भी गया है, और नहीं भी हो गया है। मेरा मतलब यह है कि X, Y के मैदान में एक साफ़ चटियल हालत है, जिससे कि तुम in-Touch हो। और इसकी चौड़ाई इस क़दर है और इस क़दर खुला हुआ है और तुम्हारा गुज़र भी उस मैदान में है और निगाह तुम्हारी अंदरूनी जाती है, तो सिवाय मैदान के और कुछ नज़र नहीं आता, उसको तुम ठहरी हुई हालत कह सकती हो, मगर इसको ठहरा हुआ कहना भी ग़लती होगी इसलिये कि इससे आगे जाने की हिम्मत और ताक़त इस मैदान में रहते हुए पैदा हो रही है और इसीलिये जब तक तुम में आगे उड़ान की ताकत पैदा न हो जावेगी, आगे मुकाम पर नहीं बढ़ाऊंगा और ईश्वर ने चाहा तो पैदा हो जावेगी और मैं भी जो कुछ थोड़ी बहुत मदद दे सका दूंगा। इस मुकाम पर बेइंतिहा ताकत है और थोड़े दिन रुकना और अच्छा होगा। तुम जो लखनौर के उत्सव में लिखकर भेजोगी वह पढ़वा दूंगा।

शुभचिंतक
रामचन्द्र

पत्र- संख्या - 385

मेरे परम पूज्य श्री बाबूजी, लखीमपुर
सादर प्रणाम स्वीकृत हो। 19.4.54

कल ताऊजी व मास्टर साहब जी आराम से यहाँ पहुंच गये। लखनौर के उत्सव का सारा हाल सुन-सुनकर मेरे हृदय में बड़ी प्रसन्नता हुई। भाई लखमीचन्द जी का सा उत्साह यदि सत्संगी भाई बहनों में फैल जाये, तो कितना अच्छा हो। मैं भी अम्मा व केसर के साथ परसों यहाँ पहुंच गई। कानपुर में डा. तिवारी होम्योपैथ को अंग्रेज़ी की किताब दी थी, आधी ही पढ़कर बहुत प्रसन्न थे। उनका कहना था कि जब से यह चीज़ Educated man के बीच में आयेगी, तब से इसका बहुत प्रचार होगा और सबको बहुत पसन्द आयेगी,

परन्तु कुछ देर इसीलिये लगेगी कि महात्माओं और स्वामियों ने जनता के ऊपर काला आवरण डाल दिया है। अब उन्हें एक पुस्तक अंग्रेजी की और दो, दो हिन्दी की इलाहाबाद में प्रोफेसर राना डे के लिए भेज रही हूं। उनका कहना था कि 'आपसे' मिलकर वे बहुत खुश होते, परन्तु मुझे कुछ पता न था, नहीं तो मैं ज़रूर मिलाती। जो कश्मीरी सज्जन व उनके मित्र आते थे, उन्होंने बीच-बीच में कहा था कि यह प्रोफेसर राना डे ने भी बताया था, परन्तु मेरा ध्यान न गया। खैर 'मालिक' की मर्ज़ी होगी तो फिर देखा जायेगा। 'बाबूजी' डा. तिवारी ने कहा है कि मेरा मन नहीं मानता, आप जरा सा मनोयोग (मन का योग) मुझे दें, जिससे मैं कुछ योगिक क्रिया से आँत की T.B. को दूर करने की कोशिश करूँगा, दो दिन उन्होंने किया। लाभ तो मुझे है, किन्तु मेरी तबियत किसी दूसरे को गवारा नहीं कर सकती। उन्होंने आँत में पार्थिव तत्व की कमी के कारण ही T.B. होना बताया है। पार्थिव तत्व चन्द्रमा में अधिक है या मूलाधार से सहायता लेने की Will लगाने को कहा है, किन्तु 'आप' मुझे बतावेंगे, मैं वही करूँगी। उत्सव में 'आपने' शर्बत ले जाने को मुझसे कहा था, परन्तु मैं लाई नहीं, सो कृपया यदि उत्सव में कोई यहाँ आवे तो उसके हाथ अवश्य भेज दीजियेगा।

अम्मा कहतीं हैं और सबकी प्रार्थना है कि यदि हो सके तो उत्सव में जो ताः 23 को है, 'आप' भी पधारें। यदि थकान व कमज़ोरी हो तो हम ज़ोर नहीं देतीं। 'मालिक' की कृपा तो होवेगी ही। अब इलाहाबाद में कम से कम मालूम तो पूजा के विषय में बहुतों को हो गया है। मेरा मन कहता है कि कभी न कभी वह दिन अवश्य आयेगा, जब लोग 'मालिक' के नाम व पूजा से ही परिचित मिला करेगें। 'मालिक' की कृपा से जो कुछ भी आत्मिक-दशा है, सो लिख रही हूं।

अब तो ऐसा लगता है कि जो हृदय लम्बा-चौड़ा मैदान सा लगता था, सो कुछ बंदिश टूट जाने से भीतर-बाहर एक ही Flow हो गया है, इसी कारण शायद आगे बढ़ने की ताकत पैदा हो गई है। कुछ यह हाल है मेरे 'श्री बाबूजी' कि जो कुछ भी है, सब 'मालिक' की कृपा से ही है, क्योंकि मैं देखती हूं कि भाई, साधना के लिये Time मैं कहाँ से लाऊं, जब रात-दिन सबेरा-शाम से तथा Time से ही मेरा सम्बन्ध समाप्त हो चुका है। न जाने यह क्या बात है कि देखती हूँ कि यदि पूजा करवाने में जैसे अमुक लोग कर रहे हैं, ऐसा (दुई सी) हो जावे, तो भी जी बंधने सा लग जाता है। अच्छा नहीं लगता है, बस सफ़ाचट मैदान समझकर जैसी दशा में हूं, वैसे बैठूं तो कुछ नहीं। अब तो समझ में नहीं आता कि पूजा जाने करवा पाती हूं या नहीं, ऐसी दीन सी नहीं, ख़ाली सी दशा है और दशा यह है कि न ख़ाली हूं न भरी हूँ, जैसी हूं, 'वही' जाने। यहाँ तक है कि सामने दूसरे को पूजा करने बैठा समझूं, तो रूप-नाम तो कुछ अनुभव में आता ही नहीं फिर भी इस ख़्याल (दूसरे के) मात्र से जी बंध सा जाता है। कुछ ऐसा लगता है 'श्री बाबूजी' कि जो लम्बा-चौड़ा मैदान

हृदय में था, वही बंदिश टूट कर सामने भी आ गया है, इसीलिये अब ठहराव की सी Condition नहीं मालूम पड़ती। अब तो भाई, दशा क्या है, यही कि जिसका नाम तत्व-मसि (वही तू है) सुना करती थी, भीतर-बाहर अब वही दशा अनुभव में स्वतः ही आती है। मैं तो देखती हूं कि यह इतनी हल्की दशा है कि किंचित (ज़रा सा) दशा को अनुभव की कोशिश से ही जी घबराने लगता है। यह तो अपने आप ही कुछ स्वाभाविक-दशा सी फैली हुई है, फिर समझ में नहीं आता कि लोग इसको कहने या रटने से कैसे प्राप्त कर सकते हैं। यह तो जाने भाई, केवल ईश्वर की कृपा का Result ही Result है। अब तो बस यही दशा अनुभव होती है। 'श्री बाबूजी' अब तो रहित हूं, Power, वायु, साधना, साध्य, सब कुछ समाप्त हो चुका। अब तो जो है, वह केवल फल ही फल है। फल भी 'मालिक' के हवाले है, क्योंकि मैं रखूंगी कहाँ, मेरे पास ठौर नहीं है। नम्र सी दशा होती चली जाती है। दशा में गहराई है ही नहीं न उथली है, एक समान Condition में है।

अम्मा 'आपको' शुभाशीर्वाद कहती हैं। इतिः-

सदैव केवल 'आपकी' ही सेविका
पुत्री-कस्तूरी

पत्र- संख्या- 386

प्रिय बेटी कस्तूरी, शाहजहाँपुर
खुश रहो। 25.4.54

इलाहाबाद से भेजा हुआ खत मिला और 19.4.54 को लखीमपुर से भेजा हुआ पत्र भी मिला और उसी का मैं जवाब दे रहा हूं। प्रोफेसर राना डे को तुम Efficacy of Raj Yoga भी भेज देना। अब मैं तुम्हारी हालत का जवाब देता हूं। लिखने से पहले सन्त तुकाराम का एक पद आया "गुड़ से मीठे हैं भगवान्, बाहर-भीतर एक समान"। बस, अब मुझे तुम्हारी यही हालत मालूम होती है। जब जिस्म का भान नहीं रहता और रूह का भान भी थोड़ा-बहुत समाप्त हो जाता है, तो ऐसी हालत प्रतीत होने लगती है। दुई का अब तुम में पता कहाँ और यह हमारे लालाजी की Teaching की बरकत है कि जो एक Step ऊंची ही रहती है। Non-duality है, मगर भान उसका कम है और यह Stage बढ़ना चाहिये और यह Stage एक Limitless समुन्दर है और इसमें जाने कितना पैराव होता है। बेदों में अद्वैत (Non-Duality) कहा है, सम्भव है, इससे आगे भी कोई कह गया हो, मगर यक़ीन कम है, इसलिये कि बहुत सी बातें खुद अनुभव के लिये भी छोड़ दी जाती हैं। मैं बग़ैर कहे नहीं रह सकता, सम्भव है लोग इससे सहमत न हों। जब हम ऐसी हालत में पहुंच जाते हैं, कि जहाँ न Duality महसूस होती है, न Non-Duality इस तरह पर, अर्थात् इसकी पहिचान यह है कि चाहे सौ वर्ष या हज़ार वर्ष तक द्वैत-अद्वैत पर Meditate करें, तो भी यह ख़्याल में न आवे कि हम Duality में हैं या Non-Duality

में, तब यह हालत सिद्ध हुई। अव्वल तो, जो वाकई इस हालत में है,उसमें इतनी शक्ति ही नहीं रहती कि वह इस पर Meditate कर सकें। एक ही मिनट में Meditate करने से दिल घबरा उठेगा। जब इन्सान इस हालत पर आ जावे, तो फिर असलियत पर आ गया, मगर पैराव अभी बहुत बाक़ी है, इसकी हद नहीं। बिटिया ! मैं वाचक ज्ञानियों की भाँति कह भी जाता हूं, मगर सच पूछो तो, मुझे खबर नहीं। जब कोई अभ्यासी ऐसी हालतों में आ जाता है तो, मुझे खबर होती जाती है। मुझे आता तो खैर कुछ नहीं, मगर जो कुछ भी आता है, मैं चाहता हूं कि लोग सीख लें, ताकि वह खुद ही ऐसे हो जायें, अगर उस हालत तक औरों को न पहुंचा सकें। मैं इस बात को कल सोच रहा था कि हो सकता है कि इक्का–दुक्का अगर मेरी तक़दीर मदद करे, तो ऐसे लोग बन जावें, मगर फिर इन हालतों में दूसरों को पहुंचाना बड़ी कठिन चीज़ हो जावेगी, जब तक जिस्म का ज़र्रा–ज़र्रा (परमाणु) भूमा की असल कैफ़ियत न ले आवे और यह हो सकता है। कहूंगा यही, इसलिये कि जब हमारे गुरु–महाराज में कोई कमज़ोरी नहीं, तो मुझमें भी नहीं हो सकती, ख्वा लोग इसे अहंकार समझें, इसकी परवाह नहीं। जिस्म से कमज़ोर ज़रूर हूं,मगर हिम्मत और ताकत में कमी नहीं कि यह एक Second का काम है। बिटिया ! मेरा तो यह ख्याल है कि अगर रुहानी सम्बन्ध में किसी Stage पैदा करने में एक Second से दूसरा Second लग गया, (बशर्ते कि उस एक Second में काम करना भी चाहूं) तो मैं पतित हो गया और इस काबिल नहीं रहा कि दूसरों को तालीम दे सकूं। लोग इसको अहंकार समझेंगे, समझा करें। अब सवाल यह है कि एक Second में सब कुछ कर देने का धक्का बर्दाश्त कर सकेगा और मुझे इसका अवसर खेद रहता है कि कोई शख्स अगर इतना ज़्यादा नहीं तो इतना ही सिखाने वाला इस मिशन में पैदा हो जाये। यह सब 'मालिक' के हाथ में है, जो 'वह' चाहेगा, वही होगा। अन्त में कहना यही पड़ता है, क्योंकि हम फिर भी बन्दे हैं और इसलिये एटीकेट कायम रखना जरूरी है। हमारे यहाँ तो यह हाल है, कि अगर हम चाहें भी Special Will से तालीम करना, तो लोग मेरे ख़्याल में जंजीर डाल देते हैं। अब यह उनकी किस्मत है या मेरी।

पूजा के वक्त जो तुम्हें दुई समझ पड़ने पर घबराहट मालूम होती है, इसके बारे में मैं ने जो खत इलाहाबाद भेजा था, उसमें मैं लिख चुका हूं। तुम्हें पूजा कराने का ख़्याल तो नहीं हो जाता, इसलिये यह चीज़ महसूस हो जाती हो ? आगे बढ़ने पर मुमकिन है, यह बात खुद–ब–खुद न रहे। मैं ने X , Y स्थान से अभी आगे नहीं बढ़ाया है। ताकत अच्छी पैदा हो गई है, मगर अभी और ताकत पैदा होने का इन्तज़ार है। इसका असर अभी कुल जिस्म में नहीं भिदा है। ईश्वर ने चाहा, यह भी हो जायेगा ठहराव नहीं है, ताकत बढ़ रही है। भाई–बहनों को आशीर्वाद।

शुभचिंतक
रामचन्द्र

पत्र- संख्या- 387

मेरे परम पूज्य श्री बाबू जी   लखीमपुर

सादर प्रणाम स्वीकृत हो।   25.4.54

आशा है मेरा पत्र पहुंचा होगा। बहुत दिनों से 'आपकी' तबियत का समाचार नहीं मिला–इस कारण कुछ फ़िक्र है। उत्सव परसों बड़ी अच्छी तरह हो गया सब 'मालिक' की ही कृपा व उन्हीं की मर्ज़ी थी। अम्मा अच्छी हैं। 'मालिक' की कृपा से जो कुछ आत्मिक–दशा है, सो लिख रही हूं। 'आपकी' साँस तो ठीक है, अवश्य लिखियेगा।

कुछ यह दशा है कि ऐसा लगता है कि मानों ऐसा कभी नहीं था जब मैं नहीं थी, ऐसा नहीं है जब मैं नहीं हूं, और ऐसा कभी नही होगा जब मैं नहीं रहूंगी। और यहाँ तक है कि लखीमपुर आई, तो यही नही लगता था कि मैं यहाँ से कहीं गई थी, इलाहाबाद गई तो यह नहीं लगता था कि मैं यहाँ कभी नहीं थी। और जब कानपुर गई तो, वहाँ भी नहीं लगा कि मैं अभी ही यहाँ आई हूं।

भाई, अब तो यह दशा है कि ऐसा लगता है कि जो सत्ता केवल एक सत्ता, जो स्पन्दन–रहित सी है, और हर जगह एक ही दशा सी है, ऐसा लगता है कि वही मैं हूं। जो न कभी बदलती है, न बदलेगी। एक समान, चेतन या अचेतन कहूं, ऐसी जो सत्ता है, वही मैं हूं। जहाँ न रात है,न दिन, न प्रकाश है, न अन्धेरा, न हवा का Pressure है, बस ऐसी स्थिति में मेरा बसेरा है। न बोलती हूँ, न अनबोलती हूं। 'मालिक' जाने, जो कुछ भी हूं 'उसी' की हूं। चेतन, यों कह लीजिये कि उस सत्ता का बोध होता है,किन्तु ऐसा नहीं भी है, क्योंकि अवस्था अचेतन सी भी है, किन्तु शायद उसमें चेतन मन की चैतन्यता, उसका बोध कराती है, वह जैसी भी हो एक समान, नहीं, वरन् सहज–अवस्था है। जो सदैव एक ही है और यही रहेगी। उसमें Deep जाने से या उस अवस्था में अनुभव करने से कभी नींद सी कुछ Inactiveness सी आती रहती है, परन्तु 'मालिक' की कृपा से चेतना लुप्त नहीं होती, जिससे मुझे आगे उन्नति करने का अवसर मिलता जाता है। 'उसका' हज़ार हज़ार धन्यवाद है। मेरे 'श्री बाबू जी' मुझे ऐसा लगता है कि यह Condition मृत्यु से पहले नहीं मिल सकती थी, वह केवल Special Personality की ही कृपा व शक्ति है, जो ज़िन्दगी में भी मृत्यु के बाद की आनन्द दायक Conditions का जलवा दिखा रही है और आगे और दिखाती ही रहेगी। ऐसा लगता है कि अब तो जीवन के रहस्यमय पर्दे या Chapters खुलते जाते हैं। भाई, चेतना भी ऐसा लगता है कि मन का कुछ हल्का सा Pressure पड़ने से ही अनुभव में आ पाती है। न जाने क्यों ऐसा लगता है कि दशा तो प्रकृति से भी परे पहुंच चुकी है। न जाने क्यों पहले से अधिकतर परन्तु अब कभी–कभी माथे के बीच में बड़ा गड्ढा सा हर समय महसूस होता है। अब तो यह हाल है कि शुद्धता

का मुझमे गुजर नहीं, वह तो जैसे जब कोई पीछे फिर कर देखे तो महसूस हो, किन्तु वैसे तो अब एक रहित–सत्ता या दशा में मेरी दशा घुसती चली जा रही है। इधर 'श्री बाबूजी' दो दिन से न जाने क्यों ऐसा लगने लगा है कि न मैं कभी थी, न हूं और न रहूंगी। कल करीब एक घंटे शाम को बाँयें पैर के तलवे के बीच से करीब एक सूत ही बाँयें हटकर कुछ ऐसा लगा, जैसे कोई चीज़ खुलने के लिये फड़ फड़ सी हो रही थी, फिर बन्द हो गई आर कुछ गुदगुदी सी भी थी, अब 'आप' ही जानें, मुझे तो कुछ नहीं मालूम मुझे सुस्ती बहुत है और नींद सी बहुत लगती रहती है।अम्मा आपको आर्शीर्वाद कहती हैं। इतिः–

सदैव केवल आपकी ही स्नेहसिक्ता
सेविका पुत्री–कस्तूरी

पत्र- संख्या- 388

मेरे परम पूज्य एवं कृपालु श्री बाबूजी, लखीमपुर
सादर प्रणाम स्वीकृत हो। 28.4.54

कृपा–पत्र 'आपका' कल मिला–पढ़कर अत्यन्त हर्ष हुआ। ऐसी कृपा की रीति कि भगवान अहेतु की कृपा वाला है, ऐसी अनोखी कृपा–रीति मैंने पूर्णतया 'आप' ही में पाई। भला मैं कुछ कर भी पाऊँ या नहीं, किन्तु 'आपकी' कृपा तो जिस क्षण से प्रारम्भ हुई है, एक क्षण का भी नागा नहीं होने दिया। सच तो यह है कि मेरी ऐसी की गुज़र भी ऐसे ही (आपके ही) दरबार में ही हो सकती थी, और है, और होगी। दर–दर की ठोकरों ने आखिर को 'स्वामी' के द्वारे ला ही खड़ा किया और 'मालिक' भी इस अकिंचन और अपाहिज पर प्रसन्न है। बस मैं ने सब कुछ पा लिया, ऐसी ही कृपा 'स्वामी' की बनी रहे। मेरे ज़र्रे–ज़र्रे से यही प्रार्थना की ध्वनि निकलती है।

'मालिक' की कृपा से 'पूजा करने, करवाने की घबराहट स्वयं ही साफ़ हो गई, क्योंकि अब तक की पुरानी रीति 'उसने' स्वयं ही सुधार दी। दशा के अनुसार काम होने लगा। अब तो ऐसा लगता है कि दशा का मेरे में भिदाव भी होना शुरू हो गया है। पूज्य श्री बाबूजी' जो कुछ भी Gain हो सकता है ज़िन्दगी में तो, मेरे 'मालिक' के क़दमों में लोटती हर दशा को चाहे भूमा की हो या कोई, पाना ही है, क्योंकि बिना उनके (चरणों के) चैन कहाँ ? अब तो भाई अकिंचन सी नगरी में से इसी दशा में होकर चल रही हूं, इस लिये किसी प्रकार के भार या बोझ का पता नहीं। न जाने क्यों इधर कुछ दिनों से सुस्ती, नींद तथा बेबात की खीझ सी लगने लगती है। किसी पर नहीं, लेकिन खीझ हो जाती है। मेरा भी विचार कुछ यह लग रहा था कि X , Y Point की सैर तो क़रीब–क़रीब पूरी सी लगती थी, किन्तु भिदाव न जाने क्यों नही हो रहा था या कुछ कमज़ोरी के कारण अनुभव अधिक साथ न देता हो। परन्तु 'आपने' लिखा है कि X , Y Point की ताक़त काफ़ी

पैदा हो गई। इसके माने मैं ठीक नहीं समझी, शायद उसकी दशा को हज़म करने की ताकत या क्या। वैसे तो बड़ी हल्की, नम्रता की हल्की फुल्की सी दशा रहती है। किन्तु ऐसा लगता है कि यह हल्की भी (या हल्कापन) मुझमें हज़म होता, पचता चला जाता है। मेरे श्री बाबूजी,अब न जाने क्यों ऐसा लगता है कि अब रास्ता,रास्ता नही महसूस होता है, जैसे पहले लगता था कि मार्ग पर चली जा रही हूं। अब ऐसा नहीं है। अब तो बिना मार्ग के चलती हूं 'श्री बाबूजी'। बिना गति के ही बढ़ती हूँ या गति (चाल) अनुभव में नहीं आती है और बिना पैरों के चलती, बिना कानों के सुनती और बिना हाथों के काम करती तथा बिना मुख, बिना शब्द और वाणी के बोलती। फिर भला Power का एहसास किस तरह हो और आगे चलकर तो भाई, जैसा 'आपने' लिखा कि Duality और Non-Duality एहसास करने की शक्ति ही नहीं रहती और अनुभव करने से जी घबरा जाता है ठीक ही है। यह दशा ऐसी लगती है कि पीछे फिर कर देखने पर यह अनुभव होती है और अब तो भाई, पूज्य 'बाबूजी' ऐसा लगता है कि अक्सर बिना है या नहीं के भी शायद है या हाँ करती चलती हूं, जाने यह क्या दशा है। 'आपने' लिखा है कि दुई तुम में नहीं है, किन्तु मेरा तो यह हाल है कि न दुई और न अद्वैत ही अनुभव कर पाती हूं। मेरे 'श्री बाबूजी' आपने लिखा है कि मैं आधी Century पार कर चुका हूं और आधी में चाहे जितना पार कर लूं, किन्तु 'श्री बाबूजी' मेरा तो यह विचार और अनुभव है कि बिना 'आपके' दुनियाँ कभी थी ही नहीं और न कभी होगी और जिस दिन 'आपके' मन में यह होगा, उस दिन महाप्रलय हो जावेगा और उसमें भी यदि कुछ रहेगा तो वह केवल 'मालिक' का ही अस्तित्व शेष रहेगा। यही मेरा दृढ विश्वास और दृढ स्वाभाविक विचार है। 'आपने' लिखा है कि "मुझे अभी जीना है" पढ़कर सबको अत्यन्त प्रसन्नता हुई। मैं तो केवल इतना चाहती हूं कि 'मालिक' के ही क़दमों और सदैव 'उसकी' ही छाया में रहूं और 'मालिक' कृपा से ऐसा ही होगा।

मेरी एक प्रार्थना है 'श्री बाबूजी' कि 'आप' बीमारी को System में से बाहर फेंकने लगे हैं तो इसका अवश्य ध्यान रखें कि उसकी एक छींट भी 'आप' तक न पहुंचने पावे। 'आप'तो Master हैं, इस लिये ऐसा लिख दिया।

अम्मा 'आपको' शुभाशीर्वाद कहती हैं। सेविका तो मिशन की मैं हूं ही और ज़िन्दगी भर और जीवन पर्यन्त रहूंगी। मेरा सब कुछ मिशन के ही लिये है। इतिः

सदैव केवल 'आपकी' ही
सेविका-कस्तूरी

पत्र- संख्या- 389

प्रिय बेटी कस्तूरी शाहजहाँपुर

शुभाशीर्वाद। 29.4.54

तुम्हारे 25 अप्रैल व 28 अप्रैल के खत मिल गये। मैं पहले खत का जवाब दे रहा हूं। तुम्हारा यह ख़्याल बिल्कुल सही है कि ऐसा कभी न था, जब तुम नहीं थीं और ऐसा कभी नहीं होगा जब तुम नहीं होगी। मैं इसको पढ़कर गद्‌गद् हो गया। मगर बिटिया ! Perfection होते हुए यह असलियत की A,B,C,D, हैं। तुम कहीं यह न कहने लगो कि बाबूजी तुम्हारी हर अच्छी हालत को A,B,C,D, बता देते हैं। मैं अपनी निगाह को क्या करूं ? कि मुझे ऐसा ही मालूम होता है। ईश्वर वह समय लावे कि जिस असलियत की मैंने यह A,B,C,D, बतलाई है, उस पर भी पहुंचो, तब तुमको मालूम होगा, कि मेरी निगाह ठीक थी। इस दायरे के आगे एक ऐसा दायरा आता है कि जहाँ पर ईश्वरी बातें आतीं हैं। ईश्वरी बातों से मेरा मतलब यह है कि जहाँ पर वैदिक ऋषियों के निकट ईश्वर के भेद खुले हैं, और उससे ऊपर वाले दायरे में श्रुति आना शुरू हो जाती है। अब मैं यह नहीं कह सकता कि कौन–कौन इस हालत में पहुंचे हुए थे। Brighter World में अगर मैं टटोलता हूं तो गुरू महाराज (अपने) को छोड़कर एक शख्स निहायत ऊंचा –ऊंचा हुआ मिलता है, और मुमकिन है कि नारदीय सूत्र का लिखने वाला वही हो ओर दो उससे कम मिलते हैं। मगर बिटिया! मैं अपने Writings छोड़ता चला जाता हूं। अगर यह छप गये तो मुमकिन है किसी समय में कोई समझे कि जिस ऋषि ने नारदीय सूत्र लिखा हो, वह सम्भवतः Seven Rings के थपेड़ों को न पार कर सका, इसलिये उसके Expressions में गड़बड़ी रही। यह हमारे गुरू महाराज ही थे, जो Centre तक पहुंचे और दूसरों का पहुंचाने का रास्ता खोल गये। ऐसी Personality अब आना कठिन है। मैं तुम्हें खतों में अक्सर बेकार बातें लिख देता हूं, वह इस लिये कि पढ़कर लोगों का शौक बढ़े।

उससे आगे जो हाल लिखा है, कि जिस हालत में तुम हो, उसमें स्पन्दन नहीं है, वह ठीक है। X, Y, स्थान की यही हालत है। तुमने यह लिखा है कि Special Personality के कारण जीवन मृत्यु की हालत का मज़ा ले रही हूं, मैं कहूंगा कि तुम अपने ही कारण आनन्द ले रही हो।

अब एक बात खुशखबरी की लिखता हूं। चौबे जी ने तुम्हारे Realisation की मिठाई तो मुझे खिलाई नही, अब तुम्हारी जीवन–मोक्ष की दशा है। अब यह दूसरी वाजिब हो गई, तो यह मिठाई हमारी अम्मा हमें ज़रूर खिला देगीं, जब मैं वहाँ आऊंगा। तुमने यह जो लिखा है कि बाँये पैर के तलवे के बीच से कुछ हटकर सरसराहट मालूम होती है,

यह वह स्थान है कि यहाँ पर Meditation करने से ब्रह्मरन्ध्र का स्थान खुल सकता है और इसमें सरसराहट पैदा होने का मतलब यह है कि उसके क़रीब का स्थान खुलना चाहता है। ब्रह्मरन्ध्र का स्थान ऐसा है कि जब ईश्वर को कोई बात बतलानी होती है तो इसी स्थान से आती है गोया यह receiver है और जब बन्दे को कोई खबर भेजनी पड़ती है, तो वह सहस्त्रदल कमल के बीच की पंखुड़ी से भेजता है। गोया एक चीज़ ईश्वर के काम के लिये , और एक चीज़ बन्दे के काम के लिये गोया सहस्त्रदल कमल Transmitter है। एक बात और है, ईश्वर ब्रह्म रन्ध्र से देता है,मगर उसका एहसास सहस्त्रदल कमल में होता है। यह हमारी Research है, जो किसी अवसर पर किसी सवाल के जवाब में मैने बतलाई थी। अब दूसरे खत का थोड़ा सा जवाब देता हूं।

तुमने लिखा है कि X,Y, स्थान का भिदाव अब शुरू हो गया है, मगर अभी पूरी तरह से भिदाव शुरू नहीं हुआ है। जब हो जायेगा, आगे बढ़ा दूंगा। मैं तो यह चाहता हूं कि इसका भिदाव ज़र्रा-ज़र्रा और नस-नस में हो जाये, ताकि जीवन मोक्ष की दशा परिपक्व हो जाये। नींद इस कारण से भी हो सकती है कि मैंने कुछ Sittings तन्दुरुस्ती बढ़ाने के लिये दी है। और खीझ शरीर की कमज़ोरी की वजह से हो सकती है, इसका कोई आध्यात्मिक कारण नहीं हैं। तुमने जो मुझसे यह पूछा है कि X,Y, point पर ताकत आ जाने से मेरा क्या मतलब है, इससे मेरा मतलब यह था कि X,Y, पर जो Conditions हैं, वे पूरी तौर पर उतर जायें और उन पर Command हो जाये अब इसकी ताकत मैं बताता हूं। इस स्थान की ताकत अगर किसी सितारे पर झोंक दी जाये तो, टुकड़े-टुकड़े हो जायेगा, मगर हम इस हद तक ताकत का एहसास नहीं होने देते। इसको अगर कोई शख्स इस्तेमाल करना चाहे तो, सबसे पहले इसके लिये यह लाज़मी होगा कि Limitations तोड़ दे, यह इसका खराब इस्तेमाल इसका यह है और इस हद तक हमारे यहाँ हो भी जाता है कि इसके ज़रिये से दूसरे की हालत भी ऐसी ही पैदा कर दे। बिना कानों के सुनना, बिना हाथ-पैर के चलना, इत्यादि जो तुमने लिखा है, यह ब्रह्म की दशा है। रास्ते पर तुम अब भी जा रही हो, मगर जैसा कि तुमने लिखा है, तुम्हें मालूम यों नहीं होता कि तुम्हें अपना होश ही नही है। तुमने यह जो लिखा है कि माथे के बीच में बड़ा गड्ढा सा हर समय महसूस होता है, यह मेरी समझ में नहीं आया। ज़रा इसके ऊपर Meditation करने के बाद समझ में आ जावेगा। तुम इसकी वजह सोचो ओर लिखो। मई के महीने में मिशन का Foundation day जो मुरादाबाद में होने को था, कुछ कारण वश मुलतबी कर दिया है।

शुभ चिंतक

रामचंन्द्र

पत्र संख्या 390

मेरे परम पूज्य श्री बाबूजी, लखीमपुर

सादर प्रणाम स्वीकृत हो। 1.5.54

कृपा –पत्र 'आपका' मिला–पढ़कर हर्ष हुआ। मेरी कमज़ोरी अब काफ़ी ठीक है। 'मालिक' की कृपा व परिश्रम तथा भाई डाक्टर सिन्हा के परिश्रम से फिर ठीक हूं, कोई चिन्ता की बात नहीं है। पूज्य मास्टर साहब जी पत्र लिखने को भी मना करके Complete Rest दिलवा रहें हैं, किन्तु आज मुझसे 'आपको पत्र लिखने की हुड़क न रुक सकी, इसलिए लिख दिया। 'आपने' जो लिखा है कि असलियत की A,B,C,D है, यह ठीक है, और जैसा 'आपने' लिखा है कि "जिस असलियत की यह A,B,C,D मैं ने बतलाई है, उस पर भी पहुंचो, तब तुमको मालूम होगा कि मेरी निगाह ठीक थी" तब तो ठीक होगा ही। 'आपके' पत्र कृपा से मुझे भी कुछ बातें मालूम हो जाती हैं। मुझे ऐसी दशा तो अब कभी कभी मालूम होती है, कि जैसे जीवन के रहस्यमय पर्दे या chapter कुछ साफ़ होते जाते हैं, किन्तु न जाने क्यों, जैसे पहले मैं लिखा करती थी कि Intelligence खुलती व फैलती चली जाती है, परन्तु अब लिखने को मैं कुछ न कुछ अब भी लिखा ही करती हूं, परन्तु मुझे न जाने क्यों अब ऐसा अनुभव नहीं होता है । मुझे Intelligence का भी भान नही होता, मैं समझ लेती हूं कि मुझे तो ऐसा लगता भी है कि Intelligence के लिये मुझमें गुंजाइश ही नहीं रही। मुझे कुछ ऐसा लगता है 'श्री बाबूजी' कि जैसे मेरा तो मैंपना मैं लिखा करती थी, मुझे अनुभव नहीं होता, किन्तु अब देखती हूं कि जैसे मेरा अस्तित्व भी मिटता जा रहा है या भाई, ऐसा लगता है कि मेरा अस्तित्व कही लय हुआ जाता है। अस्तित्व है क्या, यह मुझे मालूम नहीं। 'आपने' लिखा कि "रास्ते पर तुम अब भी चल रही हो, तुम्हें मालूम यों नहीं होता कि तुम्हें अपना होश नहीं" सो मेरे 'श्री बाबूजी' न जाने क्यों मुझे अपना होश नहीं। मुझे तो इसका भी एहसास नहीं होता। 'आपके' ऐसा लिखने पर मैं ने ध्यान दिया तो भी न मालूम पड़ा और भाई, मालूम भी कैसे पड़े, मैं तो ध्यान किसी भी प्रकार को भी अपने में स्थान देने की गुंजाइश ही नहीं कर पाती हूं। बस ऐसी दशा है कि ऐसा लगता है कि एक स्थिर से समुद्र में मैं क्या, बल्कि मेरे अस्तित्व की धूमिल छाँहसी तैरती चली जाती है और ऐसा है कि मेरे अस्तित्व के तैरते चले जाने पर भी अथाह समुद्र के जल में कोई परिवर्तन या स्पन्दन तक नहीं होने पाता और मेरा अस्तित्व अवश्य ही ऐसा लगता है कि मानो तिलतिल कर उसी जल में मिलकर धूमिल या धुधला सा होता जाता है। मुझे ऐसा लगता है कि जब धूमिल अस्तित्व भी बिल्कुल जल में मिल जायेगा, उसी दिन जीवन–मोक्ष दशा पूर्ण होगी और मुझे न जाने क्यों ऐसा भी लगता है कि जितना जल अस्तित्व पार कर चुका है, उधर यानी उतने जल में मैं उसे ही यानी अपने अस्तित्व को ही पाती हूं। पता नहीं यह मेरी क्या दशा है, अब हल्कापन या

सूक्ष्मता कहते में भी ठीक Expression नहीं पाती हूं, इसलिये कि शायद वह भी कहीं पीछे छूट गया था कहीं लय हो गया, अब 'आप' ही जानें। ऐसा लगता है कि अब condition से ज़र्रा-ज़र्रा भींग तो चुका है, हाँ भिदाव में जितना समय लग जावे। माथे में गड्ढा होने की जो वजह पूछी, सो मेरी इतना समझ में कुछ आता है कि इसका कुछ connection ब्रह्म -रन्ध्र से तो नहीं है। यह उसका ही शायद मार्ग हो, ठीक तो 'आप' ही लिखियेगा।

अम्मा कहतीं हैं कि 'आपको' देखे एक वर्ष हो गया। 'आप' अब काँठ की छुट्टी यहाँ के लिये ही ले लीजिये। मिठाई खानी है तो जल्दी आइये। जिन जिन के पत्र थे, उनके पास भिजवा दिये। अम्मा कहती हैं, लिखियेगा कि कब आ रहें हैं। याद अब सबको 'आप की' बहुत आ रही है। छुट्टी जून में पहले या बाद में अब की से लेंगे। अम्मा 'आपको' शुभाशीर्वाद कहती हैं। ताऊजी के सीने में हल्के प्रकाश के बादल से मालूम होते हैं। अब जकड़न नहीं, बल्कि सब ऊपर आ गया लगता है, किन्तु इच्छा -शक्ति कतई नहीं, उनके बहुत ही कम है। 'मालिक' की कृपा से दशा में लय सी होने लगी हूं। इतिः

सदैव केवल 'आपकी' ही सेविका,

पुत्री कस्तूरी

पत्र संख्या 391

मेरे परम पूज्य श्री बाबूजी, लखिमपुर

सादर प्रणाम स्वीकृत हो। 4.5.54

आशा है लिफ़ाफ़ा पहुँचा होगा। मुझ में अब काफ़ी ताकत पैदा हो गई है। 'मालिक' की कृपा ने मुझे भीतरी ताकत दी है, धन्यवाद है 'उसका'। क्या करूँ, जब कमज़ोरी अधिक हो जाती है, तो बिना सहारे के आँख नहीं खुलती, परन्तु सहारा मिलता भी अवश्य है, 'मालिक' का बहुत -बहुत धन्यवाद है। कल, परसों से कुछ ऐसी हुड़क सी है, कि कभी लगता है, 'आप' छड़ी लिये सामने खड़े हैं, कभी लगता है, अब आवाज़ दी। खैर, 'मालिक' की कृपा से जो कुछ भी आत्मिक -दशा है, सो लिख रही हूं।

ऐसा लगता है कि जब शरीर का ज़र्रा -ज़र्रा, कण-कण छिन्न-भिन्न हो चुका है, तो भाई, ध्यान के लिए spot ही न रहा और सच तो यह है कि जिस दशा में हूं, वहाँ एक कण, परमाणु तक की गुज़र नहीं है। कुछ ऐसा लगता है कि मानों दशा मुझमें समाती चली जा रही है। ऐसा लगता है कि मेरे उस धूमिल से अस्तित्व में दशा का समुद्र समाता चला जा रहा है और अचम्भा यह है कि समुद्र का सारा जल अस्तित्व में समाता चला जा रहा है और अस्तित्व ज्यों का त्यों है। वह तो मानों मुर्गाबी हो गया है। सारा जल सोखते चले जाते हुए भी उसके परों में पानी की बूंद तक ठहरती ही नहीं। सूखा का सूखा सा ही है।

यद्यपि मेरी नस–नस में दशा के समुद्र का जल भिदता, समाता चला जाता है, परन्तु वह तो ज्यों का त्यों स्पन्दन रहित, नीरव है।

मेरे 'श्री बाबूजी' कुछ ऐसा लगता है कि माथे के बीच, सिर के पीछे की तरफ़ तक जो गड्ढा सा महसूस होता है, उसका सम्बन्ध कुछ Inter–commune से लगता है और कुछ ऐसा है कि सुराख सिर को भेद कर ऊपर तक गया है, और फिर ऐसा लगता है कि उसका सम्बन्ध ऊपरी दुनिया से रहता है, मानों वहाँ की खबर लाने का यंत्र सा लगता है, ठीक तो 'आप' ही बतावेंगें। भाई, मेरा तो यह हाल है कि अपनी condition को Read करने के लिये न जाने क्यों मैं स्वयं उस तक नहीं पहुंच पाती, बल्कि मुझे तो 'मालिक' की कृपा से, बिना अपने झाँके ही अब दशा Read हो जाती है।

मेरे प्रभुवर! तबियत तो कुछ ऐसी है कि स्वयं अपने आपको एक क्षण भी बर्दाशत नहीं कर पाती है। खुद मेरे हृदय में मेरी गुंजाइश ही नहीं रही, तभी तो ऐसा लगता है कि जो कुछ धूमिल सा मेरा अस्तित्व है, वह भी मेरे हृदय में नहीं, बल्कि दूर, बहुत दूर, न जानें कहाँ है और जिससे मेरा सम्बन्ध टूट चुका है, बिसर भी चुका है और अस्तित्व भी शेष है तो क्यों ? किसी से मिलने के लिये, 'उसे' पाने के लिये। कुरेदन ही मानों मेरा अस्तित्व है और कुछ नहीं। अब तो बिना डोरे के भी 'मालिक' से जुड़ा है, बिना हृदय के भी मिला हुआ है। अब तो दूर कहूं तो 'वही' और पास है तो 'वही', केवल 'उसी' का Heart है, 'वही' जाने। अम्मा 'आपको' शुभाशीवार्द कहती हैं। इतिः–

सर्व–साधन विहीना
सेविका कस्तूरी

पत्र संख्या 392

मेरे परम पूज्य प्रभुवर श्री बाबूजी, लखीमपुर
सादर प्रणाम स्वीकृत हो। 10.5.54

'आपका' पोस्टकार्ड एक आया–सुनकर प्रसन्नता हुई। मैं अब सेहत के लिये ज़रूर परिश्रम करूँगी। मैं सदैव यही चहती हूं कि मेरी तरफ से 'मालिक' को कोई फ़िक्र, कोई परिश्रम अधिक न पड़े, इसलिये मैं बराबर कोशिश करूँगी कि बीमारी नस–नस से दूर हो जावें। किन्तु 'श्री बाबूजी' कभी कभी शरीर की कमज़ोरी के कारण बिल्कुल will बंधने में सुस्ती मालूम पड़ती है, यद्यपि 'आपका' पत्र तो मेरी नस–नस में ताकत पैदा कर देता है। कुछ नींद सी, कुछ सुस्ती सी, मुझ में पूरी will power नहीं आने देती। खैर, शरीर तो अच्छा होकर रहेगा, चाहे कैसे हो। 'आप' अब चिन्ता न करें, मैं कतई ठीक हो जाऊँगी। 'मालिक' की कृपा से जो कुछ भी आत्मिक –दशा है, सो लिख रही हूं।

भाई, ऐसा लगता है कि point 'Z' सामने है। कुछ यह दशा है कि ऐसा लगता है कि सहज–अवस्था मुझ में पचती चली जाती है। नहीं, नहीं, बल्कि सहज–अवस्था तो मेरा रूप ही हो गया है। मेरा तो मानो सहज रूप हो गया है। मेरा हर कण–कण सहज रूप को प्राप्त हो चुका है। मेरे 'श्री बाबूजी' दशा क्या है, एक अजीब छटा है, जो देखते ही बनती है। कहने में कुछ शब्द का आवरण सा आ जाता है। मुझे तो बाहर–भीतर बस यही दशा अनुभव होती है, या यों कह लीजिये कि सहज–अवस्था की महक मानों मेरे कण कण में बस चुकी है। भाई, अब तो दशा में साम्यावस्था तथा individuality का भी लेश मात्र लगाव तक नहीं लगता। यहाँ तक कि इन दशाओं को सोचने से मेरी दशा पर दबाव सा पड़ने लगता है तथा मेरी स्वतंत्रता में कुछ धब्बा सा लगने लगता है। हाल यह है कि ऐसा लगता है कि न तो बंधन ही है और अब तो स्वतंत्रता भी एहसास में नहीं आ पाती। अब तो ऐसी दशा है कि समुद्र में चाहे मणि–मुक्ता कुछ हो, किन्तु मुझे तो एहसास केवल जल ही जल मात्र का है और कुछ नहीं। भाई, ऐसा लगता है कि अन्दर तथा वाह्य वृत्तियों का अस्तित्व भी मिट चुका है। ऐसे ही बाहर की वस्तुओं तक का भी वस्तुएँ दीखती तो हैं, किन्तु अस्तित्व नष्ट हो चुका है। मेरे 'श्री बाबूजी' कुछ ऐसी दशा है कि मैं तो ऐसी लगती हूं, दुनियाबी ही कहिये। जैसे अभी क्या, बल्कि जन्म–जन्मान्तरों तक जिसका ध्यान पूजा या ईश्वर की ओर कभी गया ही न हो, और अब भाई, आशा ही क्या है। क्यों कि ऐसा लगता है कि पूजा – व ईश्वर –प्रेम के तो मुझमें जैसे संस्कार ही नहीं पड़े, फिर श्रद्धा और Faith कहाँ से आवे, वैसे 'मालिक' जानें। अब न जाने क्या बात है कि पहले जैसे फैलाव सा लगता था पर अब इसका वहम तक समाप्त हो चुका, और फैलाव होता क्या है, मुझे यह तक याद नहीं। अब तो ऐसा लगता है कि पैराव ही पैराव है। कुछ यह है कि जो पैराव आता है, उसमें भी मैं मौजूद रहती हूं और जो गुजर चुका, उसमें भी समाई रहती हूं। यह न जाने क्या बात है। कुछ यह है कि सब में हूं और कहीं नहीं हूं। यही उल्टी सीधी मेरी हालत है। मेरे 'श्री बाबूजी' कहीं, मुझमें ख्याली थकान तो नहीं है।

अम्मा 'आपको' शुभाशीर्वाद कहती हैं। इतिः–

सदैव केवल 'आपकी' ही सेविका
पुत्री कस्तूरी

पत्र संख्या 393

मेरे परम पूज्य श्री बाबूजी, लखीमपुर
सादर प्रणाम स्वीकृत हो। 17.5.54

आशा है, मेरा एक पत्र पहुंचा होगा। 'मालिक' की कृपा से जो कुछ भी आत्मिक–दशा है, सो लिख रही हूं ।

कुछ इतनी हल्की हो, खाली सी दशा है कि शरीर तक ऐसा लगता है कि हल्का – फुल्का सा इधर –उधर उड़ा करता है। ऐसा लगता है, उसे कहीं उठाकर ले जाने की आवश्यकता नहीं पड़ती, बल्कि वह तो स्वयं ही उड़ता सा फिरता है। कुछ भाई ऐसी दशा है कि कोई ज़रा सा भी pressure या दबाव उसे स्वप्न में भी स्पर्श तक नहीं कर पाता है। ऐसा लगता है कि मेरी दशा तक पहुंचते पहुंचते हल्कापन भी निकल जाता है, क्यों कि देखती हूं कि मेरी दशा तो ऐसी है कि हल्के–फुल्केपन के दबाव या pressure में आ ही नहीं पाती, बंध ही नहीं पाती और बंधेगी तो भला क्या, क्यों कि देखती हूं कि उसे तो स्वतंत्रता कहने तक का pressure स्पर्श तक नहीं कर पाता। मेरे 'श्री बाबूजी' वह तो बस जैसी भी है, बस उसी की गम है उसमें। नहीं तो, वह तो, मुक्त फिरती है, उसमें किसी का भी गम नहीं और अब शायद मुक्ति की भी नहीं, क्यों कि वह तो उस यानी मुक्ति की भी दशा में भूली सी, भटकी सी, विस्मृत सी ही है। न जाने क्यों, ऐसा लगता है कि मुक्त की दशा के मैदान में भी मुक्त सी बेसुध सी चली जा रही है। कुछ ऐसा है कि उस मैदान में भी जहाँ देखती है, मानो अपना ही मुख दिखाई पड़ता है। उसे उस दर्पण में भी मानों स्वयं ही स्वयं दीखता है और स्वयं को या सत्य भी कह लीजिये को भी देखती है, तो भी मुक्त ही रहती है। मेरे 'श्री बाबूजी' कुछ अजीब दशा है कि जो कहूं , मेरे रोम–रोम में दशा (मोक्ष की) भिद गई, कह नहीं सकती, क्यों कि उस मैदान से रोम–रोम मुझे अनुभव में ही नहीं आ पाता, किन्तु यह भी है कि यह दशा पाती भी रोम–रोम में हूं। न जाने क्या बात है कि जैसे पहले मैं लिखा करती थी कि अपने को दूर, बहुत दूर पाती हूं, किन्तु अब तो कुछ नहीं कह सकती, चाहे दूर कह लीजिये या पास। मेरे लिये समान है। दूरी, नज़दीकी का प्रश्न ही नहीं उठ पाता, दोनों समाप्त हो चुके। मेरे तो कुछ अनुभव में ही नहीं आ पाता। या यों कह लीजिये कि मुझे अब जाने क्या हो गया है कि मुझे तो अब कुछ नहीं दिखाई पड़ता, शायद रोशनी भी नहीं रही और है, तो मुझे पता नहीं। मुझमें तो न दुई थी और अब न एकता ही महसूस होती है। मैं तो सब से मुक्त हूं, मुझे कुछ पता नहीं। जाने कैसे बस 'मालिक' की ही कृपा से बिना प्रकाश के भी चलती जा रही हूं।

अम्मा 'आपको' शुभाशीर्वाद कहती हैं। इतिः–

सदैव केवल 'आपकी' ही कृपाकांक्षिणी

सेविका पुत्री कस्तूरी

पत्र संख्या 394

प्रिय बेटी कस्तूरी, शाहजहाँपुर

खुश रहो। 21.5.94

सब खत मिल गये। 10 मई व 17 मई के जो खत मिले हैं, उन सबका जवाब एक साथ लिखे देता हूं। X,Y, पर जो तुम हो, उस हालत का भिदाव अच्छा हो गया है, मगर अभी पिण्ड में होना बाकी है। तुमने यह लिखा है कि Z स्थान की हालत तक तुमको नहीं पहुंचाया गया है। कुछ जीवन-मोक्ष की दशा के भिद जाने का इन्तज़ार है। यह तुम्हारा एहसास सही है कि तुम में Non-Duality Reign कर रही है। तुमने यह लिखा है कि कण -कण सहज रूप को प्राप्त हो चुका है, इससे मैं तुम्हारा मतलब नहीं समझा। बाहर वृत्तियों का अस्तित्व मिट जाना लिखा है, यह सही है। वृत्तियाँ तुम्हारी सब Suspended हालत में आ चुकी हैं और यह फिर लय अवस्था की शुरूआत है, मगर अभी वृत्तियाँ पूरी शुद्ध हालत में नहीं आई हैं। इनकी सफ़ाई मुझे करनी होगी। इस समय तो मुझे तुम्हारी तन्दुरुस्ती की चिन्ता है। अभी बहुत कुछ बाकी है, इसलिये तन्दुरुस्ती की और भी ज़रूरत है।

17 मई के खत में तुमने यह जो लिखा है कि "पहले मैं अपने आप को दूर पाती थी, मगर अब दूर और नज़दीकी का खयाल नहीं है।" इसके मानी यह हैं कि ईश्वर से कुछ नज़दीकी ज़्यादा और बढ़ गई है। तुमने त्रिकुटी में जो गड्ढा एहसास किया था और उसकी वजह मैं ने तुम्हीं से पूछी थी। तुमने उसके बारे में जो कुछ लिखा है, वह सही है। अब तुम एक बात और एहसास करना कि जहाँ पर चोटी रक्खी जाती है, वहाँ पर कुछ चौड़ाई तो महसूस नहीं होने लगी है ? या कुछ गड्ढा सा तो नहीं मालूम होता है ? अभी मैं अपने आने की तारीख मुकर्रर नहीं कर सकता, दो-तीन दिन में यह बात मालूम होगी।

शुभ चिंतक

राम चन्द्र

पत्र संख्या -395

मेरे परम पूज्य श्री बाबूजी, लखीमपुर

सादर प्रणाम स्वीकृत हो। 21.5.54

आशा है पूज्य मास्टर साहब व जिया वगैरह आराम से पहुँच गये होगें। इधर मुझे ऐसा लगता है कि कुल system मेरा मानों बीमारी से रहित हो चुका है। लगता है एक

निशान भी न बीमारी का और न वैसे भी रह गया है। बड़ी साफ़ दशा झलकती है। 'मालिक' की कृपा से जो कुछ भी आत्मिक –दशा है, सो लिख रही हूं।

भाई ऐसा लगता है कि मेरी concious तो sub-concious mind में ही रहती है। अब इससे नीचे कभी रुख़ तक नहीं फेरती, बल्कि वही उसका घर समझ लीजिये या यों कहिये कि नीचे उसके लिये कुछ है ही नहीं और शायद यह ठीक भी होगा। उसमें भी मानों सर्वत्र मैं समा चुकी हूं। वह भी ऐसा दर्पण बन चुका है कि जहाँ देखती हूं, अपना मुहं दिखलाई पड़ता है। किन्तु यह न जाने क्या बात है कि अपना मुख दिखाई देते हुए भी मैं तो मुक्त या स्वतंत्र ही रहती हूं। बधंन में आ ही नहीं सकती। मैं तो जाने कहाँ विचरती हूं, पता नहीं ।

मेरे श्री 'बाबूजी' मेरा तो यह हाल है कि मुझे खुशी बहुत लगती है और ऐसी है कि उसमें बंधन नहीं है। स्वतंत्र खुशी है। बंधन यों नहीं कहा कि अब न तो ऐसा ही लगता है कि हृदय में हो रही है, बल्कि एक आज़ाद और सर्वत्र दशा है। न तो यह लगता है कि पैदा हो रही है, और न कुछ उत्साह व उमंग मिश्रित है, बल्कि स्वतः कुछ यही दशा है। कुछ ऐसा भी लगता है कि इस खुशी में एक मीठा दर्द अवश्य मिला हुआ है और इतना झीना कि पकड़ाई में मुश्किल से ही आता है, कुछ बस ऐसा कि काँटे की तरह कसकता ही रहता है। कुछ ऐसा लगता है कि कोई बड़ी शुद्ध सी दशा, साफ़ सी दशा हो गई है। पूज्य 'श्री बाबूजी' यद्यपि यह खुशी की दशा सर्वत्र मालूम होती है, बाहर –भीतर सब जगह, किन्तु न जाने क्या बात है कि सदैव पास या उसमें रहते हुए भी मैं उसे भी भूली सी रहती हूं। मुझे ऐसा लगता है कि मैं अपनी concious (सुध–बुध) को भी भूल चुकी हूं। भूल ही क्या चुकी मेरा तो मानों किसी से सम्बन्ध ही नहीं रह गया है। मेरा तो यह हाल है कि अपनी आत्मा की भी मुझे खबर नहीं। मेरा तो शायद आत्मा से भी सम्बन्ध टूट सा ही चुका है। मुझे तो ब्रह्म या अहम्–ब्रह्मास्मि वगैरह सब स्वप्त–वत् हो चुके हैं। कुछ यह हो गया है भाई, कि पहले जैसे आत्मा Prick किया करती थी, परन्तु अबयह सब समाप्त हो चुका और Prick आत्मा क्या करे , जब मुझे तो ऐसा लगता है कि आत्मा जाने मुझमें है या नहीं, मुझे कुछ एहसास ही नहीं होता। इधर मुझे जाने क्या हो गया है कि मुझे लगता है, जैसे Brighter world की मुझे झलक मिलने लगी है। प्रार्थना अब गाई जाती है तो वहाँ मुझे कुछ हलचल सी मालूम पड़ती है। अब 'आप' ही लिखिये कि क्या बात है । मुझे ऐसा लगता है कि शरीर यहाँ होते हुए भी मैं चाहे कहीं घूम, फिर सकती हूं, कुछ ऐसा ही हल्कापन अब हो गया है। मेरा तो सम्बन्ध सबसे है यानी जड़–चेतन और किसी से भी नहीं है। मुझे खुशी अधिक है और कुल system तक शीशे की तरह साफ़ पड़ा है। बीमारी वगैरह भी सब साफ़ है। हर चीज़, हर हालत अपने असली रूप में दिखाई पड़ती है, नहीं, नहीं, बल्कि असल तत्व या असली रूप ही मेरे नेत्रों की ज्योति में समा चुका

है। सब कुछ 'आप' ही जानिये। मेरे पास तो वही है, जो 'आपने' दिया है। ऐसा लगता है कि कोई अब मेरे सामने नया chapter खुल गया है। लगता है, नवीन और असल तत्व या असल दशा में प्रवेश कर रही हूं।

पूज्य मास्टर साहब से मेरा भी प्रणाम कहियेगा। मेरे 'बाबूजी' मैं तो 'आपकी' हूं और 'आपकी ही होकर रहूंगी। मुझे तो पता नहीं कि खुशी बहुत है या कसक है, मुझे पहिचान नहीं, 'आप' ही लिखेगें, तो पता चलेगा। इतिः-

सदैव ही कृपा कांक्षिणी सेविका
पुत्री कस्तूरी

पत्र संख्या 396

मेरे परम पूज्य तथा श्रद्धेय श्री बाबूजी, लखीमपुर
सादर प्रणाम स्वीकृत हो। 22.5.54

मेरा एक पत्र जो पूज्य मास्टर साहब जी के हाथों भेजा था, सो मिला होगा। अब मालिक' की कृपा से जो कुछ भी आत्मिक दशा है, सो लिख रही हूं।

यहाँ 'आपके' पास आने को तबियत बेकाबू हो जाती है, किन्तु मैं ने तो 'आपसे' हर हालत में तबियत को काबू करना ही सीखा है। शायद इसीलिये मैं ने अपने मन को भी मालिक' के ही पास रखा दिया है, कि यदि कभी वह बेकाबू होने भी लगे, तो 'वही' इसे ठीक भी ला देगें। अब तो 'आप' 6,7 जून को यहाँ पधारेंगे ही। मेरी तो यही इच्छा रहती है कि कैसे इन नेत्रों की ज्योति-बिन्दुओं में अपने 'मालिक' को ही रमाये रखूं। भाई,'उसने' तो यह कृपा भी कर ही दी है, परन्तु मैं ही ऐसी भूली बिसरी हूं कि इस दशा को भूली रहती हूं, नहीं तो मेरे में अब केवल 'उसके' और है ही क्या ?

मुझे तो अब ऐसा ही लगता है कि शायद Brighter World में ही मेरी रहन रहने लगी है। अन्दाज़ से कह दिया, वैसे तो 'आप' ही जाने, जहाँ लिये जा रहे होंगें, वहीं मेरी रहन है। मैं तो ऐसी निर्दोष (innocent) ही कहिये, दुनिया में रहती हूं कि जिसका मुझे स्वयं ही पता नहीं।मेरी तो स्वयं अपने को पहिचानने की भी शक्ति विस्मृत ही नहीं, बल्कि लुप्त ही हुई जा रही है। System दमक रहा है, उसमें बीमारी का नाम निशान तक नहीं है। नरवस system में से भी कमज़ोरी कुछ हटती ही मालूम होती है। पीलापन भी शरीर से कम है, चेतनता भी अधिक है, शेष हाल डाक्टर साहब स्वयं ही बता देगें।

मेरी तो यह दशा है कि स्मृति सोई हुई रहती है, किन्तु न जाने कैसे बस 'मालिक' की कृपा से कुछ से कुछ 'वही' सिखाता तो जाता ही है। मुझे तो स्वयं अपनी Health की

धुन सवार है। 'मालिक' पर कम से कम परिश्रम पड़े, मैं ऐसा ही उद्योग करूँगी। पूज्य मास्टर साहब से मेरा प्रणाम कहियेगा। अम्मा 'आपको' शुभाशीर्वाद कहती हैं तथा केसर, बिट्टो प्रणाम कहती हैं।इतिः–

सदैव केवल 'आपकी 'ही कृपाकांक्षिणी
सेविका–पुत्री–कस्तूरी

पत्र संख्या 397

मेरे परम पूज्य श्री बाबूजी, लखीमपुर
सादर प्रणाम स्वीकृत हो। 23.5.54

एक पत्र कल डाल चुकी हूं। आज केसर का Result निकल आया। ईश्वर का बहुत–बहुत धन्यवाद है। 'मालिक' की कृपा से वह IInd पास हो गई। पुनः पुनः मुबारक बादी तथा धन्यवाद है। ताः 21 के पत्र में 'आपने' पूछा था कि जहाँ पर चोटी रखी जाती है, वहाँ पर चौड़ाई या गड्ढा कह लो तो महसूस नहीं होती, इसका उत्तर तो मैं 10 ताः या इससे पहले लिख चुकी हूंगी, क्यों कि ता. 2 की डायरी में लिखा है, खैर, अब लिखती हूं कि मुझे गड्ढा व चौड़ाई महसूस होती है और गुदगुदी या सरसराहट भी रहती है और ऐसा लगता है कि माथे से ये हर Point तक मार्ग बिल्कुल साफ़ व खुला सा है। तथा सम्बन्ध कुछ ऊपर कहीं भी होगा। किस तरह का है, यह मैं कह नहीं सकती और मुझे कुछ मतलब भी नहीं

ताऊजी 'आपसे' प्रणाम तथा अम्मा शुभाशीर्वाद कहती हैं। पूज्य मास्टर साहब जी से भी मेरा प्रणाम कहियेगा। इतिः–

सदैव 'आपकी' ही सेविका
पुत्री कस्तूरी

पत्र संख्या 398

प्रिय बेटी कस्तूरी, शाहजहाँपुर
खुश रहो। 24.5.54

मैं ने एक पत्र भेजा है, जो पहुँच गया होगा। चाहता मैं यही हूं, कि तुम निरोग हो जाओ। बात यह है कि दुनियाँदारी में मोहब्बत गरज़ से होती है, और मेरी गरज़ यह है

कि तुमसे लोगों को फायदा अब पहुँचता है, मगर ढोलक की डोरी जब तक कसी नहीं होती, आवाज़ में सम पैदा नहीं होता।

अब मतलब पर आता हूं। तुमने 22 मई सन् 54 के पत्र में लिखा है कि "शायद Brighter World में ही मेरी रहन – होने लगी है।" बस इतना ही अन्तर है कि तुमने उसको 'शायद' लिखा है। अगर वाकई यह हालत हो जाती तो यह शब्द 'शायद' जी से कभी नहीं निकलता। अब मैं तुम्हें बताता हूं कि Brighter World अभी इतनी दूर है कि अगर उस तरफ निगाह दौड़ाई जावे तो भी वह (निगाह) थकने लगेगी। मगर हाँ, जो कुछ तुम्हारी मौजूदा हालत है, वह Brighter World का grossest (स्थूल)form है।

वह दुनियाँ तो भाई केवल कहने के लिये ही है, इसलिये कि और क्या शब्द हो सकता है, जिससे उसको ज़ाहिर किया जावे। शब्द Bright यों कह लेते हैं कि वह चीज़ उन्नति किये हुए लोगों के लिये है और जहाँ बड़े लोग रहते हैं, उस जगह का नाम भी बड़ा ही करके इज़हार करते हैं। वैसे अगर कोई मुझसे पूछे कि आप उसका नाम क्या रखेंगे, तो मैं उसको No World कहूंगा। मगर खैर, क्यों कि तुम्हारे ख्याल में Brighter World मौजूद है और यह शब्द भी तुमने मेरे मुंह से सुने हैं, इसलिये अच्छा है कि तुम्हारी रुचि उस तरफ़ है। मगर क्या कोई अक्लमन्द आदमी आजतक वहाँ पहुंच सका है ? और बेवकूफ तो उससे कोसों दूर हैं। इस बात को कि क्या कोई अक़्लमन्द आदमी आजतक वहाँ पहुँचा है, मुमकिन है कि चौबेजी अच्छा समझा सकें। बताते वक्त यह ख्याल ज़रूर रहना चाहिये कि उनका अक्लमन्द से मतलब ज्ञानी से तो नहीं होगा, अगर इससे मतलब है तो मैं यही कहूंगा कि ज्ञानियों की वहाँ गुज़र नहीं। हाथी से अगर कहा जाये कि कुलिया में बन्द हो जाये, तो वह कभी नहीं हो सकता। बेवकूफ़ आदमी यों नहीं पहुँच सकता कि उसके पास भी कुछ है, और है क्या–कुछ सामान और असबाब और वह जाना चाहता है मय उसके और वहाँ उसके रखने की जगह नहीं। अब ज्ञानियों की सुनो–वह त्याग–त्याग कर के अपने को खाली समझते हैं। मगर उनको अभी इतनी समझ मौजूद है, बस यह एक ऐसी चीज़ है, कि अगर कहीं वहाँ पहुँच जायें तो World और Brighter World में कोई फ़र्कनही रहेगा। अब पहुँचता कौन है, जिनमें यह दोनो चीज़ ऐसी लय हो गई हैं, कि उनकी ताकत (जो कुछ कि Creative Power थी) खत्म होकर अपने असल में फिर चुकी है। अब यह चीज़ कैसे हो सकती है, जब कि अपनी निगाह अपनी समझ पर न रहे, बल्कि वहीं रहे, जहाँ पर रहने से, अपने ठीये का पता मिलता है। अब यह चीज़ कैसे नसीब हो ? जब इन्सान अपने ठीये को छोड़ दे। अब तुम मुझसे पूछो कि ऐसी जगह भला कोई क्यों पहुँचने का इरादा करे, जहाँ बे – ठीये का होना पड़े। मैं समझता हूं कि इसीलिये लोग वहाँ पहुँचने की कोशिश नहीं करते।

तुमने 21 मई के खत में जो खुशी के बारे में लिखा है, तो जो खुश होता है, उसे तो खुशी महसूस ही होती है, जहाँ शादी – विवाह का मौक़ा होता है, हर आदमी खुश नज़र आता है। Environment भी असर डालता है। इन्द्रियाँ जब External object से intact होतीं हैं तो, वही असर मानस ले लेता है। अगर इन्द्रियों में शुद्धता (originality तो खैर मैं अभी नहीं कहूंगा) पैदा हो चुकी है और मानस उसकी लज्ज़त (Taste) ले चुका है तो जिस चीज़ की उसमें लज्ज़त है, उसी चीज़ को वह बाहर देखती हैं और वही अब उसके देखने की चीज़ है। यही हालत सब conditions की है, कि अगर उसमें हम अपने आपको बिल्कुल रुजू कर देते हैं, तो मानस की depth में उसका छींटा लग जाता है, और वही चीज़ सामने दिखाई पड़ती है। मिसाल के तौर पर एक चोर अपने माल की बहुत हिफ़ाजत कर सकता है, इसलिये कि खुद चोर होने की वजह से वह सबको चोर समझता है। इसी तरीके से जो अच्छा आदमी है, वह सब को अच्छा समझता है। मगर जब इन्द्रियों में originality शुरू हो जाती है, तो मन्ज़र (Scene) ही बदल जाता है और इस खुशी को, जो इस वक्त है, इसको समझने के लिए Happiness कह लो Bliss में तबदील हो जाती है। Brighter World के जो लोग हक़दार बन जाते हैं, उनकी कैफ़ियत यह हो जाती है कि Bliss भी नहीं रहती। यह तो तुम्हारी खुशी की कहानी है। अब Bliss की कहानी मुमकिन है, कि मेरे लखीमपुर पहुँचने पर शुरू हो, बशर्ते कि मैंने तन्दुरूस्ती अच्छी पाई। कहो तो इसके बाद वाली भी कहानी लिख दूं। मान लो originality पैदा हो गई, तो हम में क्या विशेषता हुई। यह चीज़ तो जिस वक्त हम पहली ही बार आये थे, हम में मौजूद थी। बात बुरी ज़रूर है, मगर कहूंगा ज़रूर कि इसमें ईश्वर का कुछ एहसान न था। अब अगर इससे आगे हम बढ़ते हैं, तो हम यह ज़रूर कहेंगे कि अब हम उस शक्ल में आये हैं कि जो शक्ल हमारी originality बनने से पहले थी। एक बात मैं लिखता हूं, मुमकिन है, सोचने वाले मेरे बाद किसी वक्त में ग़ौर करें कि हम तो इस तरीक़े से Brighter World के हक़दार बनते हैं, मगर हम तो इस तलाश में हैं कि कहीं ऐसा नुस्ख़ा हाथ लग जाये कि उसको इस्तेमाल करने से कहीं यह बात हो जाये कि Brighter World हमको लेने का हक़दार बन जाये। आगे कहने की मुमानियत हो गई।

तुमने जो कसक लिखी है, यह तो रहनी ही चाहिये। यह वह ओस है कि इच्छा –शक्ति की गर्मी से ऊपर को उड़ती है। यही एक ज़रिया है, जो धुर तक पहुंचा देता है। यह वह औज़ार है कि खता नहीं करता। इसकी शुरूआत बेचैनी है और इसकी तरक्की की हुई चीज़ कसक है। तुमने एक जगह पर यह लिखा है कि "मैं अपनी conciousness को भी भूल चुकी हूं"। यह सही है। Reality के शुरू होने पर यह चीज़ पैदा हो जाती है। एक जगह पर तुमने यह भी लिखा है कि "मुझे तो अपनी आत्मा की भी खबर नहीं"। चूंकि तुम्हारा Attention दूसरी तरफ Divert है, इसी से इसका पता नहीं चलता। उस हालत

के सिद्ध होने का तरीका भी यही है। मगर यह चीज़ अभी बिल्कुल बाकी है। यह जो तुमने लिखा कि "ब्रह्म और अहं –ब्रह्मास्मि सब स्वप्तवत् हो चुके हैं, यह बहुत कुछ ठीक है, मगर इसका अंकुर अभी बाकी है। चीज़ बदल गई है और वह रास्ते की बातें थीं। मैं तो "अहं–ब्रह्मास्मि" वालों को बस ऐसा समझता हूं, जैसे मनुष्यों में पहलवान और इतनी ही उसकी तारीफ़ कर देता हूं कि वाकई सैण्डो में बड़ी ताक़त थी और राम–मूर्ति भी बढ़ा–चढ़ा था। बस तुम्हारे खतों का इतना ही जवाब है। हाँ, एक चीज़ और नज़र पड़ गई। तुमने लिखा है कि "मेरे पास तो वही है, जो आपने दिया है" तो मैं भी कहता हूं कि "मेरे पास भी वही है, जो तुमने दिया है"। तो अब किसी का एहसान नहीं रहा और न शुक्रिया की ज़रूरत रही।

शुभचिंतक
रामचन्द्र

पत्र संख्या 399

मेरे परम पूज्य श्री बाबूजी, लखीमपुर
सादर प्रणाम स्वीकृत हो। 27.5.54

'आपका' कृपा –पत्र जो डाक्टर साहब के हाथ मेरे और केसर के लिये भेजा सो मिल गया और एक दिन पहले लिफ़ाफ़ा भी मिल गया। वहाँ जा कर तो ये सब लोग इतने प्रसन्न हैं कि कुछ कहने को नहीं और बात भी सच ही ऐसी ही है। 'आपका' पत्र पाकर अत्यन्त हर्ष हुआ। मैं ने जो लिखा था कि नस–नस में सेहत के परमाणु समाये हुए हैं और जिसको नस–नस चूसे ले रही हैं, किन्तु एक बात मुझे कुछ यह मालूम हो रही है कि कुल शरीर की नसें शीघ्र और पूरी तौर से चूस रही हैं, किन्तु पेट में नसें बहुत धीमे–धीमे कम मात्रा में ले पा रहीं हैं। मैं तो जब नसों को कुछ चूसने को न रहेगा, तब अवश्य लिखूंगी। यह तो sure है 'श्री बाबूजी' कि बीमारी मुझ में अब नहीं रही। मेरा कुल system साफ़ पड़ा है। पेट में इधर 4–5 दिन से भीतर हल्कापन अधिक और करीब हर समय रहता है। अन्दर कुछ टिघलता सा लगता है। बस अभी ताकत की पेट में ज़रूर कमी है। अब तन्दुरुस्ती की मुझे चिन्ता है और ज़रूरत शायद 'आपके' ही लिखने से मालूम पड़ती है। खैर, मुझे तो न जाने क्या हो गया है कि Health की एक एक बात को Realize करते तथा लिखते मुझे ऐसा ही लगता है, जैसे आध्यात्मिक दशा ही लिख रही हूं। जरा सा खा कर मैं अपने स्वाद में पड़ कर 'मालिक' के अनमोल परिश्रम को व्यर्थ न होने दूंगी। मैं अपने 'मालिक' के परिश्रम तथा इच्छा में अवश्य योग देती रहूंगी। मेरा कुछ यह हाल है 'श्री बाबूजी' कि जैसा 'मालिक' की कृपा से मन व अंतर सादा सा रहता है, तो ऊपर भी मुझे अच्छा कपड़ा पहिनने या जेवर पहनने में मुझे रुचि नहीं लगती।

मुझे तो अंतर –बाहर सीधी, सादी सफ़ेद धोती ही अच्छी लगती है, परन्तु खैर, अम्मा व सबकी इच्छा से पहिनती हूं, किन्तु कभी –कभी क्यों कि जाती भी कहीं कभी–कभी ही हूं मेरा मन विद्रोह तो नहीं करता किसी बात के लिये, क्यों कि वह 'मालिक' का हो चुका है। वैसे तो मुझे अतंर–बाहर, सब ओर सब सीधा –सादा, स्वच्छ ही दीखता है। मुझे तो काम व चाह 'मालिक' से 'मालिक' की ही है। मुझ पर यदि कोई कभी चिल्लाये भी तो मुझे ऐसा लगता है कि जैसे मुझे तो कुछ पता ही नहीं और न वह चिल्लाहट ही मालूम पड़ती है। वैसे भाई, गुस्सा या खीझ कभी – कभी जाने कैसे, कहाँ से मुझे आ जाती है और एक–आध मिनट में शान्त भी हो जाती है। कुछ यह है कि यदि मैं यह करूँकि यह सोचूं कि कल ऐसे कहूंगी, यह कहूंगी, तो–4–5 बार ऐसा सोचने से शायद इस विचार की गर्मी से मुझे कुछ हरारत कभी–कभी हो जाती है। मेरे में अब गुंजाइश नहीं रही, खुद मेरी भी नहीं। 'मालिक' की कृपा से जो कुछ भी आत्मिक – दशा है, सो लिख रही हूं।

भाई, कुछ यह हालत है कि नई दुनिया में जैसे क़दम रखा हो और यह वाक़ई लय–अवस्था का New Para खुला है, जिसे मैं Brighter World समझ गई और इसके अलावा मैं समझती भी कैसे, किन्तु अब तो मुझे हर बात 'आपकी' ही कृपा व पत्र से आईन। हो गई। मेरे 'श्री बाबूजी' मेरी समझ में नहीं आता कि मैं कैसे जल्दी जल्दी चलूं। खैर, अपने वश की नहीं, जैसे 'मालिक' चलावे, वैसे ही चलूंगी। ऐसा लगता है कि दशा हल्की इतनी और धुएँ की तरह मेरे में समा रही है। कुछ यह है कि देखती हूं कि दशा, जो कुछ भी मेरी दशा की पहुंच है, ऊपर या भीतर से भिदना शुरू होती है और भिदते–भिदते तब बाहर पिण्ड की बारी आती है। भाई दशा क्या है, कुछ हल्का धुआँ –धुआँ सा कह लीजिये और दशा ही क्या, बल्कि मेरा स्वयं का अस्तित्व ही यही है। वैसे दशा तो वहम शब्द से भी पतली या धीमी है। ऐसी ही सत्य – दशा है कि सब सत्य ही सत्य महसूस होता है। कुछ ऐसा हो गया है कि पहले जैसे कोई दशा आई, बस वही कैफ़ियत निगाह में रही और फिर बस उसमें घुसना शुरू हो गया और लय होना भी, परन्तु अब तो यह है कि दशा, निगाह या अंदाज़ में रहते हुए, जैसे मैं अपने को या उसे भूल –भूल जाती हूं। अब तो अपने आप ही 'मालिक' की कृपा से हो और यह बात बे कन्ट्रोल सी है, शायद इसी कारण दशा रम जाने में शायद पहले से अधिक Time लग जाता है और यह भी है कि पहले दशा भी कुछ सीमित सी होती थी, बल्कि मैं भी सीमित थी। अब दशा इतनी मद्धिम, हल्की धुऐं सी रहती है और निगाह को दिखाई नहीं पड़ती, किन्तु अन्दाज़ में रहती है और निगाह का मुझे पता नहीं, कसक में रहती है, जाने कहाँ, क्यों कि कसक से निगाह की याद आती है। शायद इस कारण दशा में रम जाने में देरी लग जाती है। मेरे 'श्री बाबूजी' मेरा तो अब यह हाल है कि Non–Duality Reign करते हुए भी मैं तो उससे भी बेखबर रहती हूं और यही नहीं, मेरा तो कुछ यह हाल है कि भाई, बेखबरी से भी बेखबर रहती हूं। किन्तु यह जाने क्या बात है कि खबर भी मुझे हर बात की रहती

है, जिनकी रहनी चाहिये। कण–कण सहज रूप को प्राप्त हो चुका, के माने केवल यही हैं कि भाई, कण – कण शुद्ध रूप में आ चुका है। कण –कण से विकार, ठोसता समाप्त हो चुकी है और एक भीनी, नहीं जाने कैसी दशा सब में समा गई है। भाई ऐसा लगता है कि अब दशा मेरे कण–कण में समा चुकी है और हर कण –कण मानों सजीव हो उठा है। नव जीवन प्राप्त कर चुका है। एक अजीब जागृति सब में हो गई है। बस कसक ही मेरा आसरा व खुशी है। 'आपके' पत्र का उत्तर यह नहीं है और न मैं दे ही सकती हूं। मैं तो बस यही प्रयत्न करती हूं और करूँगी कि एक–एक शब्द, एक–एक दशा, जो 'आप' लिखते हैं, सब में पैर कर, हर घाट का पानी पीकर, 'मालिक' के कदमों तक जा पहुंचू और साथ में जो चलना चाहे, उसकी भी 'मालिक' की कृपा से कुछ मदद कर सकूं मैं ने डाक्टर साहब से सारे Instructions दवा व Injections के विषय में ले लिये हैं तथा दवा भी लिखवा ली है। आज जा रहें हैं। 'आपने' जो नस एक दो मिनट हाथ में दाबने को बताया, सो 4–5 बार दाब लेती हूं, लाभ भी होता है। 'आपने' नुस्खा चने वाला लिखा है, वह भी आज से शुरू करूँगी। अब की बार तन्दुरुस्त तो मैं 'आपको' अवश्य मिलूंगी। अपने आने की तारीख अवश्य लिखियेगा तथा सब की यही प्रार्थना है कि यहीं ठहरें तो बहुत अच्छा हो।

अम्मा 'आपको' तथा मास्टर साहब जी को आशीर्वाद कहती हैं। मुझे अपने Heart का भी ठिकाना भूल चुका है। इतिः–

सदैव केवल 'आपकी' ही सेविका
पुत्री कस्तूरी

पत्र संख्या –400

परम पूज्य तथा श्रद्धेय श्री बाबूजी, लखीमपुर
सादर प्रणाम स्वीकृत हो। 1.6.54

आशा है, मेरा एक पत्र पहुंचा होगा। 'मालिक' की कृपा से पेट की नसें भी करीब करीब कुल शरीर की नसों की तरह सेहत के परमाणुओं को जिस दिन से 'आपके' पास पत्र पहुंचा, उसी समय से चूसना शुरू कर दिया है। किन्तु अब सेहत के परमाणु नसों में थोड़े रह गये हैं। जो चूसना बाकी है, ऐसा ही लगता है। पेट हर तरह से मुलायम तथा भीतर से बड़ा हल्का और बड़े आराम में लगता है। जी, वैसे तो मचलाता ही नहीं, बस दबने से बहुत नाम–मात्र को मचलाता है और कुछ थोड़ा सा सतासी नसों की तरह दुखता है। किन्तु कमज़ोरी अभी कम नहीं है। 'मालिक' की कृपा से जो कुछ भी आत्मिक दशा है, सो लिख रही हूं।

मेरा तो भाई, यह हाल है कि न Purity ही है, और न impurity ही लगती है। बस जैसे एक बिल्कुल सादी सी दुनियाबी मनुष्य की तरह हूं, जिसमें कोई विशेषता नहीं है। न पवित्रता ही लगती है और न अपवित्रता ही। बस एक सादा सी ही condition मेरा ओढ़ना है और वही बिछावन है। वैसे ही तबियत में न तेज़ी है और न मुलायमियत ही महसूस होती है। जैसे सब दुनिया के लोग हैं, वैसे ही मैं हूं और सच ही यही मेरी दुनिया है। मुझे न कोई भक्त, न ज्ञानी, न अच्छे, न बुरे, मुझे तो सब ही समान दीखते हैं। यदि भक्त हैं, तो भी सब और अज्ञानी हैं, तो भी सब एक से ही महसूस होते हैं। मेरे श्री 'बाबूजी' मेरी समझ ही इतनी हल्की हो गई है कि innocent कहूं तो भी समझ में नहीं आता, बेसमझ कहूं तो भी समझ में नहीं आता और होशियारी तो मुझसे न जाने कब विदा हो गई, मुझे यह भी पता नहीं। हाँ, भाई, दुनिया के लोग भाँति-भाँति के विचारों से परेशान हैं।किन्तु मैं कभी-कभी विचार आ जाने पर भी और कभी कभी क्या, विचार आते रहने पर भी परेशान नहीं हूं। न जाने कुछ यह है कि कोई मुझे कमज़ोर कहे किन्तु न जाने क्या बात है, मैं शायद कमज़ोरी से कोसों दूर हूं और यह नहीं है कि पहले की तरह यह सोचने पर कि मेरे 'मालिक' में कमज़ोरी नहीं, तो मुझमें कहाँ से आई। बल्कि मुझ में तो अब कुछ स्वाभाविक यह दशा पैठ चुकी है कि न बलशाली हूं और न कमज़ोर हूं। मुझे अपनी कमज़ोरी यह महसूस नहीं होती और यही हाल बीमारी तक का भी है। मेरी समझ में ही नहीं आता कि मैं कोई खास बीमार हूं या कुछ भी, यधपि इस ओर से लापरवाही नहीं है, बल्कि मेरी कुछ यह स्वभाविक दशा ही बन चुकी है। और भाई मेरी दशा क्या, बल्कि दशा का शुबह सा बना रहता है या हो जाता है कि यह दशा है। बस ऐसी ही तबियत बन जाती है। मेरे प्रभुवर! मेरा तो यह हाल है कि जीवन और मृत्यु दोनों पहलू समान हैं। क्यों कि खुशी हर हालत में है। यह दशा कह लीजिये कि "जैसे राखे साईयाँ, वैसेई रहूं सुभाय" "पीर, हंसी दोऊ समान एकई भाय बिकाय"।

भाई, कलेजा कसकता है, वही खुशी है, और शान्ति में मज़ा ही कहाँ। यह होते हुए भी अभी originality की शुरूआत नहीं हो सकी है, यद्यपि मेरे 'श्री बाबूजी' की कृपा से न जाने कैसे मैं कभी-कभी उसकी झलक-मात्र अवश्य ले आती हूं। एक उस बयार की सिहरन सी मिल जाती है। बस उसमें पहुंचते ही एहसास होने लगेगा। उसकी झलक मात्र में एक अजीब जागृति का नया पैरा एहसास में आता है। भाई, ऐसा लगता है कि संस्कारों का पर्दा इतना झीना पड़ चुका है कि मुझे पता नहीं कि संस्कार मुझ में हैं या नहीं और मेरी ही क्या, मुझे तो कुल दुनिया में एक अजीब शुद्ध दशा ही दरसती है, जिसमें संस्कारों का गुजर नहीं लगता, 'आप' ही जाने। अब 'आप' का यह लिखना कि "तुम लिखती हो कि जो 'आपनें' दिया है, वही मेरे पास है और मैं कहता हूं कि मेरे पास वही है, जो तुमने दिया है" अब "आपकी" कृपा से 'आपकी' यह बात कुछ समझ में आने लगी है। क्या ? यह मुझे मालूम नहीं, 'आप' ही जानें। मैं तो सचमुच 'आप को' पाकर निर्द्वन्द हो गई।

अम्मा 'आपको' शुभाशीर्वाद कहती हैं। केसर कहती है कि आज सबेरे से ऐसा लगता है, जैसे मैं शून्य में हूं, मेरे चारों ओर शून्यता ही शून्यता फैली हुई है और उस शून्यता में मैं बढ़ती और घुसती जा रही हूं। इतिः–

सदैव केवल 'आपकी' ही सेविका
पुत्री कस्तूरी

पत्र संख्या 401

मेरे परम पूज्य श्री बाबूजी, लखीमपुर
सादर प्रणाम स्वीकृत हो। 18.6.54

आशा है आज 'आप' कुकरा से शाहजहाँपुर पहुंच गये होंगे। कृपया शीघ्र लिखियेगा कि माया compartmental में आ गई या नहीं, हम बहुत उत्सुक हैं। अब 'मालिक' की कृपा से जो कुछ भी आत्मिक – दशा है, सो लिख रही हूं।

भाई, मेरा तो यह हाल है कि न मुक्ति की तमन्ना रही न Realisation की चाह है। मुझे तो कसक 'मालिक' से मिलने के चाह के अतिरिक्त, सो भी कसक के रूप में तमन्ना ही जाती रही। यह न जाने क्या बात है, 'श्री बाबूजी' कि अब यदि 'आपकी' लिखवाई चीज़ जैसे जो 'पथिक' के लिऐ 'आप' लिखवा गये हैं, कोई चीज़ मैं अपने लिखे में जोड़ लेती हूं तो मन में वह अटक अब नहीं होती जो पहले होने लगती थी और मन को गवारा नहीं होती थी, परन्तु अब तो जैसे कोई बात ही नहीं हुई, कुछ खटक नहीं होती। इसलिए तो मैं कहती हूं कि मेरे पास तो बस 'मालिक' की कृपा और सब 'उसी' की चीज़ है। बस यह अवश्य है कि जितनी मेरी capacity है, उतना ही मैं खींच पाती हूं। मेरे 'मालिक' कुछ यह दशा है कि लगता है आँखे पथरा चुकी हैं। शायद इसीलिये यदि मुझे कोई अंधी कह ले तो बुरा नहीं मालूम पड़ता और बहरी कह लें तो परवाह नहीं है।

अब तो भाई कुछ ऐसा लगता है कि मानो हर नस सोई रहती है। पूजा में बैठूं या वैसे भी ऐसा हो गया है कि जहाँ–जहाँ नाड़ी है, वहीं Action या हरक़त होती है, नही तो हर कण–कण, मेरे शरीर का ज़र्रा–ज़र्रा सूक्ष्म भी सो चुका है। हाँ, 'मालिक' से मिलने की तड़प ही ज़रूर उनमें जीवन पैदा करती है और सोई क्या रहती है, एक अजीब प्रशान्त–सागर में डूबी रहती है, जिसमें केवल बस एक कसक की ही हिलोर रह गई है सो भी ऐसे, जैसे कि बड़वानल यानी समुद्र के भीतर जो आग लगती है और जिससे उसके भीतर के सारे जीव–जन्तु जल कर समाप्त हो जाते हैं और हर नस–नस तक इतनी

खाली हो चुकी है, मानों 'मालिक' ने धो-माँज कर रख दीं। मेरे 'श्री बाबूजी' ऐसा लगता है कि भीतर के Senses (खवास) ही मानों लुप्त से हो गये हैं। न जाने क्या बात है कि 'आपके' सामने भी Alertness मुझमें अब ठीक या पूरी तरह से नहीं हो पाती, खैर, 'मालिक' जाने। मेरी तो 'वे' ही सदैव से सुधारते आये हैं, 'वे' ही सुधारेगें। ता- 14-6-54 को 'आप' यहीं थे, तो पता नहीं उस दिन मुझे क्या हो गया था कि मालूम नहीं क्यों रो लेती थी, गा भी लेती थी। बिना बात अश्रु बहते थे। मन में यद्यपि न रंज ही कुछ था और न प्रेम ही, किन्तु फिर भी झर-झर आँसू बहते थे। ऐसा कभी-कभी न जाने क्यों हो जाता है। पहले जैसे मैं लिखा करती थी, मेरे 'मालिक' कि हाथ उठाती हूं तो यह ज्ञान नहीं रहता कि किसका हाथ है, क्यों उठा है, अब अंतर का भी यही हाल हो चुका है। यानी सूक्ष्म रूप का भी एहसास कुछ ऐसा ही हो चला है। हर नस-नस सो गई है। हर इन्द्रियाँ मृत्यु की दशा में पड़ी हैं। ऐसा लगता है कि सूक्ष्मता की भी मानों मृत्यु होने लगी है। कुछ ऐसा हो गया है कि मेरे 'श्री बाबूजी' कि गाती हूं तो आवाज़ का कहीं ताल्लुक नहीं रहता। रोती हूं तो अश्रु का अंतर से भी सम्बन्ध टूट चुका है, बल्कि हर चीज़ का, हर Action का, जैसे सूक्ष्मता से भी ताल्लुक टूट चुका है, क्यों कि मुझे तो अब कुछ सूक्ष्म सा भी अनुभव नहीं हो पाता है। हर Action का जैसे Cause (कारण) से सम्बन्ध टूट चुका है। अब तो प्रभुवर! जो कुछ होता भी है, सो cause (कारण) रहित रहता है। ऐसा लगता है कि हर चीज़ का कारण मुझमें विलीन हो चुका है। cause (कारण) की मुझ में गुंजाइश ही नहीं रही, क्यों कि समझ से भी सम्बन्ध टूटता जाता है और यही नहीं, यह न जाने क्या बात है 'श्री बाबूजी' कि ऐसा लगता है कि अब कसक भी घिसने लगी है या कसक भी अब मुझ में लय होने लगी है। नस-नस में, मेरे हर कण -कण में समाई जा रही है।

मेरे 'श्री बाबूजी' 'आप' चले गये और इन चार दिनों में ही ऐसा लगता है मानों 'आप' जाने कब से गये हैं। जब 'आपने' यहाँ कहा था कि "मुझे आये सात दिन हो गये, " तो मानों एकदम से मैं स्वप्न से जागी होऊं, मुझे कुछ पता नहीं चला। 'आप' ही ऐसे हैं, जो हम सब पर कृपा करने स्वयं पधारते हैं। यही तो मैं कहती हूं कि सुना था ईश्वर कृपालु है, परन्तु मैं ने तो आँखों देख लिया। शायद इसीलिये मुझमें तो कभी कोई स्वप्न में भी तमन्ना ही नहीं उठती। कभी-कभी जाने क्यों कुल शरीर पर, पलकों तक पर कभी कभी कुछ भीनी ठंढी सी बूंदों की बौछार सी पड़ने लगती है। ठंढे पिपरमिन्ट की तरह।

फूलो जिज्जी तीन-चार दिन से अक्सर यही कहती हैं और विशेष सबेरे चार बजे कि " श्री बाबूजी मुझे" sitting दे रहे हैं। अम्मा 'आपको' व मास्टर साहब को सस्नेह शुभाशीर्वाद कहती हैं। मेरा भी मास्टर साहब से नमस्ते कह दीजियेगा। इतिः-

सदैव केवल 'आपकी' ही चरण-सेविका

पुत्री कस्तूरी

पत्र संख्या –402

मेरे परम पूज्य प्रभुवर 'श्री बाबूजी' | लखीमपुर

सादर प्रणाम स्वीकृत हो। | 25.6.54

आशा है मेरा पत्र पहुंचा होगा तथा भाई डाक्टर सिन्हा भी पहुंचे होगें। इधर जब से 'आप' आये, तब से हर तीसरे दिन एक पाउण्ड वज़न बढ़ता जाता था, किन्तु क्या बताऊं, परसों रात को साढ़े आठ से साढ़े नौ तक ऐसा दौरा पड़ा, जो कभी –कभी एक आध सेकण्ड ही होकर ठीक हो जाता था यानी एकदम ऐसा मालूम पड़ा कि नाभि से नीचे कुल पेट की नसें एकदम से ढीली पड़कर नीचे को लगता है कि गिरने सी लगीं, उसमें तकलीफ़ काफ़ी हो गई थी। दर्द भी बहुत होता है। 'मालिक' की कृपा से जो कुछ भी आत्मिक दशा है, सो लिख रही हूं।

भाई, अब तो कुछ यह दशा है कि ऐसा लगता है कि अंतर–बाहर कहीं वाइब्रेशन रह ही नहीं गया है। न आँख खोलने पर बाहर और न आँख बंद करने पर अंतर में ही है। वाइब्रेशन समाप्त हो चुका है। मेरा तो यह हाल है कि शरीर तक, नस–नस तक में भी अब वाइब्रेशन महसूस नहीं होता। सब केवल जड़ ही जड़ रह गया है। हाँ, बस इतना ज़रूर है कि दशा आगे ज़रूर बढ़ती या बदलती जाती है। परन्तु कुछ यह है कि यदि 'मालिक' की आज्ञा हो और या कुछ लिखना चाहूं तो ज़रूर कुछ ऐसी चेतना ऊपरी या 'मालिक' की कृपा की चेतना से ही कर सब कुछ लेती हूं। किन्तु फिर जड़ता ही जड़ता समझ लीजिये परसों बायें पैर के तलवे में जहाँ पहले सरसराहट लिखी थी बड़ी फड़कन होने लगी और करीब 15 मिनट तक रही। इतिः–

सदैव केवल 'आपकी' ही कृपा कांक्षिणी

सेविका पुत्री कस्तूरी

पत्र संख्या –403

प्रिय बेटी कस्तूरी, | शाहजहाँपुर

खुश रहो। | 27.6.54

पत्र तुम्हारा मिला। तुम्हें जो injection जनित पीड़ा नहीं होती, यह सब तुम्हारी ख़ूबी है। जब मेरे कहने का तुम्हें यक़ीन हो गया तो तुम्हारी ही शक्ति ने काम किया और यह तो तुम्हें कई दफ़े लिख चुका हूं कि तुम्हारी आत्मिक उन्नति तुम्हारी ही वजह से है और तुम्हारी भक्ति तथा अभ्यास का यह फल है। अगर मुझमें कुछ विशेषता या ऐसी शक्ति होती तो सब सत्संगी अभी तक आध्यात्मिकता की उच्च श्रेणी को प्राप्त कर चुके होते।

तुमने लिखा है कि न मुझे मुक्ति की आकांक्षा है न Realization की चाह। यह तो बड़ी अच्छी अवस्था है। तुम्हें Realization हो चुका और अब जीवन-मोक्ष गति है। जब चीज़ हासिल हो गई, फिर तमन्ना काहे की। जब तक मानव अपनी इष्ट वस्तु नहीं पाता, तब तक उसको चाह रहती है और जब पा गया तो चाह किसकी। तुमने लिखा है कि "हर कण और नस-नस बस सोई सी रहती है" इसके यह अर्थ हैं कि जो आडम्बर कि लाखों जन्म से संचित किया था, सो समाप्त हो चुका है और सत्यावस्था उत्पन्न हो चुकी है अर्थात् अब वह हालत है जो इस आडम्बर से प्रथम थी, मगर इसमें भी अभी बहुत कुछ होना बाकी है।

तुमने लिखा है कि भीतर के senses मानों लुप्त हो गये हैं, यह अनुभव तुम्हारा सही है और सोई हुई अवस्था, जो तुम्हें मालूम होती है, वह इसी वजह से है। इन्द्रियों को original हालत पर लाने के लिये मैं ने Research करके तुमको तीन points बताये हैं और उनका तजुर्बा भी मुझे हो चुका है, कि ये सही हैं और तुम भी इसे देख चुकी हो। अब इसके बाद भी उसी सीध में तीन सूक्ष्म points और हैं, जो खत लिखाते -लिखाते मेरे ध्यान में आये। फिर उसके बाद points तो नहीं और कुछ समझ में आता है। जब तुम स्वस्थ हो जाओगी तो मैं इन सूक्ष्म Points पर और उसके बाद जो कुछ मालूम हुआ है उस पर रूजू होऊँगा। तुमने जो रोने के बारे में लिखा है, ये प्रेम की वजह से है। मैं तो इस प्रेम का प्यासा ही रहा और अगर कोई मुझे प्रेम दे सके तो सैकड़ों विलायत अर्थात् समझने के लिये Godly sub-state सम्भव है देने के लिये तैयार हो जाऊं। मेरा जब कोई बस नहीं चलता तो गाना गाकर थोड़ी देर के लिये दुई ले लेता हूं ताकि कुछ नहीं तो एक-आध ही लहर प्रेम की आ जावे। तुमने यह लिखा है कि "सूक्ष्मता की भी मृत्यु होने लगी है। यह चीज़े लय अवस्था होने की वजह से मालूम होती है। वास्तव में अभी मुझे ऐसा प्रतीत नहीं हो रहा है। सूक्ष्मता की जब मौत हो जाती है, उस वक्त soul का एहसास कतई जाता रहता है और वह ऐसा कि हज़ारों वर्ष तक इस हालत का पहुंचा हुआ मनुष्य इस पर ध्यान लगाये तब भी soul का एहसास नहीं हो सकता। जब यह अवस्था पहुंच जाये तो अभ्यासी को Negation की तैयारी समझना चाहिये। इसमें भी न जाने कितनी Stages हैं। नहीं मालूम मुझे क्या हो गया है कि अगणित stages का ख्याल मुझमें कायम ही रहता है। नहीं मालूम मेरे इन लेखों को देखकर क्या समझेंगे लोग। मुझे तो छोर नहीं मिला। यहाँ तो लोग ऐसे भी हैं कि बड़ी जल्दी अपने आपको परमहंस और जीवनमुक्त गति को प्राप्त हुए समझने लगते हैं और कोई बिरला ही इस गति को यदि पा जावे तो अपनी दौड़ वहीं पर समाप्त कर देता है और ठीक भी है, इसके आगे बढ़ना तभी सम्भव है, जब कोई मिटा हुआ मिल जावे। मुझे तो भाई एक ही गति पसन्द है-complete ignorance की दशा और negation की दशा।

तुमने लिखा है कि "कभी कभी कुल बदन पर, पलकों तक पर पिपरमेन्ट की तरह बूंदों की बीछार सी पड़ने लगती है"। इसकी वजह यह है कि इस्नोफेलिया का मर्ज़ जाने के लिये मैं ऐसी तवज्जोह दे देता हूं। तुमने यह लिखा है कि "मेरा Heart 'मालिक' के Heart से चिपका रहता है"। यह बहुत कुछ सही है।अभी तक तुम मैदान ही में चल रही हो। समुद्रान्वेषण में यह अत्यन्त आवश्यक है कि तवियत "और लाओ" करती रहे। तृप्ति अभ्यासी की वहीं पर होती है, जहाँ पर व्यष्टि और समष्टि की तमीज़ नहीं रहती है।

अम्मा की इच्छा-शक्ति बहुत बलवती है और इससे मैं भयभीत रहता हूं। उनसे कह देना कि जुबान यथा सम्भव काबू में रखें। अम्मा को प्रणाम।

शुभ चिन्तक
राम चन्द्र

पत्र संख्या 404

प्रिय बेटी कस्तूरी, शाहजहाँपुर

खुश रहो । 29.6.54

तुम्हारा पत्र ता। 25.6.54 का लिखा हुआ प्राप्त हुआ। तुमने जो अपनी आध्यात्मिक दशा लिखी है, कि 'वाइब्रेशन' अन्दर और बाहर नहीं मालूम पड़ता इसका कारण यह है कि जब हम Lower Pressure पर पहुंचते जाते हैं, सफ़ाई बढ़ती जाती है और Pressure घटता जाता है। जैसा मैं ने जीव और ब्रह्म के बारे में किसी पत्र में लिखा है। ज्यों-ज्यों हम आगे बढ़ते जाते हैं, Pressure कम होता जाता है और इसी प्रकार से हम शनैः शनैः ब्रह्म गति प्राप्त कर लेते हैं। बहुत आगे चलकर Pressure स्वल्प रह जाता है, इतना कम कि एहसास में नहीं आता; आगे फिर यह भी नहीं रहता। इतना मैं ने लिख दिया जो तुम्हें अपनी हालत समझने के लिये समुचित है।

शुभ चितंक
रामचन्द्र

पत्र संख्या 405

मेरे परम पूज्य प्रभुवर 'श्री बाबूजी', लखीमपुर

सादर प्रणाम स्वीकृत हो। 29.6.54

मेरा एक पत्र पहुंचा होगा। मेरी तबियत बिल्कुल ठीक फिर हो गई। 'आपने' जो Tube दिये हैं, उससे तथा 'मालिक' की कृपा से कमज़ोरी बहुत शीघ्र ठीक हो गई। चिन्ता की कोई भी बात नहीं रही। 'मालिक' की कृपा से जो कुछ भी आत्मिक –दशा है सो लिख रही हूं।

ऐसा लगता है कि हृदय में कोई दशा खुल रही है। भाई, अब तो कुछ यह हाल है कि जिस दशा या Heart से मैं चिपकी सी रहती थी, ऐसा लगता है कि वह कुल मुझमें उतर आई। मेरा तो स्वरूप ही वही हो गया है। कुछ इतनी आंतरिक खुशी व आनन्द की दशा है कि यदि एकदम से मुझमें उड़ेल दी जाती, तो हृदय फट जावे या बावरी सी हो जाऊं, क्यों कि मुझमें तो इतनी भी ठौर की गुंजाइश नहीं रही कि कोई दशा चाहे जितनी आनन्दकारी हो, मुझमें अब स्थान ही नहीं। ऐसा लगता है कि मेरा रूप आनन्दमय हुआ जा रहा है, किन्तु वह कुछ ऐसा है कि कोई ऐसी दशा नहीं है, जिसकी अनुभूति आनन्दमय है, वरन् वह चीज़ है जो आनन्द की स्वयं कैफ़ियत है। मेरे 'श्री बाबूजी' इधर दो दिन से दशा बदली तो नहीं मालूम पड़ती, परन्तु अन्तर इतना सा अवश्य लगता है कि वह चीज़ मुझ में पच चुकी है, इसलिये उससे चिपकी नहीं लगती, वरन् वह मुझमें घुलकर एक हो गई है। मैंने जो एकता के बारे में लिखा था सो भी गई है कि ग़ौर करने पर तो नस–नस उसे चूस कर हज़्म कर चुकी है। परन्तु वैसे तो अधिकतर खाली सी दशा रहती। ऐसा लगता है कि समुद्र में ही चटियल अब सक्ष्म से सूक्ष्म लहर भी उठना ही समाप्त हो चुका। वाइब्रेशन ही नहीं, तो लहर कहाँ से आवे। ऐसा लगता है कि चटियल मैदान अब चटियल ही रह गया है। उसमें बयार नहीं बहती, इसलिये तिनका तक नहीं उड़ता। कहीं तिनका भी लगता ही नहीं, तो उड़े क्या। अब तो हृदय क्या है, बस एक सपाट चटियल मैदान ही रह गया है। मेरे 'श्री बाबूजी' कुछ ऐसा हो गया है कि चाहे कोई दशा रहे, चाहे स्वयं 'मालिक' ही मुझमें वास करे, परन्तु मुझे कुछ स्मरण नहीं रहता। मैं तो विस्मृत सी, भूली सी, खाली दशा में ही रहती हूं।

अम्मा 'आपको' शुभाशीष तथा मास्टर साहब को भी शुभाशीष कहती हैं।

इतिः–

सदैव केवल 'आपकी' ही स्नेहसिक्ता
सेविका कस्तूरी

पत्र संख्या 406

प्रिय बेटी कस्तूरी शाहजहाँपुर

खुश रहो। 5.7.54

29 जून सन् 54 का खत मिला, जिसका जवाब दे रहा हूं। तुमने लिखा है कि "ऐसा लगता है कि मेरा रूप आनन्दमय हो रहा है," यह एहसास तुम्हारा सही है। मगर मैं तुम्हारी हालत को सर्वानन्दमयी हालत पर लाना चाहता हूं। निरोग हो जाने का इन्तज़ार है, और इसलिये आगे नहीं बढ़ा रहा हूं। चाहता यह हूं कि जीवन-मोक्ष दशा जो तुम्हारी है, उसके पूरे आनन्द की हालत का एहसास करा दूं। उस हालत में मुझे तुम्हारी पूरी निगरानी रखनी होगी और यह ईश्वर की कृपा से हो जायेगी, क्यों कि वाकई सब के निगराँ पूज्य लाला जी हैं। इस जीवन-मोक्ष दशा पर जाने कितने लोग आये होंगे और ऐसा भी है कि आने से पहले बल्कि यों कहो कि शुरूआत होने से पहले अपने आप को जीवन-मुक्त समझ बैठे होंगे। गरज रहे तो यहीं तक रहे होंगे और कोई पहुंच गया हो तो ज़्यादा पता नहीं। यह मोक्ष की सबसे ऊंची गति ज़रूर है, और फिर इसके बाद दूसरी चीज़ शुरू होती है। Vibration के बारे में मैं पहले लिख चुका हूं और कुछ Pressure के बारे में भी लिख चुका हूं। इस मैदान में वाकई Vibration नहीं है। मगर कुछ तो है ही, जो कुछ तो खामोश हो रहा है और यह भी ब्रह्म की अच्छी गति है। इसी चीज़ को मैं उभारुँगा।

तुम लय -अवस्था की तीन stages पार कर चुकी हो, चौथी अभी शुरू नहीं हुई जहाँ तक मुझे याद है, इसकी चार ही stages हैं। चौथी stage में बड़ी देर लगती है और उसके पार हो जाने के बाद फिर मैं क्या कहूं कि क्या हो जाता है। मैं ने जब यह चारों stages पार कर लीं- यह चौथी stage हमारे पूज्य लाला जी ने बतलाई थी- इत्तिफ़ाक से मैं उनकी प्रेरणा से पहले ही पार कर रहा था, मगर वह तरीक़ा ख़्वाब में तसदीक कर दिया गया। जब इसकी लालाजी की कृपा से पूर्ति हो गई तो इसकी पाँचवी stage मेरी समझ में आ गई और वह समझने के लिये Negation के भी Negation की तरकीब थी। मगर इसको आपने मुझे करने नहीं दिया ओर मौजूदा हालत पर खड़ा कर दिया और उस तरफ़ से ख्याल ही हटा दिया और कहा कि जब तुम इस हालत (पाँचवे stage) पर जाने लगे तो मैं ने तुम्हारी हालत खोल दी, इसलिये कि फिर तुम मेरे काम के लिये बेकार हो जाते और यह भी कहा कि अगर तुम पाँचवी stage तलाश करके शुरू न करते तो मैं अभी कुछ समय और लेता। अम्मा को प्रणाम।

शुभ चिंतक

राम चन्द्र

पत्र संख्या 407

मेरे परम पूज्य तथा श्रद्धेय श्री बाबूजी, लखीमपुर
सादर प्रणाम स्वीकृत हो। 5.7.54

कृपा –पत्र 'आपका' मिला –पढ़ कर अत्यन्त हर्ष हुआ। मेरा तो अब न जाने क्यों उल्टा हाल हो गया है कि मुझे तो सच ही तन्दुरुस्ती की धुन लगी हुई है। जब से 'आपने' प्रार्थना करने को लिखा है, तो मैं जब करती हूं, तो लगता है मानों कि बालक की तरह Innocent अपने 'मालिक' के सामने अपनी तन्दुरुस्ती के लिये हाथ फैलाये खड़ी हूं और ऐसी ही मेरी condition है। 'मालिक' की कृपा से जो कुछ भी आत्मिक दशा है सो लिख रही हूं।

कुछ ऐसा है कि यदि दशा या 'मालिक' के Heart से जैसे चिपकी सी लगती थी, तो अब अनुभव नहीं होता और यदि वैसा ही अनुभव करूँतो अच्छा नहीं लगता, जी परेशान सा कभी–कभी हो जाता है। न जाने क्यों मेरी तबियत खाली–खाली सी रहती है और उसमें मुझे अच्छा लगता है। कुछ ऐसी दशा है कि एकता वाली दशा अब अपने में नहीं ला पाती तो कुछ नहीं, जैसे कुछ हुआ ही न हो। और ध्यान का तो यह हाल है कि ऐसा लगता है कि एक समतल मैदान में एक बिन्दु पर निगाह जमी हुई है। बिन्दु भी कहने को है, नहीं तो बस निगाह कुछ पकड़े हुए है, ऐसा समझ लीजिये और वही ध्यान का Point है, मेरे लिये अब।

मेरे 'श्री बाबूजी' अब तो कुछ यह दशा है कि ऐसा लगता है कि जैसे पहले मैं लिखा करती थी कि ऐसा लगता है कि कोई Attraction मुझे अपनी ओर बरबस खींचे ले रहा है, परन्तु अब न जाने क्यों ऐसा नहीं होता और प्रयत्न करने से जी घबराने लगता है, वरन् वह Attraction स्वयं मुझमें, अंतर में कुछ मौजूद लगता है और ऐसा लगता है, वह Attraction मुझमें सिंच कर या उपस्थित हो कर थोड़ा – थोड़ा मुझमें न जाने कैसे स्वयं ही समाता सा एहसास होता है। इसलिये शायद अब Attraction कैसा भी हो, इस नाम की चीज़ मेरे लिये समाप्त हो चुकी है। हाँ, मेरा मन स्वयं उस Attraction को अपने में लय सा करने लगा है। भाई, कुछ ऐसा लगता है कि दशा मेरी कुछ भी हो, वह पच कर हृदय बिल्कुल खाली सा रहता है। मेरा तो कुछ यह हाल है कि यदि एकता की दशा का ख्याल करूँतो जी घबरा कर तुरन्त आँखे खुल जाती हैं। वैसे अपने 'मालिक' के लिये ऐसा लगता है कि जैसे मेरे अन्तर का हर तार सूखी हाय –हाय किया करता है। आजकल बिल्कुल खाली और निखालिस Innocent की दशा है, बालक की तरह। मेरे पूज्य प्रभुवर, कुछ ऐसा हो गया है कि तबियत बंधन रहित है। मेरी एक प्रार्थना है कि जिससे 'आप' पत्र लिखावें, तो वह वैसा हो, वही शब्द लिखे, जो 'आप' बोलें, चाहे

उर्दू ही क्यों न हो। नहीं तो मज़ा का Flow बहुत मध्यम पड़ जाता है और आत्मिक –उन्नति चाहे मेरी वज़ह से हो या 'आपकी' बस यही प्रार्थना है, 'मालिक' चाहे कुछ हो जो कदम 'मालिक' की ओर उठ चुके हैं, वे उन्हें प्राप्त कर के ही सन्तोष पायें और ऐसा ही होगा, इसमें सन्देह नहीं। 'आपके' तीन Points की Research बिल्कुल नई और सत्य अवस्था की है और सूक्ष्म Points व कुछ लिखा है, वह भी बिल्कुल 'आपका' correct Hit है।

अम्मा के लिये जो 'आपने' लिखा सो कह दिया। वे, 'आपको' आशीर्वाद कहती हैं।

सदैव केवल 'आपकी' ही कृपाकांक्षिणी
सेविका
पुत्री कस्तूरी

पत्र संख्या 408

मेरे परम पूज्य प्रभुवर 'श्री बाबूजी' — लखीमपुर
सादर प्रणाम स्वीकृत हो — 9.7.54

कृपा –पत्र 'आपका' कल शाम को पूज्य मास्टर साहब द्वारा मिला। 'आपकी' तथा सबकी कुशलता के समाचार उनसे तथा और चर्चा भी सुनकर अपार हर्ष हुआ। कल शाम से ही 'आपका' पत्र पढ़ते पढ़ते ही मैं ने Homeopathy इलाज छोड़ दिया है और सख्ती जो 'आपने' लिखी, सो आज लेडी डाक्टर को दिखाया, उसने कहा है कि कुल पेट में है, परन्तु वह यह न बता सकी कि यह सख्ती आँतो में अच्छी है या बुरी, यद्यपि निगाह उनकी बुरी ही की ओर थी। जैसा कि मास्टर साहब जी ने पूछने को कहा था। मैं अब उनका ही इलाज कर रही हूं, क्यों कि डा. सिन्हा का अभी तक कोई पत्र व नुस्खा नहीं आया ।

पुत्ती बाबू वाला पत्र भी मैं ने नकल कर लिया है। 'मालिक' की कृपा से जो कुछ भी आत्मिक दशा है, सो लिख रही हूं। भाई, मेरा तो यह हाल है कि लगता है कि कसक भी टिघल –टिघल कर मेरे रक्त में समा चुकी है, क्यों कि कसक जो हृदय में काँटे की तरह कसक नहीं है, बल्कि वह चीज़ मेरे रक्त में मिल चुकी है, जिससे हर नस–नस, कण–कण में तो सूखी हाय–हाय पाती हूं और शब्द के बारे में मुझसे कोई पूछे तो यह हाल है कि Vibration मेरे में लगता ही नहीं, किन्तु यदि ध्यान दूं तो, नसों के हर स्पन्दन से 'मालिक' 'मालिक' सुनाई पड़ता है। यही मेरे शब्द और यही Vibration है। मेरी यह दशा है कि मुझ में उफान नहीं आने पाता, वरन् मुझे तो ऐसा लगता है कि मेरा 'मालिक' उफानने के बजाय कूट–कूट कर हर दशा को इसी प्रकार मानों मुझ में बसा देता है। कल

से तो कुछ यह दशा है कि लगता है कि मेरे ह्दय की बागडोर कोई ऐसे पकड़े है कि आनन्द की दशा जो भीतर अक्सर नस–नस में उफनाने सी लगती है, उसे साध लेता है। दशा कुछ उभरने पर मेरा कण –कण 'मालिक' 'मालिक' आनन्द से विभोर हो चिल्ला उठता है। लगता है, कोई नया अध्याय खुलना चाहता है। परन्तु बागडोर धीमे–धीमे काम करने देती है। कुछ ऐसा है कि आनन्द की दशा नहीं, वरन् स्वयं मैं ही मानो आनन्द स्वरूप व आनन्दमय हो उठती हूं। भाई, मेरे 'बाबूजी' बीमारी वाली कस्तूरी कोई और होगी, मुझे तो कोई बीमारी नहीं। अक्सर ह्दय पकड़ कर बैठना अच्छा लगता है। अम्मा 'आपको' शुभाशीर्वाद कहती हैं। इतिः–

सदैव केवल 'आपकी' ही स्नेहाकांक्षिणी
सेविका
पुत्री कस्तूरी

पत्र संख्या 409

मेरे परम पूज्य प्रभुवर श्री बाबूजी, लखीमपुर
सादर प्रणाम स्वीकृत हो। 16.7.54

आशा है मेरा पत्र पहुंचा होगा। 'आपको' मास्टर साहब जी से बहुत आराम मिल जाता है। 'मालिक' की कृपा से जो कुछ भी आत्मिक –दशा है, सो लिख रही हूं।

मेरे 'श्री बाबूजी' अब तो कुछ ऐसी दशा लगती है, कि अन्दर जैसे कोई चीज़ पसीजती सी है और जिसका फल यह होता है कि आनन्द नहीं, बल्कि कुछ जिसे आत्मानन्द सुना है, वह चीज़ अब सामने आती है। अब शरीर तो ऐसा नहीं, किन्तु अन्दर का कण –कण जैसे पुलक उठता है। कुछ ऐसा है कि पसीजन से लगता है कि कोई पर्दा खुल रहा है और अन्तरात्मा मानों बिखरना चाहती है, क्यों कि उस पर्दा के अन्दर मुझे वह पसीजन अन्तरात्मा के ही टिघलने की एहसास में आती है। भाई, ऐसा लगता है कि अन्तरात्मा ने पसीजना शुरू कर दिया है। टिघलन की भी शुरूआत होने लगेगी 'मालिक' की कृपा से अन्तरात्मा मैं ने यों लिखा है 'श्री बाबूजी' कि दृष्टि को अब वहीं स्थित पाती हूं। वह और कहीं टिकती ही नहीं। ऐसा लगता है कि मेरे अभ्यंतर में आनंन्द जाग उठा है। कुछ अजीब दशा है 'प्रभुवर' कि रक्त में, धमनियों में तो बेचैनी, कसक बह रही है और अन्तर का यह हाल है कि मानों अन्तरात्मा का कण–कण खुशी से बिखरा जाता है। यही नहीं, बाहर–भीतर का कण –कण आनन्द से व्याप्त हो गया लगता है तथा बीज में हाय 'मालिक' हाय 'मालिक' की पुकार है। परन्तु मेरे 'बाबूजी' दशा खुली है, परन्तु पूर्णतया नहीं। मैं उसे अभी भूल–भूल सी जाती हूं। मेरा तो यह हाल है कि न रंग है, न राग; न रोग (प्रेम) है न औषधि, परन्तु कुछ और, यह बदली दशा है। मैं तो अविनाशी अविछिन्न रूप

हूं, परन्तु न मैं व्याप्त ही लगती हूं न लुप्त ही, क्यों कि कहते हैं अविनाशी का नाश नहीं होता, किन्तु व्याप्त है आसमान की तरह। अविछिन्न, छिन्न–भिन्न नहीं हो सकता, किन्तु लुप्त नहीं है, प्राप्त किया जा सकता है। मेरी यही समझ है कि 'मालिक' की ही कृपा से यह दशायें प्राप्त हो सकती हैं, अन्यथा नहीं।

अम्मा 'आपको' शुभाशीर्वाद कहती हैं। फूलो जिज्जी ने 'आपको' प्रणाम लिखा है और लिखा है, इस पूजा में जो आनन्द व सुख है, वह किसी में नहीं। इतिः–

सदैव केवल 'आपकी' ही स्नेह सिक्ता
सेविका कस्तूरी

पत्र संख्या 410

प्रिय बेटी कस्तूरी, शाहजहाँपुर
खुश रहो। 20.7.54

एक बजे रात के बाद तुम्हारा खत लिखना शुरू कर रहा हूं, क्यों कि लिखने वाला आज रात भर के लिये मिल गया है। तुम्हारे पत्र दिनांक 1.7.54 व 16.7.54 के मिल गये। दोनों खतों का साथ ही साथ जवाब दे रहा हूं।

जन्माष्टमी पर आने का मेरा अभी कुछ ठीक नहीं है। अगर आऊँगा तो खबर 4–5 रोज़ पहले हो जायेगी। मैं तुम्हारी मौजूदा गति की पूरी तौर से सैर करा कर यहाँ का आनन्द एहसास कराना चाहता हूं और यह मेरे चाहने का अवसर है कि थोड़ी–थोड़ी हालत तुम पर खुलती जाती है तुमने एक जुलाई के खत में ठीक लिखा है कि बागडोर मैं अपने ही हाथ में रखता हूं, ताकि कहीं बेतहाशा न भाग निकलो और हाथ से बेहाथ हो जाओ। किसी ने ठीक कहा है–

"जिनके रुतबे हैं सवा, उनको सिवा मुश्किल है।"

तुमने 'कसक' के बारे में जो कुछ लिखा है, वह तो अभी चलती ही रहेगी। उस समय तक, जब तक कि कसक, कसक में न मिल जाये। तुम्हारी जो मौजूदा दशा है, उसका आनन्द खुल रहा है और जो पसीजना लिखा है, वह वहाँ के कण –कण पिघल रहें हैं, इसलिये कि आनन्द जहाँ तक कि अभ्यासी बर्दाश्त कर सकता है, खुल जावें। तुम्हारी निगाह जो अंतरिक्ष रहती है और हालत में मिली–जुली रहती है और उन्नति का ध्यान रहता है, और साथ ही कसक भी मौजूद है, ये सब आगे उन्नति करने के लिये बहुत काफ़ी हैं। आध्यात्मिक उन्नति तो बिल्कुल ही तुम्हारे घर की चीज़ है, जब चाहो और जितनी चाहो, तरक्की करो।

एक बात मैं तुम्हारे तजुर्बे के लिये लिखता हूं कि बरसात गड़बड़ थी और पानी बरसने में बहुत देर मालूम होती थी; परेशान था। नेचर को जब टटोलता था तो पानी बरसाने के काम पर रूजू होने के लिये तबियत न होती थी। कुछ Reason करके और कुछ अपने हुकूक़ का ख्याल दिला कर ज़बरदस्ती इज़ाज़त हासिल ही कर ली। परन्तु पानी बरसने का सामान न था। मैं ने अपनी मेहनत बचाने के लिये अत्रि ऋषि को इस काम के लिये कह दिया। चुनांचे वह समुद्र पर मानसून उठाने को रूजू हो गये। तीसरे दिन पानी आ गया – उनकी तर्ज–तवज्जोह का भी अंदाज़ लग गया। अत्रि ऋषि ज़िन्दा हैं और मुझे गंगा और यमुना के दरमियान मालूम होते हैं – उत्तर की तरफ। तर्ज –तवज्जोह बताऊंगा, जुबानी पूछ लेना जिस कारण यह बात लिखी।

शुभचिन्तक
रामचन्द्र

पत्र संख्या 411

मेरे परम पूज्य श्री बाबूजी, लखीमपुर
सादर प्रणाम स्वीकृत हो 22.7.54

कृपा –पत्र 'आपका' आज अभी मिला पढ़ कर अत्यन्त हर्ष हुआ। 'आपकी' तन्दुरुस्ती का हाल पढ़ कर अम्मा तथा हम सब को बड़ी प्रसन्नता है। 'मालिक' की कृपा से जो कुछ भी आत्मिक–दशा है, सो लिख रही हूं।

भाई, अब तो कुछ यह दशा है कि " हाय न जाने क्यों 'मालिक' से मुझे प्रेम नहीं पैदा होता, क्या करूं; कहां से लाऊं। अब तो अन्तर की यह दशा लगती है कि जैसे सूर्यास्त हो जाने पर एक–एक कर कमल की सारी पंखुड़ियाँ बंद हो जाती हैं, इसी प्रकार लगता है कि जैसे सारी चेष्टाएं, सारी वृत्तियाँ सिमट कर स्पन्दन–रहित कमल बन्द हो गया हो। अब तो लगता है कि बुद्धि भी संकुचित सी ही, सिमटी सी ही रहती है, किन्तु कुछ लिखने पर या विचार करते ही लगता है Broad Minded हो जाती हूं। मेरे स्नेही 'श्री बाबूजी' मेरा रूप तो बस एक खोखले की तरह रह गया है। मेरा तो यह हाल है कि न जाने क्या बात है कि जब 'मालिक' की Greatness का ख्याल करती हूं तो ऐसा लगता है कि मेरे में ही वह Greatness उधार खाती है, परन्तु फिर कुछ नहीं। कुछ ऐसी दशा कल शाम से है कि जैसे कहा जाता है कि सब की आत्मा जगन्निवास वह परमात्मा ही है, बस सच में ही मेरी आत्मा के स्थान पर स्वयं 'मालिक' विराजमान हैं। और मैं तो जो हूं सो हूं ही। मैं क्या हूं, एक खोखला कोटर है, जिसमें केवल आत्मा ही शेष है। भाई, पहले मैं लिखा करती थी कि लगता है कि निगाह गड़ गई है, परन्तु अब तो उल्टा मामला है कि निगाह ही मानों आत्मा है, वही लक्ष्य है या निगाह में ही आत्मा या लक्ष्य समा चुका

है। और निगाह उसमें लुप्त सी है। मेरे परम प्रभुवर! लगता है मेरा तो अविनाशी सम्बन्ध है क्यों कि आत्मा का नाश नहीं। मेरी आत्मा तो पिघलने लगी है। उस पिघलन में अविनाशी ही दशा बह रही है।

कल शाम को पूजा में कुछ ऐसा एकदम से निगाह के सामने से क्षणिक–दृश्य घूम गया। मेरी समझ में कुछ नहीं आया। अब 'आप' ही जानिये। एक क्षण को ऐसा लगा मानों चटियल मैदान नहीं वरन् बलुहा कह लीजिये, उसके बीच में एकदम से मैं स्वयं ही दिखाई पड़ी, किन्तु एक पल में जाने क्या हो गया कि मैं उस मैदान के अन्दर पूरी समा गई, उस मैदान में डूब गई और मेरे ऊपर फिर सब वही बलुहा मैदान समतल फैल गया। यह मैदान, किन्तु निगाह मेरी है, और कभी वही दृश्य घूम जाता है। मेरे 'श्री बाबूजी' वह मैदान है, किन्तु ज़मीन नहीं है, क्यों कि पृथ्वी – तत्व तो उससे बहुत ठोस है, उसकी गम ही नहीं है उसमें।

'अपने' आने की सूचना अवश्य दीजियेगा। मैं आराम करती हूं। पाबन्दी पूजा की भी नहीं करती। आध्यात्मिक उन्नति 'आपने' सच ही लिखा है, मुझे स्वयं भी ऐसा लगता है कि यह मेरे घर की ही अपनी चीज़ है, जब और जितनी भी चाहूंगी 'मालिक' की कृपा से प्राप्त कर ही लूंगी। स्वास्थ्य की ही वाकई मुझे चिन्ता है क्यों कि 'मालिक' की वह मूर्ति मेरे नेत्रों में रहती है जो मेरी तन्दुरुस्ती के लिए चिन्तित है और इसी कारण मुझ से बदपरहेज़ी नहीं हो पाती। भाई, मेरे तो वेद 'आप' ही हैं तथा शिक्षक भी, जितना पढ़ायें, 'आप' जानें।

केसर एल. टी. में आ गई है, परसों इलाहाबाद जा रही है। अम्मा 'आपको' शुभाशीष कहती हैं। इतिः–

केवल 'आपकी' ही कृपाकांक्षिणी
पुत्री कस्तूरी

पत्र संख्या 412

मेरे परम पूज्य तथा सर्वस्व प्रभुवर 'श्री बाबूजी' — लखीमपुर
सादर प्रणाम स्वीकृत हो। — 25.7.54

मेरा पत्र पहुंचा होगा। मैं ने कल डाक्टर को पेट दिखाया था, उसका कहना है कि अब ग्लैन्ड्स कभी उपर आती है, कभी दब जाती है, परन्तु नाभि के नीचे जहाँ ग्लैंड की सख़्ती है, परन्तु कम। आँतो में पहले से काफ़ी अधिक ताकत भी बताई है, जो मैं 'आपको' लिख चुकी हूं मुझे स्वयं भी अनुभव होती है। 'मालिक' की कृपा से जो कुछ भी आत्मिक दशा है, सो लिख रही हूं।

भाई, अब तो कुछ ऐसी दशा है कि ऐसा लगता है कि मेरी निगाह अब तो, अंतरिक्ष वगैरह, तो मैं जानती नहीं, बस यह जानती हूं कि 'मालिक' का ख्याल, जो मेरी ओर है, उसमें ही मेरी निगाह समा कर खो गयी है। इसलिये बस केवल 'मालिक' का ही ख्याल या कृपा पर ही मेरी उन्नति या मैं स्वयं हर प्रकार से निर्भर हूं। मुझे तो केवल अब उसका ही ख्याल जो मेरी तरफ़ है वही हर समय महसूस होता रहता है, और वही मेरी ज़िन्दगी है, और बस उसके ख्याल की हरकत ही, जो मेरी उन्नति के लिये है, मेरे में स्पन्दन है तथा वही स्पन्दन मेरे Heart की Beating में है। मेरे परम पूज्य प्रभुवर! कुछ ऐसा लगता है कि मैं तो 'उसकी' प्रेममयी दृष्टि में अपनी दृष्टि न्योछावर कर चुकी हूं। अब तो जितना और जो कुछ 'वह' सुझाये, बस उतना और वही मुझे सूझता है। भाई, अब मैदान ऐसा है कि सूनसान –पन प्रारम्भ होता है, परन्तु मेरे आनन्द की जड़ है वही, 'मालिक' की कृपा–दृष्टि, वही है 'उसका' ख्याल, जो मुझे हरदम आनन्दित और उत्साहित रखता है। ऐसा लगता है कि मेरी सारी देखने की शक्ति, मनन की तथा सबकुछ ही 'मालिक' की आकर्षक –दृष्टि ने खींच ली है। मैं तो एक बस खोखले पुराने कोटर की भाँति हूं। दशा इतने धीमे–धीमे खुल रही है कि आनन्द हर समय मेरे कण–कण में भरा लगता है, परन्तु उफनने नहीं पाता है, इसकी पूरी दशा नहीं आने पाती है, यधपि मेरा मन धीरे–धीरे पन से अक्सर अब अधीर हो उठता है, परन्तु यह बंधन तोड़ने की शक्ति नहीं मुझमें। थम–थम जाती हूं। परन्तु मेरी मौज मालिक की मौज में ही है। अम्मा 'आपको' प्रणाम कहती हैं तथा केसर, बिट्टो प्रणाम कहती हैं।

पूज्य मास्टर साहब जी के बारे में जो 'आपने' लिखा, यही मुझे भी साल भर पहले कानपुर में एहसास हुआ था, मैं ने लिखा भी था, परन्तु पूज्य मास्टर साहब जी को पत्र नहीं मिला। इसके कारण केतह में मुझे कुछ गुस्सा का असर मालूम पड़ा था, वैसे 'आप' जानें। मगर पूज्य मास्टर साहब जी को ऐसा नहीं मालूम पड़ता। इतिः–

सदैव केवल 'आपकी' ही कृपाकांक्षिणी
सेविका
पुत्री कस्तूरी

पत्र संख्या 413

मेरे परम पूज्य प्रभुवर श्री बाबूजी, लखीमपुर,
सादर प्रणाम स्वीकृत हो। 29.7.54

मेरा एक पत्र पहुंचा होगा। मेरा पेट तो अभी जैसा 'आपको' लिख चुकी हूं, उसी हालत में चल रहा है। कोई विशेष बात नहीं है। हाँ, भारीपन वैसे तो नहीं, किन्तु शाम

को ज़रूर हो ही जाता है। आजकल जो कुछ भी आत्मिक–दशा चल रही है, सो लिख रही हूं।

भाई, अब तो यह हाल है कि यदि जागते में भी, चलते–फिरते भी, कभी–कभी कोई ज़ोर से चिल्ला पड़े या ताली पीटे तो मेरे ह्रदय पर न जाने क्यों कभी–कभी धक्का सा लगता है। जागते में लेटी हूं तो यदि मेरी चारपाई जोर से हिला देवे तो न जाने क्यों बहुत बुरा लगता है। प्रार्थना करती हूँ या गाती हूँ तो यद्यपि मैं उसमें तन्मय तो कदापि नहीं हो पाती, परन्तु न जाने क्यों उसमें भी यदि कोई ताली बजा देवे तो धक्का सा ही लगता है। मेरे 'श्री बाबूजी' अब तो कुछ ऐसा लगता है कि मन पर कोई अनोखा, चटक और बेरंग चढ़ चुका है। ऐसा लगता है कि मन का कण–कण उससे रंजित है, मन के कण–कण में वही रंग बस चुका है।

इधर तो मेरे 'मालिक' कुछ ऐसा हो गया है कि ऐसा लगता है कि मन का ज़र्रा–ज़र्रा मानो अलग –अलग बिखर गया है और हर कण में वही कुछ बेचैनी सी व आनन्द–मिश्रित दशा बह रही है। समस्त शरीर के रक्त की बूंद में यही दशा बह रही है। न जाने क्या बात है कि यदि उंगली कटने पर जो रक्त निकलता है तो उससे बस 'अनलहक़' की आवाज़ और प्यारे की ही तस्वीर दीख पड़ती है। उस रक्त को छूने में मुझे यही प्रतीत होता है, मानों 'मालिक' को ही स्पर्श कर रही हूं और मैं स्वंय भी उससे अलग नहीं बस, उसके स्पर्श में यह भी एहसास होता है। कुछ ऐसा हो गया लगता है कि अक्सर अपने, आप चलते–फिरते, उठते–बैठते, न जाने क्यों मेरा ज़र्रा–ज़र्रा उमंग उमंग उठता है। परन्तु check हर हालत में हर समय रहता है। मुझे न जाने क्यों इसमें भी आर नहीं। अक्सर तबियत फड़फड़ाने सी लगती है। मेरे 'श्री बाबूजी' आप मुझे मिल गये, मैं ने 'आपको पा लिया, अब त्रिपुवन का राज्य भी कोई मुझे दे तो, 'आप' पर न्योछावर कर के, बस श्री चरणों में ही लोटते रहना मुझे भाता है।

अम्मा 'आपको' सस्नेह शुभाशीर्वाद कहती हैं तथा बिट्टो, लल्लू, व कान्ता 'आपको' प्रणाम कहती हैं। इतिः–

सदैव केवल 'आपकी' ही कृपाकांक्षिणी
सेविका,
पुत्री कस्तूरी

पत्र संख्या 414

प्रिय बेटी कस्तूरी शाहजहाँपुर

खुश रहो 31.7.54

तुम्हारे दो पत्र मिले। 22 ता: के खत का जवाब दे रहा हूं। तुमने Greatness का जो हाल लिखा है, कि जब 'मालिक' के ख्याल में होती हो तो वह Greatness खुद तुम में मालूम होती है। बात तो यह बड़ी अच्छी है, मगर इसका सिर्फ़ एक ही जवाब है, कि लय अवस्था जितनी ज्यादा ईश्वर में होती जाती है, उतनी ही उसकी बातें अभ्यासी में उतरती जाती हैं। जिसका ध्यान करोगी, उसी की बातें आवेगीं– इसलिये Incomplete गुरू का ध्यान कभी नहीं करना चाहिए।

तुमने लिखा है कि "निगाह ही मानों आत्मा है, वही लक्ष्य है, या निगाह में ही आत्मा या लक्ष्य समा चुका है।" जब आदमी अपने से ऊंचा उठ जाता है, तो निगाह का भी सीन बदल जाता है। वही निगाह ठोस से सूक्ष्म होती चली जाती है और सुरत भी इसी का नाम है। मगर जब तक कि निगाह रहती है, तब तक उसको अधूरा ही कहना चाहिये। हमें तो अपनी हर चीज़ Divine हालत में ले जाना है और फिर जब हम उस हालत पर आ जावें तो उससे भी अपना पीछा छुड़ा लेना है। यह बात बहुत ऊंची है, यह एक भेद है।

वेदों का Further Development अभी तक नहीं हुआ, इसलिये कि ऋषियों ने Non–Duality पर चीज़ खत्म कर दी, वहाँ तक आखिरी दौड़ कही जाती है। क्या यह नहीं हो सकता कि इसके आगे कुछ और भी हो? यह ज़रूर है वह Non–Duality की ही हालत में होगा। मैं ने जो हालत अभी ऊपर लिखी है, उससे बल्लियों ऊपर जाना पड़ता है। वेद में पुकार –पुकार कर कहा है – "नेति –नेति" गोया यह इशारा है कि इससे आगे कुछ और भी है। फिर समझ में नहीं आता कि लोगों ने वेद की आखिरी बात को हद क्यों मान रखा है। बिटिया! मेरा दावा यही है और मुमकिन है इसको लोग अहंकार समझें या ना मालूम क्या कहें, मगर जो बात सच है, उसको कहने की हिम्मत मुझमें आ ही जाती है। वह यह है कि मैं एक छोटे से छोटे Point पर यदि मेरी और सीखने वाले की उम्र इस क़दर हो कम– अज़– कम दस हजार वर्ष तक तालीम दे सकता हूं। मैं ने जो छोटे से छोटा Point लिया है, जैसे Point इन्सान में अरबों से ज़्यादा मिलेंगें और फिर कोई तमाशा देखे कि इस छोटे से छोटे Point में वह बातें मिलेगीं कि लोग चकित रह जायेंगे। यह चीज़ है दूसरों के सोचने के लिये और यह हिदायत है सबके लिये कि सिर्फ़ उस चीज़ के जानने की कोशिश करें, जिसके जानने से सब कुछ जाना जा सकता है। किताबी खुदा तो सब लोग देखते हैं, और ज़िन्दा खुदा कोई ज़िरबिल्ला और ऐसा शायद ही कोई हो कि उसको देखने की कोशिश करे, जो वाकई है या समझने के लिये

इन दोनों खुदा की जान है और इस खुदा को वही देख सकता है, जिसने अपने आपको बिल्कुल रूखसत कर दिया हो। फिर उससे जितना कोई चिमट सके, उतना ही कामयाब है और चिमटना क्या है, बस घुल-मिल जाना, ऐसा कि अपनी सत्ता का भी पता न रहे। यह शब्द 'सत्ता' मैं ने इस अर्थ में लिखा है कि Being और Non-Being किसी पर अपना ख्याल न ठहरे, बल्कि इन दोनों को भूल जावे।

यह बलुहा मैदान के बारे में जो तुमने लिखा है, यह तो बड़ी अच्छी हालत सामने आई। यह चटियल मैदान, जिसको मैं ने अक्सर कहा है, उसकी भी सूक्ष्म गति है। गोया उजाड़ के भी उजाड़ का नक्शा है और यह बड़ी उम्दा हालत है। इसके बाद ईश्वर ने चाहा, कुछ इससे भी ज्यादा मिटा हुआ मैदान मिलेगा और फिर और भी, जो तुम हालत आने पर खुद लिखोगी।

तुमने 25 जुलाई का खत भेजा है, उसमें Faith और Devotion का सबूत है और इसके सिवाय कोई ऐसी बात नहीं है, जो जवाब देने कबिल हो।

31 जुलाई को रात के 12 बज कर 10 मिनट पर मुझे ऐसा मालूम हुआ कि तुम्हारी चाल एकदम से रुक गई और कुछ ऐसा मालूम हुआ कि हालत में कुछ मुर्दनी सी छा गई। मगर पाँच मिनट के बाद यह देखा कि यह सब होते हुए भी तुमने उसी मैदान में फिर घूमना शुरू कर दिया। वह मैदान Right side के एक corner पर है। चूंकि रात का समय है, दिमाग़ काफी मेहनत कर चुका है, इसलिये ज़्यादा ठीक तौर पर समझ में नहीं आया। इसको फिर सोच कर लिखूँगा और तुम भी सोचकर लिखना। मुर्दनी तो अब नहीं रहेगी। अम्मा को प्रणाम।

शुभचिन्तक
रामचन्द्र

पत्र संख्या - 415

मेरे परम पूज्य तथा श्रद्धेय श्री बाबूजी, लखीमपुर
सादर प्रणाम स्वीकृत हो। 4.8.54

आशा है मेरा एक पत्र मिला होगा। 'मालिक' की कृपा से जो कुछ भी आत्मिक-दशा है, सो लिख रही हूं।

भाई, अब तो कुछ इतनी हल्की दशा है कि उसका अन्दाज़ लगाने या बैठने में तबियत में Disturb होने से कुछ घबरा सी जाती है शायद कुछ भारीपन आ जाता हो इससे। यही नहीं, ईश्वर का नाम भी मुझमें कुछ उबन व घबराहट सी पैदा करता है।

मेरे परम पूज्य प्रभुवर! मन की कुछ यह दशा है कि वह न कभी सोता है, न थकता है और न आलस्य ही स्पर्श कर पाता है। इसी कारण ऊपर यानी शरीर पर भी यह कोई लक्षण नहीं आने पाता। 'मालिक' मुझसे रात कहे तो रात भर, दिन कहे तो दिन भर साधना में तत्पर हूं। यह न जाने क्या बात है कि यद्यपि मैं एक आसन से बैठती केवल एक घंटे भर ही हूं, क्यों कि कुछ ऐसा लगता है कि मेरी हर नस–नस तक हर समय ऐसी अवस्था में मालूम पड़ती है, मानो ध्यानावस्थित हो। कुछ यह मालूम पड़ता है कि मेरा कण–कण, नस–नस सरलता में बस चुका है। इधर दो दिन तो दशा का कुछ अधिक शुद्ध रूप नहीं रहा, परन्तु अब तो बिल्कुल साफ चल रही है। अब तो मेरा ज़र्रा–ज़र्रा जागता ही रहता है। कुछ ऐसा हाल है कि मुझे हर आदमी की दशा अपनी ही तरह लगती है। मेरे स्नेही 'श्री बाबूजी' ऐसा लगता है कि मेरा हर कण–कण सदैव भीतर का स्थिर, स्थाई हो गया है, स्थिर ही रहता है। और कुछ ऐसी दशा मेरे अन्तर की है कि लगता है, कण–कण का हरतार प्यासा सा ऊपर ही स्थिर है, अजान अवस्था में भी ऊपर को ही देख रहा है। आध्यात्मिकता में कोई छोटा नहीं लगता।

अम्मा 'आपको' शुभाशीवार्द कहती हैं। मेरे 'श्री बाबूजी' मेरा एक–एक तार कभी कभी न जाने क्यों अधीर हो उठता है कि ओह! 'मालिक' में मेरा प्रेम नहीं हो पाता। मेरी आँखे तृषित ही रहती हैं। कृपया अपने आने की तारीख अवश्य लिखियेगा। इतिः

सदैव केवल 'आपकी ' ही कृपा कांक्षिणी
सेविका
पुत्री कस्तूरी

पत्र-संख्या-416

मेरे परम् पूज्य श्रद्धेय श्री बाबूजी, लखीमपुर

सादर प्रणाम स्वीकृत हो। 5.8.54

कृपा-पत्र 'आपका' कल मिला पढ़कर हर्ष हुआ। 'आपने' जो ता. 31 जुलाई की रात को 12 बजकर 10 मिनट पर चाल एकदम से रुक गई एवं मुर्दनी आ गई आना लिखा है, इसका उत्तर मैं अगले पत्र में दे चुकी हूं कि दो दिन दशा बिल्कुल अनमनी व शुद्ध न रही, परन्तु आप के पत्र लिखाते न लिखाते जो कि कल आया है, उसी दिन उसी समय ठीक हो चुकी है। मुर्दनी बिल्कुल नहीं है, परन्तु मुझे बड़ी चिन्ता 31 ता. की रात वाली दशा पर है कि क्या हो गई कैसे हो गई। क्या मेरी कोई त्रुटि तो नहीं हो गई अथवा क्या वे पाँच मिनट मैंने बिना याद के तो नहीं गुज़ारे? ये पाँच मिनट भी 'मालिक' के क़दमों में जब से आ पड़ी हूं तब से बेकार जाना 5 वर्ष के समान मुझे मालूम पड़ते हैं। सम्भव है 'मालिक' की याद ही तो नहीं बिसर गई, इसी कारण मुर्दनी आ गई हो, क्योंकि जब प्राण ही बिसर गया तो ज़िन्दगी कहाँ। 'आप' कृपया ज़रूर लिखें। यद्यपि मेरी कोशिश तो यही है और रहेगी कि यदि मुझे एक राई भर भी प्रेम हो तो वह भी कलंकित न होने पावे। इसके बिना याद में इधर न जाने क्या हो गया है कि लगता है कि मेरी आंतरिक दृष्टि भी स्थिर और जड़ सी हो गई है, परन्तु तृषित की भाँति ऊपर को उठी हुई अपलक हो गई है। उसमें न 'है' कि अनुभूति है और न 'नहीं' है की प्रतीति। आँखे पथराई सी हैं। मेरी तो जीवन नैया का कर्णधार 'मालिक' ही है, इसलिए चिन्ता मुझे किसी प्रकार की नहीं होने पाती। परन्तु मुझे तो छटपटाहट है, जो मेरी जान है या जिसका आधार मेरा जीवन है।

अम्मा 'आपको' शुभाशीष कहतीं हैं। इतिः-

सदैव केवल 'आपकी' की स्नेहाकांक्षिणी
पुत्री-कस्तूरी

पत्र-संख्या-417

मेरे परम् पूज्य तथा श्रद्धेय श्री बाबूजी, लखीमपुर

सादर प्रणाम स्वीकृत हो। 10.8.54

आशा है मेरा कार्ड पहुंचा होगा। 'मालिक' की कृपा से जो कुछ भी आत्मिक-दशा है, सो लिख रही हूं।

मेरे परम् पूज्य प्रभुवर! इधर ता. 7 को मुझे जाने क्या रहा कि जाने कुछ अटकाव था या क्या, कह नहीं सकती। कुछ ऐसा हाल रहा कि तबियत उचटी उचटी हो गई। इतनी

खाली सी उचटी सी रही कि मुझे पूजा व 'मालिक' का ध्यान ऐसे भी करने में जरा भी लगाव ही नहीं था। तबियत में नम्रता नहीं वरन् कुछ खरापन ही कहिये, किन्तु उजड्डता व बकने–झकने वाला नहीं था। स्थिरता व एकाग्रता भी नहीं लगती। अब चक्र सुई होती ही नहीं। 'श्री बाबूजी' अब उचाट व खरापन सब कल परसों से बिल्कुल ठीक है। किन्तु मुझे ऐसा लगता है कि जो यह था, यह मेरी दशा की गंदगी को साफ़ करने या कुछ अटक साफ़ होने के कारण ही था, परन्तु बिल्कुल ठीक तो 'आप' ही जाने और मुझे लिखियेगा भी ज़रूर।

कल दोपहर को पूजा के कमरे में लेटी थी, तो आँख लग गई, तो न जाने क्या हो गया कि उस सोने में जब से आँख लगी तब से नींद में ही प्यास का यह हाल था कि पानी पीते–पीते यह हाल था कि जितना पीती थी, उससे अधिक प्यासी हो जाती थी। पानी पीते–पीते ओर छोर न था। परन्तु जब आँख खुली तो प्यासी की प्यासी उठी। मुझे ऐसा है ही अपनी दशा का एहसास होता है कि उसमें 'मालिक' का प्रेम कूट–कूट कर नहीं भरता, तभी खाली–खाली सी व उसमें हर समय जगह खाली ही मुझे एहसास में आती रहती है और लगता है अभी यद्यपि दशा में पाचक शक्ति तो मौजूद है, परन्तु अभी उसमें पचने के लिये मानों कोई चीज़ आई ही नहीं, इसलिए खाली है। मेरे श्री बाबूजी दशा में अब वह आनन्द जो मैं लिखा करती थी कि शरीर पुलक–पुलक उठता है अब 7–8 दिन से एकदम से उसी दिन से यानी 31 अगस्त से लोप हो चुका है। अब कुछ ऐसी दशा है कि न तो दशा में ऊबन है, न निराशा, न तबियत भारी सी ही लगती है, वरन् हृदय पर एक प्रकार की कचोहट है, जिसमें बेबसी की दशा मिली हुई है, जो बेचैनी की याद देती है। मेरे 'श्री बाबूजी' न उमंग है, न उछाल ही, वरन् तबियत क्या बल्कि मेरी रग–रग बेकरार है। मेरा तो यह जीवन है क्या सचमुच मैं अपने प्रभु को प्राप्त कर लूंगी, मुझे आशा है। 'आप' पधार रहें हैं, दिन–रात यही उत्सुकता लगी रहती है। अम्मा की तबियत ठीक है। अम्मा 'आपको' शुभाशीर्वाद कहतीं हैं। अब केवल 9 दिन अभी 'आपके' यहाँ आने में और शेष हैं। इतिः–

सदैव केवल 'आपकी' स्नेहाकांक्षिणी
सेविका पुत्री–कस्तूरी

पत्र–संख्या–418

प्रिय बेटी कस्तूरी, शाहजहाँपुर
खुश रहो। 18.8.54

मैं 25 जुलाई के खत का जवाब दे रहा हूं। तुमने खत के दूसरे पैरा में बहुत सी बातें लिखीं हैं। एक जगह पर यह लिखा है कि 'मालिक' का ख्याल हर समय महसूस होता है, और 'मालिक' का ख्याल मुझमें स्पन्दन पैदा करता है।' जब लय अवस्था बढ़ जाती है,

'मालिक' और बन्दे में सम्बन्ध गहरा हो जाता है, और याद में अभ्यासी जब Vacuum बनने लगता है तो 'मालिक' के पास जो चीज़ है, वह उसमें आने लगती है और आते-आते यहाँ तक हाल हो जाता है कि दोनों की निस्बत करीब-करीब बराबर हो जाती है, और इसको लय-अवस्था की अच्छी हालत कहते हैं। ईश्वर का शुक्र है कि तुम्हारी इस लय-अवस्था की शुरुआत हो चली है। मुझे भी अपने अभ्यास के ज़माने में ऐसा मालूम हुआ है और वाकई Devotion या भक्ति इसी को कहते हैं कि 'मालिक' की याद करते-करते अपनी सुध-बुध भूल जाये। अपनी सुध-बुध भूलने के अर्थ ये हैं कि हमारे पास जो कुछ है, सब विदा हो जाये, फिर तो भाई अपनी जगह पर मालिक ही रह जाता है ।और यह कब? जब हमारे होश के भी होश उड़ जाते है मगर एक बड़ी उम्दा चीज़ पैदा होती है। उस वक्त होश गुम होते हुए भी होश पैदा हो जाता है। इसके अर्थ ये हैं कि बेहोशी में जो होश होता है (बेहोशी में होश ख़ास किस्म का होता है जिसकी शुरुआत पहले से हो जाती है, मगर आखिरी हद बहुत बाद को आती है) बस वही एक किस्म की याद समझना चाहिए और याद क्या? जिन्दगी की असली हालत होती है। फिर होता क्या है-न अपनी याद न 'मालिक' की याद। मैं खतों में बहुत आगे की बातें भी लिख जाता हूँ। तुमने लिखा है "जो कुछ वह समझाये वही समझती हूँ।" इसके अर्थ ये है कि तुमने Self Serrender पूरी तौर पर कर दिया है। यह भी लिखा है कि जो कुछ मनन शक्ति है, वह सब 'मालिक' ने अपनी ओर खींच ली है"। इसके अर्थ यह हैं कि ईश्वर ने चाहा तो यह हालत भी आ जावेगी, जैसाकि कबीर ने कहा है:-

"मन थिर, चित्त थिर, सुरत थिर, थिर भया सकल शरीर।
ताके पीछे हरि फिरैं, कहैं कबीर-कबीर।।"

आगे लिखा है कि 'मेरी मौज' 'मालिक' की मौज है। यह तो बड़ी उम्दा हालत है। इसको सूफ़ीइज़्म में 'तस्लीम-बरजा' की हालत कहते हैं।

अब 5 अगस्त के पोस्टकार्ड का, जो मुझे 14 अगस्त को मिला है, जवाब देता हूं। यह उस खत का जवाब है, जिसको मैंने लिखा था कि बारह बजकर दस मिनट पर रात को तुममें मुर्दनी सी मालूम हुई और एक शक्ति सिर के बाईं तरफ अपनी जगह से उतरती हुई, मालूम हुई। यह कोई खराब बात नहीं है। हल्के-हल्के तुम्हारी सैर हो रही है। आगे बढ़ने की ताकत किसी अभ्यासी में मुझे नहीं मालूम होती और यहीं पर मैं शब्द 'गुरू' का इस्तेमाल करता हूं। गो मेरा ख्याल कभी इसका पैदा नहीं हुआ कि गुरू की ही शक्ति आगे बढ़ा सकती है। अब गुरू कौन? वही लालाजी और उनकी शक्ति। बस जब एड़ लगाई जायेगी तब इस मुकाम से तुम पार होगी। अब बाईं तरफ क्यों शक्ति उतरती मालूम हुई? उसे ऐसा समझ लो कि नदी में जब फैलाव बहुत आ जाता है, तो नदी, नाले, जहाँ गुंजाइश होती है, पानी भरने लगता है। सैर तो तुमने रफ़्ता-रफ़्ता जीवन-मोक्ष दशा की खत्म कर दी थी, मगर उसमें अभी लय होना बाकी है। स्वास्थ्य ठीक हो जाने पर मैं यहाँ के आनन्द

का मज़ा एक बार फिर तुमको दिखलाना चाहता हूं। भाई यह चीज़ वेद के गुलामों को मिल ही नहीं सकती उस वक्त तक, जब तक कि गुलामी का तौक उस पर पड़ा हुआ है। यह तो उसी के नसीब में है, जो बिना ज़र (धन) किसी के हाथ बिक गया हो और वह भी कैसा हो, जिसके हाथ वह बिके, वह खुद ही बिक चुका हो।

4 अगस्त के खत का जवाब ज्यादा लम्बा-चौड़ा तो न दूंगा, दो जुमलों का जबाव दे रहा हूं। तुमने लिखा है कि 'ईश्वर का नाम भी अब ऊबन और घबराहट पैदा करता है'। उसका ख्याल या ध्यान भी घबराहट पैदा करता होगा। बात यह है कि ख्याल करने में दुई पैदा होती है और तुम्हारी कुछ न कुछ Harmonious Condition है। किसी शायर ने कहा है:-

"शिर्क (दुई) से खाली नहीं, ऐ शेख जी ताअत (पूजा) कोई।
ख्वाह बुत (मूर्ति) को पूजिये या लीजिये नामे अल्लाह।।"

तुमने यह लिखा है कि "हर आदमी की दशा अपनी ही तरह मालूम होती हौ" इससे यह मतलब है कि कि तुम बहुत कुछ 'आत्ममयी' हो चुकी हो और वही चीज़ तुम्हें हर शख्स में दिखाई पड़ती है।

अब 10 अगस्त के खत का मैं जवाब देता हूं। दूसरे पैरे का जवाब मैं इसी खत में दे चुका जो 5 अगस्त के खत के जवाब में है। तुमने एक शब्द उसमें यह लिखा है-'क्या मैं सचमुच अपने' 'मालिक' को प्राप्त कर लूंगी। इस मुझे बड़ी हंसी आई और एक शायर का कथन याद आया:-'राहें तलब में ऐसे खुद रफ्ता हो रहें हैं, मंजिल पर हम पहुंचकर, मंजिल को ढूंढते हैं।" मतलब यह है कि ईश्वर-प्राप्ति में हम इतने बेसुध हो रहे हैं, कि हम ठिकाने पर पहुंचकर ठिकाना तलाश कर रहे हैं। यह तो ऐसी बात है कि जैसे किसी को शक्कर का बनाया हुआ खिलौना खिलाया जाय फिर उसे शक्कर के ज़ायके की तलाश रहे। अब फ़र्क क्या है? कि वह शक्स वही शक्कर खिलौने की शक्ल में खा रहा है, मगर उसे शक्कर खाने की लालसा लगी हुई है। बात क़रीब-क़रीब एक ही है, फर्क स्वाद में है कि खिलौने का मज़ा और है, और शक्कर का और गो चीज़ एक ही है। एक बात मैं मतलब से अलहदा लिखता हूं कि शक्कर खिलौना नहीं हो सकती और खिलौने में शक्कर मौजूद होती है, अर्थात् ब्रह्म और जीव में यही फ़र्क है। खिलौना जीव है और शक्कर ब्रह्म। तुमने हृदय में कचोटपन लिखा है और यह कि जो बेचैनी को दाद देती है। यह चीज़ तो किसी न किसी शक्ल में कायम ही रहेगी और उस वक्त तक, जब तक 'मालिक' और 'बन्दा' शीरा-शक्कर नहीं हो जाते, जैसे दूध में शक्कर। मुझे तो बारह वर्ष के बाद चैन मिला था, जब मेरी हालत खुली। मैं कोशिश करता हूं कि तुम्हारे हर खत का जवाब दूं। इसलिए मैं तुम्हारे खत और अपने जवाब छपवाना चाहता हूं, इससे आम जनता को बड़ा फ़ायदा होगा

शुभचिन्तक रामचन्द्र

पत्र-संख्या-419

मेरे परम् पूज्य प्रभुवर श्री बाबूजी, लखीमपुर

सादर प्रणाम स्वीकृत हो। 23.8.54

आशा है, 'आप' व भइया आराम से पहुंच गये होंगे। किन्तु Bus से जाने में इतना आराम न मिला होगा। केवल हम सब पर कृपा करने के ही हेतु 'आप' सफ़र का कष्ट व रुपये खर्च करते हैं, ऐसी भला किसकी रीति है। सुना पहले 'आप' कल रुकने वाले थे, किन्तु फिर चले ही गये। 'मालिक' की कृपा से जो कुछ भी आत्मिक-दशा है, सो लिख रही हूं।

अब तो कुछ ऐसी दशा चल रही है कि 'आप' ता. 19 की रात को जब यहाँ पधारे तो 'आपके' सामने भी दशा में कुछ उजाड़पन सा ही बढ़ा रहा। यही नहीं मेरे 'श्री बाबूजी' कि ऐसा लगता है कि बहार व आनन्द व रुचि कैसी भी हो यह सब तो मेरे रोंये-रोंये तक में ढूंढे से नहीं मिलती। बस कुछ बेकारी, बेचैनी, यही Permanent मेरी दशा है, जो मेरे जीवन में घर कर गई है।

कुछ ऐसी दशा है कि 'मालिक' से मिलने व दर्शनों की चाह की बेचैनी सी रहती है, किन्तु जब सामने आ जाते हैं, तो भी बजाय शक्ति के तड़पन और बेकारी बढ़ती है। भाई ऐसी दशा है कि शान्ति विदा हो चुकी है, आनन्द तो और बेकरारी पैदा करता है; अब तो ठंडक से गर्मी ही होती है, जो आग तो पैदा नहीं करती। मेरे 'श्री बाबूजी' अब सच तो यह है कि अब तो न मैं हूं , न मालिक और न उसकी याद। क्योंकि मेरी निगाह में अब यह कुछ नहीं है, सिवाय बेकरारी और तड़पन के, और जिसके बिना मेरा जीवन नहीं।

भाई, अब तो लय-अवस्था तक का भी चाव व शौक न जाने क्यों जाता रहा और कुछ यह भी है लय-अवस्था को Touch करने से तबियत में घबराहट पैदा होती है। अब तो मुझे वही दिन नज़दीक लगता है कि मेरे तो हाथ-पैर बेकाम हो गये, किन्तु अब स्वयं मेरा 'मालिक' ही, भले ही मुझसे लय हो जावेगा, तब मेरा भी जी न घबरा सकेगा क्योंकि न जाने क्यों अक्सर मैं यह अहसास करती हूं कि 'वह' स्वयं मुझमें लगा हुआ है, और रास्ते पर ला रहा है, और मुझे तो रास्ते तक का एहसास नहीं होता।

ता. 21 की शाम को जब से 'आपने' बैठाला था, तब से कुछ ऐसा लगता है कि 'मालिक' की कृपा से जो कुछ भी होश रहता है, उसमें घुसने पर बिल्कुल सादा सी दशा में पैठती मालूमहोती हूं और तब से ही दशा का खरापन, या भद्दापन सा समाप्त हो गया। वैसे इन दिनों ऐसा लगता था कि दशा थिर नहीं होने पाती है, भटकी-भटकी सी फिरती है, समतल सी नहीं आती है और लगता था दशा में पैठने के स्थान ही नहीं रह गया, सो बात

भी उसी शाम से जाती रही। अब दशा में पैठने को फिर कुछ गुंजाइश सी निकल आई है। मेरे परम पूज्य प्रभुवर! अब तो बिना बाँह पकड़े एक कदम भी आगे नहीं चल सकती हूं, क्योंकि न अब आँखो में ज्योति है, न आगे चलने की शक्ति और न अनुभव में मार्ग ही दिखाई पड़ता है।

भाई, अब तो कुछ यह दशा है कि जहाँ तक मेरा अनुभव या समझ पहुंचती है तो यह लगता है कि होश के भी होश बिसर जाने पर भी अन्तर में जो कुछ होश जागता है, 'मालिक' की कृपा से, सो अब इस होश में कुछ नहीं को है मान कर चलने की दशा की कुछ झलक मात्र ही महसूस करती हूं। वैसे ठीक तो वही होगा, जो 'आप' लिखेंगे। मैं क्या और मेरी समझ ही क्या। मेरे श्री बाबूजी मुझे तो ऐसा लगता है कि यह चेतना भी और कुछ नहीं, बस एक कसक है, टीसन है, हूक है, जो 'मालिक' की देन का वह प्रकाश और वरदान है, जो आगे बढ़ने के लिये मार्ग–प्रकाशित करता है। मुझे तो मेरे परम् पूज्य महात्मन् न जाने क्या हो गया है कि अब यहाँ देखते हुए भी अनदेखती सी ही दशा रहती थी, अनदेखने की सी ही दशा हो जाती है। पास सामने बैठे हुए भी न जाने क्यों एहसास में ऐसा नहीं आ पाता था। कुछ ऐसा पागलपन सा दशा में उत्पन्न हो चुका है कि जब आने वाले थे, तो जल्दी आने की बेचैनी, जब आ गये तो दशा विस्मृत सी कहिये या देखते हुए भी शायद अनदेखती सी और जब चले गये तो जाने से हैरान। भाई, मुझे कुछ लगता है कि मेरी आतंरिक–दृष्टि भी जाती रही, जिसके कारण मैं 'मालिक' को ठीक से देख न सकी और देखना क्या, तबियत तो 'मालिक' को हृदय में रख लेने के लिये बेकरार है, फिर आँखों का क्या दोष। लगता है कि 'प्रभु' के दर्शनों ने तो हृदय का वह तार स्पर्श कर दिया कि मेरे कण–कण में हर समय झनझनी ही मची रहती है। मेरा हर ज़र्रा–ज़र्रा झनझन–झनझन हुआ करता है और उस झनझन शब्द की प्रतिध्वनि है हाय–हाय, हाय–हाय। मैं तो यह चाहती हूं 'श्री बाबूजी' कि मेरा दिल बेकाबू हो उठे 'उसे' पाने को, परन्तु मेरे हृदय में लगाम सी लगी रहती है और मैं इसे जानती हूं कि यह जो कुछ है, 'उसकी' मौज है, इससे तबियत में कुछ सहूलियत सी आ जाती है। नहीं तो दुनिया में किसी की शक्ति नहीं जो मेरे हृदय में लगाम दे सकता। बस मेरे 'मालिक' की लगाम है। इसे सोचते ही तबियत में समाधान सा हो जाता है। कुछ यह हो गया है मेरे 'श्री बाबूजी' कि जैसे पहले मैं लिखा करती थी कि मेरी जगह केवल 'मालिक' है, परन्तु अब तो यह हाल है कि न 'मैं', न 'वह' न 'उसकी' याद, केवल उस चेतना के, जो मुझे पूरी तौर पर बेहोश नहीं होने देती और ऐसा लगता है कि मैं शायद उस चेतना में ही अब जैसे घुसती सी जा रही हूं। या ऐसा कह लीजिये कि कुछ नहीं की तह में मैं समाती सी जा रही हूं।

मैं तो 'आपको' ही सब कुछ लिख देती हूं। पेट मेरा ठीक है और सेहत भी क्या लगता है सेहत के परमाणु अब नसों ने फिर चूसना प्रारम्भ कर दिया है। ऐसा देखती हूं

कि जब 'आप' भरते हैं, तो 3–4 दिन तक नसें खामोश सी रहती है, फिर धीरे-धीरे चूसना शुरू करती है, कुछ दिनों बाद तेज़ी पर आती है।

'आप' जो पत्र लिखवा कर मेरे लिये लाये थे, उसमें तो सब 'आपकी' ही कृपा व स्नेह भरा हुआ है। मैं तो वाकई भक्ति व Devotion की ही तलाश में हूं। 'मालिक' की कृपा से शायद सफलता प्राप्त कर ही लूंगी। अब मुझे हर आदमी की दशा अपनी तरह नहीं, बल्कि अपने से ऊंची व अच्छी ही महसूस करती हूं। केसर ने दो साल के पत्रों व 'आपके' उत्तर तो नकल कर दिये हैं और अब कभी-कभी मैं कर देती हूं। भाई काशीराम जी ने मेरे पत्र मांगे हैं, भला उन पत्रों में है क्या, बस केवल 'मालिक' की ही कृपा-दृष्टि का एक अदना करिश्मा मात्र ही तो है।

अम्मा 'आपको' स्नेहाशीष कहती हैं। इतिः-

सदैव केवल 'आपकी' ही, कृपाकांक्षिणी
सेविका
पुत्री-कस्तूरी

पत्र-संख्या-420

मेरे परम पूज्य तथा श्रद्धेय श्री बाबूजी, लखीमपुर
सादर प्रणाम स्वीकृत हो। 31.8.54

आशा है मेरा एक पत्र पहुंचा होगा। शायद कल 'आपका' कृपा-पत्र आ जावे, क्योंकि 'आपके' जाने के 3–4 दिन बाद मुझे दशा में फिर Force बढ़ता अनुभव हुआ, जो सबेरे से ही फिर समाप्त लगता है, शायद परसों रात में किसी समय 'आपने' पत्र लिखाया होगा, इसलिये ऐसा लगता है। ऐसा लगता है कि दशा बढ़ न सकने के कारण ऊपर उठने को ज़ोर मारती है, इसीलिए force पैदा हो जाता है। 'मालिक' की कृपा से जो कुछ भी आत्मिक दशा है सो लिख रही हूं।

कुछ ऐसा हाल है कि लगता है कि सुरत या यक्-सुई मुझमें है भी या नहीं महसूस ही नहीं होती, क्योंकि एकाग्रता या कुछ ऐसी चीज मुझे अनुभव ही नहीं हो पाती हैं। लगता है सब कुछ बस एक हो गया है और वह एक क्या, यह मुझे एहसास नहीं होता, सिवाय जो कुछ बेकरारी है, उसके। मेरे 'श्री बाबूजी' कुछ ऐसा लगता है कि मेरा अंग-अंग ही क्या, नस-नस, कण-कण अविचल सा रहता है। बेकरारी में भी मानों इन पर कुछ असर ही नहीं पड़ता। यही हाल आंतरिक दृष्टि का है कि लगता है कि मेरे अंतर में सब कुछ जड़ हो गया है। सोचने-समझने की भी शक्ति ध्यान या स्थिरता, एकाग्रता या यों कह लीजिये कि सुरत भी सब जड़ हो गई है। लय-अवस्था तक का भी यही हाल है कि

उसमें प्रवेश करना चाहूं तो मानों कुछ हरकत ही नहीं रह गई है। सूखी–सूखी सी लगती है, उसमें पैठने पर भी भीगती नहीं, सूखी की सूखी ही रहती है। इसीलिये शायद विचारों ने हमला बोल दिया है। रात–दिन मैं नहीं जानती, कुछ न कुछ विचार आते ही रहते हैं।

मेरे परम पूज्य प्रभुवर! अब तो ऐसी दशा है कि वर्तमान दशा में भींग कर भी फिर सूखी की सूखी ही निकल आती हूं। या भाई, अब तो यही हाल है कि दशा में डूबी तो कुछ नहीं परन्तु निकली तो सूखी ही लगती हूं। जल में भी जैसे कमल का पत्ता जल से अछूता ही रहता है, वही हाल मेरा न जाने क्यों अब अपनी दशा से हो गया है। कभी–कभी मुझे यह ध्यान आता है कि जैसा 'श्री बाबूजी' 'आपने' लिखा था कि "लोग दुनियाँ से बेलौस होने के बजाय 'मालिक' से बेलौस हो रहे हैं" कहीं ऐसा ही छींटा तो मेरे में नहीं छू गया, परन्तु यह नितान्त असंभव है, यह निश्चय है मेरा। परन्तु यह हो क्या गया? कल से दशा में घनापन या force फिर नहीं लगता। हल्की सी दशा ही रहती है। बेचैनी हृदय में शान्ति पैदा करती है। चाहे मिज़ाज में कभी गर्मी आ जाये, परन्तु दशा में अब गर्मी नहीं मालूम पड़ती।

शायद कल से मैं शाम को पौन घंटे को Music सीखने जाऊंअभी ठीक नहीं है। अम्मा 'आपको' शुभाशींवाद कहती हैं। ताऊजी भी 'आपको' प्रणाम कहते हैं। इतिः–

सदैव केवल 'आपकी' ही, कृपाकांक्षिणी
सेविका
पुत्री–कस्तूरी

पत्र–संख्या–421

प्रिय बेटी कस्तूरी, शाहजहाँपुर
खुश रहो। 1.9.54

तुम्हारा 23/24 अगस्त का पत्र प्राप्त हुआ, पढ़कर हर्ष हुआ। अच्छा है कि उजड़ी हुई बस्ती का अन्दाज़ तुम्हें प्रतीत होने लगा। 'बहार' और बाग की सैर तो सब को पसन्द आती है। जो खामोश तबियत है, वह तो चल–फिर कर सैर करते हैं, और जो चंचल–मन हैं, वह मजीरा और करतालों से अपनी तृप्ति कर लेते हैं और समझ लेते हैं कि बस सैर हो गई। मगर जो अपने प्रियतम (ईश्वर) की याद में है, उनकी सैर तो बिल्कुल इनके विरुद्ध है। प्रेम करने वालों को झनकार और गड़बड़ी से मतलब ही क्या? उसे तो वही चीज़ पसन्द आवेगी जो 'मालिक' के ठिकाने की खबर दे। उसका ठिकाना तभी मिलता है, जब हमारे सब मनोरंजन समाप्त हो जाते हैं और हम उनके चमत्कार से ऊंचे उठ जाते हैं। तुम्हारी हालत यह ज़रूर बताती है कि उस बस्ती की सैर जो कि चमत्कार से परे है,

करने को जी चाहने लगा है और जब यह हाल है तो वजह नहीं मालूम होती कि सैर नसीब न हो। तुम्हारे कुल पत्र से यह मालूम होता है कि तुम्हारी तबियत का रुझान उस ओर हो चुका है, मगर अभी दिल्ली दूर है और अभी सच कहता हूं कि बिटिया। कि सेर में पौनी भी नहीं कटी है। मगर आशा ज़रूर है कि तुम वहां तक पहुंचोगी और यह सब लक्षण उसी के हैं, जो पत्र में तहरीर किये हैं। तुमने खुद लिखा है कि "देखते हुए भी अनदेखी सी दशा है"। यह इस बात की खबर देती है कि Negation भी शुरू होगा और यही उसके चिह्न हैं। हाँलाकि अभी यह चीज़ कोसों दूर है, मगर इस लिखने से तुम घबरा मत जाना। इसलिये कि जब आदमी सफ़र कर लेना ठान लेता है और चल पड़ता है तो कोसों दूर की जगह पर भी पहुंच ही जाता है।

तुमने यह जो लिखा है कि "आप आने वाले थे, तो जल्दी आने की बेचैनी और जब चले गये तो जाने से हैरान" यह सब प्रेम की दलील हैं। मेरी हालत किसी वक्त में इस क़दर बढ़ गई थी और तुम समझ लो कि वह क्या हालत होगी। उसके लिये एक फ़ारसी मिसरा है, जिसका तर्जुमा यह है कि न तो दर्शन की योग्यता अर्थात् अगर दर्शन मिले तो वह चीज सहन नहीं होती थी और अगर हम 'उससे' अलहदा रहे, तो भी बर्दाश्त नहीं होता और इस हालत में न जाने कितने दिनों रहा हूं और इस तकलीफ़ को सहन किया है। जब इस तकलीफ़ का अन्त हुआ, तो तकलीफ़ की दूसरी शक्ल सामने आई कि यदि कोई ईश्वर का नाम ले देता तो कलेजा पकड़कर रह जाता और मुंह से 'हाय' निकल जाती। अब यह कैसी अजीब बात है कि जिससे प्रेम करो, उसी के नाम लेने से तकलीफ़ हो। बिटिया! और तो नहीं, 'उसे' रहसदार कहूं या 'उसकी' निर्दयता कि उसने जब मुझे मार लिया तब अपने में बैठने दिया। यह ज़रूर है कि यह सब चीजें सस्ती में ही मिल जाती हैं। हाँ, मास्टर साहब (ईश्वर सहाय) ज़रूर खुश-किस्मत है कि उनको निहायत ऊंची-ऊंची हालतें बिना तकलीफ़ के मिल चुकी हैं। यह तो ज़रूर है कि उन बेचारों को यह खबर नहीं कि यह चीजें उनमें मौजूद हैं। मुमकिन है कि रफ़्ता-रफ़्ता खुले। पहुंच तो वह बल्लियों आगे गये हैं और ऊंचे कि यदि चिराग़ लेकर ढूंढा जाय तो मुमकिन है इतनी आध्यात्मिक पहुंच का आदमी न मिले। हाँ, तुम ही हमारे मिशन में एक मिसाल हो, जिसके अनुभव और एहसास आध्यात्मिक दशा का नमूना है।

तुमने "यह लिखा है कि हर आदमी, बच्चे तक की दशा अब अपनी तरह नहीं, बल्कि अपने से ऊंची ही लगती है।" यह ऐसी दशा है कि ईश्वर का बहुत बड़ा भेद है। हमारे 'लालाजी' साहब ने इशारे से कुछ समझा दिया था। मैं भी इशारे के तौर पर इतना लिखता हूं कि...Transmission करते वक्त कुल ईश्वरीय शक्ति तालीम पाने वाले में दाखिल हो जाये और उसका Nervous System Shattered हो जाये और सीखने वाला दम तोड़ दे। मेरी यह हालत पैदा हुई थी, जिसकी वजह से तालीम पाने वाला आधे

मिनट को भी तवोज्जो सहन न कर सकता था। गुरू महाराज ने मुरव्वत की वजह से Limitations नहीं डाले। जब मैंने देखा कि ऐसी हालत में मैं किसी को सिखा न सकत था, तो मजबूरन गुरू महाराज से प्रार्थना की। उन्होंने ज़रूरी बन्धन डाल दिये और यह वादा भी किया कि जब तुम कहोगे, मैं यह बन्धन तोड़ दूंगा, मगर इसकी ज़रूरत मुझे कभी न हुई।

अब चोला छोड़ने के बाद सत्संगियों को यह फायदा पहुंचता है कि सिखाने वाले की कुल कमाई (हिस्सा रसदी) दीक्षित अभ्यासियों में पहुंचती है। इसके अलावा एक चीज़ यह भी है, कि जिसमें प्रेम और लय-अवस्था जितनी ज्यादा है, उतना ही हिस्स उसको ज़्यादा मिलता है और ऐसे ही लोग सिखाने वाले के दुनियाँ से कूच कर जाने के बाद भी फ़ायदा उठाते रहते हैं और उन्ही के ख्याल के तार की झन्कार वहाँ पहुंच सकती है। लय-अवस्था से बहुत फ़ायदे हैं, क्योंकि जब अपना आपा मिटा दिया जाये तो 'वह ही रह जाता है, जिसकी तुमको तलाश है। जिस हद तक अभ्यासी अपनी लय-अवस्था कर लेता है, उसी हद तक वह कामयाब है। तभी मैं पुकार-पुकार कर कहता हूं कि लय-अवस्था हासिल करो, मगर लोगों को अपने से फ़ुरसत ही नहीं, उस तरफ कौन घूमे हर शख्स यह चाहता है कि मैं ही अपनी ताकत से सब कुछ कर दूं। मुरव्वत की वजह से थोड़ा-बहुत (लय-अवस्था न सही, यह तो अभ्यासी की Duty है) किया भी, मगर जब घूम कर देखा तो, फिर दुनिया भर का उसके विचार के अनुसार मलगोवा से भरा ही पाया। अब भाई, मैं उसको साफ़ करता चलूं और वह उसको भरते चलें, तो मेरी मेहनत से फ़ायदा क्या। अगर अभ्यासी भी ठीक तरीके से करते चलें तो भी मेरी डाली हुई रोशनी में अंधेरा शामिल न हो। लय-अवस्था का पैदा कर लेना बिल्कुल अभ्यासी की ड्यूटी है। तरीका तो मैं बताता ही रहता हूं। दूसरा फ़ायदा जो Teacher के चोला छोड़ने के बाद Taught को होता है, वह यह है कि बिल्कुल खालिस फ़ैज अभ्यासी को मिलता है और इस किस्म की तालीम भी उनको मिलती है, जिसकी जानकारी ज़्यादातर Teacher को चोला छोड़ने के बाद होती है और भी दो एक बातें ऐसी हैं जिनके करने के लिये शब्द नहीं मिलते। मैं अपना किस्सा सुनाता हूं। गुरू महाराज ने चोला छोड़ने के बाद भी मुझे मौजूदा (Present) हालत में लाने के लिये बारह साल और लिये यह कहा कि अभी मैं वक्त और लेता, मगर जब मैंने यह देखा कि तुम थोड़े दिनों के बाद किसी के सिखाने के योग्य न रहोगे तो मैं मजबूर था। बात यह थी कि मैंने Negation का भी Negation जहाँ तक मुझे याद है करना शुरू कर दिया था, जिसका नतीजा यह होता कि मैं Practically NIL हो जाता और अगर उसके बाद वाली हालत जो Negation की Negation है, उसकी भी भूल की अवस्था कही जा सकती है, उस पर आ जाता तो मुमकिन था जिस्म छूट जाता।

अब मैं तुम्हारे खतों का जवाब देता हूं। एक नवम्बर सन् 54 के खत में तुमने लिखा है कि "दिमाग़ पर एक नशे की खुमारी सी छाई रहती है" नशा तो Matter में होता है, और जब उसकी तेज़ी कम हो जाती है तो खुमार रहता है। मगर तुम अगर और करके देखो तो, खुमार नहीं होगा, बल्कि ऐसी हालत होगी कि जैसे नदी के निकट बैठने से कुछ तरावट मालूम होती है। इतना ज़रूर है कि तुम्हारी मौजूदा हालत तरावट से भिन्न ज़रूर होगी, वह इसलिये कि एकाग्रता भी है। आगे इसको समझाने के लिये शब्द नहीं मिलते। अब खुमार क्यों हैं? इसकी वजह यह है कि 'Z' स्थान के असर में तुम शामिल हो रही हो और इसकी सैर अब शुरू होना चाहती है, जो मैं जल्दी शुरू करा दूंगा। अभी किनारे-किनारे थोड़ा साफ़ होने को रह गया है। तुम्हारी तबियत जैसा कि तुमने लिखा है कि "न जाने कहाँ भाग कर जाने को बेचैन रहती है"- ठिकाने पर जाने को बेचैन रहती है और यह चीज़ हर अभ्यासी में होना चाहिये। तुमने जो हाल लिखा है वह 'Z' स्थान का दृश्य है। अपनी हस्ती सबसे कमतर समझना बड़ी सभ्यता की बात है। तुम्हें जो ठंडक मालूम हुई है, उसका कारण यह है कि Matter की गर्मी बहुत कुछ समाप्त हो रही है। इसको मैने "सहज-मार्ग के दस नियमों की शरह" में समझाया है। इस ठंड के अनुभव ने तुम्हें यह खबर दी है कि तुम Matter से अलग हो रही हो। पीठ की हड्डी में फड़कन और गुदगुदाहट की अनुभूति होना यह माने रखती है कि वह स्थान धीरे-धीरे खुल रहे हैं। मुर्दे की सी कैफ़ियत क्षण मात्र के लिये भी हो जाना अच्छा है। इसके मानी यह हैं कि इस कैफ़ियत का भी अन्दाज़ तुममें आने लगा। मैं चूंकि ज्यादातर ऊंची हालत की तवज्जो दिया करता हूं, इसलिये अभ्यासियों में अक्सर ऊंची हालत दर्श जाती है। मुर्दे का एहसास होना यह एक बहुत ऊंची हालत है, मगर हालत तुममें अभी पैदा नहीं हुई।

तुम्हारा 7.11.54 का खत भी मिला। अपने में ईश्वर का Heart समाया हुआ पाना, यह मानी रखता है कि Heart Region के Cross करने की तैयारियाँ हैं। चाहता तो मैं यह हूं कि मैं इसी वक्त Cross करा दूं, मगर कराता यूं नहीं कि हर Point की सैर मैं करा रहा हूं। शुरू में मैंने वाक़ई बहुत जल्दी कर दी थी, कि तुमको पिण्ड और ब्रह्मांड दोनों की विलायत (Mastery) दो ही दिन में दे दी थी और इससे तुम्हारा वक्त बच गया और ईश्वर की रचना में बहुत कुछ दखल हो गया। मगर अब मैं हर Point को सैर करा के ले जा रहा हूं, ताकि तुम्हें वाक्फ़ियत हो। यह ठीक पता नहीं चलता कि Point कितने और हैं। मुमकिन है, हज़ारों न सही, सैकड़ों निकलें। जब बेशुमार Points ख्याल में आने लग जायें, तब तो फिर जल्दी करनी ही पड़ेगी और पूरी सैर मिनटों और सेकण्डों में करानी पड़ेगी। इसलिए कि मुझे अपनी इसी उम्र के अन्दर यह सब Points तय कराना है। तुम्हारा यह ख्याल सही है कि वाकई जिस चीज़ पर तुम Attempt कर रही हो, वह Heart Region से बहुत ही ऊंची है और वही चीज़ हासिल करना है जिसके लिए तुमने अपने आप को इस्तेमाल किया है।

सच पूछो तो Heart Region बच्चों के खेल–कूद की जगह है–मुझे यह चीज़ ऐसी ही मालूम होती है। मगर अफ़सोस यह है कि लोग इसको भी Cross नहीं कर पाते। कीर्तन और भजन में स्वामी लोग तमाम उम्र अपने शिष्यों को बहलाते रहते हैं। मैं समझता हूं कि स्वामी लोगों को खुद इसकी खबर नहीं है। और हो कैसे? बजाय बेरंग होने के रंग उनका गाउन बन जाता है। जो रंग उनके गाउन का होता है, वह रंग सन्यास का नहीं है। सन्यास का रंग दर हकीकत बेरंग है और यह बेरंग क्या होता है? जिसमें किसी रंग की झलक न हो। अब जिसमें कोई रंग नहीं होगा, उसको सफ़ेद कहते हैं। जब सब रंग मिला दिये जाते हैं, तो सफ़ेद बन जाता है। अब अगर वह सफ़ेद पहने तो, गृहस्थ और स्वामी में कोई फ़र्कप्रतीत न हो, लिहाज़ा आम लोगों के पहिचानने के लिये कुछ रंग जो हमारे Vision में मटीला आ रहा है, कपड़ों में दे दिया जाता था, जिसका मतलब भी यह है कि हम अपने आपको मिटा कर खाक कर चुके हैं। और इस चिन्ह से लोग उनको पहिचानते थे। अब तो एक चीज रिवाज़ी हो गई है कि हर शख्स कपड़े पहिन कर सन्यासी बताया जा सकता है। मगर Public में मैं समझता हूं कि अभी ज़्यादा Awakening पैदा नहीं हुई और न अक़ीद और विश्वास बढ़ा। वरना इस रंग के बैल और कुत्ते को भी उन्हें सन्यासी समझना चाहिये। इनमें एक फौकियत (विशेषता) है कि वह रंग के ऐतबार से सन्यासी पैदा ही होते हैं। मेरा इस इबारत से स्वामी लोगों पर Attack करने का मंशा नहीं है बल्कि यह है कि वह अपनी विवेक शक्ति (Discriminative faculty) इस्तेमाल करें ताकि उन पर खुद–ब–खुद मामला खुल जाये और वह वैसे ही बनें कि जो सन्यस्त से मकसद (अभिप्राय) है। सोचने से ही भद्दापन लगने के माने ये हैं कि तुमसे दुई सहन नहीं होती। अभी वह हालत पैदा नहीं हुई कि एकता ओर दुई दोनों एक सी हालत मालूम हो। जैसे स्वप्न में आदमी बर्रा जाता है, मगर उसको अक्सर खबर नहीं होती। अगर बर्राने की खबर हो जाये तो बर्राये ही नहीं। ऐसे ही अगर तुम्हें एकता की खबर रहे तो दुई की तकलीफ़ न हो। असल में हमें एकता और दुई, दोनों से अलहदा रहना चाहिये तब "जो है सो है" की हालत आने की खुशखबरी होती है। लिखते–लिखते एक खयाल आ गया। अल्लाह मियां के पास जो कुछ था, वह सब दुनियां बनाने के वक्त दे बैठे और आप दीवालिया हो गये। अब हम अगर जो कुछ अपने पास रखते हैं, वह दे बैठे तो उन्हीं की तरह हमारा भी शुमार दीवालिया में हो जायेगा। मैं समझता हूं कि आजकल लोग इसीलिये जो कुछ उनके पास है, नहीं दे बैठते कि दीवालिया की फेहरिश्त में उनका नाम न आ जाये, बल्कि कोशिश लेने की करते हैं, ताकि पूंजी उनकी बढ़ती रहे। तुमने लिखा है कि "नम्रता का एहसास भी कुछ भद्देपन का ही एहसास दिलाता है"। इसकी वजह यह मालूम होती है कि तुमने नम्रता को असलियत से अलहदा समझ लिया है और इसीलिए उसका एहसास बाकी है। असल नम्रता वह है कि कुछ न रहना और वह चीज़ Zero की याद दिलाता है। यह बात जो तुमने आखिर में लिखी है कि "पास जाने को भी

तबियत नहीं चाहती थी और न अलहदा होने की"। पास न जाने की तबियत चाहना उस वक्त अभ्यासी में पैदा होती है, जबकि ईश्वरीय हालत उसको सिखाने वाला ज़्यादा दे जाता है और अलहदा होने पर तकलीफ़ यों होती है कि यह प्रेम का तकाज़ा है तो यह कोई शर्म की बात नहीं है। ऐसा होता रहता है और इसमें कोई हर्ज़ या नुकसान भी नहीं।

शुभचिन्तक
रामचन्द्र

पत्र-संख्या-422

मेरे परम् पूज्य तथा श्रद्धेय श्री बाबूजी, लखीमपुर
सादर प्रणाम स्वीकृत हो। 6.9.54

कृपा-कार्ड 'आपका' आज मिला-पढ़कर प्रसन्नता हुई। पूज्य मास्टर साहब जी आपके पास आ रहे हैं, जी चाहता है मैं भी पहुंच जाँऊ, परन्तु और कोई इरादा ही नहीं करता, नहीं तो मार्ग निकल ही आवे। खैर, 'मालिक' की जैसी मर्ज़ी। 'मालिक' की कृपा से जो कुछ भी आत्मिक दशा है, सो लिख रही हूं।

अब इधर तो मेरा यह हाल है कि ऐसा जी चाहता है कि हर आदमी, चाहे छोटा हो या बड़ा, बच्चे तक को, यहाँ तक जानवर तक को, चेतन या जड़ तक को प्रणाम करूँ, सिर झुकाँऊ। मेरे परम् पूज्य प्रभुवर! दशा क्या है, ऐसा लगता है कि जिन्दगी का नया पहलू शुरू हो गया है। ऐसा लगता है कि अब ऐसी ठंडी दुनिया में आ गई हूँ कि गर्मी का पता ही न रहा निरंतर सेंकने वाली चीज़ ठंडी पड़ गयी है, लगता है, राख में भी ठंडक आने लगी है। तरी तो समाप्त सी हो चुकी है। अब नमी भी सम पर आने लगी है। मेरा तो यह हाल है कि आग के पास बैठी होऊं, तब भी मानों गर्मी ही नहीं लगती। जल भी जाऊं, तो भी गर्मी या जलन मुझ तक नहीं पहुंच सकती और ऐसा हो भी जाता है। कुछ ऐसी दशा है मेरे 'श्री बाबूजी' कि न जाने कैसे न आग मुझे जला सकती है, न पानी भिगो सकता है, न वायु सुखा सकती है, मुझे यह सब कुछ स्पर्श ही नहीं कर पाते हैं। कुछ न जाने क्या बात है कि लखनौर वाले शास्त्रज्ञों को "ईश्वर सुबुद्धि दे, उनकी बुरी भावना नष्ट कर दे," यही प्रार्थना सी निकलती है, गर्मी नहीं। बहुत सोचती हूं कि 'श्री बाबूजी' को इससे तकलीफ़ है, तब जरा क्षणिक जोश सा ही आता है, फिर वही हाल, अब 'आप' ही जानिये। पहले दशा बदलने पर लगता था कि अब फिर से नया मैदान आया तथा फिर A,B,C,D शुरू हो रही है, परन्तु अब तो यह लगता है कि जो अब तक पढ़ा था, सो भी सब भूल चुका और अब A,B,C,D की भी तमीज़ न रही और अब A,B,C,D शुरू होने का भी अहसास नहीं होता। अब तो नये, सादे से पहलू में Innocent Condition है। मैं नहीं जानती कुछ भी, न मुझे यह याद है कि अब तक कुछ सीखा भी है या नहीं। 'आपने' जो

लिखा है "बिटिया, अभी सेर से पौनी भी नहीं कटी" यह बात बिल्कुल मेरी समझ में आ जाती है। कुछ यह हो गया है कि अब किसी औरों को जब पत्र लिखना चाहती हूं, तो कोई ख्याल, कोई बात नहीं समझ में आती कि क्या लिखूं और जाने आलस्य या सुस्ती के कारण मन नहीं चाहता, इसलिये टालती रहती हूं, बैठती तो जबरदस्ती हूं, पत्र लिखने, परन्तु 'मालिक' की कृपा से लिख तो कुछ न कुछ जाता है। अब तो यही है कि जब 'मालिक' मखतब करावे, तब देखा जावेगा। वैसे ख्याल दिमाग़ में टकराया बराबर ही करते हैं, परन्तु मैं नहीं जानती कि क्या–क्या। अब यह हाल है कि खालीपन की दशा का कुछ अन्दाज़ 'मालिक' की कृपा से लगने लगा है।

अम्मा 'आपको' शुभाशीर्वाद कहती हैं। आज मन वहां आने को बेकरार हो उठता है। इतिः–

सदैव केवल 'आपकी' ही कृपाकांक्षिणी
सेविका
पुत्री–कस्तूरी

पत्र–संख्या–423

मेरे परम् पूज्य तथा श्रद्धेय श्री बाबूजी, लखीमपुर
सादर प्रणाम स्वीकृत हो। 12.9.54

आशा है मेरा पत्र मिला होगा। पूज्य मास्टर साहब जी तो वहाँ अनिर्वचनीय आनन्द में मग्न होंगे। वह कैसा? कि आनन्द को भी धो–माँज कर शुद्ध कर दिया जावे, उसी शुद्धानन्द में पूज्य मास्टर साहब जी का कण–कण भीगा हुआ होगा। अब 'मालिक' की कृपा से जो कुछ भी आत्मिक–दशा है सो लिख रही हूं।

भाई, अब तो कुछ यह हाल है कि 'मालिक' की ऐसी कृपा हुई है कि आँखें फूटीं तो तब जब कि लगता है कि न अब दायें, बायें मुड़ना ही है। न काँटों का ज़रा भी सन्देह। मुझे तो कहने को कह लीजिये, नहीं तो अब मैदान भी एहसास में नहीं आता है। मुझे तो भाई, चलने तक का एहसास नहीं, बस बदलती हुई दशा का एहसास ही केवल सबूत है कि मैं चल रही हूं। मेरे पूज्य प्रभुवर 'श्री बाबूजी' मेरा तो कुछ यह हाल है कि मुझसे यदि कोई पूछे कि तुम क्यों अन्धी हुई ? तो जवाब यही निकलता है कि मैं अंधी कहाँ हूं, मैंने तो 'मालिक' को पुतलियों में बैठा कर आँखे सदैव के लिये बन्द कर ली हैं। बस यही मेरी दशा है, और आँखे ही क्या, हर Senses का यही हाल हो गया है। कुछ यह लगता है कि Senses भी मुंद गये और लगता है पीछे ही छूट गए हैं। इस मैदान में उनका गुमान भी नहीं है। कानों ने तभी जवाब दिया जब लगता है बस अब Sound सुनने को नहीं है।

मेरे परम पूज्य महात्मन्! मुझे तो कुछ ऐसा लगता है, यह दिखाई पड़ता है कि जैसे मेरी कुल रीढ़ सीधी, सतर खड़ी रहती है। कुल बनावट तक मेरे सामने आ जाती है और मुझे तो बस हर एक की यक्षुई, दशा बिल्कुल अपनी तरह सीधी, सतर स्थिर सी एहसास में आती है। भाई, अब तो न जाने यह क्या बात है कि प्रार्थना चाहे आत्मिक-उन्नति के लिये ही करती हूं, तो भी यह लगता है कि जैसे ऊपर ही ऊपर रह जाती है। मेरी प्रार्थना स्वयं मुझ तक मानों नहीं पहुंच पाती है, न टकरा पाती है। बल्कि यह लगता है कि प्रार्थना तो मानों मेरे जर्रे-जर्रे में कूट-कूट कर भर दी जा चुकी थी। वह तो स्वयं मेरा एक अंग ही है। कुछ भी हो, अब प्रार्थना की भी गुज़र मुझसे नहीं है। कुछ ऐसा लगता है कि कुल रीढ़ के भीतर से कुछ धीमा-धीमा प्रकाश बाहर आ रहा है। कुछ यह हो गया है इधर बहुत दिनों से कि मैं देखती हूं कि मेरे अन्दर का वह Check कि 'यह करो, वह न करो' आदि कभी उठता ही नहीं। ऐसा लगता है, मेरे अतंस के सारे करिश्में, सारी पेचीदगियें समाप्त हो चुकी हैं। सादगी जीवन में घर कर गई और सादगी भी ऐसी कि जिसके होते हुए भी उससे भी Untouched ही एहसास करती है। अब तो भाई, अशान्ति की गुज़र नहीं और शान्ति की पहचान नहीं, और न उससे प्रेम ही है। बस यही मेरा हाल है।

अम्मा 'आपको' शुभाशीर्वाद कहती हैं। यदि पत्र पहुंचने तक मास्टर साहब जी हों तो उन्हें प्रणाम। इतिः-

सदैव केवल 'आपकी' ही कृपाकांक्षिणी
सेविका
पुत्री-कस्तुरी

पत्र-संख्या-424

मेरे परम् पूज्य तथा श्रद्धेय श्री बाबूजी, लखीमपुर
सादर प्रणाम स्वीकृत हो। 15.9.54

कृपा-पत्र 'आपका' जो पूज्य मास्टर साहब जी के शाहजहाँपुर से लौटने के पूर्व आ चुका था, परसों मास्टर साहब से मिला। पढ़कर हर्ष हुआ, परन्तु अभाग्यवश जो पत्र मास्टर साहब जी साथ लाये थे, वह मय उनकी ऐनक के बस में ही खो गया। पूज्य मास्टर साहब जी से यह जानकर कि 'आपको' दो-तीन दस्त आ जाने के कारण फिर ज़्यादा कमज़ोरी आ गई, अम्मा कहती हैं कि आप अपने आप कभी यह खयाल न करें कि ज़्यादा तन्दुरुस्ती बढ़ गई, क्योंकि अपनी नज़र आपको बड़ी जल्दी लग जाती है। मैं फिर बिल्कुल ठीक हूं। पैदल कॉलेज आने-जाने पर भी थकान अब अधिक नहीं सताती है।

मैंने 'आपको' Music College में Admission के बारे में नहीं लिखा, क्योंकि मेरी तवज्जो पर मेरा अधिकार नहीं है, सोच रही थी कि छोड़ने के लिये बीमारी का बहाना तो मौजूद है ही, परन्तु विश्वास रखिये, अब ऐसा नहीं होगा क्योंकि जब से 'आपका' कृपा-पत्र मिला है, तब से 'आपकी' खुशी ने मुझे खुश कर दिया है और मेरा जी नहीं ऊबता, परन्तु इतनी विनती पूज्य महात्मन् ज़रूर है मेरी कि बस इससे अधिक तवज्जो Divert न हो, यह काफ़ी है क्योंकि इससे मेरी बेचैनी इतनी देर को मुझसे बिछुड़ती है, यद्यपि पूर्णरूप से नहीं। फिर भी मेरे 'श्री बाबूजी' मैं यह स्वप्न में भी नहीं कह सकती कि इसकी मेरी याद परवरिश करती है, वरन् मैं तो केवल इतना ही जानती हूं कि मैं तो कछुए की तरह अलग ही रहती हूं। परवरिश तो इसकी कोई और ही करता है। बस निगाह ज़रूर मेरी उस ओर ही रहती है। मैं तो बस 'मालिक' की हर Research का Proof हो जाऊं, जिससे शायद कभी कोई सोचे कि कितनी महान छत्रछाया 'माता' की सदैव ही है और 'उन्हीं' के बीच हम रह रहे हैं। 'आपने' जो एक गाने की चीज़ लिखी है, उस तरह से मैंने Trial ले लिया और Trial क्या, वह तो स्वयं ही अपना Proof था कि जैसे वातावरण की कुल हरकत समाप्त हो गई और बस एक अजीब सरल सी गूंज थी और पूजा में जो बैठे थे, उनका कहना था कि उनके दिल-दिमाग़ मानों Suspend हो गये हों। सुननेवालों को कंपकंपी तथा झनझनाहट बहुत लगती थी तथा सुनने वाले न जाने क्यों अपने को जैसे भूल- भूल जाते थे। गूंज तथा कंपकंपी या कम्पन गाना समाप्त होने के बहुत देर बाद तक रही। परन्तु मैं पूरी तौर पर अभी वैसा नहीं कर सकी हूं जैसा कि हो सकता है। भाई, और चाहे कुछ हो, खुशनसीब मैं हूं जिसको ऐसे (मालिक) सिखाने वाले मिले। अब कुछ-कुछ Perfect व Real मास्टर की तारीफ़ 'मालिक' की कृपा से मेरी समझ में अभी सिर्फ़ इतनी ही आई है कि वाकई Perfect व वाक़ई मास्टर वही है, जिसको उन Subjects पर भी जिनके बारे में वह बिल्कुल बुत है, उस ओर तवज्जो देते ही एक-एक गुत्थी उसके सामने सुलझ जावे। 'आपने' जो मेरे विचारों को बहुत आने का कारण लिखा है, वह मेरी समझ में बिल्कुल आ गया और जो मुझे 'मालिक' से बेलौस रहने के एहसास का कारण लिखा है, वही सत्य है और कुछ ईश्वर के उस भेद से सम्बन्धित लगता है कि जो 'आपने' अगले पत्र में मेरे यह लिखने पर कि "हर आदमी की दशा अपने से ऊंची लगती है" ऐसे----करके छोड़ दिया है। लखनौर में सत्संगी भाइयों के लिये जैसा 'आपनें' लिखा है, वैसा ही कर रही हूं और उसी दिन से, जिस दिन से इस बारे में 'आपका' पहला पत्र आया था। जो कहानी का मज़मून 'आप' लिखा गये थे, उनकी हिन्दी तो मास्टर साहब जी ने कर दी है, परन्तु अभी कहानी का रूप उसे नहीं दे सकी हूं, अब कोशिश कर रही हूं। तब तक एक कहानी 'धर्मयुग' में भेज दूंगी। मास्टर साहब जो कहेंगे, वही भेज दूंगी। परन्तु जैसा 'आपनें' लिखा है, मैं यही चाहती हूं कि यदि वह नाम के बजाय भी 'श्री रामचन्द्र मिशन' की एक 'क्षुद्र सेविका' के ही नाम से छपेगा तो ही छपेगी, नहीं तो वापिस ले लूंगी।

मेरे एहसास खुले होने के बारे में जो 'आपने' लिखा है सो तो 'मालिक' की कृपा से होगा ही, क्योंकि जब कि लगता है कि दिमाग की हर पंखुड़ी खुली हुई है, हर नस–नस जाग चुकी है, और दिमाग़ ही क्या जब कि कुल शरीर की नस–नस लगता है जागृत है। इतना सोती हूं, फिर भी मुझे न जाने क्यों सोने का एहसास ही नहीं होता और संग में यह भी है कि अगर दो–तीन रात, चाहे दो–तीन घंटा ही सोने को मिले या न मिले, तो भी जागने का एहसास नहीं होता, तो भी अंतस को खुमारी नहीं सताती। मेरा तो यह हाल है कि 'श्री बाबूजी' कि मेरे लिये तो नींद, भूख, कुछ सीखना, भूलना, जीवन–मरण, सब एक कहानी सी लगते हैं और आध्यात्मिकता एक पहेली है, जो 'मालिक' के बुझाये ही बूझी जा सकती है। कुछ यह हालत है, मेरे पूज्य महात्मन कि मुझे अब डूबना नहीं आता और न उथलापन है, न छिछलापन, न गहराई ही है, बस अब तो एक सीधी सरल सी दशा है। मुझसे दशा में अब महब रहना भी नहीं हो पाता। कुछ यह हाल है कि घुसकर देखना आता है, न बाहर रहकर भूलना ही आता है। दशा तो कुछ है ही, परन्तु लगता है कि गति से मैं पार हो चुकी हूं और गति (चाल) भी मुझे अब एहसास में नहीं आती है।

अम्मा 'आपको' शुभाशीष कहती हैं। इतिः–

सदैव केवल 'आपकी' ही कृपाकांक्षिणी
सेविका
पुत्री–कस्तूरी

पत्र–संख्या–425

मेरे परम् पूज्य तथा श्रद्धेय श्री बाबूजी, — लखीमपुर
सादर प्रणाम स्वीकृत हो। — 19.9.54

आशा है मेरा पत्र पहुंचा होगा। 'मालिक' की कृपा से जो कुछ भी आत्मिक दशा है, सो लिख रही हूं।

अब तो कुछ यह दशा है कि चाहे जो कुछ करूँ, परन्तु लगता है कि मेरा ज़र्रा–ज़र्रा निश्चल सा ही बना रहता है। उसमें हरकत या स्पन्दन कभी होता ही नहीं। लगता है कि जिन ज़र्रातों से मेरा सृजन हुआ है, वह केवल अचल है, निश्चल है। कुछ ऐसा होता है कि जब मेरा हाथ जल जावे या कहीं दर्द हो तो, चाहे कितना उसमें दर्द हो, तो भी मेरा तो हर कण–कण निश्चल ही बना रहता है। इतनी शरीर में Activeness होते हुए भी मेरा तो ज़र्रा–ज़र्रा मानो शून्य सा पड़ा रहता है।

मेरे परम पूज्य प्रभुवर 'श्री बाबूजी' अब तो कुछ ऐसी भूल की Condition में रहती हूं कि जिसको याद करने से भूल की दशा का स्मरण आता है और उसके क्या करने से

कहूं, जब कि दशा तो यह है कि याद करूँतब भूल की दशा सामने आती है और भूल जाऊं तो याद नहीं। कुछ यह है कि मेरी आँखों में न जाने क्या हो गया है कि चाहे जितना खोल कर देखूं, सब कुछ आदमी तक, सब एक धूमिल रेखा से या एक परछाईं सदृश्य ही दीख पड़ते हैं ओर ऐसा भी यदि ग़ौर करें तो दिखाई पड़ता है नहीं तो Blank (बुत) हूं।

मेरे 'श्री बाबूजी' कुछ यह है कि इसे अभिमान कहूं तो मन नहीं ग्रहण करता कि अपना ख्याल तो चाहे कैसे हो रहता ही है, हाँ, अपने ख्याल का एक धूमिल सा ख्याल बना रहता है। परन्तु इसे तय नहीं कर पाती हूं कि यह ख्याल या होश 'उसका' कहूं या अपना। न जाने भाई, कुछ यह हाल है कि रात को यदि अधिक सो जाऊं, तो बर्दाश्त नहीं, यों कि कहीं 'मालिक' से गाफ़िल रहने की बेचैनी रहती है और जो याद करूँतो बर्दाश्त नहीं होती। याद से घबराहट होती है और नहीं तो कहीं गाफिल तो न थी, इसकी बेचैनी, इसी द्वन्द में दिन-रात पड़ ही जाती हूं और यही अब केवल द्वन्द मेरे में है। शेष द्वन्द तो समाप्त हो चुके, कुछ पता ही नहीं। एकता या दुई तक यह द्वन्द भी या ऐसे विचार भी मुझको नहीं आते। मुझे तो न जाने क्यों बेलौस (भूले से रहने में) ही अच्छा लगता है। क्योंकि इस दशा में मुझे 'उसी' की ही महक मिला करती है। 'वही' मेरा तो सब कुछ सम्भाले हुए है।

अम्मा 'आपको' शुभार्शीवाद कहती हैं। इतिः-

सदैव केवल 'आपकी' ही कृपाकांक्षिणी
सेविका
पुत्री-कस्तूरी

पत्र-संख्या-426

मेरे परम् पूज्य तथा श्रद्धेय श्री बाबूजी, लखीमपुर
सादर प्रणाम स्वीकृत हो। 25.9.54

कृपा-पत्र 'आपका' बुध को ही मिला था, परन्तु सीधे हाथ में ही बर्र के काटने से काफ़ी सूजन के कारण कुवंर के हाथ पत्र बहुत भेजने की इच्छा होते हुए भी सफल न हो सकी। किन्तु आज तो हाथ ठीक हो गया। 'आपने' जो आँतों में तवज्जोह देने के लिये लिखा और Self Training का तरीका लिखा, सो मालूम हो गया, परन्तु मेरे में कोई Power ही नहीं महसूस होती है। मैं तो हर काम के लिये बस 'मालिक' के सहारे पड़ी हूं, और यही मुझे प्रिय है, और बर्दाश्त भी मुझमें बस केवल इतनी ही शेष है। लखनौर वाले काम के लिये मेरी तबियत अब अधिक लगी रहती है। किताबें मास्टर साहब के यहाँ देख

आई, और तो अच्छी है, परन्तु Photo का कागज़ अच्छा नहीं रहा। मैं अंग्रेज़ी की किताब 2–3बार पढ़ चुकी हूं किन्तु न जाने क्या बात है, बातें तो 'आपकी' कभी भूलती नहीं, परन्तु किताब भूल–भूल जाती हूं। मेरी समझ में भी 'मालिक' की ही कृपा से आ जाती है, इंग्लिश सरल है। रीढ़ के बारे में जो 'आपने' पूछा, वह दोनों ही बातें होती हैं, यानी vision के अन्दर भी दिखाई देती है और कभी–कभी सूक्ष्म रूप से सामने भी मालूम पड़ती है। 'मालिक' की कृपा से जो कुछ भी आत्मिक–दशा है, सो लिख रही हूँ।

कुछ ऐसा हो गया है कि जब दशा को देखती हूं तो कबीर का वह दोहा याद आ जाता है कि–"एक कहूं तो है नहीं, दूजा कहूं तो गारि" कुछ ऐसा लगता है कि मानों मेरे में सत्य का या सत्य की अनुभूति का पर्दा फट चुका हो और वह सत्य बिखर गया हो। भीतर–बाहर कुछ अजीब गति या पद की दशा फैली हुई लगती है। मेरे परम पूज्य महात्मन् 'श्री बाबूजी' यही नहीं, कुछ ऐसा लगता है कि मेरा हर कण–कण अब अलग ही अलग बिखरा पड़ा है। बस एक श्वाँस ही सबको मानों जोड़े हुए है और हर कण में वही सत्य–दशा पाती हूं। मेरा ज़र्रा–ज़र्रा ही मानों सत्य–रूप हो चुका है और शायद इसी कारण से ऐसा लगता है कि मानों मेरे सृजन के ज़र्रातों से मायिक (माया का) सम्बन्ध समाप्त हो चुका है और लगता है कि 'मालिक' ने ऐसी स्थिति प्रदान कर दी है कि जिससे अब हर आध्यात्मिक Conditions का भी मेरे ज़र्रातों में अब रहन नहीं है।

मेरे 'श्री बाबूजी' अब तो कुछ यह दशा है कि जीवन–मोक्ष–दशा तो इतनी साम्य–अवस्था को प्राप्त हो गई है कि यदि सोचो है तो ऐसे ठंडे रूप में है कि जिसमें दम नहीं रह गया है और सोचो नहीं है तो नहीं है, कोई बात नहीं। ऐसा लगता है कि इस दशा की तो गर्मी ही समाप्त होकर पैठ गई है, इसमें अब जान नहीं रही, या मुझसे अब इसे धारण करने का सामर्थ्य या बर्दाश्त ही नहीं रह गई है। अब तो भाई कुछ यह दशा है कि जाने क्या हो गया है कि चाहे किसी बात पर, बच्चों पर गुस्सा होऊं, चिल्ला लूं, चाहे थप्पड़ भी मार दूं, यद्यपि ऐसा होता नहीं, तो भी अंदर तक अब गर्मी चाहे कैसी हो, सेंक तक नहीं पहुंच पाता। अब तो यह है कि बाहर की चीज़ बाहर है और भीतर की भीतर है। अब तो मैं स्वयं अपना रूप ही नहीं समझ पा रही हूं। मैं क्या हूं, कौन हूं, कहाँ हूं, इन प्रश्नों का उत्तर ही मेरे पास नहीं रह गया, मुझे कुछ पता ही नहीं रह गया है। मेरे 'श्री बाबूजी' पहले मुझे भीतर–बाहर बस केवल एक ही रूप, एक ही धारा, एकता ही एहसास होती थी, परन्तु इधर कुछ यह हो गया है कि मुझे अब हर आदमी का रूप अलग–अलग जैसा है, वैसा दीखता है, हर आदमी दीखता है परन्तु अंदर की दशा तो मैं नहीं कह सकती कि कैसी रहती है।

अब तो भाई कुछ यह दशा आ रही है कि जब 'मालिक' की याद आती है तो एक कलेजे पर धक्का सा लगता है। शायद जी भर कर 'उसकी' याद न कर पा सकने के कारण

जब याद आती है तो अजीब Mood, अजीब सी दशा होती है। पहले तो इससे इतनी खुशी व इतना उत्साह होता था, परन्तु अब तो कुछ अजीब उलझन बेचैनी सी ही लगती है। क्यों न हो, जबकि दशा तो यह रहती है कि भरी हुई सी अवस्था में, तिस पर भी भूली, खोई या बिकी हुई सी तबियत रहती है।

अम्मा 'आपको' शुभाशीष कहती हैं। इतिः-

सदैव केवल 'आपकी' ही कृपाकांक्षिणी
सेविका
पुत्री-कस्तूरी

पत्र-संख्या-427

मेरे परम पूज्य तथा श्रद्धेय श्री बाबूजी, लखीमपुर
सादर प्रणाम स्वीकृत हो। 29.9.54

कृपा-पत्र 'आपका' कल मिला-पढ़कर हर्ष हुआ। डॉक्टर सिन्हा को भी जो पत्र 'आपने' लिखा था, सो नकल कर लिया। यह सब, जो कुछ भी 'आप' लिखते हैं, यह ऐसी शिक्षा है, जो स्वर्णाक्षरों में लिखने योग्य है और ऐसा भी दिन आवेगा अवश्य। 'परमार्थ पत्रिका' के लिये लेख भेज रही हूं। छोटा सा है। नाम 'परमार्थ अभ्युदय' है। आशय केवल इतना है कि परमार्थ की ओर अग्रसर होने वाले साधक का स्वरूप मात्र है। 'आप' सुन लीजियेगा फिर जैसा उचित हो कीजियेगा। 'धर्मयुग' में 'अमर-ज्योति' कहानी भेज रही हूं तथा 'कल्याण' के लिये 'अनोखी प्रीति की रीति' भेजूंगी। कहिये Direct भेज दूं या इलाहाबाद भेज दूं और लिख दूं कि एक पत्र चाचा इसमें रख दें कि चाहे मेरा नाम न छापें, परन्तु 'श्री रामचन्द्र मिशन' अवश्य छापें। जैसा 'आप' कहेंगे, वैसा ही करूँगी। वैसे दूसरी 'पथिक' कहानी उचित थी भेजना, परन्तु वह अभी तैयार नहीं कर पाई हूं।

अब तो 'श्री बाबूजी' इतनी धीमी चाल है कि स्वयं अपनी तबियत परेशान व ऊबने सी लगती है। स्थान इतने धीरे-धीरे साफ़ हो रहा है कि मुझे अच्छा नहीं लगता। जब तक तबियत साफ़ नहीं होती, तब तक कुछ उलझन सी बनी रहती है। परन्तु शुक्र है कि कल से 'आपके' पत्र पढ़ने के प्रभाव से ज़र्रातों का भारीपन भी हल्का पड़ने लगा है तथा दशा में शुद्धता आने लगी है। कुछ निखरने सी लगी है, परन्तु अभी बिल्कुल ठीक नहीं आई है। मेरी तो यह छोटी सी समझ यह कहती है कि इन Points का इल्म और वाकिफ़यत बढ़ाना केवल 'आप' ही का काम है। जिस तर्ज़ और तरीके से मैं चल रहीं हूं, इसमें साधक का शौक व उत्साह बढ़ता है। थकान कभी आ ही नहीं सकती। यही नहीं, इसका प्रभाव शरीर पर भी यह है कि चाहे भागती फिरूँ, लेकिन थकान की शिकन भी नहीं आती। कुछ

यह भी है कि सोती भी हूं तो एक तबियत से चाहे कितनी तेज़ सोऊंपरन्तु दूसरी से भी यदि सो जाऊं तो शायद फिर वह अंतिम, यानी सदैव की नींद कहीं न हो जावे। शायद इसी कारण जाग्रत-अवस्था बनी रहती है। अभी कुछ दशा खुली नहीं, जो साफ़ पढ़कर लिख सकूं, फिर भी आशा है 'मालिक' की कृपा से अब इसमें भी विलम्ब नहीं लगता।

अम्मा 'आपको' शुभाशीर्वाद कहतीं हैं। मैं कल्याण में 'पथिक' कहानी ही भेजूंगी, जब तैयार हो जायेगी। इतिः-

सदैव केवल 'आपकी' ही कृपा कांक्षिणी
सेविका
पुत्री-कस्तूरी

पत्र-संख्या-428

मेरे परम पूज्य तथा श्रद्धेय श्री बाबूजी, लखीमपुर
सादर प्रणाम स्वीकृत हो। 7.10.54

केसर से 'आपकी' कुछ बातें एवं 'आपकी' तबियत के बारे में भी जानकर खुशी हुई। अब की बार मुझे पत्र डालने में इतनी देर हो गई, परन्तु मेरी प्रार्थना व आशा है कि 'आप' इसके लिये मुझे अवश्य क्षमा कर देगें। इधर न जाने क्यों कुछ समय न मिला और रात में कुछ थकान से आये अलसाये होने के कारण न लिखा, परन्तु मुझे इसके लिये पत्र न लिख पा सकने की बेचैनी से चैन न मिला और यह चीज़ बहुत ही ज़रूरी है, हम साधकों के लिये। 'धर्मयुग' में कहानी भेज दी है, अब जो वे लिखेगें, सो 'आपको' लिखूंगी। पेट ठीक है, परन्तु इधर अब जितनी थी, उतनी से नहीं बढ़ रही है। इधर 5-6 दिनों से ताऊजी की दशा अच्छी पा रही हूं। मुझे ऐसा लगता है कि जैसे उनके मन की, यहाँ तक कि कुछ कणों में से भी स्थूलता साफ़ हो रही है, उसकी जगह अभी बहुत हल्की-हल्की रोशनी की छाया सी मालूम पड़ती है। कुछ थोड़ी-थोड़ी इलाहाबाद में सब की आत्मिक-उन्नति जानकर बड़ी प्रसन्नता हुई। 'मालिक' की ही कृपा-शक्ति के एक अदने करिश्मे से पत्थर भी पिघलकर चलने लगते हैं। आगे उन्नति के लिये हमें पत्थर को पिघलाने की बहुत ही आवश्यकता होती है। फिर मेरे 'श्री बाबूजी' पत्थर हमें कैसे पार लगा सकते हैं, परन्तु यह भेद भी खुलता तभी है, जब कोई इस हद तक पिघला हुआ मिल जावे कि जिनके देखते-देखते पत्थर (यानी पार्थिव शरीर का ज़र्रा-ज़र्रा और पार्थिव-पना) भी पिघल जावे। मेरी तक़दीर ने तो ढूंढ़ ही लिया। इसके लिये ईश्वर को कोटि-कोटि धन्यवाद है।

इधर मेरा कुछ यह हाल है कि मैं गुम तबियत सी अधिक रहती हूं। और यह हाल है कि इस बात का भी होश नहीं रहता। हाँ, इसका भी होश आता है तब, जब बहुत भीड़ अथवा शोरगुल हो। यहाँ तक होता है कि मेले से मैं बिना किसी के बताये निकल ही नहीं पाती। यदि कभी जाती हूं मेले तो यह हाल हो जाता है। बाएँ पैर के अगूंठे के पास वाली उगंली में तो जाने क्या बात है कि इतनी ज़ोर की रेंगन लगती है कि ज़्यादातर यह सोचकर कि कोई जानवर चढ़ रहा है, पैर फटक देती हूं। दाहिने में तो केवल कभी–कभी ही होती है और ऊपर तथा नीचे दोनों ओर होती है। दशा में अभी जागृति नहीं मालूम पड़ती। मेरे परम पूज्य 'श्री बाबूजी' मेरा मन इसलिये अधीर रहता है कि मैं पूरी तरह से 'उस' ओर यानी 'मालिक' की ओर लग ही नही पाती हूं। पूरी तबियत नहीं ले जा पाती हूं उस ओर। Senses की मुझे चाहे विरक्ति हुई कह लीजिये या कुछ, परन्तु तबियत (दशा) की अनुभूति की अनुभूति मुझे ज़रूर रहती ही है। इसे ही 'आप' याद कहें तो स्मरण कहें तो।

मेरे परम पूज्य प्रभुवर 'श्री बाबूजी' कुछ ऐसी दशा है कि न जाने क्यों एक तबियत, तो लगता है विचारों के सागर में निमग्न रहती है। यह हाल है कि यदि Neglect न करूँ तो दिन भर कुछ न कुछ लिखती रहूं। परन्तु ऐसा ज़रूर लगता है कि यह सब मेरे दिमाग़ से परे है, क्योंकि मेरा दिमाग़ तो उन विचारों को Collect करके लिखने में ही अधिक थक जाता है, फिर उसमें इन विचारों के ठहरने की कहाँ गुंजाइश है। यह भी अचम्भा है कि जिस तरफ़ दिमाग जावे, बस वैसे ही विचार आने लगेंगे। अब तो कुछ ऐसा लगता है कि बलुहा मैदान भी ओझल हो चुका, क्योंकि उस मैदान का ख़्याल भी अच्छा नहीं मालूम पड़ता। परन्तु अब का मैदान भी साफ़, सपाट सामने नहीं आ रहा है।

केसर इतवार को इलाहाबाद जावेगी। अम्मा 'आपको' शुभाशीर्वाद कहती हैं। अब तो दीवाली भी पास आ रही है, और 'आप' रात के बारह बजे से दिन ग्यारह बजे तक यहाँ रहेंगे। लखनौर में तो शक्ति का एक Focus जिसका रुख नीचे की ओर है, मालूम पड़ा करता है, 7–8 दिन से। केसर चिट्ठियां दो कॉपी तो यहाँ उतार गई थी, तीन कॉपियाँ और उतार लाई। अब फाइल मेरे पास है, मैं भी कुछ न कुछ उतारुँगी। दशा में सफ़ाई न होने के कारण या खुली न होने के कारण तबियत में अभी चेतना नहीं आ पाई। इतिः–

सदैव केवल 'आपकी' ही कृपा कांक्षिणी
सेविका
पुत्री–कस्तूरी

पत्र-संख्या-429

मेरे परम पूज्य तथा श्रद्धेय श्री बाबूजी, लखीमपुर
सादर प्रणाम स्वीकृत हो। 12.10.54

कल पूज्य मास्टर साहब जी आ गये, उनसे समाचार तथा 'आपकी' तबियत का हाल जानकर प्रसन्नता हुई, परन्तु 'आपकी' सांस की तकलीफ़ कुछ उभरने लगी है, तथा बार-बार दस्त आ जाते हैं, जानकर फिक्र है। 'आपको' दस्त अब जाने क्यों हो जाते हैं। सांस से 'आपको' कमज़ोरी आ जावेगी, 'आप' कुछ दवा लीजिये। मेरी तन्दुरुस्ती फिर बढ़ने लगी है, जब से 'आपको' लिखा था, तब से 'मालिक' की कृपा से ही जो कुछ भी आत्मिक-दशा है, सो लिख रही हूं।

मेरे परम पूज्य महात्मन्! मैं 'मालिक' से प्रेम नहीं कर पाती हूं, अपने से यह शिकायत है। मेरा एक-एक कण प्रेम के लिये खाली पड़ा है, संभव है कभी 'ईश्वर' मुझे यह अमूल्य रत्न प्रदान कर दे। मेरे तो शरीर का ज़र्रा-ज़र्रा प्याला बन चुका है। कुछ ऐसी दशा है कि अब तक सुना करती थी कि मन से हल्का सूक्ष्म कुछ नहीं है, तभी तो इसकी गति भी पल में यहाँ, पल में वहाँ रहती है। परन्तु मेरा तो यह हाल है कि बस गति को निकाल लिया जावे, तो मेरा एक-एक कण मानों मन ही के समान हो चुका है या मन ही हो चुका है। अब तो लगता है कि दशा में खाली से खालिसपन की कुछ महक आने लगी है। परन्तु हर कण-कण की गति व मन की गति एक ही बन चुकी है। केवल एक ही ध्वनि में लय हो चुकी है कि "हाय! प्रेम कहीं 'मालिक' का मिल जाता"। मेरे 'श्री बाबूजी' कुछ ऐसा है कि मन व मेरे ज़र्रे-ज़र्रे व भीतर-बाहर की समान ही दशा चलती है। एक समान ही दशा बहती है। मेरा तो यह हाल है कि अब तड़प लगती है, न कसक; अब तो टीसन दिल का दर्द बन गई है, जो अक्सर 'मालिक' की याद दिला दिया करती है।

अब तो ऐसा लगता है कि मैदान तो सीधा-सादा है, परन्तु Limitless है। परन्तु इसमें क्या चीज Limitless है, यह मैं स्वयं नहीं कह सकती, क्योंकि शान्ति कहूं तो, उस दशा की भी Limit है, और यदि कोई उससे परे झाँके तो उसे शान्ति नाम से सम्बोधन नहीं कर मिलता। यदि आनन्द कहूं तो है नहीं, क्योंकि उसकी भी हद है, और यदि उससे परे सोचा जावे तो, वह फिर इस योग्य नहीं रहती कि उसे आनन्द नाम दिया जावे, बस मेरे 'श्री बाबूजी' एक ही शब्द पाती हूं, जिससे उसका कुछ अन्दाज़ लगा मिलता है, जो बेचैनी, तड़प, कसक व टीसन से बदल कर अब दिल का दर्द बन गई है।

मुझे कुछ ऐसा लगता है कि सारी रीढ़ से लेकर पूरे दिमाग़ तक एक अविचल, स्थिर सी नाड़ी खड़ी रहती है, जिसमें चाहे कैसी कितनी हरकत हो अंतर ही नहीं पड़ता। इसे मन की गति कह लें, तो भी कोई हर्ज़ न होगा, और यह सम्बन्धित सदैव

दिमाग़ से ऊपर किसी ऊपरी दुनियाँ से ही रहती है, जो विचार लाया करती है। परन्तु न जाने, एहसासों को कौन चुनता है। अब कुछ ऐसा है कि शरीर से अंतर तक देखने में कोई बन्धन व आवरण नहीं दिखाई पड़ता है, या यों कह लीजिये कि ज़र्रे से ज़र्रे तक में कोई सम्बन्ध नहीं है, सब शुद्ध या खाली और स्वतंत्र हैं। ज़िन्दगी अब तो विचारों से पल रही है। मेरे परम पूज्य महात्मन्! कोई 'मालिक' के इस महान चमत्कार को देखे कि ऐसा चमत्कार क्या किसी में हिम्मत है जो दिखा सके। मैं तो देखकर बस पुलक उठती हूं। मेरी दुनियाँ में अब शब्दों का आडम्बर भी नहीं है, जिससे मैं अपने 'मालिक' का धन्यवाद तक दे सकूं। मेरा तो यह हाल है कि लगता है, मेरा मस्तक तो हमेशा इतना नत या झुका हुआ रहता है कि यदि 'मालिक' को धन्यवाद देने के लिये मुंह ऊपर उठाऊं तो यह तो समझ में आता नहीं कि क्या कहूं और न जाने कब मस्तक स्वयं ही नत हो जाता है। फिर इसे भी भूल जाती हूं कि नत हूं। यही दशा प्रेम की है कि सिवाय सिर झुकाने के और मेरे पास कोई कोशिश नहीं रह गई है। परन्तु मुझे अब न जाने क्या हो गया है कि लगता है कि अब 'मालिक' मुझे अपनी मिल्कियत की तरफ़ खींचे लिये जा रहा है और मैं उसी मार्ग में अब हूं। दशा तो इतनी हल्की या खाली हुई पाती हूं कि एहसास या अनुभव से भी हल्की पाती हूं। परन्तु ऐसा होते हुए भी 'मालिक' की कृपा से दशा इतनी शुद्ध सामने आती है और निगाह भी तुरंत वैसी ही बनकर उसे पढ़ ही लेती है, फिर 'उसी' (मालिक) की कृपा से न जाने कैसे कुछ न कुछ शब्दों द्वारा उगल ही जाती है। मेरी तो इतनी भूली या बेसुध दशा अब रहती है अब चाहे दशा कितनी साफ़ सामने हो परन्तु जब तक तबियत को उकसाती नहीं, तब तक होश नहीं रहता, जागती नहीं दशा Read ही नहीं करती और यदि उकसाना बन्द कर दो फिर ठप हो जाती है। यही हाल कुछ भी लिखूं तो होता है। बात करने में हो जाता है। इतिः-

सदैव केवल 'आपकी' ही कृपा कांक्षिणी
सेविका
पुत्री-कस्तूरी

पत्र-संख्या-430

मेरे परम पूज्य तथा श्रद्धेय श्री बाबूजी, लखीमपुर
सादर प्रणाम स्वीकृत हो। 17.10.54

कृपा-पत्र 'आपका' कल मिला-पढ़कर अत्यन्त प्रसन्नता हुई। जब परम पूज्य महात्मन् के स्नेहसिक्त इन शब्दों को पत्र में पढ़ती हूं कि "तुम्हारी बागडोर मैं अपने हाथ में रखता हूं" तो अपार हर्ष होता है और कभी यह सोचती हूं कि क्या अब एक साधक की श्रेणी में मेरी गिनती हो सकती है? क्योंकि जब तक 'मालिक' साधक की बागडोर न सम्भाल

ले, तब तक तो यह प्रश्न ही बेकार है और 'मालिक' का हज़ार-हज़ार धन्यवाद है कि जब बालिका में साधना का भी बल न रहा तो 'उसने' सम्भाल लिया। सम्भाला तो अब तक 'उसी' ने है और 'वही' आगे भी सम्भालेगा, हाँ अब कहीं गलती होने का भी भय मुझे नहीं रहा और गलती भी कैसे हो जब सही ही नहीं होता। मैं कुछ ऐसी निर्द्वन्द रहती हूं, बेफ्रिक घूमती हूं। शुक्लाजी वहाँ चले गये, 'आपसे' मिल लिये, बड़ा ही अच्छा रहा, एक अंधेरे में पड़े रहते और उसे उजाला समझा करते। मेरे में 'श्री बाबूजी' यह कुछ ऐसी कमी है कि ज़रा भी प्रेम 'मालिक' का किसी में देख पाती हूं तो अपनी तबियत इतनी उछलने लगती है फिर उसके दोष कुछ दिखाई नहीं पड़ते। पूज्य मास्टर साहब जी में यह बात नहीं है, इससे उनका Reading ठीक बैठता है। 'आपने' अपनी Value, Zero या सिफ़र दी है, इससे ठीक Expression और कुछ 'आपके' लिये मिलता ही नहीं। यह ऐसी अपनी अनोखी चीज़ है कि इसकी उपमा आज तक शायद कभी किसी ने न दी हो और इससे उपमा देता ही कौन जब इसकी तह तक कोई पहुंच ही नहीं पाया। 'आपके' दमे की तकलीफ़ सुनकर सबको चिन्ता है। न जाने क्या बात है 'श्री बाबूजी' कि करीब 7-8 दिन से अनजाने में ही तबियत को प्रार्थना में रुजू पाती थी और वह प्रार्थना क्या थी कि "ईश्वर 'मेरे बाबूजी' को दमे की तकलीफ़ न हो" इस कारण एक-आध दिन इच्छा-शक्ति ने भी ज़बरदस्ती यह काम किया। यद्यपि बहुत धीमा कि न जाने यह क्या बात है। मेरी भी सांस इधर 4-5 दिन से कुछ खराब थी, कल दवा ले आई। अब ठीक हो गई। पेट में मर्ज़ के Symptoms तो मुझे नहीं मिलते, परन्तु 6-10 वर्ष का मर्ज़ होने के कारण Practical way में आते-आते जितना समय लग जाये, वह भी शीघ्रता से हो रहा है। बसंतपंचमी अबकी हमलोगों को जल्दी बुला रही है, बड़ी खुशी है। अब 'आपके' यहाँ आने के केवल छः दिन रह गये है, किसी तरह जल्दी कट जायें बस। 'मालिक' की कृपा से जो कुछ भी आत्मिक-दशा है, सो लिख रही हूं।

मेरा तो कुछ यह हाल है कि जब 'आप' यह लिखते हैं कि "तुम्हारी तबियत असलियत की तरफ़ तेज़ रुजू है" तो मैं अचम्भे में पड़ जाती हूं, परन्तु एक दृढ़ विश्वास के साथ कि जो 'आपने' लिखा है। अचम्भा यों लगता है कि मैं दिन-भर इस बात की कोशिश करती हूं कि तबियत उस ओर रुजू हो, परन्तु याद इतनी खराब है कि आधा सेकण्ड भी न गुजरता होगा, कि ख्याल बहक जाता है और फिर बहुत समय बाद याद आती है कोशिश करने की। परन्तु कुछ यह हो गया है मेरे 'श्री बाबूजी' कि पहले जैसे याद आने पर एक दशा में जैसे झटका सा लगता था परन्तु अब तो झटका-वटका कभी लगता ही नहीं। दशा में शायद मेरी याद का कुछ असर ही नहीं पड़ता या याद की पहुंच भी वहाँ तक नहीं हो पाती। पहले जैसे लगता था कि दशा से तबियत नीचे आ गई और अब तो चाहे तोपें गरजें, भीड़ हो, याद आये या न आये, परन्तु तबियत में झटका लगना व नीचे झुकना असंभव है, क्योंकि 'श्री बाबूजी' कुछ यह हाल है कि तबियत तो

मेरी खोकर जाने कहाँ चली गई या यों कह लीजिये कि तबियत दशा में पगी रहती है। मेरी सुस्त, याद का डोरा सम्बन्ध सब कुछ खो गया। मैं तो यहाँ एक बहकी हुई सी रहती हूं, जिसे इससे भी (यानी बहकी हुई से भी) एक प्रकार को बेहोशी रहती है। रीढ़ के आस-पास कन्धे से नीचे बीचों-बीच रीढ़ के आस-पास, रीढ़ के लगे ही हल्की सरसराहट व गुदगुदी रहती है। कुछ यह है कि अक्सर मैं देखती हूं कि, अनजाने में भी मैं जो बात करती हूं, चलती हूं, फिरती हूं, या सारे स्पन्दन एक अजीब सपाट, सीधी दशा में मिले रहते हैं। एक अजीब प्राकृतिक रहन में होते हैं। एक अजीब प्राकृतिक रहन में मैं रहती हूं, जिसका मुझे अहसास कुछ बेखबरी में होता है।

कल 'धर्मयुग' ने कहानी वापिस कर दी है कि यहाँ यह कहानी नहीं छपेगी अब "नवनीत-पत्रिका" एवं "हिन्दुस्तान" में Try कर देखूंगी। मौसा जी को भी लिखकर पूछूंगी यदि रेडियो में बोलने के लिये दस मिनट मिल जायें। Subject स्वयं दूंगी या उन्हीं से मागूंगी, देखिये जैसा होगा देखा जावेगा। Notes तो मैंने कहानी में दिये थे। अब तो 'आप' आ रहे हैं, बस यही खुशी बहुत है।

अम्मा 'आपको' शुभाशीर्वाद कहती हैं। इतिः-

सदैव केवल 'आपकी' ही कृपा कांक्षिणी
सेविका
पुत्री-कस्तूरी

पत्र-संख्या-431

मेरे परम पूज्य तथा श्रद्धेय श्री बाबूजी, लखीमपुर
सादर प्रणाम स्वीकृत हो। 29.10.54

आशा है, 'आप' भईया, दद्दा के साथ आराम से पहुंच गये होंगे। मैं भी 'मालिक' की कृपा से ताऊजी के साथ आराम से पहुंच गई। मेरे आँखों के सामने तो अभी बस 'श्री बाबूजी' ही घूम रहे हैं। मेरा तो जी नहीं लगता किसी काम में। एक ही छवि के आगे सब कुछ न्यौछावर हो चुका है। 'मालिक' की कृपा से जो कुछ भी आत्मिक-दशा है, सो लिख रही हूं।

अब तो कुछ ऐसी दशा रहती है कि हर समय 'मालिक' के लम्बे हाथ मेरे ऊपर रहते हैं, नहीं तो यह हाल है कि बिच्छू सामने पड़ा है और मैं उसे देख रही हूं, किन्तु होश नहीं है। जब उसे लकड़ी पर उठाकर एक ओर फेंकने चली तो जैसे किसी ने हाथ पकड़ कर झटक दिया हो और आँखों में रोशनी दी जिससे बिच्छू समझ कर मार दिया। कुछ ऐसी दशा रहती है कि बेहोश रहूं तो होश नहीं रहता और होश में रहूं तो होश नहीं रहता। मुझे

आश्चर्य है कि जब स्कूल में मुझसे गाना पूछा जाता है, तो स्वयं ही उस बहकी सी दशा में भी गाना अपने आप ही सही-सही मुंह से निकलने लगता है।

इधर दो-तीन दिन शायद 26-27 तारीख से कुछ यह जाने क्या है कि ऐसा लगता है कि मानों पीठ पर रीढ़ पर एक मुट्ठी बन्द रक्खी हुई है, या हाथ बल्कि Touch रहता है, जिसके कारण मेरी कुल पीठ में हर समय Vibration रहता है और सबसे ज़्यादा तो कुल रीढ़ की लाइन में रहता है। रीढ़ के हर गुरिये में Vibration है तथा किसी तरह की हल्की Light निकलती है। अक्सर उनमें से कुछ गर्मी निकलती महसूस करती हूँ। मेरे पूज्य महात्मन् कुल पीठ कुछ खुली हुई हल्की-हल्की सी मालूम पड़ती है। कभी लगता है कि कुल पीठ में इस तरह का कुछ छाया हुआ है। ऐसा शायद तेज़ Vibration के कारण लगता होगा। परन्तु कुल Vibration से भी मैं देखती हूं कि रीढ़ के बीचोबीच जो नस खड़ी हुई है, उस पर तो कुछ प्रभाव ही नहीं पड़ता यानी कुंडलनी पर। और लगता है वह तो अचल, स्थिर, ज्यों की त्यों खड़ी हुई है। कुछ यह है कि कुल पीठ में शायद Vibration द्वारा या कैसे एक अजीब हल्की शान्त, सौम्य दशा सी फैली अनुभव होती है। कुल पीठ के जोड़-जोड़ नस नस मानों ढीली पड़ गई है या पिघल चली है।

मेरे परम पूज्य 'श्री बाबूजी' अब तो कुछ यह दशा है कि लगता है कि मन नाम की तो अब मेरे पास कोई चीज़ ही नहीं रह गई है। कुछ ऐसा है कि मन की बंदिश या बन्धन टूट गया है, जिससे उसे सर्वव्यापी कह लीजिये तो कुछ नहीं या सब जगह फैला हुआ कह लीजिये तो ठीक ही होगा। यदि कुछ है ही नहीं कह लीजिये तो भी कुछ नहीं है। ऐसी बेपरवाही सी दशा है। मेरे परम पूज्य प्रभुवर 'श्री बाबूजी' ऐसा लगता है कि सम्पूर्ण जगत, ब्रह्माण्ड तक सब मानों मेरा Heart ही फैला हुआ है। अब तो लगता है कि 'मालिक' की कृपा से 'Z' Point शुद्ध साफ़ खुला हुआ पड़ा है, क्योंकि अब ऐसे ही सपाट मैदान में अपने को बढ़ता हुआ पा रही हूं। हाँ, और न जाने क्यों वह फैला हुआ Heart लगता है कि मुझमें जज़्ब हुआ जा रहा है। न जाने क्या बात है कि कभी-कभी पागलपन के Action करने को तबियत उतारू सी हो जाती है, परन्तु 'मालिक' की कृपा रूपी बागडोर बुद्धि में इतना होश ज़रूर रखती है, जिससे ऐसा नहीं होने पाता, परन्तु देखती हूं कि कुल इन्द्रियों के Senses बिल्कुल समाप्त हो चुके हैं और बिल्कुल अचल, स्थिर सा अनुभव करती हूं। कुछ ऐसा एहसास होता है कि 'मालिक' की कृपा-दृष्टि , भाई मुन्ने-बाबू के रुपये के भण्डार भरने को कुछ रुजू है। मैं देखती हूं जैसे मेरे अन्दर सब कुछ अचल है, बस एक क्षोभ है, वही मन के रूप में मेरे पास है और वह है कचोटन। न जाने क्यों मेरे 'श्री

बाबूजी अबकी से जब तक 'आपके' पास रहती थी, तब तक तो वहाँ से हटने की तबियत न होती थी और घर आकर न जाने क्यों फिर 'मालिक' के ही पास जाने की कुछ तबियत नहीं मालूम पड़ती थी, परन्तु तैयारी पास जाने की ही रहती थी।

अम्मा 'आपको' शुभार्शीवाद कहती हैं। इतिः-

सदैव केवल 'आपकी' ही कृपा कांक्षिणी
सेविका
पुत्री-कस्तूरी

पत्र-संख्या-432

मेरे परम पूज्य तथा श्रद्धेय श्री बाबूजी, लखीमपुर
सादर प्रणाम स्वीकृत हो। 1.11.54

कृपा-पत्र 'आपका' आज मिला-पढ़कर हर्ष हुआ। मेरा पत्र मिला होगा। दीदी की तबियत का हाल दीजियेगा और कृपया अपनी का भी। मैंने इतना तेज़ दर्द का दौरा 'आपका' अब तक कभी नहीं देखा था, जैसा कि अब की बार देखा है, और अभी तक नहीं रुका। ईश्वर न जाने क्यों हमारी गुहार पर ध्यान नहीं दे रहा है, परन्तु अब तो उसे ध्यान देना ही होगा। बालक की सच्ची पुकार पूरी होकर रहेगी। ज़रूरत से ज़्यादा दर्द मुझे बर्दाश्त नहीं होता। क्या इसके लिये कोई दूसरा पात्र यानी ज़रूरत से ज़्यादा दर्द के लिये कोई और नहीं हो सकता। खैर, ईश्वर कृपालु है, इसमें सन्देह नहीं और 'आपके' दर्द के तेज़ दौरे भी मध्यम पड़ ही जायेंगे ईश्वर ने चाहा तो , ताऊजी सुबह मास्टर साहब जी के यहाँ ही चले जाते हैं। Right Condition वाली हालत के पर्दे बराये नाम ही कुछ हैं, बस वे भी मालिक की कृपा से साफ़ हो जावेंगे ।

गोला आने से पहले मेरे आँसू न थम सके, यद्यपि मैं यह प्रयत्न करती रही कि इससे 'श्री बाबूजी' को कुछ तकलीफ़ न पहुंचे। यद्यपि चौबीसों घंटे 'मालिक' का सूक्ष्म रूप प्रतिछाया के सदृश्य अनुभव करती हूं, परन्तु फिर भी न जाने क्या हो जाता है। अभी तक कुछ यह हाल है कि यदि कोई 'श्री बाबूजी' कह देता है; तो एक प्रकार की छटपटाहट अंतर में लगती है, परन्तु कुछ भी हो, ज़ब्त में ही आनन्द है मुझे। आँसू बहाना एक अपनी कमज़ोरी मालूम पड़ती है। मेरे 'श्री बाबूजी' 'आपने' जो तारीफ़ लिखी है, वह तो 'आपकी' ही सेविका, बिटिया की है और वह तो न तो स्त्री है, न पुरुष, जो कुछ भी है, अपने 'मालिक' की है और जो कुछ इसमें तारीफ़ काबिल बात है, वह तो 'मालिक' का ही एक अदना करिश्मा है, ऐसा मेरा सुदृढ़, सत्य निश्चय है। 'आप' मुझे रफ़्ता-रफ़्ता ही ले चलिये। जैसे मर्ज़ी हो, वैसे ही ले चलिये। मैं तो हर हाल में खुश हूं। स्वामी प्रसन्न

रहे, सेवक का यह फर्ज़ है। मुझे तो 'मालिक' से काम है। 'मालिक' की कृपा से जो कुछ भी आत्मिक–दशा है, सो लिख रही हूं।

अब तो यह हाल है कि लगता है कि दिमाग़ पर मानों कुछ एक नशे की खुमारी सी छाई रहती है। अब चाल तो सीधे सपाट मैदान में वही है, जैसी की होनी चाहिए परन्तु मेरी तबियत तो तब भी सिवाय फड़फड़ाने के जल्दी से उड़कर न जाने कहाँ भाग कर जाने को बेचैन रहती है। मेरे 'श्री बाबूजी' आजकल तो यह हाल है कि लगता है एक शुद्ध, हल्की दशा मुझमें हर समय समा रही है, मिटती जा रही है। परन्तु देखती हूं कि ज्यों–ज्यों वह समाती है, अंतर और पिघलता जाता है और Space होती जाती है, और Space क्या? वही खालीपन बढ़ता जाता है। ऐसा हल्का सौम्य मैदान का मैदान मुझमें हर समय समाया जाता है। हज़्म हुआ जा रहा है। कुछ ऐसा लगता है कि मानों बुद्धि, मन हल्कापन, तथा स्पन्दन, सब अटल, स्थिर, अचल रह गया है, सब ठप सा हो गया है। अब न जाने क्यों कुछ यह हो गया है कि चाहे कोई हो, मुझसे बड़ा हो, छोटा हो, आँख से आँख नहीं मिला पाती, क्योंकि सबकी चरण–धूलि के समान मेरी हस्ती लगती है। कुछ ऐसी ही हल्की दशा हो गई है। मेरे परम पूज्य 'श्री बाबूजी' मेरी तो कुछ यह दशा है कि भीतर–बाहर, सब कुछ अचल, स्थिर ही मुझे महसूस होता है। हर जड़, चेतन, अटल ही अनुभव करती हूं।

परसों सिर के बीचों बीच, मांग के लगे–लगे में, बाईं ओर, बीच माथे के ऊपर से, जहाँ से मांग शुरू होती है, वहाँ से और जहाँ पर चोटी रक्खी जाती है लड़कों के, वहाँ तक पूरी लकीर भर में पिपरमिन्ट की तरह बड़ी ठंडक सी करीब दो–ढाई घंटे बराबर रही। अब भी कभी–कभी कुछ बहुत धीमी सी मालूम पड़ती है। कुल पीठ में तो चौबीसों घंटे स्पन्दन रहता है। गुदगुदी सरसराहट, तथा कभी–कभी ठंडक सी भी हो जाती है। आजकल कभी–कभी पीछे गर्दन में जहाँ रीढ़ शुरू होती है, उससे चार अंगुल की नीचे वाली गुरिया तथा पीठ के बीचोबीच वाली में तो बहुत फड़कन रहती है। वैसे तो कुल पीठ में हर समय रहती है। यह न जाने क्या बात है कि अक्सर बैठे–बैठे एक मुर्दे की सी हालत हो जाती है, परन्तु एक हल्का सा Sense Lose नहीं होता है।

अम्मा 'आपको' शुभाशीर्वाद कहती हैं। इतिः–

सदैव केवल 'आपकी' ही कृपा कांक्षिणी
सेविका
पुत्री–कस्तूरी

पत्र-संख्या-433

मेरे परम पूज्य तथा श्रद्धेय श्री बाबूजी, लखीमपुर

सादर प्रणाम स्वीकृत हो। 4.11.54

कृपा-पत्र 'आपका' कल मिला-पढ़कर हर्ष हुआ। 'आपने' यह तो बहुत ठीक लिखा है कि मन का कुछ बन्धन शेष है, उसी के कारण कुछ भद्दा force असर करता है। मैं भी कुछ इसके कारण तबियत में शुद्धता में कमी पाती हूं। कमी क्या पूरी तौर से स्वतंत्र शुद्धता में नहीं हो पाती, परन्तु यह मालिक की ही कृपा व शक्ति है कि इसके कारण कभी दशा में मुझे रुकावट अथवा भद्दापन नहीं मालूम पड़ता। अब फिर मुझे फ़िक्र ही क्या, जो 'आपका' मन चाहे कीजिये। 'मालिक' की कृपा से जो कुछ भी मेरी आत्मिक दशा है सो लिख रही हूं।

न जाने क्या है मेरे 'श्री बाबूजी' कि मेरी कुछ एक इस प्रकार की हालत रहती है कि उसमें ख्याल डटाने या बाँधने से शरीर में शिथिलता आने लगती है और बिल्कुल मुर्दापन। वैसे वहमी तौर पर तो रहती ही है, मगर मुझे अब Condition का भी कुछ स्मरण नहीं रहता और कुछ विचारों की लड़ी उससे तबियत को जुड़ी रहने या रम जाने से थामे रहता है और विचार भी क्या, मुझे इसका पता ही नहीं। कुछ ऐसा एक वहम सा रहता है कि जैसे एक तबियत विचारों के सागर में कुछ डूबी रहती है, परन्तु मुझे उनका इतना एहसास नहीं होता, इसलिये कुछ थकान नहीं। मेरे 'श्री बाबूजी' मेरी तो जड़-अवस्था हो गई लगती है, बस चेतन इतनी है, जितना या जैसा कि पेड़-पौधे ज़िन्दगी के लिये रस खींचा करते हैं। अक्सर यह न जाने क्या बात है कि लगता है कि हज़ार ब्रह्माण्डों की रचना से भी Heart का फैलाव कहीं अधिक है, थाह नहीं है। 'मालिक' की कृपा से कुछ ऐसी सुदृढ़ स्थिति है कि चाहे कोई आग में जला दे, पानी में डुबा दे, परन्तु अपनी स्थिति में तिल भर भी अन्तर आ ही नहीं सकता। लगता है कि ख्याल या सुरत हिलती ही नहीं, ज्यों की त्यों अटल है, स्थिर है, परन्तु ऐसा होते हुए भी इधर कुछ यह हाल है कि मुझे इसका एहसास या ही भान नहीं रहता। ऐसी तबियत है, जैसे मेरे पास कुछ है ही नहीं, मुझे कुछ मालूम ही नहीं और यह दशा तो रहती ही है, इसे भी अक्सर भूली सी रहती हूं, कभी याद आ जाती है, यह और बात है। आज सबेरे से तबियत बिल्कुल खामोश और खाली है। तबियत की आदत में गम्भीरता बनी रहती है। आज से मेरी दशा में कुछ और भी Change है, परन्तु अभी ठीक अधिक Catch नहीं कर पाई हूं। दशा तो शुद्ध सामने है, परन्तु लिखने में अभी नहीं आ रही है। और शुद्ध क्या अब तो शुद्ध कहने में तो कुछ भद्दापन लगता है, उस दशा के सामने अब तो ऐसी चीज़ हूं कि न फैलाव है, न कुछ। मैं तो खोई सी रहती हूं और खोये हुए का भी भान मुझे नहीं है। क्यों जब शब्द खोना कोई कहता है, तब खोने की याद आती है। इतिः-

सदैव केवल 'आपकी' ही कृपा कांक्षिणी

सेविका

पुत्री-कस्तूरी

पत्र संख्या : 434

मेरे परम पूज्य तथा श्रद्धेय श्री बाबूजी, लखीमपुर

सादर प्रणाम स्वीकृत हो। 7.11.54

आशा है मेरा एक पत्र पहुंचा होगा। 'आपके' पत्र में 'आप' जो अपनी आदत के विषय में लिख देते हैं, उन मोतियों को सहेज कर मैं हृदय में समेटना चाहती हूं, परन्तु देखती हूं अभी मेरे हृदय में उन मोतियों को बिल्कुल चूस लेने का मलका नहीं पैदा हुआ और इसका कारण है, जो मैं जानती हूं और रफ़्ता-रफ़्ता पढ़ती चली आ रही हूं। मेरी समझ यही एहसास करती है, फ़नायत की कमी और हृदय में एक ऐसा बन्धन अभी महसूस करती हूं, जो मुझे 'मालिक' में या शायद दशा में बिल्कुल घुल-मिल जाने में बाधक है और वह बन्धन अभी बिल्कुल धुंधला तो नहीं है ऐसा महसूस करती हूं, हाँ कुछ तो महसूस करती हूं और सम्भव है कि यह वही बन्धन हो जिसे 'आपने' मन्मई-कोष लिखा है और यही बन्धन मेरे मन के पूरे फैलाव के एहसास में एक लकीर के सदृश है, क्योंकि मेरे 'मालिक' के लम्बे हाथों ने मुझे उस पार खींचकर उसकी दशा का भी एहसास करा ही दिया और करा रहा है। 'उसकी' ही कृपा से मेरी उन्नति के शूल-फूल बनकर मेरे मार्ग में आये। पीठ पर के हाथ का जो स्पर्श है, उससे मेरा लगाव है, इसलिये मैं समझ गई थी कि यह 'आप' ही का वरद-हस्त है। ताऊजी के लिये 'आपने' बिल्कुल सही बात लिखी है, मेरा यही अनुभव था, परन्तु इधर गड़बड़ी के कारण सब गंदगी में छिप गये थे, परन्तु अब 'मालिक' की कृपा से दशा में फिर झलक आ गई है। 'मालिक' का हज़ार-हज़ार धन्यवाद है, नहीं तो यह नामुमकिन ही सा हो चुका था अब 'मालिक' की कृपा से जो कुछ भी आत्मिक-दशा है, सो लिख रही हूं।

कुछ ऐसा लगता है कि ईश्वर का सारा Heart मानों मेरे अन्दर सब समाया जा रहा है और सब का सब न जाने कैसे मुझमें भिदता जा रहा है। कुछ ऐसा लगता है कि इतना विस्तृत Heart क्षेत्र सब मेरे अन्तर में सिमटा आ रहा है, उसकी सारी दशा मुझमें भिद सी गयी है, परन्तु मेरे ऊपर तो न जाने क्यों सिवाय इस एहसास के मानों कोई असर ही नहीं पड़ता। इससे भी अनजान, अनभिज्ञ सी दशा रहती है। क्योंकि मेरे 'श्री बाबूजी' मैं तो अपने को इससे भी अलग या परे पाती हूं, परन्तु यह न जाने क्या बात है कि अब लफ़्ज अपने को पाती हूं मुझसे कहा नहीं जाता है, भद्दा सा लगता है, चाहे अलग या परे कहूं तो भी। मुझे तो न जाने क्यों हालत गम्भीर में रहने से शुद्धता और दशा में चंचलता आने से, नहीं बल्कि सोचने से ही भद्दापन लगता है, परन्तु 'मालिक' ने इस चीज़ को जो भद्दापन पैदा करे, हटा ही दिया। न जाने अब क्या हो जाता है कि नम्रता का एहसास भी दशा में कुछ भद्दापन ही एहसास दिलाता है। एक बात मैंने कुछ शर्म के कारण नहीं लिखी, परन्तु वह

कोई खराब बात मुझमें न हो गई हो, इसलिये लिखे देती हूं। मैं इसे अपनी तमाम कोशिश से भी ठीक न कर सकी। अब 'आप' ही जानें, कि जब 'आप' यहाँ आये तो 'आपके' पास तबियत न जाने क्यों जाने को नहीं चाहती थी और अलहदा होने में भी जी फटता था। इतिः –

सदैव केवल 'आपकी हीं' कृपाकांक्षिणी
सेविका पुत्री – कस्तूरी।

पत्र-संख्या : 435

मेरे परमपूज्य तथा श्रद्धेय श्री बाबूजी — लखीमपुर
सादर प्रणाम स्वीकृत हो। — 13.11.54

कृपा-पत्र 'आपका' कल पूज्य मास्टर साहब जी द्वारा मिला– पढ़कर हर्ष हुआ। कृपया 'आप' अपना इलाज अब डाक्टरी ही करवाइये। ऐसा हो सकता है कि वे दमें व पेट के दर्द दोनों का इलाज साथ-साथ करके दोनों मर्ज़ों को लाभ कर दें।

'आपने' जो लय-अवस्था तथा दीक्षित होने की जो महिमा लिखी है, वाकई सही है। 'आपने' अपने दर्द व तकलीफ़ व शिक्षक के चोला छोड़ने से सत्संगियों को जो फ़ायदा लिखा है, वह यथार्थ है, परन्तु मेरी निगाह इस फ़ायदे की ओर देखने को भी नहीं मुड़ती। 'मालिक' की उम्र दराज़ हो और 'उनकी' तकलीफ़ कम हो जावे, मेरी तो दिन-रात ईश्वर से यही विनती है। हाँ, यदि 'आप' माफ़ करें तो मैं यह कहूंगी कि यदि हम सत्संगी बहुत ही जल्दी फ़ायदा चाहते हैं तो बजाय 'आपके' दर्द व तकलीफ़ से लाभ उठाने के इस बात पर क्यों न राज़ी हों कि 'आपकी' पूरी शक्ति से एक सेकण्ड में ही कुछ से कुछ होने के लिए तैयार हों। फिर शरीर रहे या जाये, Nervous System Shatter हो जाये। लय-अवस्था प्राप्त करने के लिए वास्तव में हर सत्संगी भाई-बहिन को पूरी कोशिश करनी चाहिये। 'मालिक' का हम सब की ओर से हज़ार-हज़ार शुक्रिया है कि जिसने ताऊजी के case को भी अन्त में सम्भाल ही लिया। यह है कि कृपा की हद और यह श्री चरणों की ही महा महिमा है। वाकई में गुरू, माता है जो हर तरह से बच्चे को सम्भाल कर वाकई ज़िन्दगी में ढार देता है। 'मालिक' की कृपा से जो कुछ भी आत्मिक-दशा है, सो लिख रही हूं।

मेरा तो कुछ यह हाल है कि मेरे अन्तर में न अब गलाव होता है, न कभी टिघलन ही लगती है, वरन् अब तो एक ऐसा हल्का सा सेंक सा रहता है अन्तर में कि यद्यपि जिसकी गर्मी मेरे अन्दाज़ में नहीं आती या जिसमें गर्मी है ही नहीं। अब तो गलन व टिघलन यह सब शब्द मुझे ऊपरी लगते हैं, जिनमें अब कुछ असर ही नहीं है। हाँ, मुर्दापन तो 'मालिक' की कृपा से ज़रूर आता रहता है। भूल की दशा का तो यह हाल है कि इसका

तो मुझ पर कुछ असर ही नहीं पड़ता। भूल कहूं तो वैसी हालत न कहूं तो वैसी। मेरे परम पूज्य 'श्री बाबूजी' ऐसा लगता है मानों बिल्कुल सादी सी, कुछ बिल्कुल साधारण सी दशा है। जो अटलता व स्थिरता मैं लिखा करती थी कि "मेरा कण-कण लगता है, स्थिर-रूप हो गया है, परन्तु अब तो कुछ मैं स्वयं नहीं समझ पाती हूं कि जाने मुझमें स्थिरता है भी या नहीं। मैं तो बिल्कुल अनभिज्ञ सी हूं। मुझे तो हर तरफ़ बस एक सादा सा ही संसार दीखता है, बल्कि लगता तो यह है कि सादगी व अचलता, एकाग्रता की दशा स्वयं मुझमें डूब चुकी हैं। कुछ ऐसी नेचर होती जा रही है कि न जाने क्यों चुप रहना ही अच्छा लगता है। शब्द दशा के लिए fit नहीं बैठता, बल्कि दशा ही चुपचुपाती हो गई है। मेरे 'श्री बाबूजी' 'आपके' लिखने पर मैंने ग़ौर किया तो एकाग्रता मन के थोड़े से बन्धन तक ही महसूस होती है, परन्तु इससे आगे नहीं महसूस होती। यह भी जाने सादगी बन गई है। लगता है कि दशा क्या, बल्कि सब रंग मिल-मिलाकर बजाय सफ़ेद के एक कोई ऐसा रंग बन गया है, जो मुझे पता नहीं कि क्या है, परन्तु उसमें रंग कोई नहीं। यदि यह कहूं कि सब बेरंग हो गया और सब हालतें उसमें डूब कर लय होकर समाप्त हो गईं, क्योंकि कोई दशा उसमें मिली या घुली भी नहीं दिखाई पड़ती। मैं क्या लिखूं ? मेरे 'श्री बाबूजी' अब मैं जाने ठीक लिख पाती हूं, क्योंकि ऐसा लगता है कि मैं देखती हूं कि हर दशा में से मेरे पंख अन्त में सूखे के सूखे ही निकल आते हैं। सादा में खालीपन कह लीजिये, क्योंकि सूनसान भी Fit नहीं बैठता। अब मेरा कोई भी रूप नहीं है, फिर मैं अपनी कौन सी दशा कहूं। 'आप' ही जानें कि मेरी क्या दशा है। पिपरमिन्ट की बूंदों की तरह मुझे कुल में ठंढक की अनुभूति होती है। 'आप' जैसे चाहिये, वैसे ही मुझे ले चलिये। मेरी उन्नति या आगे बढ़ने में तो 'मालिक' की कृपा से रत्ती भर भी कसर आती नहीं, फिर चाहे जब Heart Region Cross हो। परम पूज्य 'श्री बाबूजी' आज 'आपकी' कृपा से Heart Region मुझे भी बच्चों के खेल-कूद का ही स्थान लगता है। गम्भीरता उसके बाद वाली दशा से शुरू है और अब 'मालिक' की कृपा से बेरंगी का भी रंग समझ में आता है। परन्तु मेरा ख्याल इसमें भी डूब कर सूखा ही निकलता है

अम्मा 'आपको' स्नेहाशीष कहती हैं। इतिः

सदैव केवल 'आपकी' ही कृपा कांक्षिणी
सेविका पुत्री-कस्तूरी

पत्र-संख्या : 436

मेरे परम पूज्य प्रभुवर श्री बाबूजी, लखीमपुर
सादर प्रणाम स्वीकृत हो। 16.11.54

आशा है मेरा पत्र पहुंचा होगा और ईश्वर की कृपा से 'आपकी' तबियत अब ठीक

हो। 'मालिक' की कृपा से जो कुछ भी आत्मिक–दशा है, सो लिख रही हूं।

मेरे 'श्री बाबूजी' मेरा तो कुछ यह हाल है कि हर दशा का आत्मिक,– का मेरे लिये अन्त हो चुका, क्योंकि अब मैं जो दशा लिखती हूं, या लिख रही हूं वह तो 'है' के अन्तर्गत आता है, और वास्तव में मेरी स्थिति के लिये यह 'है' शब्द कतई नहीं है। मेरे तो पंख सूखे के सूखे हैं। यही नहीं, कुछ यह है कि मन की न जाने क्या स्थिति हो गई है, उसे देखकर यह समझो कि 'मालिक' मुझमें रमा हुआ है, तो कुछ अनुभूति नहीं और मुझे प्राप्त करना है तो कोई अनुभूति नहीं। दोनों एक समान ही मालूम पड़ती है। यही नहीं बल्कि मालूम पड़ना या अनुभूति शब्दों को इसमें से हटा लीजिये। न जाने यह क्या बात है 'श्री बाबूजी' कि चाहे श्रद्धा, विश्वास, प्रेम, भक्ति, आनन्द, रस या 'मालिक' के स्पर्श में अपने को कितना डुबाऊं, परन्तु अन्त में पंख सूखे के सूखे ही निकलते हैं। किसी दशा की Touching होती ही नहीं। यहाँ तक कि 'Z' Point की दशा में भी मेरा यही हाल रहता है कि अब मैं रम ही नहीं पाती हूं क्योंकि कोशिश के बाद पंख सूखे के सूखे ही निकल आते हैं। मैं यह कहूं कि निगाह फैल चुकी है तो इसका एहसास नहीं, यदि यह कहूं कि सिमट कर सतहीन हो गई है, मर गई है, तो भी बेपरवाही सी दशा है। अब 'मालिक' ही जाने कि क्या दशा है। वास्तव में तो यह दशा है कि द्वन्द (यानी यह है, और यह नहीं है) का तो दीवाला पिट चुका है और अपना याद नहीं है।

मेरे परम पूज्य महात्मन् 'श्री बाबूजी' लगता है कि दशा ऐसी हो गई है कि उसमें एकता की भी गुज़र नहीं। नहीं भाई, ऐसा लगता है कि सूखे हुए पंखों का भी स्मरण भूला सा रहता है। पता नहीं शायद वे भी झड़ने लगे हों। लगता है कि दशा में कुछ ऐसा सम पड़ चला है, कि दशा अच्छी कहूं तो किसी भी हालत में मन की दशा में कोई अन्तर नहीं पड़ता। क्योंकि दशा तो यह है कि वास्तव में मन ही का पता न चला कि कब और कौन, कहाँ ले गया उसे और अब जाने वह है भी या नहीं, कुछ पता ही नहीं। कभी–कभी दाहिने पैर के अंगूठे में नोक से लेकर बीच की नस में पिपरमेन्ट की तरह ठंढक भर जाती है और इसका Connection सिर में जहाँ चोटी रखी जाती है, वहाँ से रहता है। पीठ पर तो वह 'मालिक' का हाथ हर समय लगता है सहलाया करता है। कन्धे से नीचे पीठ की जो इधर–उधर हड्डियाँ होती हैं, उसमें बाईं वाली हर समय फड़फड़ाया करती है।

अम्मा 'आपको' शुभाशीष कह गई हैं। इति –

सदैव केवल 'आपकी' ही कृपाकांक्षिणी
सेविका पुत्री – कस्तूरी

पत्र-संख्या : 437

मेरे परम पूज्य तथा श्रद्धेय श्री बाबूजी, लखीमपुर

सादर प्रणाम स्वीकृत हो। 19.11.54

आज 'आपका' कार्ड ताऊजी ने पूज्य मास्टर साहब के यहाँ से लाकर सुनाया सुनकर कि 'आपकी' वह फड़फड़ाहट वाली तकलीफ़ जाती रही। 'मालिक' का हज़ार- हज़ार धन्यवाद है कि ऐसा सुअवसर केवल 'उन्हीं' की ही कृपा से आ सका है। हम सबकी ओर से धन्यवाद है कि गलती करने पर भी 'आप' कृपा ही बनाये रहे। 'आपने' लिखा है कि "कस्तूरी ने पेट का कुछ हाल नहीं लिखा, तो मेरे 'श्री बाबूजी' 'आपको' मुझसे कहीं अधिक तकलीफ़ है, परन्तु 'आप' तो मुझे कभी नहीं लिखते, यहाँ तक कि कार्ड में कहीं ज़िक्र तक नहीं किया और मैं 'आपको' तकलीफ़ में भी अपना ही हाल लिखती हूं। खैर, 'आप' चिन्ता न कीजियेगा, वैसे पेट ठीक है, परन्तु इधर कई दिनों से उसे कुछ ठंढक सतास जाती है । तलवों में कड़ुवा तेल लगाने से सुनती हूं ठंढ नहीं सतासती, तो अब मैं वह लगा लेती हूं आराम हो गया है। खाँसी क़तई नहीं है। कृपया 'अपनी' तबियत का हाल अवश्य दीजियेगा। अच्छा है 'आप' जौनपुर जा रहे हैं, मुझे बड़ी खुशी हुई, वहाँ वालों को अत्यन्त लाभ होगा पर 'आपको' रास्ते में तो कष्ट ज़रूर होता ही है, परन्तु वहाँ Complete Rest मिल जायेगा। 'मालिक' की कृपा से जो कुछ भी आत्मिक-दशा है, सो लिख रही हूं।

ता. 17 से कुछ ऐसा लगता है कि न जाने क्यों मन में कोई बन्धन एहसास नहीं होता। लगता है ईश्वर का Heart सब जैसे मुझे हज़म हो गया। मेरे 'श्री बाबूजी' लगता है, जैसे कोई चीज़ एकदम से सटक गई हो, लिल गई हो, इसी तरह Heart ईश्वर का हो गया, मानो लिल कर कोई बात ही न रही, मानो सब अपनी मुट्ठी में आ गया।

न जाने क्यों मेरे परम पूज्य महात्मन् 'श्री बाबूजी' लगता है कि रम जाने का माद्दा ही मुझमें न रहा। यहाँ तक कि दशा तक में रमने का प्रयत्न असफल रहता है, क्योंकि प्रथम तो भूल के कारण ध्यान ही नहीं आता, दूसरे किसी में रम जाने की ('मालिक' तक में) माद्दा भी बह गया, साफ़ हो गया। मेरा तो हाल क्या है, मुर्ग़ाबी समझ लीजिये कि पानी में जाकर भी सूखी की सूखी ही अपने को पाती है। या यों कह लीजिये कि Heart क्या है, ऊसर है, अन्तर इतना फिर भी है कि ऊसर किसी प्रयत्न से शायद कभी उपजाऊ बनाया भी जा सकता है, परन्तु इसमें वह बात नहीं रही। इसका तो पानी मर चुका है। यह हाल है कि इस पर पानी की बूंदें लाने की कोशिश कभी करूँतो देखती हूं कि वह बीच में ही सूख चुकी होती है। मुझे क्या 'मालिक' जाने। न जाने क्या बात है, मैंने लिख तो दिया कि पानी में जाकर मुर्ग़ाबी की तरह सूखी की सूखी रहती हूं, परन्तु वास्तव में तो यह है कि पानी तो दशा के आस-पास तक कहीं एहसास में नहीं आता, इसलिये कहना यही

पड़ता है कि सूखे में ही तैरती फिरती हूं। मेरे परम पूज्य श्री बाबूजी । लगता है 'Z' Point तो अब बिल्कुल साफ़ होकर खुल पड़ा है और है सब मेरे Heart में ही या मेरे पेट में ही, परन्तु न जाने क्यों मुझे अपने ख्याल का एहसास वहाँ भी नहीं होता, यद्यपि Point तो मुझ में सिमटता ही चला आता है और साथ ही मानों पचता भी जा रहा है। मेरा ख्याल भी बिला गया है और जो ख्याल का वहम सा रहता था, उसका भी सत् निचुड़ चुका। अब कोई निखालिस कह लीजिये या कुछ मत कहिये। होगा हमें क्या, हम तो गुलाम 'राम' के हैं, परन्तु गुलामी का होश नहीं रहता, इसलिये वह भी संभाले नहीं संभलती। 'मालिक' ने वह भी बोझा उतार फेंका। अब क्षमा कीजियेगा, कहते अच्छा नहीं लगता, कुछ equality का सा मामला होता जा रहा है, यद्यपि मन में कुछ नहीं है, परन्तु न जाने क्यों दशा ही कुछ ऐसी ही आ जाती है।

ताऊजी, लल्लू, छोटे भईया 'आपको' प्रणाम कहते हैं। इतिः –

सदैव केवल 'आपकी' ही कृपाकांक्षिणी
सेविका – कस्तूरी बिटिया

पत्र-संख्या : 438

प्रिय बेटी कस्तूरी, शाहजहाँपुर
प्रसन्न रहो। 21.11.54

तुम्हारे दो पत्र 13 नवम्बर व 16 नवम्बर को मिले। तुम्हारा हाल डॉ. बी.एन. सिन्हा ने मय दवा के भेज दिया। दवा, वह तुम्हें भी लिख गये होंगे, इस्तेमाल करना चाहिये। एक बात जो तुम्हारे मर्ज़ को बिल्कुल अच्छा कर सकती है, वह है कि तुम्हारा इरादा बन जाये कि तुम अच्छी हो रही हो और सब मर्ज़ दूर हो रहे हैं। तुम इसका ध्यान (Meditation) एक-आध घण्टे रोज़ाना किया करो। ऐसा अगर तुम लगातार कर गई तो कोई मर्ज़ नहीं जो आराम न हो जाये। मुझे उम्मीद है कि तुम ऐसा करना आरम्भ कर दोगी और इसे लगातार करती रहो, इससे महीने डेढ़ महीने में सब शिकायतें दूर हो जायेंगी।

मैंने पिछले दो खतों में अपनी बीमारी से जो फ़ायदा सत्संगियों को लिखा है और दुनियाँ छोड़ने के बाद जो लाभ सत्संगियों को होता है, वह भी लिख दिया। अब एक बात पिछले खतों में लिख तो चुका हूं, संक्षेप के साथ इसमें भी लिखे देता हूं ताकि बात पूरी हो जाये। Teacher अगर High Caliber का है तो उसको Representative कायम ही करना पड़ता है। अगर उसके शिष्यों में से उसके जिस्म छोड़ते वक्त कोई तैयार नहीं है तो उसे इन्तज़ार करना पड़ता है। यहाँ तक कि मैंने एक लेख देखा है कि

एक महात्मा ने अपने दुनियाँ से जाने के बाद डेढ़ सौ वर्ष बाद अपना Representative कायम किया था। स्वामी विवेकानन्द जी के बारे में तुम्हें मालूम ही है कि महासमाधि लेन के कितने दिनों बाद अपना प्रतिनिधि स्थापित किया और जब उनको अपने Mission में उनकी तबियत के मुताबिक आदमी न मिला तो अपना · Connection दूसरी संस्था से जोड़कर कायम कर दिया। बात क्या है कि कुल ताकत को Absorb कर सके, क्योंकि गुरू की कमाई (जो वास्तव में गुरू है) सब यहीं रह जाती है, और जब कोई इस योग्य नहीं मिलता, तो कहीं Store कर देते हैं। अब इसके माने यह हुए कि गुरू की ज़िन्दगी ही में शिष्यों को इस योग्य बनना चाहिए कि उसमें से किसी एक को अपना प्रतिनिधि Select कर सकें। मैंने तो अपना हाल ही अपनी Diary में लिखा है कि समर्थ गुरू महात्मा रामचन्द्र जी महाराज फतेहगढ़ निवासी ने जब महासमाधि ली तो मुझे ऐसा भान समाधि लेने के बाद ही हुआ कि कुल ताकत एकदम से अन्दर व बाहर अनुभूति होने लगी और मैं यह समझ गया कि यह हालत Transfer की हुई है, उसके बाद ही महासमाधि लेने की खबर हुई। इसको Absorb करने में मेरी सब Nerves गड़बड़ हो गईं और सख़्त बीमारी के बाद जो नसों की गड़बड़ होने की वजह से थी, इसको अपने अन्दर रख सका। अब उनकी कमाई तो मेरे पास है और मेरी जो कुछ भी कमाई है, वह भी है, गोया गुरू की दी हुई चीज़ को मैंने बढ़ाया ही है, घटाया नहीं। अब मेरे बाद यह भी कहीं Transfer होगी और इसकी मुझे फ़िक्र भी रहती है कि इस वक्त तक कोई अभ्यासी मालूम नहीं होता है कि कुल ताकत को बर्दाश्त कर सके, इसलिये कि लोग ऐसा बनने की कोशिश नहीं कर रहे हैं, ऐसा न हो कि मुझे भी वर्षों इन्तज़ार करना पड़े। अब मतलब पर आता हूं।

Representative में कुल कमाई दाखिल हो जाती है और फिर उसके ज़रिये से Initiated Members को हिस्सा रसदी पहुंचती है। ताकत का केन्द्र Representative ही रहता है और उससे Inter-communion अपने गुरू से रहना लाज़मी है, ताकि वह उनके आज्ञानुसार उनका काम चला सके और उनके हुक्म की पाबन्दी दूसरे लोग भी कर सकें और Disciples को भी, अगर काफ़ी तरक्की कर चुके हैं, कि सिर्फ़ उनके मुतल्लिक़ इशारे मिलते रहते हैं। और जिस हालत पर Representative पहुंचा हुआ है, दूसरे सत्संगी भी पहुंच सकते हैं, फ़र्क सिर्फ़ इतना रहता है कि वह अपने गुरू की शक्ति का केन्द्र होता है और गुरू उसमें खुद लय होता है। यह गुरू के जाने के बाद का फ़ायदा है।

चौबे जी की हालत जानकर खुशी हुई और भाई, मैं तो दो-तीन वर्ष से सिर पटक रहा हूं, मगर मेरे बूते कुछ न हो सका। जब 'मालिक' की मर्ज़ी हुई और उनका संस्कार उदय हुआ तो वह एक अच्छी हालत पर खड़े हो गये। मगर सत्संग और मेहनत उन्हें बराबर

करते जाना चाहिये और ईश्वरीय प्रेम से सरोकार रखें, जो बार-बार याद करने से हो सकता है। तुमने अपने 13 नवम्बर के पत्र में जिस चीज़ के लिये लिखा है कि एक तरह का सेंक सा रहता है, यह एक किस्म की हालत है, जो प्रेम से पैदा होती है और प्रेम जब निखरता है, तब इस वस्तु का भान होता है। मुर्दापन जो आता रहता है, इसके माने यह है कि जो हालत आने वाली है, ख्वाह कितने ही दिनों में आवे, उसी कैफ़ियत का अन्दाज़ है और यह मुर्दापन की कैफ़ियत लय-अवस्था का, अगर स्थाई हो जाये, तो अच्छी Stage है। साधारण हालत रहना एक अच्छी हालत है और यह आत्मा से निस्बत रखती है। स्थिरता का न समझ में आना, यह उससे भी ऊंची हालत है। चुप रहना इसलिये अच्छा लगता है कि खामोशी में आनन्द का भान होता है और इस कारण बोलने की फ़ुरसत नहीं होती है। तुमने एक बड़ी अच्छी हालत लिखी है कि "सब रंग मिल-मिलाकर एक सफेद रंग बन जाता है, मगर उसमें एक ऐसा रंग है कि जिसका पता नहीं चलता।" यह रंग जिसका तुम्हें पता नहीं चलता, यह असलियत का तलछट है और समझने के लिए Dawn Colour कहा जा सकता है। अब 16 नवम्बर का जो पत्र है, उसमें कोई बात जवाब देने लायक मालूम नहीं होती। बस यह कि "मालिक अगर रमा हुआ हो, तो कुछ अनुभूति नहीं" इसके माने यह है कि वह चीज़ मौजूद है, जो इन दोनों के ख्याल बाँधने से एहसास होती है। मेहमान जब घर में आ जाता है, तो उसका इन्तज़ार नहीं रहता। तुम्हारे 'Z' Point की सैर मुझे अब खत्म मालूम होती है, मगर बहुत हल्के-हल्के और Dim तरीके पर हुई है, इसलिये तुम्हें उसका अन्दाज़ नहीं मिला और ऊंचे स्थानों की सैर ऐसे ही हुआ करती है।अभ्यासी को चाहिये कि जब ऊंचे स्थानों की सैर शुरू हो जाये तो अपने ख्याल को उस तरफ़ चपकाये रखे ताकि उसमें Absorbancy हो जाये और उसका मास्टर बन जाये। अब मैं इस स्थान के बारे में सोच लूं कि इसमें कोई कमी तो नहीं रह गई है, तब मैं आगे बढ़ाऊँगा। कमी नहीं रही होगी, मगर फिर भी सोच-विचार कर तय कर लेना है।

मैंने जौनपुर जाने का 6 Dec. की शाम को इरादा कर दिया। पेट की तकलीफ़ पहले से कम है, फिर भी ज़्यादा है। साँस की तकलीफ़ करीब करीब ठीक है। जौनपुर जाने से तीन-चार रोज़ पहले मैं इसकी दवा डाक्टर से लेकर खा लूंगा कि जो थोड़ा बहुत फ़ायदा कर जाती है। खर्च का लिहाज़ करते हुए दर्द बर्दाश्त कर रहा हूं और डाक्टर के पास नहीं जा रहा हूं। मैंने 18 November 1954 को 12.30 बजे दिन के, तुम में कुछ थकान होना महसूस किया, मैंने उसी वक्त दुरुस्त कर दिया। शायद तुमने भी इसका एहसास किया हो। यह सैर करने में पैदा हो जाती है और यह उन अभ्यासियों को पैदा होती है, जो तेज़ी से रास्ता तय करते हैं। यह थकान भी मुबारिक चीज़ है। क्यों ? यह उसके तेज़ चलने की खुश खबरी देता है। मगर यह ज़रूर है कि जब तक थकान रहती है, तब तक अभ्यासी को सैर और सफ़र नहीं कर मिलता। इसलिये यह काम Teacher का है कि जहाँ थकान मालूम हो, उसको फ़ौरन दूर कर दे, ताकि उसका वक्त बेकार न जावे।

27 नवम्बर को तुम्हारे चाचा Allahabad से हमारी Provincial Association में आ रहे हैं और 28 नवम्बर को चले जायेंगे। चौबे जी को प्रणाम।

शुभचिन्तक
रामचन्द्र

पत्र-संख्या : 439

मेरे परम पूज्य तथा श्रद्धेय श्री बाबूजी, लखीमपुर
सादर प्रणाम स्वीकृत हो। 22.11.54

आशा है, मेरा पत्र पहुंचा होगा। इतनी बड़ी 'मालिक' की मेहरबानी का शुक्रिया का प्रसाद चढ़ाया और 'आपके' पास विष्णु आने वाले थे, सो उनके हाथ 'आपको' पसन्द के मुलायम मक्खन बरे मंगवा कर बंधे रखे रहे, परसों से, आज भी वैसे ही बंधे रखे हैं, परन्तु फिर प्रधान जिनके साथ विष्णु आने वाले थे बीमार हो गये, फिर विष्णु भी नहीं गये। मेरे बाबूजी के हैं, इसी ख्याल में बेहोश थी, पर आज प्रधान आया कि आखिर को यह प्रसाद चढ़ा हुआ सड़ जायेगा, इसलिये शाम को खोल कर सबको फिर दे ही दूंगी। इरादा किया कि मैं ही चली जाऊं 'श्री बाबूजी' को खिला आऊं, परन्तु यह असम्भव सा दीखा। खैर, 'मालिक' का प्रसाद तो है ही, चाहे वहाँ पहुंच सका या नहीं। मेरा दृढ़ विश्वास है कि वह तो 'आपके' पास पहुंच ही चुका और 'आप' खा चुके। 'मालिक' की कृपा से जो कुछ भी आत्मिक दशा है, सो लिख रही हूं।

अब न जाने क्या बात है मेरे 'श्री बाबूजी' कि दशा में 'मालिक' का भी दबाव व लिहाज़ की गुंजाइश ही न रही। परन्तु मेरा सर्वस्व तो वह ज़रूर है, चाहे कुछ हो। इधर कुछ यह लगता है कि तबियत हर समय मानों अपने 'मालिक' से बड़बड़ाया (बातें सी किया) करती है। क्या ? यह कुछ पता नहीं, परन्तु न जाने क्या उसकी यह कुछ बड़बड़ाने की इधर कुछ आदत ही बन गई है। जो हर समय न जाने किससे और क्या बड़बड़ाया करती है। सोने के बाद भी जागने पर अक्सर यही एहसास होता है कि मानों कुछ बड़बड़ा रही थी। क्या विचार रहते हैं, कुछ पता नहीं ? कौन हृदय में समा कर उसे मथ गया है, जिससे तबियत बातें किया करती है। सो तो यह हाल है कि हर पर्दा 'मालिक' बन चुका है, श्वाँस-श्वाँस उसी में समा चुकी है। परन्तु न जाने क्या बात है कि, फिर भी हाल यह है कि मिल गया कहूं या दूर हो गया कहूं, मेरे लिये दोनों दशा समान हैं। यद्यपि मेरे 'श्री बाबूजी' वाणी तो मूक ही रहती है, वह कुछ कह नहीं पाती, हृदय को सामने व्यक्त नहीं कर पाती, क्योंकि उसके शब्दों का खजाना शायद लुट चुका, तबियत

ही बड़बड़ाया करती है। क्या ? यह मालूम नहीं। और हृदय ? वह तो जाने क्या हो गया कि उसका हाल मेरी समझ में नहीं आता। खजाना लुट चुका, दीवालिया हो गया, परन्तु बिल्कुल बेपरवाह है। इतना हीन बन चुका कि यह शब्द उसके लिये बेकार हो चुका। स्वभाव ने सादगी एवं सरलता का जामा पहिन लिया है, परन्तु तबियत को होश नहीं। ऐसी दशा समझ लीजिए कि जैसे मुर्दे से कोई समझाये कि तुम में यह गुण थे या यह तुम्हारी बढ़िया-बढ़िया दशायें थीं, परन्तु फिर भी वह ज्यों का त्यों ही रहता है, यही दशा है। कुछ समझ में नहीं आता। मेरे परम पूज्य महात्मन् न जाने कुछ यह हाल है कि यद्यपि न आँखों में आँसू हैं, न दिल में दर्द और न साँसों में आह है, बस एक पत्थर है, परन्तु बस ऐसी तबियत चाहती है कि कोई पास बैठा मेरी सुनता रहे। क्या ? यह पता नहीं। लगता है जीवन का वह पहलू है, जो 'उसी' के रंग में, जिसमें रंग की छींट नहीं, सादा या सरल या 'सहज' कह लीजिये, उसमें समाया जाता है। हृदय का वह हल्का सा पर्दा जो 'मालिक' में पूरी तौर से समा जाने में कुछ अड़सता सा था, तबियत में Free होने के लिए कुछ धूमिल लकीर के सदृश था, वह भी 'मालिक' की कृपा से साफ हो चुका। अब तो मैं Heart Region से परे अपनी दशा में सूखे मैदान या सोखते में तैर रही हूं और वह मुझ में भिद कर सूखती चली जाती है। दशा क्या है, सोख्ता है। अब तो बस यही लगता है कि मेरे बाबूजी कि हृदय है ही नहीं। बल्कि सब केवल ब्रह्म ही रह गया है। हर कण-कण में, रक्त में ब्रह्म ही ब्रह्म के रूप में मेरा 'मालिक' ही रमा हुआ है। हर डार-डार, पात-पात में, समस्त जड़ में एक ब्रह्म ही समाया हुआ है और ब्रह्म में मैं समाई हुई हूं, चीज़ एक ही है, इसलिए अदृश्य रूप में, मैं ही समस्त में समाई हुई हूं। बस ज़रा होश नहीं है इसका। यद्यपि यह शोभा नहीं देता, परन्तु दशा लिखते मैं लिख रही हूं, क्षमा करियेगा। 'श्री बाबूजी' कि जैसे ईश्वर समस्त में समाया हुआ है और सबसे पृथक है, शायद इसलिये कि 'उसे' इसका होश न होगा। यही दशा है कि समस्त में हूं और होश न होने से, सबसे पृथक भी कह लीजिये।

रही सही बंदिश भी 'मालिक' ने धीरे से काट दी, साफ़ कर दी, बस अब केवल शरीर का ही बन्धन कह लीजिये, जिसका मुझे एहसास नहीं, इसलिये मैं तो इससे भी मुक्त हूं। किसी की दब्बैल नहीं। बड़बड़ाती रहती हूं तो क्या, केवल शायद 'मालिक' को ही न जाने क्या सुनाया करती हूं और वह सुना करता है। या मैं स्वयं अपने से ही कुछ कहा करती हूं, पता नहीं। कभी जब मुकुल आ जाती है तो उससे न जाने क्या-क्या कहा करती हूं, क्यों कि उससे मुझे कुछ पर्दा नहीं। Sitting तो इस लोक, परलोक तक में हर

समय, जो चाहे उसे दे सकती हूं। अपनी दशा को देखकर कबीर का पद याद आ गया– "कौन ठगवा, नगरिया लूटल हो"। सब काम–वाम यदि मुझसे होते हैं तो तैसी, न होते हों तो तैसी। मेरे 'श्री बाबूजी' लगता है मेरा 'मालिक' आत्मा को भी भेदकर उसमें समाने लगा है, समाया जाता है, परन्तु दशा तो सोखता की सोखता ही रहती है। रात में आज आग की लपटें बड़ी–बड़ी सी कुछ सोते–जागते से में दीखती रहीं। सोती–जागती सी दशा तो रात–दिन रहती है। दशा तो एक सी है, चाहे कुछ कह लीजिये। इति –

सदैव केवल 'आपकी' ही कृपाकांक्षिणी
सेविका पुत्री– कस्तूरी।

पत्र–संख्या : 440

मेरे परम पूज्य तथा श्रद्धेय श्री बाबूजी, लखीमपुर
सादर प्रणाम स्वीकृत हो। 23.11.54

कृपा –पत्र 'आपका' आज मिला –पढ़ कर हर्ष हुआ। 'आपके' पेट के दर्द की दवा के लिये इस समय मेरे पास यद्यपि केवल सब मिलाकर चार ही रुपया है, भेज रही हूं कृपया अपना ही जान कर मुझे रुपये न तो वापिस ही कीजियेगा और न बचा ही रखियेगा, वरन् ज़रूर–ज़रूर दवा खा लीजियेगा। वैसे भी मेरे पास जो कुछ था सब 'मालिक' का ही दिया हुआ था और जो कुछ भी मेरे खाने–पहिनने में खर्च होता है, सब 'मालिक' का ही है और मेरे पास जो कुछ होगा, सब 'मालिक' का ही होगा। मेरे तो नाम से ही जो चीज़ बनी या बनेगी, वह तो 'श्री रामचन्द्र मिशन' की ही होगी। 'आपके' जौनपुर जाने से सम्भव है, 'आपकी' कुछ तन्दुरूस्ती सुधर जावे।

'आपने' जो पत्र में लिखा है कि 18 नवम्बर को साढ़े बारह बजे दिन में 'आपने' मुझ में थकान देखी, सो अब ऐसी समझ में आया, क्योंकि यद्यपि मुझे अबकी थकान का अनुभव तो नहीं लगा, परन्तु जब 'आपने' ठीक किया, तब मुझे एहसास हुआ, क्यों कि मुझे लगता है कि यह शिथिलता बहुत ही कम समय के लिये हुई, जिसे मैं समझ न सकी। जब 'आपने' ठीक किया, तब मुझे यह विचार आया कि आज 'मालिक' ने मुझ पर कुछ कृपा कर के किया है परन्तु चाल की थकान के विषय में नहीं ध्यान आया।

सैर 'Z' की समाप्त है, इसका अन्दाज़ मुझे भी 'मालिक' की कृपा से हो गया, परन्तु 'आपने' यह ठीक ही लिखा है कि मैं अपने ख्याल को पूरी तौर से उधर चिपकाये न रख सकी। क्यों कि न जाने क्यों 'श्री बाबूजी' मुझे अबकी बार अन्दाज़ लगता था, परन्तु फिर न जाने क्यों कोशिश करने पर भी याद भूल भूल जाती थी। क्षमा कीजियेगा मेरे

'श्री बाबूजी' अब आगे ऐसा नहीं होगा। न जाने अब की बार मुझे क्या हो गया कि हल्का-हल्का उस दशा का ख्याल रखूं तो याद ही भूल-भूल जाती थी और रमने की कोशिश अधिक ठहरा नहीं सकती अब की सैर क्या 'आपके' मन मुताबिक नहीं हुई ? ऐसा अब मैं कभी नहीं होने दूंगी। कुछ यह हाल है, मेरे 'श्री बाबूजी' कि मुर्दापन की हालत की कुछ खुमारी सी भी मुझमें या दिमाग़ में रहती ही है। 'आपने' लिखा है कि चुप रहना इसलिये अच्छा लगता है कि खामोशी में आनन्द का भान होता है मैं ने देखा तो आनन्द की अनुभुति मुझे नहीं हुई, बल्कि चुप ही का एहसास हुआ, परन्तु मुझे यह लगता है कि चुप रहना अच्छा लगता है तो ज़रूर कोई आनन्द होगा। परन्तु होता तो यह है कि तबियत चुप ज़रूर रहती है, परन्तु उसे चुप रहना न अच्छा लगता है, न बुरा। बोलूं तो कुछ नहीं, न बोलूं तो कुछ नहीं। इधर कुछ यह हो गया है, मुर्दापन की दशा का मेरी हालत में वहम सा बना रहता है, जिसे ऊपर मैं ने खुमारी सी लिखा है।

अब अक्सर न जाने यह क्या हो गया है कि यदि कोई 'मालिक' की चर्चा करने लगता है तो जी चाहता है, वहाँ से उठकर भाग जाऊंऔर कभी -कभी तो यहाँ तक होता है कि यदि कोई उनका नाम बार-बार लेता है तो कलेजा पकड़ कर रह जाती, यद्यपि कुछ एहसास तो नहीं होता न जाने यह क्या हो जाता है। कोई बात मुंह से नहीं निकल पाती। यह जो सेंक सा लगने के बारे में मैं ने लिखा तो उसका अब यह हाल है कि रहने पर भी उसका एहसास कम होता चला जाता है। क्यों कि मुझे उसके एहसास की भी याद भूलती जा रही है। मुझे कुछ ऐसा लगता है, जैसे मेरे दिमाग़ में कुछ तरावट ही कहिये या ऐसा ही कुछ रहता है।

मेरा इरादा अच्छे होने का है और रहेगा। और इरादा ही क्या, ऐसा मेरा विश्वास है कि बीमारी तो मुझे कोई नहीं है, कमज़ोरी सब लोग कहते हैं, इसलिये है, वरना मुझे अनुभव नहीं होती। हाँ, 'आपकी' कमज़ोरी व तकलीफ़ का अन्दाज़ मुझे ज़रूर लगता रहता है। नुस्खा तो डाक्टर साहब ने मुझे कोई नहीं लिखा यहाँ, मास्टर साहब से पूछ देखूंगी, उनके पास शायद दे गये होगें तो होगा। 'आप' दवा ज़रूर खाइयेगा और जिससे 'आप' शीघ्र अच्छे हो जायेंगे। मैं कभी-कभी उभार की हालत ले लेती हूं, जिससे तबियत की सरलता कम हो जाती है। अब ऐसा नहीं करूंगी । जो हालत है, सोई रहने दूंगी।

मेरे 'मालिक' की ही शान है कि अपनों की पल-पल की खबर रखते हैं। चाल की थकान को दूर कर दिया, बहुत-बहुत धन्यवाद है, यद्यपि यह तो 'आपकी' कृपा बनी ही रहती है। इतिः-

सदैव केवल 'आपकी' ही कृपाकांक्षिणी
सेविका पुत्री कस्तूरी

पत्र-संख्या : 441

मेरे परम पूज्य तथा श्रद्धेय श्री बाबूजी, लखीमपुर

सादर प्रणाम स्वीकृत हो। 26.11.54

आशा है, मेरा एक पत्र पहुंचा होगा। 'मालिक' की कृपा से जो कुछ भी आत्मिक दशा है, सो लिख रही हूं।

मेरे 'श्री बाबूजी' समझ में नहीं आता कि तबियत का बड़बड़ाना कहूं या यह कहूं कि एक तरह की ठक-ठक सी आवाज़ से वह सम्बन्धित रहती है। तबियत में चाहे कुछ हो, लेकिन वह हिलती नहीं, वह कौन रस है, यह मैं जानती नहीं। कुछ ऐसा लगता है कि कसक, कसक में मिल गई है, और मुझे कुछ पता ही न चला। अब एक तरह का हुबाबी चिपकाव कहूं या क्या, जिससे मानो स्वप्न-वत् एक सेंक सा लगा करता है, परन्तु सेंक में गर्मी है या ठंढक, पता नहीं। सेकं तो मुझे लगता है, हुबाबी चिपकाव या सेकं, जो हर समय सम्बन्धित रहता है, कुछ ऐसे देश से है या दशा से, जिसे मैंने अक्सर लिखा है कि कोई चीज़ मुझे अपनी ओर खीचं रही है, उसमें खिंचाव नहीं रहा, वह क्या है, कैसी है, यह मैं नहीं जानती, क्यों कि उसमें मुझमें बीच में बस सेंक का अन्तर है, परन्तु देखती हूं कि यह चिपकाव भी अब धीमे-धीमे गलने लगा है, सेंक तो चाहे किसी शक्ल में रहता है, सेंक तो रहता है, परन्तु उससे जो चिपकाव या एहसास की अनुभूति में लगता है, कुछ गलन दौड़ चली है

मेरे परम पूज्य प्रभुवर! 'श्री बाबूजी' मुझे ऐसा लगता है कि कुल प्रकृति ही मानों उस हल्के से, नरम से, सेंक से सिंकती रहती है, जो इसे चेतन बनाये हुए है। मुझे ऐसा लगता है, मानों हर समय कोई मेरी तबियत को सम्भाले रहता है, रोके थामें रहता है। वास्तव में मैं तो ऐसी जानवर हूं जो उसी रास के इशारे पर ही चलती हूं। परन्तु अन्तर इतना है कि न अपने ऊपर रास का बोझ ही अनुभव करती हूं और न अपने चलने का ख्याल ही रहता। ऐसी Innocent (अनजान) सी दशा है मेरी, मैं तो पशु के सदृश हूं।

मेरी तो कुछ यह दशा है 'श्री बाबूजी' कि बंदगी, बदंगी में समा गई और मिल्कियत है नहीं, परन्तु 'मालिक' मेरा ज़रूर है, सर्वस्व है, मिल्कियत हो या न हो। बल्कि यही नहीं, न जाने क्या है कि शुद्धता, शुद्धता में समा गई और नम्रता, नम्रता में रह गई तथा मिल्कियत भी, मिल्कियत में मिल गई। मेरे 'श्री बाबूजी' स्मृति (याद) स्मृति में रह गई और भूल, भूल में समा गई। यही नहीं, मुझे तो लगता है कि मानों मुझसे मेरे ख्याल का नाता या लगाव ही नहीं रहता, बल्कि लगता है कि ख्याल, ख्याल में मिला जाता है। अब मेरे पास क्या है, यह सही तो 'मालिक' ही जानता है, क्यों कि मुझे खुद नहीं मालूम। दशा को देख कर लगता है कि हर दशा तक अपने अपने सूक्ष्म में समा जाती है, साथ कुछ

नहीं जाता। मनुष्य आता है अकेला और जाता है अकेला, परन्तु अकेलापन भी साथ नहीं जाता, यही हाल है मेरा। कहने को कह लूं, परन्तु मुझे तो खामोशी भी एहसास में नहीं आती। हाँ, अक्सर mind कुछ ठक् ठक् सी आवाज़ से सम्बन्धित रहता है, परन्तु वह मुझे बुरा नहीं लगता, क्यों कि कुछ Disturb नहीं होता। न जाने क्यों कुछ यह है कि जैसे पहले मेरे परम पूज्य 'श्री बाबूजी' 'आपने' लिखा था कि "विचार तुम्हें ज्यादा आ रहे हैं, ईश्वर की महान् कृपा है, इसलिये कि तुम जहाँ हो, वहाँ बहुत कुछ Balanced state है", वही विचार अब विचार नहीं रह गये हैं, बल्कि जिसे मैंने बड़बड़ाना लिखा है, अब ठक्-ठक् से mind सम्बन्धित लिख रही हूं, कुछ अब यह चीज़ हो गई है।

मेरी तबियत ठीक है, 'अपनी' तबियत का हाल लिखियेगा। इतिः

सदैव केवल 'आपकी' ही कृपाकांक्षिणी
सेविका पुत्री - कस्तूरी

पत्र-संख्या-442

प्रिय बेटी कस्तूरी, शाहजहाँपुर

प्रसन्न रहो। 29.11.54

तुम्हारे तीन पत्र मिले, 19 नवम्बर, 22 नवम्बरऔर 26 नवम्बर के। मैंने डॉक्टरी इलाज शुरू कर दी है और दर्द Normal आ गया है। सांस की तकलीफ़ तो पहिले ही बहुत मामूली थी। तुम्हें तन्दुरुस्त बनना है और ख्याल से और इच्छा-शक्ति से ऐसा हो जाना चाहिये और यही अपनी पूजा समझो। दो तरह के ध्यान मैं इसी तन्दुरुस्ती के लिये लिखता हूं, जो तुम्हें करना चाहिये। इसे ख्वाह मेरा कहना समझो या प्रार्थना समझो।

नम्बर एक-पन्द्रह मिनट तक कम से कम यह ध्यान करो कि तुम्हारे जिस्म में जो कुछ बीमारी है, जिस्म से निकल कर पीछे सब धुएँ की शक्ल में उड़ती चली जा रही है। एक वक्त तो इसके लिये रखो। नम्बर दो-यह ध्यान करो कि तुम बिल्कुल तन्दुरुस्त हो रही हो और बीमारी सब निकल गई है। यह भी हो सकता है कि पहले नम्बर एक किया जावे और उसके बाद नम्बर दो किया जावे। सुबह, शाम या रात में किसी वक्त कर सकती हो।

अब मैं 19 नवम्बर के पत्र का संक्षेप में उत्तर दे रहा हूं। मन का बन्धन बिल्कुल हल्का पड़ गया है, इसलिए तुम्हारे एहसास में नहीं आता। अभी कुछ है, इसलिये कि मैंने मन्मई-कोष अभी नहीं तोड़ा है। Heart Region अभी Cross नहीं कर चुकी हो, अभी कुछ बाकी है, मगर उसके आखिरी सिरे तक तुम पहुंच चुकी हो करीब-करीब।

तुमने जो यह लिखा है कि ईश्वरीय Heart निगल लिया है, इसके माने यह है कि तुम उसमें ओत-प्रोत हो चुकी हो। रम जाने का माद्दा तुम्हें नहीं मालूम होता कि तुम रम चुकी हो और रमती जा रही हो। दूसरी बात यह भी है कि दुई अन्दर से बहुत कुछ दूर हो चुकी है और यह लय-अवस्था होने के कारण है। मैं तुम्हारे इस Expression से बहुत खुश हुआ कि Heart ऊसर हो चुका है। जब किसी का Heart ईश्वरीय Heart हो चुका हो तो, उसमें फिर तरी कहाँ? तरी तो हम खुद अपने ख्याल से पैदा कर लेते हैं, जिससे तरह-तरह के रंग-बिरंगे फूल उगते हैं और मनुष्य अपने लगाये हुए बाग में मस्त रहता है, तो इसका तुममें अब ज़िक्र ही क्या? ख्याल जब बहुत बारीक पड़ जाता है, तब उसका एहसास नहीं होता।

अब 22 नवम्बर के खत का जवाब देता हूं। तुमने लिखा है कि "दशा में 'मालिक' का दबाव व लिहाज़ की गुंजाइश नहीं रही"। इसके मतलब मैं ज्यादा नहीं समझा, मगर अन्दाज़ तुम्हारा समझ गया और यह लय-अवस्था के कारण है। बड़बड़ाना कुछ बेजा नहीं है। जब ख्याल In-touch रहता है, 'मालिक' से, तो वह अपने रंग की बात 'मालिक' से निस्बत रखते हुए खुद कह लेता है। तुम्हारे विचार की तासीर का यह कुल खत पता दे रहा है और चप्पा-चप्पा 'मालिक' के ही होने का पता देता एहसास हो रहा है। वह चीज़ भी तुममें खुल चुकी है कि जिसको मैंने गुरु-सन्देश के Pamplet में दर्शन की हालत में कहा है। भगवान् के दर्शन ऐसे ही होते हैं।

तुम्हारा एक खत 23 नवम्बर का भी मिल गया, उसका जवाब देकर फिर 26 नवम्बर का जवाब दूंगा। इसमें क्या अच्छी हालत लिखी है; ईश्वर मुबारक करे। इस हालत में मैं भी रह चुका हूं और हमारे गुरु महाराज बहुत ज़्यादा। जिसमें यह चीज़ पैदा हो गई, उसके लिये यह कहा जा सकता है कि वह अन्त तक पहुंचने की खुशखबरी ज़रूर देगा। भाई, तुम्हें एहसास लाजवाब है; वैसे लोग इसी रास्ते से गुजरते हैं मगर इन चीजों का एहसास नहीं होता। वह हालत क्या है कि जिसकी मैंने तारीफ़ की है कि "ईश्वर के नाम आने पर दिल पकड़ कर रह जाना"। दिल पकड़कर अभ्यासी यों रह जाता है कि जब कोई 'उसका' नाम लेता है तो विरह की हालत महसूस होती है और प्रेम की वजह से विरह सहन नहीं होता। यह तो इतनी उम्दा हालत है कि शब्द समझाने को नहीं मिलते।

अब 26 नवम्बर का जवाब बहुत छोटा सा देता हूं। यह खत और भी विचित्र है और कुल खत का मतलब सिर्फ़एक शब्द में अदा हो सकता है। वह यह कि सब कुछ मिलाकर एक हो जाने की खबर मिल रही है। अभी ऐसी जाने कितनी दशायें आयेंगी कि जो आ आकर इतनी हल्की होती जायेंगी कि लापता मालूम होंगी। Unchanging हालत पैदा होने के यही चिन्ह हैं। तुम्हारी लय-दर-लय की चल रही है, बस सिर्फ़इतना ही इस तारीख़ के खत का उत्तर है।

काशीराम आसाम से तुम्हारे खत पढ़ने के लिये और दिखाने के लिये मांग रहे हैं। मैं वहाँ भेजना नहीं चाहता, तुम्हारा पता पूछा है, मुमकिन है, तुमसे भी माँगे। तुम उन्हें लिख देना कि कुछ तो रामचन्द्र ने मेरे पास नकल करने के लिये भेजे हैं; जो जब मौका होता है, नकल करती हूं और कुछ रामचन्द्र के पास हैं और वह उनको छपवाना चाहते हैं। फिर हर शख्स देख सकेगा; और उसके बारे में जो कुछ कहना है, रामचन्द्र से कहना।

तारीख 29.11.54 रात को करीब 10.30 P.M. 'Z' स्थान से आगे निकाल दिया। अब इन स्थानों के नाम A B रखे हैं; इसलिये अब तुम्हारी सैरगाह 'A' पर है। ऊपर जब तुमको खींचा, तो तीन दफ़ा नीचे उतर आयीं याने 'Z' स्थान पर, फिर 'लालाजी' साहब ने कहा कि झटका दो। जब ऐसा किया, तब 'A' पर ठहरी। बात यह थी कि ऊपर का force नीचे फेंक देता था। जितना ऊपर अभ्यासी बढ़ता जाता है, Nature का force बढ़ता जाता है, इसीलिये दूसरे की मदद की ज़रूरत पड़ती है।

शुभचिन्तक
रामचन्द्र

पत्र-संख्या-443

मेरे परम पूज्य तथा श्रद्धेय श्री बाबूजी, लखीमपुर
सादर प्रणाम स्वीकृत हो। 2.12.54

कृपा एवं स्नेह संचित पत्र 'आपका' कल मिला-पढ़कर अत्यन्त हर्ष हुआ। 'मालिक' का बहुत बहुत धन्यवाद है कि 'A'(1) Point पर मुझे लाकर खड़ा कर दिया। 'आपने' लिखा है कि "तुम तीन बार नीचे उतर आईं" सो जाने क्या बात है कि ता. 21 की रात को मैं कॉपी में 'आपका' अगला पत्र नकल कर रही थी, जो अबकी से नकल करने में आराम के कारण पिछड़ गया था; तो न जाने क्या हुआ कि जैसे तबियत ऊपर से नीचे को फिर लौट आती है, फिर लौट आती है, दो-तीन बार ऐसा लगा, परन्तु फिर ऐसा लगा, जैसे किसी ने मन में कुछ जगा सा दिया है। न जाने क्यों उस रात नींद भी कम आई। 'आपका' दर्द Normal हो गया, मुझे बड़ी प्रसन्नता हुई तथा सबको ही खुशी हुई। 'आपने' जो मेरी पूजा के लिये दो ध्यान बताये हैं, सो एक सबेरे और एक शाम को मैंने करना शुरू कर दिया है। न जाने क्यों इधर सिर का दर्द बहुत जुकाम होने पर भी बिल्कुल बन्द सा रहता है। मुझे लगता है कि 'आपने' शायद मेरे Low Blood Pressure के लिये कुछ किया है, वैसे 'आप' जाने। अब मैं 'मालिक' की कृपा से दर्शन की हालत समझ गई, पूरी तरह से, वास्तव में मैं क्या कहूं कुछ समझ में नहीं आता। भाई काशीराम जी का पत्र जब यहाँ आयेगा तो ज़रूर लिख दूंगी। 'आपने' बार-बार नीचे आ जाने का कारण Nature का Force लिखा है, यह ठीक है, परन्तु मुझे तो Force की छींटे भी वहाँ

अनुभव में नहीं आतीं। लगता है Force तो Force में मिल चुका कहीं इसका अंदाज़ लगता ही नहीं।

मुझे लगता है कि जैसे मैं एक ऐसे किनारे पर लाकर खड़ी कर दी गई हूं, जहाँ की हवा में केवल Ignorance का ही अन्दाज़ आ रहा है। परन्तु किनारे पर हूं, अभी 'मालिक' ने उसमें मुझे डाला नहीं। मुझे लगता है कि ऐसे तो जो दशा आती ही है, परन्तु साथ ही एक Unchanging दशा भी अंतर में अन्दाज़ में धुंधली सी आती है और जहाँ तक अन्दाज़ है मुर्दे की अवस्था कही जा सकती है, परन्तु उसमें मुर्दापन एहसास में नहीं आता है। मुझे लगता है कि दशा का सूनापन एवं अकेलापन भी साथ नहीं जाता है।

'आप' इतनी तकलीफ़ के बाद भी इतनी दूर जा रहे हैं और कोई तो जाने की हिम्मत नहीं करता, मैं तो झट चल दूं। परन्तु खैर मुझे तो समुद्र के किनारे की Refreshing वायु, परन्तु उसमें वायु का Pressure नहीं है या यों कह लीजिये कि यदि शान्ति कहिये तो एक तरावट या कुछ कह लीजिये सामने आती है, कुछ ऐसा ही हाल है क्योंकि गर्मी तो गर्मी में समा चुकी और ठंडक ठंडक में मिल चुकी है। मैं तो एक अजीब Ignorance की दशा के अन्दाज़ में या वायु में हूं।

मेरे 'श्री बाबूजी' कुछ ऐसा लगता है कि मानो मेरा कण-कण सत्ताहीन या बिल्कुल Pressure हीन होकर एक अजीब शान्त या Ignorance ही सही दीखता है, के वातावरण में मिल चुका है। बल्कि जाने क्या है, मैं तो हर समय Refreshing सा ही अनुभव करती हूं लगता है मेरे कण कण का अब कहीं पता ही नहीं चलता, वह तो जाने कहाँ मिल मिला गये हैं। कुछ यह है कि ज़र्रे-ज़र्रे की गर्मी मानों गर्मी में समा गई और मेरे में Refresh वातावरण सा है। ठंडक भी नहीं है, वह तो अपनी सत्ता में समा चुकी। अब मैं कण-कण नाहक कहती हूं, जबकि मुझे यह कुछ अनुभव तो होते नहीं, बल्कि जबकि इनके बजाय एक हल्का शान्त सा वातावरण हो चुका है। परन्तु कुछ यह देखती हूं, मेरे में Refresh वातावरण होते हुए भी कुछ उदासी या लापरवाही सी मिली कहूं, नहीं नहीं बल्कि एक अज्ञानता का ही साम्राज्य है। प्रेम कहने को कह लीजिये, वरन् प्रेम तो शायद प्रेमी में समा कर लुप्त हो गया मुझमें अब उसका पता ही कहाँ है। अब तो मेरी शरीर की भी सत्ता, लगता है सत्ता में मिटकर मिल चुकी। अभी दशा पूरी Express नहीं कर सकी हूं, फिर लिखूंगी।

अम्मा 'आपको' शुभाशीर्वाद कहतीं हैं। इतिः-

सदैव केवल 'आपकी' ही कृपाकांक्षिणी
सेविका पुत्री-कस्तूरी

पत्र-संख्या-444

मेरे परम पूज्य तथा श्रद्धेय श्री बाबूजी, लखीमपुर

सादर प्रणाम स्वीकृत हो। 5.12.54

आशा है मेरा पत्र मिल गया होगा। नारायण दद्दा 'आपके' साथ जा रहे हैं, ऐसा आज पूज्य मास्टर साहब जी के यहाँ 'आपके' कार्ड से मालूम हुआ। मैं 'बाबूजी' क्या करूँ, मेरे मन में यद्यपि कभी यह आता ही नहीं कि मैं बीमार हूं, परन्तु फिर भी अच्छे होने में कुछ देर लग ही जाती है। अब मैंने दोनों समय ध्यान भी करना शुरू कर दिया है। अब मैं जल्दी से अच्छी हो ही जाऊँगी। 'मालिक' की कृपा से जो कुछ भी आत्मिक-दशा है, सो लिख रही हूं।

दशा क्या है, मुर्दा कह लीजिये, परन्तु मुर्दापन तो एहसास में नहीं आता। लय-अवस्था तो मेरे 'बाबूजी' लगता है, कि वह भी मानों हज़म होकर कुछ नहीं बचा। क्योंकि मुझे अपने में उसका भी आभास तक नहीं मिलता। यही हाल जीवन-मोक्ष-गति का हो चुका है कि मेरे तो कण-कण में टटोलने पर कहीं आभास तक नहीं मिलता। शायद Pressure हीन कणों में इसकी भी गुंजाइश कहाँ रह सकती है। हर कण भीतर-बाहर तक की गर्मी भी, लगता है, शीतल हो चुकी। कण-कण तो एक कुछ खाली ही कहती हूं। ऐसी अवस्था में, कण-कण मिलकर सत्ता-हीन हो चुके हैं। यही नहीं बल्कि देखती हूं कि कण-कण का आपस में ही कोई सम्बन्ध-सत्ता नहीं रह गई है।

मेरे 'श्री बाबूजी' कुछ ऐसा हो गया है कि मेरी निज का कोई स्वभाव, कोई प्रकृति ही नहीं रह गई। जैसे कहते हैं कि इसका ऐसा Nature, उसका ऐसा Nature। नेचर तो नेचर में समा गई। मुझे इससे कुछ मतलब ही न रहा। मुझे तो लगता है कि जैसे सब अवस्था, तुरिया भी, अपनी अवस्था में ही रह गई। मुझे तो 'मालिक' ने सबको दिखा समझाकर अलग कर लिया और यह भी है कि सूनापन भी अब मानों मेरे साथ नहीं जाता। न जाने क्यों लगता है, गर्मी का माद्दा भी शीतल बन चुका है, परन्तु यह शीतलता भी जाने कैसी है कि कुछ पानी की तरावट कह लीजिये या 'आप' जाने, मुझे तो नहीं मालूम।

न जाने क्या है 'श्री बाबूजी' कि सिर के पीछे बीच में एक गोल सा Point पर, जहाँ सीधी मांग खतम होती है, उससे कुछ ही नीचे हड्डी में अक्सर अब बड़ी खटखट व फड़कन होती है। दूसरे जाने क्या बात है कि जहाँ से रीढ़ शुरू होती है, वहाँ से खोखली रीढ़ के बीचोबीच होकर सिर तक एक मानों साँप सा खड़ा है, परन्तु जाने उसमें जीवन नहीं है, जाने क्या वह सदैव अचल सा खड़ा रहता है। याद का तो अब यह हाल है कि

चाहे 'मालिक' की बातें मास्टर साहब जी व घर में करती हूं, परन्तु देखती हूं कि याद फिर भी नहीं आती। वह तो कुछ ऐसा है कि महिनों में एकदम से धोखे से आई और कलेजा चीरती हुई फिर फौरन निकल गई और मैं कलेजा दाब कर रह गई।

अम्मा 'आपको' स्नेहाशीष कहतीं हैं। इतिः-

सदैव केवल 'आपकी' ही कृपाकांक्षिणी
सेविका पुत्री-कस्तूरी

पत्र-संख्या-445

प्रिय बेटी कस्तूरी, जौनपुर
प्रसन्न रहो। 8.12.54

पत्र 2 दिसम्बर सन् 1954 का मिल गया और यह 6.12.54 को चलते वक्त मिला था। नारायण शाहजहाँपुर स्टेशन पर मुझे मिल गये, जो हमारे साथ मौजूद हैं। ता. 11.12.54 को दोपहर को गाड़ी से रात को ग्यारह बजे शाहजहाँपुर पहुंचने का इरादा है। मेरी यहाँ, जौनपुर आने की ज़रूरत भी थी, इसलिये कि शुक्ला जी की गड़बड़ी बहुत कुछ इलाहाबाद में दूर कर चुका था और शाहजहाँपुर में भी दर्द और तकलीफ़ ने जितनी इज़ाजत दी, रुजू रहा, फिर भी दो-चार रोज रह कर ईश्वर ने चाहा तो फिर उस हालत से बेहतर ले आऊँगा। तुम्हारे तजुर्बे के लिये मैं लिखता हूं और यह ज़िन्दगी में पहला ही अनुभव है, वह यह दिल की हालत ऐसी थी जैसे उसकी Life जाती रही हो। अब Life काफ़ी पैदा हो गई, मगर जल्दी में मुझसे गल्ती हो जाती है और Special will इसी वजह से इस्तेमाल कर जाता हूं। Life जितनी देना चाहिए थी, उससे ज़्यादा दे गया और इसका एहसास फ़ौरन हुआ। बोझ तो हटा दिया, अब यह देखना है कि कितनी कमी और कर दी जाय ताकि Moderation पैदा हो जाये। एक नस से दिल के पीछे रीढ़ से Connect है, उसमें कालिमा तो दूर कर दी, मगर भारीपन अभी दूर न कर सका। इसका तरीक़ा सोचना है, कि कैसे दूर की जाय। मैंने इस गुरिया पर जब शुक्लाजी लखीमपुर से शाहजहाँपुर आये थे तो इस पर कुछ थपथपा दिया था; हाथ की उगंली से; ताकि उनको अपने आप को भूलने में मदद मिले और यह मेरी Research थी। उन्होंने न मालूम कैसे भारी कर लिया। वह ठीक करना बाकी है। बाकी सब ठीक हो गये हैं। Special Traning के लिये मैं समझता हूं वह आदमी Fit है, जिसे ईश्वर बना बनाया भेजे। मैं चाहता तो यह हूं कि Super Concious State तुम सब लोगों की इतनी Develop हो जाये कि जिस चीज़ पर निगाह जाये, नुस्खा बिल्कुल सही मालूम हो जाये। अब जो मुझे मालूम होता है, मैं कह तो देता हूं, मगर उसको करने के लिये भी इतना एहसास और अंदाज अभी तक किसी का नज़र नहीं आता और भाई मसल मशहूर है कि

"सिखाये पूत दरबार नहीं जाते" और बहुत सी ऐसी बातें हैं जो अब तक मेरे ख्याल में नहीं है; ज़रूरत पर ज़रूर ईश्वर बता देता है। मैं इस क़दर सुस्त पड़ गया हूं कि अपनी मेहनत बचाने के लिये जल्दी कर जाता हूं और उसका नतीज़ा यह होता है कि ज़रूरत से ज़्यादा force पड़ जाता है। इसमें दोनों शख्सों का लिहाज़ है कि अभ्यासी का वक्त बच रहे और मेरा भी। System of Training इतना है कि मैं उसके मुकाबले में अभी भी नहीं जानता। मैंने काशीराम को लिख दिया है कि मैं कस्तूरी के पत्रों को यों भी नहीं भेजना चाहता कि उसमें बहुत सी घरेलू बातें हैं; जो मैं यह नहीं चाहता कि हर शख्स जाने।

तुम्हारी सैर को जगह 'A' One (A) है। तुमने अपने खत में 'A' लिखा है। मैंने उसको सही कर दिया है। 'A' से 'Z' तक स्थान तुम पार कर चुकी हो, चूंकि Alphabet इससे ज़्यादा नहीं हैं, इसलिए A,B, और C, इत्यादि चलेंगे। तुम अब 'A' पर हो और जब मेरी निगाह 'A' पर जाती है, तो मैं गद्‌गद् हो जाता हूं। उसकी सुगन्ध कुछ मुझे भी आ जाती है और जी खुश हो जाता है। इस मुकाम पर ऐसी महक है, जिसमें खुशबू कहना इस स्थान को भारी बना देना है। मगर भाई, कुछ अजीब मज़ा है। मेरी तबियत तो भाई, यह चाहती है कि तुम्हारे इस स्थान को देखता ही रहूं; देखने से निगाह थकती ही नहीं। इस क़दर सफ़ाई है कि आईना भी उसकी मिसाल गलत होगी। अगर रोशनी कही जावे तो वह भी उससे भारी पड़ेगी। मुझे तो अपने स्थान अब ढूंढे नहीं मिलते। Negation के चक्कर में इस हद तक पड़ गया हूं और उससे एक Moment के लिये भी अलहदा होने का जी भी नहीं चाहता। इसलिये इस हालत के पहुंचे हुए अभ्यासी की गति देख-देखकर खुश हो लेता हूं। मेरी हालत तो यह है कि "संग (पत्थर) बे नमक है।" अब ज़ायका बदलने के लिये अगर मसाला नहीं खाता तो उसकी झरप से ही जी खुश कर लेता हूं। यहाँ की हालत इतनी Soothing है कि उनको देख-देखकर मेरे दिल में तस्कीन सी हो जाती है। तुमने जो Unchanging Condition को लिखा है कि "अंतर में धुंधला सा एहसास होता है" इसका ताल्लुक कुछ इस स्थान से नहीं है, मगर अन्दाज़ ज़रूर बता रहा है कि यह भी कोई हालत है। जहाँ पर Change खतम हो जाता है, फिर Unchanging की शुरुआत होती है। यह तो बिल्कुल Divine Condition है और बड़े-बड़े महात्मा और योगी इसके लिये तरसते चले गये हैं। कबीर साहब इतने बढ़े हुए थे, मगर उनको भी इस चीज की हवा भी नहीं लगी। यह हमारे गुरू महाराज (समर्थ गुरू महात्मा श्री रामचन्द्र की महाराज) ही का गुर्दा था कि खुद इस हालत पर पहुंचे और दूसरों के लिये दरवाज़ा खोल दिया। तुम्हारी चाल और अन्दाज़ यह ज़रूर बता रहा है कि तुम्हें ईश्वर ने चाहा किसी वक्त यह हालत नसीब हो उम्मीद श्री ईश्वर सहाय मास्टर लखीमपुर से भी हैं और वह बहुत कुछ उस हालत की तरफ़ पहुंच चुके हैं। ईश्वर का धन्यवाद ज़रूर है अगर संस्था में एक भी ऐसा निकल जाये। मगर मुझे पूरी तौर से तो उस वक्त मिले, जब सब के सब उस हालत पर पहुंचे। अगर सब के सब न सही हो तो कम

से कम चार–छः ही पहुंच जायें; मगर अफसोस यह है कि इस हद तक तरक्की की किसी को लालसा पैदा नहीं होती। हौलाकि मैं कहे जाता हूं कि Unchanging Condition सच्ची गति है और इसके लिये कोशिश करें। बिटिया! मैं सच कहता हूं कि इसका हासिल करना (ईश्वर मदद करे) मुश्किल नहीं है और खासकर ऐसे जमाने में जबकि कुदरत दोनों हाथों से अपनी दौलत लुटा रही हो। मुश्किल शब्द तो रूहानी सम्बन्ध में निकाल ही देना चाहिये, इसलिये कि हम में जो चीज़ है, उसी को तो हम Realize करना चाहते हैं। तो ताज्जुब है कि अपनी चीज़ को देखना और समझना इन्सान मुश्किल समझे। हमारी जौनपुर आने की ख्वाहिश थी, हम आ ही गये और कहीं अगर सफ़र की तकलीफ़ का ख्याल हमें रहता तो आने का इरादा भी न बनता और फिर भला हम कैसे आ पाते।

तुमने यह जो लिखा है कि "Ignorance के लिये, कि इसको मुर्दापन की अवस्था कही जा सकती है, परन्तु मुर्दापन की कैफ़ियत एहसास में नहीं आती" मुर्दापन से मतलब यह होता है कि Lifeless; अर्थात् अपने को दूसरे के हाथ में ऐसा दे देना कि वह जिधर चाहे हिलाए–डुलाए। यह उस वक्त होता है जब कि दुनिया की धड़क–भड़क और उसके अन्दाज़ तबियत से ऐसे जाते रहते हैं, जैसे जागे हुए आदमी के सामने सपना। यह चीज़ Ignorance से सम्बन्धित की जा सकती है, मगर Complete Negation उसी को कहेंगे जब उसमें (ईश्वर में) हम ऐसे घुल मिल जाते हैं कि हमें अपना और ईश्वर दोनों का पता नहीं रहता। या यों कहो कि दोनों लापता से हो जाते हैं। इसको सूफ़ियों ने 'फ़नाफ़िल्लाह' हो जाना कहा है और इसी की उमरभर कोशिश करते रहे। और मुमकिन है कि जितना कि बंदा हो सकता है न हो सके हों। इसलिए कि Upward Current में जब तक कोई ले जाने वाला न हुआ तो जाना कठिन क्या, बल्कि असम्भव है। उसमें सिर्फ़ वही Stages रहते हैं कि जितना ज़्यादा अपने आपको कोई उसमें मिटा या मिला सका। वहाँ तो यह बात है जैसे अंधों में से किसी ने हाथी की दुम पकड़ ली और किसी ने सूंढ़ और किसी ने पैर और वह सब लोग उसी एक चीज़ को हाथी समझने लगे। ज़रा वहाँ की हवा आई और अपने आपको पूरी तौर से ईश्वर में लय समझने लगे। यहाँ पर हमने कठिन लफ्ज ज़रूर इस्तेमाल किया है, वह सिर्फ़ इसलिये कि ऐसा अभ्यासी मिलना बड़ा मुश्किल है कि अभ्यास शुरू करते ही उसके ख्याल की Current असल भण्डार पर गिर पड़े और वही उसके जाने का रास्ता बन जाये। हिम्मत अगर है तो यह भी हो सकता है; मगर यह चीज़ आसान हो जाती है, जबकि उस हद तक पहुंचे हुए को हम अपना Guide मान लेते हैं। यह चीज़ भी ऐसी है कि अगर ज़िन्दगी में न हो

पाये तो Liberation पर कोई असर नहीं पड़ता और ज़्यादातर लोगों का उद्देश्य यहीं तक होता है, वैसे Nature पर Control कर लेना असल में योगी का मक़सद है और पूरा Control उसी वक्त कहना चाहिए जबकि खास तौर पर उसमें (ईश्वर में) कोई लय हो जावे।

तुमने जो अपने आपको Refreshing महसूस होना लिखा है, वह सही है। गर्मी और ठंडक के बारे में पिछले खत में लिख चुका हूं। अब Pressure ज़रूर कम होता चला जा रहा है, बल्कि बहुत कम है। यह एहसास सही है। बाकी और हाल सब ठीक है, उसका कहाँ तक जवाब दिया जाये। शुक्लाजी व नारायण सबसे नमस्ते कहते हैं।

एक बात जो मैं लिखना चाहता था, उसको भूल गया, अब लिख रहा हूं। चाहता यह हूं कि अभ्यासी Nature के Force को Cross करते हुए बिना मेरी मदद के ऊपर बढ़ते चले जायें; इसीलिये कि यह मामला हमेशा के लिये आसान हो जावे। यह तो मैं पहले ही कहीं लिख चुका हूं कि अभ्यासी अपने आप अपने को कैसे तवज्जो दे ताकि वह मेरे ज़्यादा मोहताज न रहे। मगर ऊपर की लिखी हुई बात सोचना है। तुम भी कोशिश करो, मास्टर साहब भी जिसके समझ में आ जावे। यह लाज़मी नहीं कि हर बात मेरी ही समझ में आवे और हर काम मैं ही अच्छा कर सकूं। एक मिसाल विमला की तुम्हारे सामने है कि मैं महीनों मेहनत करता और मुमकिन था कि इतना अच्छा नतीजा बरामद न होता, जितना तुमसे हो गया। असल में तुमने उसको बिल्कुल बदल दिया। विमला अबकी उत्सव में जज साहब के साथ आ भी रही है। यह जज साहब ने मुझसे कहा था।

अब मतलब पर आता हूं। यह तो हो सकता है कि ऐसी Special will बाँधी जाय कि शुरू से ही वह शक्ति पैदा कर दी जाय कि वह कुदरत की Upward Current में बहता चला जाय। मगर यह शक्ति मुमकिन है कि सहन न हो सके, इसलिये इस तरीके से कोई फ़ायदा भी नहीं। कोई Point ऐसा होना चाहिए कि अभ्यासी उस पर Meditate करे और बेड़ा पार होता ही चला जावे। वैसी उस्तादी तरकीबें तो हो सकती हैं। एक इस वक्त लिखाते-लिखाते ख्याल में आ गई; गो अभी इसको ज़्यादा सोचा नहीं है सही कि Human brain का Centre जिसको Efficacy of Raj Yoga में मैंने Occipital bone कहा है, वहाँ पर इतनी कशिश (आकर्षण शक्ति) पैदा कर दी जावे और कुछ Duration कायम कर दिया जावे कि वह अभ्यासी को घसीट कर अपने पास तक ले आवे और यह ईश्वर की कृपा से मुमकिन भी है। मगर यह तो मेरे करने का काम रहा और Special will ईश्वर जिसको देवे, उससे सब कुछ काम बन सकते हैं। मगर सोचना यह है कि अभ्यासी क्या करे, जिससे यह मुश्किल आसान हो जाये। लिखाते-लिखाते यह तरकीब भी समझ में आ गई कि जिस स्थान पर अभ्यासी हो, और समझ ले कि अब

उसकी सैर पूरी हो गई है, तो उससे अगले मुकाम पर Meditate करे। यह तरकीब अभी मुझे "लालाजी साहब" ने बताई है। "लालाजी" की इज़ाज़त से मैंने उसमें इतनी तरमीम (संशोधन) कर दी है कि Master cell पर Meditate करे। Master cell इस स्थान का Centre होता है और उसमें Concentrated Energy होती है। यह चीज़ आसान हो गई, मगर उसमें एक डर भी है कि कहीं ब्रह्माण्ड में हो और पारब्रह्माण्ड में जाने के लिये Meditate न करने लगे। ऐसे वक्त में जब कि ब्रह्माण्ड मण्डल की सैर पूरी न हुई हो। यह दूसरा खत मास्टर साहब को देना।

शुभचिन्तक
रामचन्द्र

पत्र-संख्या-446

प्रिय बेटी कस्तूरी, जौनपुर
प्रसन्न रहो। 10.12.54

मैं एक पत्र यहाँ से भेज चुका हूं, मिल गया होगा। कल आज़मगढ़ से नन्ही आ गई और सुबह डाक्टर साहब आ गये, इस वजह से हम भी रुक गये। अब 12.12.54 की रात को शाहजहाँपुर पहुंच जायेंगे। तुम्हारे पत्रों में जो कुछ भी तुमने लिखा है, ज़ाहिर होता है कि तुमने अच्छी लय-अवस्था हासिल की है और यह चीज़ तो अभी बराबर ही चलती रहेगी।

जब प्रकृति से बहुत कुछ सम्बन्ध टूट जाता है, तो उसका असर, जो गर्मी के मानिन्द है, एहसास में नहीं आता, बल्कि प्रकृति से जो ऊंची चीज़ है, उसका एहसास होता है, और वह असर गर्मी से विरुद्ध होता है। माँग जहाँ पर खत्म होती है और उसके नीचे जो फड़कन होना तुमने लिखा है, 'A1' स्थान करीब-करीब वही पर है। उसमें जो Actions जाग्रत के लिये शुरू हैं, वह फड़कन के रूप में मालूम होते हैं। रीढ़ में होकर जो खोखलापन बतलाया है, फिर साँप का एहसास, यह कुण्डलिनी का एहसास मालूम होता है। भाई याद तो वही ठीक है, जो कभी न आवे। अब यह है कि सुन-सुनाये अगर कहीं आ जाती है, तो वह भी समझना चाहिये कि ऊपर लिखी हुई हालत पर ले आना चाहती है।

मास्टर साहब के दो खत मिले और चौबेजी की डायरी भी। मास्टर साहब से कह देना कि आपने जो राय दी है, मेरे पूछने पर वह सही है और मैंने उसी पर अमल किया। मास्टर साहब ने कुछ अपनी हालत भी लिखी है, वह खत पहुंचते-पहुंचते बहुत कुछ साफ़ हो जावेगी, अगर ईश्वर ने चाहा। मुझे बड़ी खुशी है कि चौबेजी व मास्टर साहब बड़े

दिन की तातील में आवेंगे। मैंने एक खत पिछले लिफ़ाफ़े में मास्टर साहब के लिये भेजा था, तुमने दे दिया होगा।

चौबेजी व अम्मा को प्रणाम। नारायण सबसे नमस्ते कहते हैं।

शुभचिन्तक
रामचन्द्र

पत्र- संख्या- 447

मेरे परम पूज्य तथा श्रद्धेय श्री बाबूजी, लखीमपुर
सादर प्रणाम स्वीकृत हो। 12.12.54

आशा है, मेरा एक पत्र मिला होगा। इधर मैंने भी बहुत दिनों से 'आपको' पत्र नहीं लिखा, कारण इधर जुकाम, खाँसी बहुत अधिक आने के कारण अक्सर हरारत शाम तक हो ही आती है और थोड़ी सी कमज़ोरी भी है। वैसे ठीक हूं और 'आपके' लिखे हुए दोनों ध्यान बराबर कर रही हूं, जिससे आशा है कि मैं पूर्ण-स्वस्थ हो जाऊँगी। अब तो उत्सव के दिन नज़र आने लगे। 'मालिक' की कृपा से जो कुछ भी आत्मिक - दशा है, सो लिख रही हूं।

मेरे 'श्री बाबूजी' मेरा तो कुछ यह हाल है कि 'मालिक' मेरी आँखों की ज्योति होते हुए भी या ज्योति में रमा होते हुए भी, मैं इतनी खोई रहती हूं, जागती ही नहीं, इसलिये मेरे लिये बराबर है। परन्तु इसका एहसास कि वह मेरी दृष्टि में पैठा हुआ है, का आभास कब होता है कि जब कभी कितने ही समय बाद 'उसकी' याद या 'उसका' ध्यान भूले से आता हुआ निकल जाता है, तब आँखों में वही तस्वीर पाती हूं, परन्तु आँखों की उस तस्वीर को सहेज लेने की मुझमें कुव्वत ही न रही। मैं देखती हूं कि यह न जाने क्या बात हो गई है कि अक्सर Vision में या स्वप्न-वत् कहिये जाने कितनी सैर सी किया करती हूं या मन ही मन बात करने में उस सैर का या बात करने का धूमिल सा ख्याल के अलावा जैसे पहले लिखा करती थी कि मेरा ख्याल 'मालिक' के साथ घूम रहा है। यह भी समाप्त हो चुके या यों कह लीजिये कि मेरे लिये सब कुछ समान हो गया या Vision में समा गये। मेरे 'श्री बाबूजी' कुछ यह लगता है कि जहाँ मैं हूं, वहाँ ऐसी महक़ है कि महक़ की गुज़र नहीं। यदि शुद्धता कहती हूं, तो भद्दापन आ जाये। आईने स्पर्श की ठंढक, चाहे कुछ कह लीजिये परन्तु आईना नहीं, उसकी शुद्धता नहीं। लगता है हर समय मानों समुद्र के किनारे रह रही हूं। कुछ वैसा ही निस्तब्ध-वातावरण मेरा कुल शरीर, कुल ज़र्रा-ज़र्रा तक में अनुभव करती हूं। उसकी (महक़ भर) अनुभव करती हूं, परन्तु अभी उसमें दाखिल नहीं हुई। लगता है सामने वाले समुद्र की सैर ही मेरी सैरगाह होगी। इधर

2–3 दिन से जाने क्यों तबियत उदासी में खो जाती है। और वहाँ उसे इसका भान नहीं रहता, अब क्या कहूं। कभी लगता है, तबियत ठहरी हुई सी है। कभी–कभी बिना बातों इतना डर लगता है कि मानो अपने से भय हो। कुछ समझ में नहीं आता, यह क्या बात है बार–बार अपने में से ही कहिये निकल भागने को तबियत रहती है। कहाँ चली जाऊं, कुछ समझ में नही आता। मेरे 'श्री बाबूजी' कहते हैं सत, रज, तम तीन गुणों बग़ैर आदमी ज़िन्दा नहीं रह सकता, परन्तु मैं देखती हूं, मेरी तबियत तो तीनों को भी त्याग जाने कहाँ चली गई। मैं तो बिना श्वाँस के, बिना तत्वों के, और बिना गति के जीवित कहलाती हूं। मुझे कोई मरा नहीं कहता। मृत्यु से मेरा सम्बन्ध नहीं और जीवन से मेरी मानों मुलाक़ात नहीं। मेरी तो कुछ ऐसी दशा है कि यदि बिल्कुल दीन–हीन कहूं तो दीनता–हीनता से रहित हूं। मेरी दशा तो उस अज्ञानी बालक की तरह कह लीजिये, जिसे कुछ किसी प्रकार का ज्ञान नहीं और समझने की कुव्वत नहीं। मेरी दशा Innocence भी नहीं, बल्कि अज्ञान ही ठीक शब्द है 'या' 'आप' जानें। मैं देखती हूं मेरे 'श्री बाबूजी' कि स्वयं अपनी तबियत से मेरा सम्बन्ध विलग हो गया। यहाँ तक कि मैं निज की Nature ही कुछ नहीं पाती हूं। Nature तो Nature में मिल गई।

अम्मा 'आपको' शुभाशीष कहती हैं। इतिः–

सदैव केवल 'आपकी' ही कृपाकांक्षिणी
सेविका पुत्री– कस्तूरी

पत्र– संख्या– 448

मेरे परम पूज्य तथा श्रद्धेय श्री बाबूजी, लखीमपुर
सादर प्रणाम स्वीकृत हो। 16.12.54

'आपका' कृपा–पत्र कल मिला– पढ़कर प्रसन्नता हुई। नारायण दद्दा 'आपके' साथ गये, पढ़कर बड़ी प्रसन्नता हुई। सचमुच में समय के मूल्य को वही ठीक आँक सकता है जो अपने समय की गति को मेरे 'मालिक' के चरणों में जोड़ सके। जितना समय साधक 'आपके' साथ चाहे जिस तरीके से क्यों न हो रह सके, वाक़ई वे ही क्षण सच्चे जीवन में जोड़ने योग्य हैं। परन्तु जहाँ तक निगाह दौड़ती है, तो यही दीखता है कि जितना लाभ उठाना चाहिये, हम उतना नहीं उठा पाते।

मेरे 'श्री बाबूजी' 'आपकी' यह Research कि एक नस, जो दिल के पीछे रीढ़ से Connect है, जिसमें शुक्ला जी के भारीपन था और जो दूर भी हो चुका होगा, जब शुक्ला जी लखीमपुर से शाहजहाँपुर गये थे तो, लिखा है कि मैंने हाथ की ऊंगली से उस गुरिया में कुछ थपथपा दिया था ताकि उनको अपने आप को भूलने में मदद मिले "यह

बहुत ही सही है, क्योंकि शायद शुरू की चिटिठयों में मुझे याद आया कि जहाँ मैं ने यह लिखा है कि " काम करते हुए भी मानों ध्यान नहीं रहता, शायद भूल-भूल सी जाती हूं "वहाँ मैंने कई बार यह भी लिखा है कि " Heart के बिल्कुल पीछे पीठ की रीढ़ में बड़ी फड़कन होती है और कुछ गुदगुदी या सरसराहट सी लगती है"यह बात 'आपके' Research लिखने से अब मुझे बिल्कुल Clear हो गई। न जानें यह क्या हो गया कि जैसा 'आपनें' लिखा है कि "दिल की हालत ऐसी थी जैसे उसकी Life जाती रही हो।"

मेरे 'श्री बाबूजी' हम लोंगों की Super Concious State इसलिये अधिक Develop नहीं हो पाती कि जितना संग मन से, या लगन से हमें Super Human Being का करना चाहिये, उससे ज़्यादा Time,Lower में (यानी संसार में) जाता है। इसीलिये शायद Super Concious में जागृति ज़्यादा नहीं आने पाती। 'आपनें' जो नई 'Research कि 'अभ्यासी बिना 'आपकी' मदद के Nature के Force को Cross करता ऊपर बढ़ता चला जावे तो कुछ एक-आध Second को मैं ने ज्यों ही 'आपकी' लिखी हुई तरकीब से 'A' के Master Cellको ग़ौर से देखा तो लगा कि कुछ हल्का सा स्पन्दन अन्दर हुआ, परन्तु मैं तो 'श्री बाबूजी' जहाँ आप ले चलेंगे, वहीं चलूंगी और तो मुझे कुछ मतलब नहीं। कुछ यह है कि अब मैं किसी पर लगता है Meditation नहीं कर पाती हूं, क्योंकि मुझमें न जाने क्यों इसकी कुब्बत ही नहीं रही। 'मालिक' जैसे रखे वैसे रहूंगी। ध्यान में तो मानो मेरा ज़र्रा-ज़र्रा खाली दीखता है। और खाली क्या दीखता है, बल्कि न जाने क्या बात है कि ज़र्रा-ज़र्रा है भी या नहीं 'राम' जानें और 'राम' क्या जाने, क्यों कि "नहीं"तो "है" नहीं हो सकता और है "नहीं" नहीं हो सकता।

मेरा तो न जाने क्या हाल है कि सामने कोच पर या वैसे भी 'मालिक' आँखों के सामने रहते हुए भी, यही नहीं, बल्कि आँखों से दीखते हुए भी न जाने क्यों मुझे 'उसकी' तब भी याद नहीं आती। एक यह न जानें क्या बात है कि कभी-कभी मास्टर साहब जी व औरों से बात करते-करते न जाने क्यों कुछ Mood सा हो जाता है। अब तो मेरे 'श्री बाबूजी' यह हाल हो गया है कि दिल पत्थर हो गया है कि अब तो चाहे कोई कितनी देर 'मालिक' की बात क्यों न करे, परन्तु देखती हूं याद का पता नहीं। याद कहती हूं, तो भी याद का पता नहीं। बस न जाने कब, कैसे मुझे कुछ याद नहीं, हृदय में कुछ मानों चुभा और चुभा क्या दर्द, जब पता नहीं चलता है, परन्तु कभी-कभी तो याद के लिये तो मैं पत्थर हूं और याद मेरे लिये पत्थर है, बस यह कह लीजिये कि पत्थर धोखे से कभी आपस में टकरा भर जाते होंगे। मैं ने जो अक्सर बात करते में या वैसे भी याद के बारे में लिखा है, वह सूनापन ही होता है न जानें क्यों अब तो Refreshing वाली दशा भी नही अनुभव होती।

अम्मा 'आपको' शुभाशीर्वाद व ताऊजी, 'आपको' प्रणाम कहते हैं। इतिः-

सदैव केवल 'आपकी' ही कृपाकांक्षिणी

सेविका-पुत्री- कस्तूरी

पत्र- संख्या- 449

मेरे परम पूज्य तथा श्रद्धेय श्री बाबूजी, लखीमपुर

सादर प्रणाम स्वीकृत हो। 22.12.54

आशा है मेरा एक पत्र मिला होगा। आज ताऊजी यहाँ से लखनऊ जा रहे हैं, फिर वहाँ से 'आपके' पास पहुंचेंगें, किन्तु मेरे सफ़री ख्याल का तो सफ़र मानों आज से ही पूरा होकर 'आपके' चरणों में बड़े दिन की छुटियों की शायद बहार देखेगा। बसंत पंचमी की तो बयार बहनी शुरू हो गई है। बस बसंत-पंचमी आने की देर है। 'मालिक' की कृपा से जो कुछ भी आत्मिक-दशा है, सो लिख रही हूं।

मेरे 'श्री बाबूजी' अब तो दशा को देखकर कभी-कभी ऐसा लगता है कि वह शायद स्थिरता के कारण या सूनी सी के कारण, कि कहीं सन्तोष तो मुझे नहीं आ गया है, परन्तु निगाह की , बिछी हुई पलकों को 'मालिक' के ही अभय-कर कमलों का भरोसा है। न जाने क्यों चलना तो दूर रहा, अब मैं स्वयं अपनी चाल को रेंगती हुई भी नहीं अनुभव कर पाती हूं, यद्यपि साँस तो मुझे आ ही नहीं सकती या ठहर तो मैं सकती नहीं और न ऐसा है। ऐसा मेरा दृढ़ विश्वास है। कुछ चाल की गतिविधि शायद पलट गई है।

मेरे परम पूज्य महात्मन् ! जैसे पहले मैं अपने को भूली ही रहती थी, परन्तु न जाने क्यों अब तो मुझे कभी एक क्षण को भी ऐसा प्रतीत नहीं होता। मैं यदि देखती भी हूं तो [illegible] तो कभी निगाह ही नहीं जाती, तो दुविधा में पड़ जाती हूं कि आखिर इस दशा को क्या कहूं। 'श्री बाबूजी' जब चीज़ हो तो उसे भूला भी कहाँ जा सकता है। जब मूलधन हो तो मिश्रधन भी हो सकता है, किन्तु जब चीज़ ही न हो, मूल ही न हो, तो क्या कहा जावे। यदि अपने पास का कुछ गया होता, तो उसकी कुछ याद ही रहती, परन्तु ऐसा भी नहीं हुआ। न जाने क्या हुआ मुझे कुछ खबर नहीं। यदि दीवालिया कहूं तो, यह भी ठीक नहीं, कि दूसरों का धन मारकर दीवालिया होता है, तो सो भी नहीं हुआ। यों कह लीजिये कि दीवालिया थी और वही रही।

मेरे परम पूज्य प्रभुवर ! कुछ यह कहूं तो शायद कुछ ठीक होगा कि अपने के ही नहीं, बल्कि कुल संसार मुझे एक छाया के समान प्रतीत होता है। ग़ौर करूँ तो केवल छाया-मात्र है। भाई, न जाने क्या बात है कि अब तो बंधन और मुक्ति यह दोनों शब्द अपने लिये मुझे अर्थ रहित ही मालूम होते हैं। न जानें क्या हो गया है कि श्रद्धा, विश्वास, प्रेम,भक्ति, शुद्ध, अशुद्ध मेरे लिये सब बेकार के शब्द लगते हैं। यहाँ [illegible] जीवन-मृत्यु, पूजा -ध्यान,स्थिरता और शान्ति, साम्यावस्था तक का भी [illegible] मानों कोई अर्थ ही नहीं रह गया। बस ये सब कोरे शब्द ही लगते हैं मुझे, किन्तु कोई सार रहस्य या गम्भीरता न जानें क्यों मुझे अनुभव में नहीं आती। कुछ यह हो गया है 'श्री बाबूजी'

कि अब तो ऐसा लगता है कि शब्द 'सहज' या कुदरत से मानों मेरी जान पहिचान हो गई है और जान पहिचान ही क्या बल्कि इनकी गम्भीरता अथवा रहस्य मेरी रहनी ही बन चुका है, किन्तु कुदरत है, हक़ीकत नहीं। कुछ ऐसी दशा है कि 'हैं' और 'नहीं' मेरे लिये सब समान हैं। इतिः-

सदैव केवल 'आपकी' ही कृपाकांक्षिणी
सेविका पुत्री- कस्तूरी

पत्र- संख्या- 450

मेरे परम पूज्य तथा श्रद्धेय श्री बाबूजी, लखीमपुर
सादर प्रणाम स्वीकृत हो। 27.12.54

आशा है ताऊजी पहुंच गये होंगे तथा मेरा पत्र व प्रणाम भी श्रीचरणों में पहुंचा होगा। पूज्य मास्टर साहब जी कल मुझे Tube दे गये हैं, यद्यपि मैं 'आपके' बताये ध्यान कर लेती हूं। इस लिये मुझे अब आवश्यकता मालूम नहीं पड़ती। भाई काशीराम जी ने आसाम से 10-12 दिन में आ सके तो आने को लिखा है।

मुझे न जानें क्यों ऐसा लगता है कि मैं अपनी दशा से भी न जानें क्यों बेपरवाह सी रहने लगी हूं, इसके लिये मैं क्या करूँ, 'आप'ही बताइये। आध्यात्मिक, जो कुछ भी दशा है, 'मालिक' की कृपा से, सो लिख रही हूं।

अब तो भाई मेरा यह हाल है कि मेरे शरीर का कुल कण-कण, कुल Points में यही पाती हूं कि पूजा, ध्यान से भी धुले पड़े हैं। मेरा तो यह हाल है कि केवल एक ऐसी सांसारिक-एकीभाव में स्थित मनुष्यों में गिनती है कि जिन्हें सिवाय संसार के ईश्वर दुई मालूम पड़ता है। जिनके ख्याल को कभी ईश्वर की ओर मुड़ने की फ़ुर्सत ही नहीं, बस उन्हीं में मेरी गिनती है। ऐसा लगता है कि गुड़ खाकर भी मिठास न लगी, परन्तु मैं तो यह भी कहती हूं कि जब गुड़ में मिठास न हो तो क्या होवे, खैर, 'मालिक' के बन्दे कहलाती रहूं, यही मेरी मिठास है। मेरे 'श्री बाबूजी' मेरी तो ऐसी दशा है कि जैसे कोई कोई फूल बहुत सुन्दर होते हैं, किन्तु महक नहीं होती, ऐसी दशा है मेरी। मेरे शरीर की तो यह दशा है, कि कुछ एक अजीब ऐसी दशा कुल शरीर में रम चुकी है कि यदि मैं उँगली को देखूं तो, यही लगता है, मानों जिन्दगी, मौत दोनों से रहित , न अपनी के अर्थ उसमें लगते है, न पराई के। लकड़ी कह लो चाहे उँगली, मुझे कुछ पता नहीं।

मेरे 'श्री बाबूजी' न जाने क्या बात है कि अपनी जगह बजाय शरीर तक के स्थान पर जैसे एक धुला हुआ वस्त्र होवे। परन्तु सफ़ेदी भी है नहीं उस वस्त्र में। यही नहीं, न जाने क्या बात है कि दशा को स्वतंत्र कहूं तो परतंत्र कहूं तो, मेरी दशा पर जूं नहीं रेंगती।

अब तो भाई दशा ही मेरा शरीर कह लीजिये और मेरे शरीर को ही दशा कह लीजिये। ऐसा लगता है कि कोई दशा शरीर बन गया और और शरीर क्या है, केवल एक धुला वस्त्र और वस्त्र भी कहने को ही कह लीजिये। कुछ ऐसा लगता है कि शरीर के आगे पीछे हर Points क्या है, बल्कि केवल एक धुली हुई चादर बिछी है। किन्तु उस बेरंग चादर पर शिकन तक नहीं है, चाहे कुछ कर डालो, परन्तु वह ज्यों की त्यों है। न जाने क्यों 'श्री बाबूजी' कभी–कभी ऐसा लगता है कि मानों कोई एक फर्ज़ सा पूरा हो गया, किन्तु वह फर्ज़ क्या है, यह मैं स्वयं नहीं जान पाती। इस हिसाब से जो मैंने अगले पत्र में कभी–कभी कुछ सन्तोष या तसल्ली सी ही कहिये पता लगता है, किन्तु निगाह तो ज्यों की त्यों डटी हुई है। न जाने, जो 'मालिक' से कुछ मन में कहती थी, वे भी बातें 'उन्हीं' में लय सी होती जाती है। अब दशा सूनी नहीं उजड़ी हुई है। इधर करीब 6–7 दिन से जाने क्यों मुझे साँझ को मन ही मन कुछ डर सा भीतर ही भीतर रहता है, परन्तु फिर रात भर तो नहीं रहता, अंधेरा हो चाहे उजाला हो, यह कुछ बात नहीं है। तसल्ली के बारे में यों कह लीजिये कि कुल शरीर के ज़र्रे–ज़र्रे में तसल्ली है। बस किसी एक कण में, जिसे ख्याल कह लीजिये या चाहे कुछ, उसमें तो नहीं है। अब तो मेरे 'श्री बाबूजी' मेरे शरीर को ही चाहे राजयोगी कह लें या कुछ परन्तु मेरा तो पता नहीं चलता कि मैं कहाँ हूं, क्या हूं, जीवित हूं, या मर चुकी हूं कुछ खबर नहीं मिलती। बस उजड़ी हुई बस्ती, जहाँ कुछ भी चारों ओर नहीं दिखाई पड़ता, बस वहीं डेरा या बसेरा है, सो भी चंद दिनों का, ऐसा ही मुझे लगता है या यों कह लीजिये कि वहीं मेरा पसारा है। ऐसी दशा है कि लगता है कि अपने ही घर में मैं खो गई और ऐसी कि ढूंढ़–ढूंढ कर हार चुकी, परन्तु पता न चला। आखिर खोज ही छोड़ दी। हाँ ख्याल कुछ अवश्य वहमी सा साथ रहता है पीछे, किन्तु अब याद नहीं आती ।

अम्मा 'आपको' शुभाशीष कहती हैं। इतिः–

सदैव केवल 'आपकी' ही कृपाकांक्षिणी
सेविका पुत्री– कस्तूरी

पत्र- संख्या- 451

मेरे परम पूज्य तथा श्रद्धेय श्री बाबूजी, लखीमपुर
सादर प्रणाम स्वीकृत हो। 29.12.54

आशा है मेरा एक पत्र मिला होगा। कल परम पूज्य मास्टर साहब जी 'आपके' पास पहुंच रहे हैं, जिससे यहाँ की याद एक बार पुनः 'आपको' ताज़ी हो जायेगी। कल भाभी व सरला जिज्जी इलाहाबाद चली जायेंगी। 'आपको' प्रणाम कह रही हैं।

इधर 'श्री बाबूजी' न जाने क्या हो गया है कि मन ही मन न जाने क्या क्या सैर किया करती हूं, जाने क्या। रात में, सोने में, स्वप्न में यही दशा रहती है, परन्तु यह देखती हूं कि मन ही मन जो सैर सी रहती है, उसके पीछे 'मालिक' का ख्याल ज़रूर छिपा रहता है, ऐसा मेरा विश्वास है, क्योंकि परसों रात मैं ने एक स्वप्न देखा और करीब 3–4 घंटे लगा कि मन से ही 'आपके' साथ जाने कहाँ सैर करती फिर रही हूं और उन बस्तियों या जगहों, जहाँ–जहाँ मेरा ख्याल गया, उजाड़ ही पाया। बड़ी देर तक यह देखा, फिर लगा जैसे मास्टर साहब और 'आप' खाट पर बैठे हैं। न जाने कहाँ से मैं ने ताज़े–ताज़े बड़े लम्बे–लम्बे पेड़े 'आपके' सामने रखे, तो 'आप' खूब खाये चले जा रहे हैं, जिसे देख–देख कर मेरा जी बड़ा प्रसन्न है। मास्टर साहब जी ने भी खाया है। ऐसे ही मैं देखती हूं कि इधर मेरे मन में न जाने कहाँ–कहाँ भटकने का वहम सा बना रहता है, किन्तु न जाने कैसे वह बहका हुआ ख्याल जब इधर (मेरी) की तरफ़ आता है, तब मुझे उपरोक्त एहसास होता है। कल से मेरे मन में शाम को जो भय सा हुआ करता था, सो नहीं है । न जाने क्यों मेरे 'श्री बाबूजी' कभी–कभी एक पीड़ा से मैं कराह सी उठती हूं कि क्या कभी 'मालिक' मुझे अपना प्रेम देगा। क्या जी भर कर मैं उससे प्रेम कर सकूंगी। बस यही कराह कभी–कभी क्या, बल्कि अक्सर दिमाग़ में घूम जाती है, वरना तो यह हाल है कि तड़प या कसक ने भी डेरा–डण्डा उठा कर घर खाली कर दिया। पूज्य 'श्री बाबूजी' दशा में ख्याल को मैं कैसे [illegible] रक्खूं । मुझमें हर बात की याद की बहुत कमी है और भूल भी भाग खड़ी हुई। अब मैं जहाँ जाती हूं, आगे –पीछे सब उजाड़ पथ है। 'मालिक' का ही सहारा है, वही पार लगायेगी। मेरे पास तो अपने डंडे का भी सहारा न रहा। बस आ रही हूं, बेहोश हूं, पता नहीं कदम पड़ते हैं या नहीं, उठते हैं या नहीं, 'मालिक' सम्भालेंगे, सहारे की, तिनके का सहारे के सदृश कह लीजिये। आज सबेरे पूजा में कुछ अजीब लगा कि पूजा में बैठी थी तो जैसे पानी का भरा गिलास लौटकर झप से पानी जहाँ सीधी माँग खतम होती है, उससे कुछ नीचे तक, हथेली से कुछ ही कम दायरे के बराबर पड़ा तब से मानों वहाँ कोई सुराख सा खुल गया हो। न जाने क्या बात है कि 'मालिक' मुझमें अंटता ही नहीं। कोशिश करूँ तो भी अटा नहीं पाती। अंटाती हूं, तो भी खाली ही रहता है। चाहे कितना भरूँ, परन्तु रहता नहीं, बल्कि कुल ब्रह्मांड, कुल सृष्टि तक का ज़र्रा–ज़र्रा छिन्न–भिन्न, तितर–बितर है। आंखों के आगे तो 'मालिक' बैठे एहसास में भी आते हैं, किन्तु सृष्टि में समाये हुए नहीं, क्योंकि अपने में गुंजाइश ही नहीं निकलती। परन्तु फिर भी मेरे बाबूजी मेरा बिछोह कभी होता ही नहीं, यद्यपि संयोग का होश नहीं रहता। यहाँ तक कि न जाने क्या बात है कि यद्यपि 'वह' मुझमें अंटता तो नहीं, किन्तु अपने को छूती हूं या कोई वस्तु उठाती हूं तो होश में रहूं तो हर Touching में केवल उसका ही स्पर्श रहता है। बस मुझमें होश की कमी है।

अम्मा 'आपको' शुभाशीष कहती हैं। इतिः–

सदैव केवल 'आपकी' ही कृपाकांक्षिणी
सेविका पुत्री– कस्तूरी

पत्र-सख्या- 452

प्रिय बेटी कस्तूरी, शाहजहाँपुर

सदा सुखी रहो। 1.1.55

तुम्हारे कई खत पहुंचे। अब मैं ताः 16.12.54 के खत का जवाब दे रहा हूं। अब मैं तुम्हारे तजुर्बे के लिये शुक्ला जी का Reference देते हुए कुछ लिखता हूं, ताकि हर बात साफ़ हो जावे। शुक्ला जी प्रेमी जीव हैं, और बहुत शुद्ध-चित्त। लखीमपुर में रहे, दिल और System साफ़ ही रहा और यह चीज़ देखकर मैं उनको नये ढंग की तालीम देने को सोचने लगा और आरम्भ भी कर दी। मगर तजुर्बे ने बतलाया कि मेरी गलती थी। कानून कुदरत है कि हर चीज़ का Anti-dote उसके पास ही मिलेगा। Atom-Bomb का Anti-dote लोग तलाश कर रहें हैं, मगर अभी तक उनकी समझ में न आया। यह Scientist Atom कि जिसको समझने के लिये मैं Master-Piece कहूंगा, उसको फाड़ देते हैं, जिससे तबाही नतीजा होता है। उसका Anti-dote उसके क़रीब है, और उसकी शक्ल छोटे Bracelet की तरह है। अगर उस ताकत का इस्तेमाल किया जाये तो Atom का असर खत्म हो जायेगा। मैं इस Research में बिल्कुल Definite हूं। कोई Scientist Research करके देखे। जिसने अपने आप को Study कर लिया है, उसके लिये कोई चीज़ ऐसी नहीं रह जाती, जो Study न हो गई हो। Socretes ने लिखा है कि 'Know Thy Self' और अपने यहाँ भी यही कहते हैं। योग-मार्ग में हम जहाँ तक हो सकता है, वही चीज़ें ले लेते हैं, जिस पर कि आखिर में हमको पहुंचना है। और भक्ति-मार्ग जिसको आज कल कहते हैं, उसमें वही चीज़े लेते हैं कि जिससे हमको हटना और बचना है, इसीलिये वह हटते और दूर ही होते चले जाते हैं। बस यह तो ऐसी बात रही कि जैसे अखाड़े में दो घंटे लड़ आये और कसरत पूरी हो गई। कोई दो घंटे पूजा करता है, कोई इससे ज़्यादा और वह समझ लेते हैं कि हमारी Mental Drill पूरी हो गई और पूजा का इत्मिनान हो गया।

अब मतलब पर आता हूं। शुक्ला जी के जिस गुरिया पर मैंने Push दिया था, वह बड़ा अच्छा असर पैदा कर रहा था। मगर ज़माने की गर्दिश और विचारों की परेशानी की वज़ह से उन्होंने उस हिस्से से अपना सम्बन्ध जोड़ दिया, जहाँ कि रोशनी के विरुद्ध अंधेरा था। चुनांचे जैसे Atom का असर उसकी करीब की चीज़ से कायल हो जाता है और अपना रंग ले आता है, उसी तरह से शुक्ला जी बजाय रोशनी के अंधेरा दाखिल करने लगे और दिल एक अंधेरी कोठरी बन गया, जिसने कुल System को Dark कर दिया। यह Darkness मैंने कुछ इलाहाबाद में दूर की और बाकी यहाँ। System की Darkness तो जौनपुर जाने तक मैंने साफ़ कर ली, मगर दिल का अंधेरा

जौनपुर में कोशिश करने से न गया। यहाँ भी कोशिश की, मगर बेकार हुई। आखिर कार ईश्वर ने मुझे परेशान देख कर मेरी मदद की और मास्टर साहब को खत लिखते–लिखते मेरा ध्यान उस तरफ़ पहुंच गया। फिर जब मैंने उस चीज़ को रोका है, तब उनको अंधेरे से छुटकारा मिला। अब भी कुछ मकड़ी के जाल की तरह कुछ बाकी है। अब भाई, उसको दूर करना होगा। अंधेरा तो अब नहीं है, मगर पूरी रोशनी अभी नहीं पैदा हुई, यह मेरी बेवकूफी की कहानी है और देखो, इस मकड़ी के जाल को कब तक दूर कर पाऊं। ईश्वर मेरी मदद करे, तुम भी ज़रा दिल की हालत देख लिया करना और जो समझ में आवे, लिख देना।

यह चीज़ ज्यादातर Faith और मोहब्बत में कमी हो जाने से पैदा हो जाती है। एक बात जो तुमने पूछी है, वह यह थी कि "दिल की हालत क्यों ऐसी हो गई है, जैसे उसकी Life निकल गई हो"। इसका जबाब मैं ऊपर दे चुका हूं। रोशनी– आध्यात्मिक ज़िन्दगी है, जो सत्य का भान कराती है और अंधेरा रूहानी ज़िन्दगी की मौत। इसके पैदा हो जाने से तमोगुण वृत्ति के जुज़ पैदा हो जाते हैं, फिर ज़िन्दगी कैसी ?

Super concious State के बारे में जो तुमने लिखा है, वह ठीक है और यही वजह है जो Develop नहीं होती। मिसाल के लिये तुम्हारे ताऊजी हैं। इनकी Super Concious State दिमाग़ तक की जगी हुई है, मगर उससे काम नहीं लेते। वज़ह यह है कि लगन व चाव शौक़ नहीं है। जो चीज़ बिना मेहनत के मिल जाती है, उसका यही हाल होता है । बड़े–बड़े लोगों की उम्र गुज़र जाती हैं, और दिल की Super Concious State भी पूरी तरह से जाग नहीं पाती। मैं चाहूं तो कुण्डलिनी भी इनकी जग सकती है, मगर वह महज़ उनके खुश करने के लिये होगी कि यह चीज़ उनमें है। जिसका नतीजा यह होगा कि अहंकार बढ़ेगा, मगर उससे फ़ायदा न उठा सकेंगे। यह उसूल पुराना है कि जब गुरू लोग अभ्यासी से खूब मत्था रगड़वा लेते थे, तब कहीं शुरुआत कराते थे। वह सिर्फ़ इसीलिये था कि ताकि पता चल जाय कि कितनी तलब है। ज़माना गिरने पर गुरू लोगों ने इसका Misuse शुरू कर दिया और अपने आराम की खातिर शिष्य को तकलीफ़ देने लगे। सेवा कराना फर्ज़ समझा और सेवा करना कुफ्र। इसलिये इस चीज़ को रायज रखना किसी तरीके से मुनासिब नहीं, बल्कि गुरू को शिष्य की सेवा करनी चाहिये। यह हमारे लालाजी ने अमली (Practically) तौर पर दिखा दिया।

तुमने याद की जो शिकायत लिखी है, यह शिकायत नहीं है, बल्कि बड़ी अच्छी बात है। कबीर ने लिखा है–

"एक एक का करइ विचार, जहाँ मिलौंनी, तहाँ विचार"

फिर भी तुममें अभी कुछ दुई बाकी है, इसलिये याद की टटोल बाकी है। याद जब

अपनी न रहीं, तब दूसरे की याद बढ़ती है और जब दूसरा सामने न रहा तो फिर उसकी याद ही नहीं आती। मैंने"सहज-मार्ग के दस उसूलों की शरह" में एक जुमला (Sentence) लिखा है, बिल्कुल ठीक तो इस वक्त याद नहीं, मतलब लिख रहा हूं कि " याद तो ऐसी होनी चाहिये, जो कभी न आवे या दूसरे मानों में याद की भी याद जाती रहे। सूनापन जिस तरह से भी तुम्हें एहसास होता हो, वह उजड़ी बस्ती का एक नमूना है और वहीं हमें पहुंचना भी है।

22 दिसम्बर का खत जो तुमने भेजा है, उसमें कुछ हालतें हैं। उसमें पहली चीज़ सन्तोष है, जो तुममें नहीं आया है और उस वक्त यह आना चाहिये कि जिसके कोई हालतें ही न पैदा हों। तुमने लिखा है कि "पहले भूली हुई सी हालत रहती थी, अब ऐसा प्रतीत नहीं होता "इसके माने ये हैं कि तुम भूली हुई हालत को भी भूल गई हो और यह लय-अवस्था की एक अच्छी हालत है। तुमने इस खत में बड़ी उम्दा बात लिखी है कि बंधन और मुक्ति यह दोनों शायद तुम्हें अपने लिये अर्थ-रहित मालूम होते हैं। यह बड़ा ऊँचा ख्याल है, अगर कोई सोचे तो मुक्ति खुद बन्धन है, इस लिहाज़ से भी कि हम उसमें ख्याली बन्धन डाल देते हैं, और उसमें एक हद पैदा कर लेते हैं, बेहद की गति उसमें नहीं रहती और जिससे यह नुखस पड़ता है कि हमारे ख्याल से हद नहीं होती और इस वजह से भी हम बेहद की तरफ़ नही बढ़ पाते। दुनियाँ तो मुक्ति के ऊपर मर रही है, बन्धन से छुटकारा मुक्ति है और मुक्ति से छुटकारा असलियत। हमको तो इन दोनों को ही छोड़ना पड़ेगा, तब हम Infinite की तरफ़ जा सकते हैं और फिर यह भी नहीं। अगर तबियत Infinite का ख्याल मौजूद है तो हममें महदूदियत है और 'बेहद' की तरफ़ हम नही बढ़ पाते। अगर कोई हमारे गुरू महाराज की तालीम पर ग़ौर करे तो यह पता लगेगा, किसको ? सच्चे जिज्ञासुओं को कि हम शुरू से ही *Finite* और *Infinite* को ख्याल में आने ही नहीं देते। कहने को तो भाई हम भी कह देते हैं कि भाई Infinite की तरफ़ जाना है, इसलिये कि और कोई शब्द वहाँ के लिये नहीं मिलता, जहाँ कि हमको जाना है। बाकी इस तारीख के खत में अच्छी लय-अवस्था का ही ज़िक्र है।

27.12.54 का जो तुमने खत भेजा है, उसके हर ख्याल की व्याख्या हो सकती है या उसकी ज़रूरत नहीं मालूम होती, क्योकि समय का बचाना भी मतलब है। एक बात ज़रूर उसमें बहुत पसंद आई कि जीवन और मरण एक ही सा महसूस होता है। और यह चीज़ कुछ Originality का सबूत दे रही है, उसकी व्याख्या ज़्यादा कर नहीं मिलती है। 29.12.54 का जो खत तुमने भेजा है, उसकी कोई जवाब की ज़रूरत मालूम नहीं होती। यह गिलास का पानी जो चोटी पर गिरा हुआ मालूम हो रहा है और जिसकी वजह से एक सूराख मालूम होता है, इसके माने मुझे यह मालूम होते हैं कि "मालिक" ने अपने खबर भेजने के लिये स्थान कायम कर लिया है। यह चीज़ वहाँ तक पहुंचने पर मुमकिन

है कि अपना हाल खोल देवे। अब जो तुम्हारा 'A' स्थान है, उसकी सैर तो कुछ शुरू है, मगर बहुत रफ़्ता-रफ़्ता। मास्टर साहब के ज़रिये से तुम्हारी तन्दुरुस्ती का हाल तो मिल गया, जो काबिल शुक्र है। अब मैं सैर की तरफ रुजू हूंगा। मेरी भी तन्दुरुस्ती अब अच्छी है, और अच्छे के माने ये है, कि खराब नहीं है।

चौबे जी वादा करते हैं कि मेरा प्रणाम अम्मा तक पहुंचा देगें, इसलिये इसमें नहीं लिखा केसर, विमला व उमा के खत आते रहते हैं। जवाब मुश्किल से पहुंच पाता है। तुलसी दास इलाहाबाद पहुंच कर 30.12.54 को देहली चले गये होंगे। कुछ मास्टर साहब कहते हैं, कुछ मेरी तबियत भी चाहती है कि कुछ और किताबी शक्ल में लिख डालूं। मगर सोचता हूं तो यह मालूम होता है कि जितना मुझे मालूम था, सब लिख दिया। अब विचार उस तरफ दौड़ता ही नहीं और ऐसा लगता है कि Matter Exhaust हो चुका है। अब तुम बताओ, हम क्या लिखें।

ट्यूब जब तक मिलते जायें, इस्तेमाल करती रहो। दामों की फ़िक्र मत करो। एक किताब जो श्री रामचन्द्र मिशन के ज़रिये से तुम्हारे लिये आई थी, वह भेज रहा हूं। उसमें मनीआर्डर भी रखा था कि यथा शक्ति जो कुछ हो, भेज दिया जावे। मैंने तुम्हारी तरफ़ से एक रुपया भेज दिया। मैंने चौबेजी को दो रोज़ के लिये रोक लिया है, अब वे मंगलवार को आवेंगे और वे अच्छी तरह से हैं। नारायण सबसे नमस्ते कहते हैं। इति -

शुभचिन्तक
रामचन्द्र

पत्र-संख्या : 453

मेरे परम पूज्य तथा श्रद्धेय श्री बाबूजी, लखीमपुर
सादर प्रणाम स्वीकृत हो। 4.1.55

कृपा-पत्र 'आपका' भाई पुत्ती बाबू द्वारा मिला तथा किताब भी मिली। पत्र पढ़कर अत्यन्त प्रसन्नता हुई। आज ताऊजी भी तीन बजे आ गये। उनसे 'आपके' स्वास्थ्य एवं तमाम बातें सुनकर बड़ा हर्ष हुआ। एक Tonic शीशी जो 'आपने' भेजी, सो मिली और पुत्ती बाबू से चुकन्दर भी मिले। मैं तो इस कोशिश में हूं कि बसन्त में आने तक इतनी तन्दुरुस्त हो जाऊंकि 'आप' देखकर खुश हो जावें। भाई शुक्लाजी की हालत पढ़कर तो वाकई बड़ी चिन्ता थी, किन्तु यह केवल 'आपकी' ही पकड़ का नतीजा हुआ कि 'आपने' कोई न कोई उपाय निकाल ही लिया। यदि उन्हें भी इतनी फ़िक्र अपनी ही होती तो यह हाल ही न होने पाता, खैर।

अब तो मेरे 'श्री बाबूजी' मुझे लगता है, सैर की चाल में कुछ तेज़ी तो आई है परन्तु

बागडोर खिंची हुई है, परन्तु यह भी जहाँ तक मेरा ख्याल है, यदि यह बागडोर न हो तो अभ्यासी को थकान बहुत जल्दी–जल्दी आये। मुझे तो यही अच्छा लगता है कि "गले 'राम' की जेंवरी, जित खींचे तित जाऊँ"। मेरी तो दशा कुछ ऐसी है कि जैसे बुझते दीपक में कभी–कभी ज्योति जाग उठती है, उसी प्रकार याद अथवा प्रेम के लिये दूसरे में प्रेम देखकर लौ कुछ जाग उठती है, किन्तु तेल समाप्त है। दीपक कब तक चलेगा। तबियत का तो यह हाल है 'श्री बाबूजी' कि न जाने क्यों उसे एक अथवा ऐक्य का भी होश नहीं और हो भी कैसे, जबकि मेरी दशा के लिये तो वह भी अर्थहीन ही प्रतीत होता है। अब तो जहाँ जाती हूं, सब उजाड़ स्थान है, बीहड़ मैदान है किन्तु बेहोश ऐसी हूं कि कदम कहीं पड़ते हैं या नहीं; उठते हैं या नहीं, कुछ पता नहीं। न जाने क्या बात है, मैं बेहोश हूं, यह मुझे खबर नहीं, इस लिये पता तो यही लगता है कि बेहोशी होती तो ज़रूर पता लगता। अब 'मालिक' ही जानें। यों कह लीजिये कि एक लावारिस मुर्दा पड़ा है उजाड़, निर्जन मैदान में, तबियत जब घूमती है या लौटती है, तो यही पाती हूं। यही नहीं, बल्कि अब तो हर चीज़ जड़–चेतन, सब मेरे लिये कारण–रहित मुर्दा ही हैं। जब cause ही नहीं है, तो सब अर्थ–हीन, बेमतलब है। मेरे 'श्री बाबूजी' यही हाल याद का है, कि इसका (यानी याद का) नाम मुझे अब नहीं आता, क्योंकि हाल तो यह है कि मुर्दा (मेरे लिये) के लिये किसी का कुछ अर्थ नहीं, बेमतलब है। जैसे पहले मैंने लिखा था कि कोई 'मालिक' का नाम ले देता है तो कलेजा पकड़ कर रह जाती हूं, परन्तु अब कुछ नहीं। अब तो यह हाल है कि लाश पर चाहे ढेले फेंको या फूल चढ़ाओ, मेरे लिये किसी का कुछ अर्थ नहीं। स्वयं मेरा ही, न कुछ अर्थ है, न मतलब। न जाने क्या है, बस केवल चारों ओर उजाड़ खण्ड है, सूना बसेरा है।

'मेरे श्री बाबूजी' आपने मुझसे मज़मून लिखने के लिए पूछा है, किन्तु मैं क्या बताऊं, मेरे तो कुछ ज्ञान ही नहीं। मुझे तो जब जितना 'आप' बता देते हैं, उतना ही मैं जान पाती हूं। बस और भला मैं क्या जानूं। इसलिये क्षमा कीजियेगा 'श्री बाबूजी' 'आप' तो जो कुछ भी लिखेंगे, वह संसार के कल्याणार्थ ही होगा।

सच तो यह है 'श्री बाबूजी' कि अर्थ, मतलब–रहित दशा है, इसलिये मुर्दा कह लिया, वरन् न जाने क्या है, 'मालिक' ही जानें।

अम्मा 'आपको' शुभाशीर्वाद तथा मास्टर साहब जी को भी शुभाशीष कहती हैं। मास्टर साहब जी से मेरा भी नमस्ते कहियेगा। इति –

सदैव केवल 'आपकी' ही कृपाकांक्षिणी
सेविका पुत्री – कस्तूरी

मेरे परम पूज्य तथा श्रद्धेय श्री बाबूजी, लखीमपुर
सादर प्रणाम स्वीकृत हो। 9.1.55

आशा है मेरा एक पत्र मिला होगा। पूज्य 'मास्टर साहब' से 'आपके' पेट दर्द कुछ बढ़ जाने का हाल मिला, अब उत्सव के ज़माने में तो 'आपको' कदापि अधिक तकलीफ़ नहीं हो सकती। मैं भी आजकल बहुत अच्छी हूं। हम सब तथा पूज्य मास्टर साहब वग़ैरह तो ता. 25 को रात में 11 बजे वहाँ पहुंच ही जायेंगे। 'मालिक' की कृपा से जो कुछ भी आध्यात्मिक दशा है सो लिख रही हूं।

मेरे 'श्री बाबूजी' अब मैं एक अजीब अर्थ-हीन बेमतलब हूं। न जाने क्या हो गया कि जाने कब मेरी Soul भी मुझमें से निकल गई। निर्जन वन में पड़े-पड़े मुर्दा भी जाने बिला गया, जाने कहाँ लोप हो गया। मुझे तो अब वह भी नहीं दिखाई पड़ता है। मुझे अब जाने क्या हो गया है कि दशा को ब्रह्म-गति भी कहते अच्छा नहीं लगता, क्योंकि यह कहने में न जाने क्यों मुझे कुछ भीतर ही भीतर हल्की बेचैनी सी लगने लगती है। बिल्कुल यही हाल Soul का है, कि Soul कहूं तो न जाने क्यों अन्तर में कुछ अजीब घबराहट सी लगने लगती है। लेकिन मेरे 'श्री बाबूजी' बिना आत्मा के भी शरीर तो शायद जीवित है, 'आप' ही जानें। भाई, मुझे तो अब कुछ भी नहीं मालूम, न मेरे में बुद्धि है, न वाणी, न आँख, न कान, फिर मैं क्या कहूं। किन्तु जाने कैसे लेख तो लिख गया, परन्तु फिर भी मुझे कुछ ऐसा याद पड़ता है, कि लेख लिखने वक्त भी मुझमें कुछ न था, जबकि शायद मैं ही न होऊं। क्या हुआ, कैसे हुआ, कुछ समझ में नहीं आया, खैर 'मालिक' जाने। मैं क्या, जब आत्मा ने ही शरीर छोड़ दिया और कुछ यह है 'श्री बाबूजी' कि मुझमें ही नहीं बल्कि सब कुछ मुझे अपने ही जैसा Soul रहित, अर्थ-हीन, बेमतलब, बिना कारण के ही लगता है और 'यदि लगता है' को निकाल दीजिये तब शायद ठीक दशा आवे। यह एक बात अगर किसी से कहूं तो सब हंसेंगे कि न जाने क्यों मुझे स्वयं अपने से डर लगा करता है। पीठ को तो बाबूजी जाने क्या कीड़े से लगे हैं, जो सब चुन-चुनाकर एक ढाँचा मात्र है जिसमें केवल पसलिये और रीढ़ की जगह पर एक हड्डी सीधी सतर कह लीजिये, बस रह गई है। अपना मुर्दा यदि कहूं दशा को, तो वह मुर्दा भी अपरिचित सा लगता है। जाने किसका है, क्योंकि जब आत्मा नहीं तो, वह किसका? मुर्दा भी जाने है या नहीं। होगा कोई, मुझे क्या, जो निर्जन विदेश में मर कर चला गया। यदि उसे Touch करती हूं, यानी शरीर के मुर्दे को, तो चाहे नोच डालूं, परन्तु Touching की अनुभूति नहीं, जाने कपड़ा है, जाने मुर्दा है। किन्तु दशा यह है कि या तो मुर्दा भी मर गया या उदासीन हो गया। अब ठीक तो 'श्री बाबूजी' 'आप' ही बताइये। मेरा तो यह हाल है कि न

कभी ईश्वर की खोज की, न कभी आशा है, किन्तु ऐसा लिखने में भी मेरी दम सी एकदम घुटने लगती है। मैं तो उदासीन सी हो गई हूं। ऐसी ही दशा सी कुछ रहती है। न जाने क्या 'श्री बाबूजी' अबकी से तो जहाँ ध्यान आया कि उत्सव में जाऊंगी, 'आपके' पास जाऊंगी, तो इतना विचार आते ही इतना जी घबड़ाता है कि एक पल भी नहीं टिका सकती इस ख्याल को। यद्यपि मैं इसमें प्रसन्नता भी नहीं आने देती। किन्तु वैसे वहाँ आने के लिये चाहे तैयारी भले करते रहो, तो कुछ नहीं होता। यही नहीं, वैसे चाहे विचारों के सागर में डूबी रहूं, परन्तु अपने मन से कोई विचार नहीं कर सकती। जैसे हो वैसे ही रहो तो कोई परेशानी नहीं। यह सब क्या हालत है 'श्री बाबूजी' मुझे तो सिवाय 'आपके' कुछ नहीं सूझता। 'आप' जैसे चाहें, वैसे रखें। मैंने तो 'आपका' दामन पकड़ लिया है, सो तो अब छुटाने से भी नहीं छूटता, चाहे स्वयं 'आप' ही क्यों न छुटायें, परन्तु होश तो मुझे दामन का है न 'मालिक' का, बस केवल विश्वास ही है मेरा ऐसा।

अम्मा 'आपको' शुभाशीर्वाद कहती हैं। इति –

सदैव केवल 'आपकी' ही कृपाकांक्षिणी
सेविका पुत्री – कस्तूरी

पत्र-संख्या : 455

मेरे परम पूज्य श्री बाबूजी, लखीमपुर
सादर प्रणाम स्वीकृत हो। 14.1.55

कृपा-पत्र 'आपका' अबकी बार शायद Busy होने के कारण बहुत दिनों से नहीं आया। मेरा पत्र शायद मिला होगा। आज तो उत्सव के केवल दो हफ़्ते ही शेष रह गये हैं। 'मालिक' की कृपा से अब जो कुछ भी आत्मिक-दशा है, सो लिख रही हूं।

मेरे 'श्री बाबूजी' अब तो ऐसा लगता है कि उजाड़ अवस्था नहीं, बल्कि स्वयं मेरा स्वरूप ही निर्जन उजाड़ शून्य हो गया है। उदासीन रूप हूं। कोई चीज़ जो देखती हूं और गाना ही सीखती हूं तो कुछ ही देर बाद यदि उसे याद करूँ तो लगता है मानों स्वप्न को याद कर रही हूं और जहाँ उसे छोड़ा तो फिर सब समाप्त। वैसे देखती हूं कि दिमाग़ विचारों से हर समय लीन रहता है, जो मेरी समझ के परे हैं कि कैसे हैं, कहाँ हैं। परन्तु यह भी देखती हूं, मेरे परम पूज्य महात्मन् कि उधर विचार हैं और इधर स्वयं उदास-रूप मैं। यदि ये दोनों एक साथ न रहें, तो सम्भव है Practical शब्द उड़ जाये मेरे लिये। मुझे ऐसा लगता है कि एक उदास, उजाड़, कुल दशा की दशा मानों मुझमें, मेरे स्वरूप में समाती, सोखती चली जाती है। किन्तु उसे यदि उदास का सहज रूप कहिये, तो ही ठीक है, क्योंकि मैं देखती हूं कि मैं भी एक न जाने क्या बिल्कुल सहज सी हो गई हूं।

जो मुझे केवल अब शून्यता का ही आभास कराती है और ऐसा ही कुल की कुल दशा मेरे में समाती आ रही है, जिसका छोर नहीं है। न जाने यह क्या बात है मेरे 'श्री बाबूजी' कि यदि अपनी ओर भी निगाह जाती है तो केवल एक सहज–साम्य अवस्था सी धारा के और कुछ नहीं अनुभव होता। मुझमें ही क्या बल्कि हर समय, हर जगह, बस एक ही साम्य–धारा, उसे चाहे गतिहीन कहिये या कुछ बहुत ही धीमे–धीमे से बहती कह लीजिए, अनुभव होती है। किन्तु यह दशा तो शायद निगाह में फैल कर पग चुकी है, किन्तु हृदय या मैं तो केवल उदास या शून्य ही पड़ा है। उसमें यही शून्यता ही या उदासी सिमटती चली आ रही है। यही नहीं मेरे परम पूज्य प्रभुवर ! हर समय, हर चीज़ अपने भीतर–बाहर सब उदास हैं या शून्य हैं। स्वयं मेरा रूप क्या है ? बस शून्य, इतना ही हवाला दे सकती हूं। एक कुछ भाई, उसे अपनी दशा में कहूं या अपना मैदान कहूं, कुछ समझ में नहीं आता कि मुझे बस एक मैदान से में ऐसा दिखलाई पड़ता है। यह क्या है 'श्री बाबूजी' मेरी समझ में नहीं आता है। मैं तो उदासी में भिदकर अब वहीं हूं। मेरा हर कण–कण, बल्कि समस्त ब्रह्माण्ड का कण–कण शून्य रूप है, और शून्य क्या है, यह नहीं मालूम। अब कुछ यह भी है कि 'श्री बाबूजी' क्या हैं, कौन हैं, कुछ जैसे पता ही नहीं। यदि शाहजहाँपुर में हैं, तो देखती हूं हर कण–कण में उनका ही प्रकाश पाती हूं। अब मैं क्या कहूं, मेरी कुछ समझ में नहीं आता, क्योंकि मुझे तो जैसे कुछ याद नहीं है, ऐसी ही दशा है और तिस पर भी यह भी कहने की हक़दार नहीं कि याद नहीं, क्योंकि याद को भी याद करती हूं तो भी बेयाद ही रहती हूं। सच तो यह है कि कस्तूरी के तो ख़्याल का भंडा फूट गया, दशा की भी कलई खुलने लगी, अब 'मालिक' ही जानें। मैं शून्य या उदास जो कुछ भी कहती हूं, यह मेरी दशा का वहम है। इति –

सदैव केवल 'आपकी' ही कृपाकांक्षिणी
सेविका पुत्री – कस्तूरी।

पत्र-संख्या- 456

प्रिय बेटी कस्तूरी, शाहजहाँपुर
आशीर्वाद। 15.1.55

तुम्हारे दो पत्र दिनांक 4.1.55 और दूसरा 9.1.55 का मिला। काशी राम मय अपनी धर्मपत्नी के 9.1.55 को उत्सव में सम्मिलित होने के लिये आ गये। काशीराम की हालत बहुत अच्छी पाई, देखकर जी खुश हो गया। उनकी धर्मपत्नी भी ब्रह्म-विद्या सीखने की इच्छुक हैं। मैंने एक अभ्यास आसाम में उनको करने के लिये लिख दिया था, जिसको वह बराबर कर रहीं हैं। अब वह बाक़ायदा सीखना चाहती हैं। मैंने उनसे कहला दिया कि 26.1.55 को कस्तूरी यहीं होंगी, वह तुमको बतलायेंगीं। काशीराम ने इस मिशन का प्रचार आसाम में बहुत अच्छा किया है। चीनीज़ और बर्मीज़ भी सीखना चाहते हैं, मगर उनका यहाँ आना कठिन है।

बागडोर तुम्हारी, वाकई मेरे हाथ में है, जो बहुत ज़्यादा तरक्की कर चुके हैं, उनकी बागडोर हाथ में रखना ही होता है। वज़ह यह है कि कहीं किसी चमत्कार में ऐसे मस्त न हो जायें कि बस उसी में जम रहें। हमारे गुरू महाराज की कुछ ऐसी तालीम है कि अगर हज़ारों आदमी भी ऊंची तरक्की करने वाले हों, तो भी Automatically उनकीबागडोर मेरे हाथ में रहेगी। इससे बड़े फ़ायदे हैं, एक तो यह कि मुझे उनके हालत की जब ज़रूरत होती है, तो मिनट-मिनट पर खबर रहती है। दूसरे, चलने की रफ़्तार सहज तरीके में, जितनी ज़रूरत है, उतनी ही रहती है और इस बागडोर से उनको अपने आप चलने की ताकत भी मिलती रहती है। यह भी तुम्हारा लिखना किसी हद तक ठीक है, कि थकान भी आ सकती है। मगर एक बात पर तुमने ग़ौर नहीं किया, जो इस बागडोर का नतीजा है और उससे हमारे गुरू महाराज की बड़ाई व महानता टपकती है। वह यह कि चलते हुए अभ्यासी को कितना Soothing प्रतीत होता है और जी नहीं घबराता। इसकी अनुभूति उन अभ्यासियों को हो सकती है, जो अपनी उस हालत में चिपके रहते हैं, जो ईश्वर उन्हें देता है।

तुमने इस पत्र में बेहोशी का रहना लिखा है। मैं बहुत पहले किसी पत्र में लिख चुका हूं कि तुममें बेहोशी रहती है, मगर तुम उस वक्त एहसास न कर सकीं, मगर अब कर रही हों। असल में बेहोशी क्या है ? यह आत्मा की एक रंगत है, जिसका एहसास उस वक्त होता है जब दुनिया हमारे ध्यान से विदा हो जाती है। यह रंगत बढ़ती ही जाती है उस वक्त तक, जब तक कि हम ईश्वर में अपने आपको बिल्कुल लय नहीं कर देते। ऐसा हो जाने पर फिर तो हमारे पास वही हवा रहती है, जिसमें हमने अब ठिकाना लिया है, अर्थात् बेहोशी के भी होश जाते रहते हैं। मैं अपनी कहानी सुनाता हूं और यह एक अजीब

कहानी है। कहने के लिये मैं अपनी हालत भी बिल्कुल बेहोशी की कह सकता हूं और है कुछ ऐसा ही, मगर उसका एहसास मुझे उस वक्त हुआ, जब कि मैं किसी से बातें कर रहा हूं और बातों में यह ख्याल आ जावे कि हम दूसरे से कुछ कह रहे हैं। यह भी हुआ है कि Super concious State मुझे समझाने के लिये, या किसी के जवाब देने के लिये उस हद को लेना पड़ा हो, जहाँ कि बेहोशी की हालत है। असल में बिटिया ! यह बात हो जाती है कि बेहोश होते हुए भी हमको होश बाकी रहता है। बात यही है, सम्भव है, आमतौर पर लोग इसको न समझ सकें, इसलिये कि उन बेचारों की पहुंच इस हद तक नहीं है।

जब अभ्यासी अपनी हालत में लीन रहता है, और शौक़ और दिलचस्पी उन्नति करती रहती है, तो जो उसकी हालत होती है, वही दुनियाँ में छाई हुई मालूम होती है। कारण यह है कि निगाह बदल जाती है। बस यही तुम्हारा हाल है कि हर जगह मुर्दनी छाई हुई देखती हो और मुर्दा के लिये तो एक मुर्दा ही हैं, इसलिये कि उसका अब किसी से लगाव ही नहीं और भाई, लगाव छूट जाने पर ही यह हालत नसीब होती है।

अब मैं 9.1.55 के खत का जवाब दे रहा हूं। जवाब देने से पहले 13.1.55 को जो मैंने ख्वाब देखा है, उसको लिख रहा हूं। देखा यह है कि तुम मय अपनी बहनों और अम्मा के अपने घर मौजूद हो और मैं तुम्हारे स्थान 'A'i पर तवज्जोह दे रहा हूं। उस दिन मैं कई बार इस स्थान पर तवज्जोह दे चुका था। अब मतलब पर आता हूं। तुमने एक हालत इतनी अच्छी लिखी है, कि मुझे इतनी खुशी होती है कि शायद जब मैं इस हालत पर था तो मुझे इतनी खुशी नहीं हुई होगी। वह यह कि मुर्दा हालत की भी मौत हो गई। यह मेरी क़िस्मत है कि मुझे एक अभ्यासी से ऐसी हालत की खबर मिली। यह तो बड़ी ही अच्छी हालत है और इस हालत को लय–अवस्था का भी लय–अवस्था होना कहते हैं। इसके बाद शुरूआत बक़ा की हो चुकी है, अर्थात् जिसकी कि हालत शुरू हो गई है, इस बक़ा का नाम 'लालाजी' ने तुरिया दिया है। तुरिया–अवस्था लोग बहुत चाहते हैं, मगर भाई, तुरिया की भी कई क़िस्में हैं। तुममें तुरिया–अवस्था पहले से मौजूद है। मगर अब यह तुरिया जो आवेगी, वह इससे ज़्यादा निखरी हुई होगी। जब अभ्यासी में लय–अवस्था ज़्यादा बढ़ जाती है तो ईश्वर के ख्याल करने से घबराहट मालूम होती है, इसलिये कि उतनी देर के लिये उनसे अलग हो जाते हैं, जो तबियत को बर्दाश्त नहीं होता। इसी वज़ह से मैंने तुमको कहा था कि अब तुम्हें पूजा व ध्यान करने की ज़रूरत नहीं। यह भी वजह है कि उत्सव में आने का जब ख्याल पैदा होता है, तो भी तबियत घबराने लगती है, क्योंकि ऐसे ख्याल से दुई पैदा होती है और तुम एक में रमी हुई हो। इस खत में बहुत सी बातें जवाब देने योग्य हैं, परन्तु जो भी कुछ लिख दिया है, यह भी काफ़ी है। तुमने यह भी लिखा है कि "मुझे स्वयं अपने से डर लगता है" यह इतनी अच्छी हालत है कि समझाने के लिये

शब्द नहीं मिलते। यह एक ऐसा भेद है कि जिसको खोलने का जी भी नहीं चाहता और वास्तव में यह ईश्वर का भेद है।

अब तो तुम सब लोग आ ही रही हो, बड़ी प्रसन्नता की बात है। केसर, विमला एवं उमा के दो दिन हुए खत आये। अगर हो सका तो, कुछ उनको भी लिख दूंगा। अम्मा और चौबेजी को प्रणाम और अब की चौबेजी ज़्यादा अच्छे मिले होंगे।

शुभचिन्तक
रामचन्द्र

पत्र-संख्या : 457

प्रिय बेटी कस्तूरी, शाहजहाँपुर

खुश रहो। 5.2.55

तुम सब दूसरी तारीख को अपने घर के लिये रवाना हुए। मुझे हरी से 12.30 बजे दिन को पता मिल गया था कि तुम सब बस-स्टेशन पर पहुंच गये हो और 2.30 बजे की गाड़ी से जा रहे हो। मैंने चाहा कि स्टेशन पहुंचूं और तबियत ने भी मजबूर किया, मगर कुछ यह हाल था कि घंटे भर के लिये इज़ाज़त लेनी पड़ेगी और कुछ यह भी कि जब हम स्टेशन से वापिस आयेंगे तो, तुम्हें विदाई की फिर तकलीफ़ होगी। यह बातें सोच-समझ कर मैं स्टेशन नहीं पहुंचा। हालांकि बस स्टेशन कचहरी से करीब है, मगर इतना ज़रूर किया कि तुम्हें घर तक पहुंचा दिया और तीसरी फरवरी को करीब एक बजे दिन को वापिस हो आया। रास्ते में तुम्हें सफ़र की तकलीफ़, कम मालूम हुई होगी। यह यूं कि मरीज़ को तीमारदार की ज़रूरत पड़ती है और चौबे जी कुछ तुम्हारे पेट में सूजन का आना बता चुके थे। मोम की रोटी तुम बाँधती रहना, यह मुफ़ीद मालूम होती है। मुझे भी फ़ायदा किया और तुमने भी फ़ायदा एक ही रात में इसका अच्छा बताया है। अच्छी तो तुम हो। इसके बाद सूजन की तकलीफ़ ईश्वर करे फिर न पैदा हो। डाक्टरनी ने तुम्हें कुछ दवा बतलाई है, उसे खाना और तन्दुरुस्ती के बारे में जो ध्यान बताये हैं, उनको तो तुम कर ही रही हो। उनसे बड़ा फ़ायदा होगा।

तुम ईश्वर की कृपा से B_1 स्थान पर आ ही गईं, मगर B_1 पर मुझे कुछ तेजी मालूम हो रही है। उसकी वजह यह है, मैं तुम्हें बताये देता हूं, इसलिये कि तुम खुद दूसरों को सिखाती हो। जब A_1 स्थान पर से तुम्हारे हटने का जी नहीं चाहता था, तो मैंने A_1 पर Vibration पैदा किया था और मय उस Vibration को अगर मुनासिब समझा और उससे ज़्यादा फ़ायदे की उम्मीद पाई तो B_1 पर Absorb कर दूंगा और फिर सैर की हालत ले आऊंगा। अब मैंने सोच लिया, मैं Vibration को उसमें Absorb करूँगा और

फिर सैर की हालत पैदा करूँगा और इतना मैं ज़रूर रखूंगा B_1 पर कि उसके आगे मुकाम तक भी वह चीज़ जाये। ऐसा करने से फिर यह चीज़ पैदा नहीं होगी कि तुम्हारा किसी मुकाम से निकलने का जी न चाहे। इसलिए कि जब वह चीज़ साथ होगी तो ठहराव का सवाल पैदा नहीं होगा। इसलिये कि जहाँ पर सूक्ष्म-रूप में हरक़त मौजूद है तो ठहराव की शक्ल पैदा नहीं हो सकती, इसलिये कि हरक़त और ठहराव यह दोनों opposite चीज़ें हैं। जहाँ हरक़त होगी, वहाँ ठहराव नहीं हो सकता; और वह हरकत भी इतनी सूक्ष्म मैं कर दूंगा कि सिर्फ़ उसका असर ही असर रह जाये। फिर आगे चलकर अगर ज़रूरत हुई तो फिर जो कुछ समझूंगा वह करूँगा। खैर, यह बात तो वहाँ की है, जहाँ पर कि उसकी जरूरत होगी। थोड़ा इन्तज़ार मैं यह ज़रूर करूंगा कि तुम्हारा पेट ठीक हो जाय और वह ज़रूर ठीक होगा और एक हफ़्ते में ही तुम्हारी तन्दुरुस्ती की हालत ठीक आ ही जानी चाहिये।

मैंने लखनौर की बाबत तुमसे, मास्टर साहब और चौबेजी से बहुत सी बातें कहीं, उसमें से एक बात बहुत ऊंची की है, जिसका मुझे कल खयाल आया। वह यह है कि एक शख्स को अब यह ठीक याद नहीं आता कि किसको, मगर शायद पण्डित हरी सरन जो उनके सत्संगी हैं, उनको यह बतलाया है कि तुमको इसी जन्म में मोक्ष मिल जावेगी और यह बात मुझसे कल उस शख्स ने कही, हालांकि जिस शख्स के बारे में इस जन्म में मोक्ष हो जाना कहा है, उसके character की उन्होंने मुझसे बहुत बुराई की है।

शुभचिन्तक
रामचन्द्र

पत्र-संख्या : 458

मेरे परम पूज्य तथा श्रद्धेय श्री बाबूजी, लखीमपुर
सादर प्रणाम स्वीकृत हो। 4.2.55

'आप' का पत्र मिला। समाचार पढ़कर खुशी हुई। न जाने क्या बात है कि जब शाहजहाँपुर से चली, तो विरह की आग का ठिकाना न था और यहाँ पहुंचते-पहुंचते वह सब रह गया केवल एक धूमिल चित्र छाया की भाँति। सब कुछ एक वहम सा हो गया कि शाहजहाँपुर गई, उत्सव में सम्मिलित रही और फिर यहाँ चली आई। न जाने क्या बात है कि परसों जब शाहजहाँपुर से आई, तो यह हाल था कि यदि कोई दूसरा होता तो आत्म-हत्या पर उतारू हो जाता और आज यह हाल है कि मानों यह तक याद नहीं कि मैं कहाँ गई थी। मैं तो लगता है, न कहीं गई थी, न आई हूं, जहाँ की तहाँ हूं, जैसी हूं वैसी हूं। उत्सव हो गया, पता नहीं। बस अन्तर इतना है कि तब जाने की तैयारी करती थी और अब

नहीं। केवल उत्सव में सम्मिलित होने का धूमिल वहम सा है और जिन्हें वहाँ देखा था, यह सब एक स्वप्न सदृश था। अब आजकल की जो आत्मिक दशा है, वह लिख रही हूं।

भाई, कुछ ऐसा लगता है कि कुल सिर में, सिर से लेकर पीठ में रीढ़ के बिल्कुल निचले सिरे तक एकदम से लगता है कि धुएँ की तरह से कुछ छा गया है, परन्तु वह इतनी हल्की हालत है, जिसे expression के लिये धुआँ कह लिया है। भाई, कुछ ऐसा लगता है कि दिमाग़ में (सिर में) एक प्रशान्त सा कोहरा पड़ा करता है। मैं देखती हूं कि मेरा स्वरूप तो ऐसा प्रशान्त सागर हो गया है, जिसमें बुलबुले तक नहीं उठते। कुछ यह देखती हूं कि 'मालिक' की कृपा-बागडोर मुझे सहज चेतना प्रदान किया करती है और इस सहज चेतना का ही दिल को दर्द कह लीजिये या कुछ, नहीं तो मैं न जाने कहाँ अचल, स्थिर बनी हूं। वही मुझे होश दिला-दिला कर दशा का भान कराती है। उसमें समाती है, भरती है और पचा देती है। नहीं तो मेरा अणु-अणु गतिहीन है। मेरा ही क्या, बल्कि, समस्त जगत ही मुझे गतिहीन, स्थिर, मानों मेरी दशा में ही मिला रहता है। न जाने तबियत क्यों बेख्याल बनी रहती है।

मेरे श्री 'बाबूजी' आप ने मुझे B_1 पर खींच दिया, इसके लिए बहुत-बहुत धन्यवाद। कुछ ऐसी दशा है कि होश का तो केवल एक वहम सा रहता है और बेहोश हूं नहीं। कुछ यह देखती हूं कि Present दशा ही मेरा रूप हो जाता है। वर्तमान दशा ही स्वयं अपना रूप अनुभव में आता है, नहीं तो कुछ नहीं है। एक कुछ यह हाल है कि मैं ध्यान कहाँ लगाऊं, जबकि कुल ब्रह्माण्ड में मेरा ही Heart फैला हुआ है। मेरी वर्त्तमान दशा ही मेरा Heart होता है ध्यान के लिये। यही मेरी सहज सी स्थिति हो गई है। अजीब सहज दशा है, क्या लिखूं श्री 'बाबूजी'। कुछ यह हो गया है कि 'मालिक' के सामने रहते हुए भी मुझे पहिचान नहीं रह गई है। इधर हिम्मत काफ़ी बढ़ी हुई पाती हूं और दशा तो आईना रखी हुई है। कुछ ऐसा लगता है कि बेहोशी मेरा रूप है और वर्त्तमान दशा की Feeling मेरा होश है। यही नहीं, बल्कि, भीतर-बाहर सब एक बेहोश हालत फैली हुई है, किन्तु मैं यह नहीं जानती कि किस Point पर चेतना भी अवश्य है, जो मुझे आगे पथ पर बतलाती है यांनी सर्वत्र बेहोशी का साम्राज्य होते हुए भी होश ज़रूर बाकी है।

अम्मा 'आप' को आशीर्वाद कहती हैं। इति :-

आपकी दीन-हीन, सर्वसाधन विहीना
पुत्री-कस्तूरी

पत्र–संख्या : 459

परम पूज्य तथा श्रद्धेय श्री बाबूजी, लखीमपु

सादर प्रणाम स्वीकृत हो। 8.2.55

भाई, अब देखती हूं, हिम्मत के साथ–साथ एक ऐसी हालत पैदा हो गई है, जो अन्दर ही अन्दर मानों पच रही है। वह इतने Level पर है कि यदि ज़रा भी ऊपर आ जावे तो सम्भव है कि आत्म–हत्या पर उतारू हो जाऊं। न तो भाई, उसे तड़प कहते हैं, न वह कसक है। वह तो जाने मेरा ह्रदय ही यह कोई दशा बन गया है। अब इसी दशा में ही मानों मैं पग रही हूं। भाई, कुछ ऐसा लगता है कि सिर से पैर तक समस्त जगत बस केवल एक आँख ही आँख बन गया है। नहीं, बल्कि रोशनी ही रोशनी बन गई है, जिससे आँख की आवश्यकता ही नहीं रह गई। कुछ यह दशा है कि आँखे बन्द करने पर भी, बन्द का, सोते–जागते कभी एहसास ही नहीं होता। न जाने क्यों लगता है कि मेरा रूप आईना बन गया है, परन्तु कैसा, यह तो मैं स्वयं समझ नहीं पाई हूं। 'आप' ही बताइये, कि यह क्या है? दशा इतनी soft है कि जो कहने में नहीं आती। अब तो भाई, न जाने क्या, मानों ऐसा रहस्य खुल गया है कि अब तो हर चीज़ एक ऐसी रोशनी बन गई है कि जिसमें रोशनी की गुज़र नहीं, किन्तु रोशनी निकलती रहती है। स्वयं अपना रूप भी ऐसी ही रोशनी बनकर सब में एक हो गया है। हाल यह हो गया है कि अंधेरे में भी अंधेरा का एहसास नहीं होता और प्रकाश भी नहीं मालूम। कुछ ऐसी बेचारी या Soft दशा है कि 'मालिक' के चरणों की ऐसी अदना भिखारिणी कि जिसमें 'कुछ' का use करने से दशा में धब्बा सा लगा देता है और 'नहीं' कहने में भी कुछ भद्दापन लगा देना है। वह तो भाई, इन सब से परे जैसी है, वैसी है और देखती हूं, वैसी ही रोशनी उसमें से आती रहती है। यह रोशनी, ऐसी नम्र बेहोशी कह लीजिये, जिसमें बेहोशी का भी होश नहीं है। बस मेरा अन्तर–बाहर, सब में ऐसी ही दशा व्याप्त है और यही मेरा रूप है। देखती हूं कि छोटे से Heart में कुल दशा सिमटती आ रही है, कुछ ऐसा लगता है भाई, कि बूंद में सिन्धु सिमटता जा रहा है परन्तु बूंद ज्यों की त्यों बनी हुई है। उसे होश कहाँ, वह ऐसी नम्र बेहोशी में लय है कि वह एक अदना से अदना भिखारिणी की हालत–मय हो गई है। छोटे भाई–बहनों को प्यार। इतिः–

आपकी दीन–हीन, सर्वसाधन विहीना
पुत्री – कस्तूरी।

पत्र-संख्या : 460

प्रिय बेटी कस्तूरी, शाहजहाँपुर

शुभाशीर्वाद। 13.2.55

तुम्हारे दो पत्र एक 4 फरवरी 55 का और एक 8 फरवरी 55 के मिले। हालतें इतनी बारीक हैं, कि इनका जवाब देना मुश्किल है। फिर भी कुछ न कुछ लिखता हूं। असल हालत यों तुम्हारी है, उसका अगर ठीक तौर से कोई लिखना चाहे तो शब्द नहीं मिलेंगे। जो change की हालत असल हालत की वजह से होती है, उसको तुम बहुत अच्छा लिखती हो। तुम्हारी असल हालत जो है, वह जहाँ तक मेरी reading है, वह यह है कि जैसे कोई मनुष्य न सोता हो, न जागता हो, यानी सोने और जागने के बीच की हालत जो होती है, वह है। Point B_1 जो मुझे इस वक्त एहसास हो रहा है, उसमें काफ़ी ज़ोर है और वह इस वजह से है कि मैंने A_1 काफी Vibrate किया था और मैंने B_1 में डाल दिया था। इसकी वजह है कि ऐसा मैंने क्यों किया पिछले खत में लिख दी है। इस ज़ोर को काफ़ी सोच समझकर और देखभाल कर... । अब चौथी फरवरी में जो लिखा कि सहज-चेतना सी अन्दर रहती है, हमारे यहाँ दो हालतें साथ-साथ चलती हैं। एक तो वह हालत, जो बिल्कुल असल है और दूसरी वह जो असल की वज़ह से हो। असल की वज़ह से जो हालत होती है, वह यह बताती रहती है कि यह change है मन की हालत का। यानी मन उसकी वजह से तरक्की करता है, उन्नति के माने ही यही है कि नीचे से ऊंची हालत पर जावे और जब मन उन्नति करते-करते अपने असल में लय हो जाता है फिर changeless हालत पैदा हो जाती है, जो ईश्वर को भी नसीब नहीं। यह हक़ सिर्फ़ भूमा का है, यह तो तत्व की बात रही, अब अपनी सुनो। तुमने यह जो लिखा है कि सहज-चेतना हालत का एहसास कराती है, वह मन की गति है और यह चीज़ मनुष्य जब तक जीवित है, कितनी ही उन्नति क्यों न कर जावे, कुछ न कुछ बाकी रहती ही है। यह ज़रूर है कि मन असल हालत से इतना रंग जाता है कि उसे अपनी असली हालत का होश नहीं रहता। तुमने यह भी लिखा है कि मुझे यह याद तक नहीं कि मैं कहीं गई थी और जिन्हें वहाँ देखा था, वह एक स्वप्न सा मालूम देता है। इसके माने यह है कि मन का चिपकाव बहुत कुछ असल से हो चुका है। यह मन ही है कि ज्यों-ज्यों असल में कायम होता जाता है, एक भाव भासने लगता है और द्वैत कम होने लगता है और लय यही चीज़ होती है। यह ज़ाहिर है कि मौत के बाद दूसरी ज़िन्दगी शुरू होती है। जो मरेगा, ज़रूर पैदा होगा। इसी तरह से जब हम जीवित रहते हुए मर जाते हैं, तो उसमें उस ढंग की ज़िन्दगी शुरू होती है और जब उस ढंग की ज़िन्दगी आती है, जो उस ढंग की मौत की वजह से है, तो फिर हमारे आने का कोई सवाल नहीं रहता। इसलिए कि वह ज़िन्दगी, जो जीवित रहते हुए मौत की वजह से आई थी, उसकी भी मौत होती रहती है। उसका ढंग

ज़रूर और होता है, और आखिर में वह जिन्दगी आ जाती है कि जिसे हमेशा की ज़िन्दगी कहते हैं, और उसमें सुबह–शाम नहीं होती।

आठ फरवरी के खत में जो हाल लिखा है कि सब कहीं रोशनी ही रोशनी मालूम होती है। रोशनी ज़रूर मालूम होती होगी, अगर उसमें तेज़ी है (जो उम्मीद है कि नहीं होगी), तो अभी B_1 स्थान की हालत अपनी असली हालत में नहीं आई है। तुम यह भी लिखना कि दिमाग़ पर तुम्हें कुछ ज़ोर तो नहीं मालूम होता, जो Vibrated condition होने की वजह से हो सकता है। आज रात में तुम्हारी हालत को देखकर ठीक हालत में ले आऊंगा। रोशनी जो जगत में निकलती मालूम होती है, वह रोशनी नहीं है, बल्कि B_1 पर जो ज़ोर और कंपन Vibration की तेज़ी है, उसका पसारा का **इन्साफ़** है। जहाँ असलियत है, वहाँ न रोशनी है, न अंधेरा, एक अजीब चीज़ है। चौबे जी की Diary मुझे मिल गई और उनकी हालत का जहाँ तक मुझे एहसास है, मुझे ज़्यादा साफ़ मालूम देती है, मगर कुछ खफ़ीफ़ स्याही सीने की दाहिने तरफ़ मालूम देती है और soul Bondages मैंने कुछ साफ़ किये हैं, मगर फिर भी उसके साफ़ करने की ज़रूरत है। अब उन्हें ख्याल भी कुछ रहने लगा है। तुम भी देख लेना ताकि यह मेरा एहसास सही है और जो समझ में आ जावे, लिखना।

मास्टर साहब को मैंने यह लिखा है कि गुस्से को दूर करो और वह बेचारे चेष्टा कर रहे हैं। इस चीज़ को हर मनुष्य को बचाना चाहिए। मेरा तो भाई यह हाल है कि मैं "लाला जी" से क़दम–क़दम पर डरता हूं और अपनी गुस्सा से मुझे डर यह लगता है कि फिर उन्हें भी गुस्सा आ जाती है। मैं प्रार्थना के ज़रिये से अपनी गुस्सा दूर करूंगा और तुम भी इसके लिए दुआ करो और मास्टर साहब को सत्संग कराके इस कालिमा को दूर करो। नतीजा इसका ज़रूर अच्छा होगा। यहाँ पर छोटे–बड़े का सवाल नहीं, एक दूसरे को मदद देनी चाहिए।

शुभ चिन्तक
रामचन्द्र

पत्र–संख्या : 461

मेरे परम पूज्य तथा श्रद्धेय श्री बाबूजी, लखीमपुर
सादर प्रणाम। 11.2.55

कृपा पत्र 'आप' का मिला, पढ़कर प्रसन्नता हुई। मेरा एक पत्र पहुंचा होगा। 'मालिक' की कृपा से जो कुछ भी आत्मिक दशा है, सो लिख रही हूं।

मेरी तो यह न जाने क्या दशा है कि संसार की हर चीज़ एक बेहोशी के रंग में ही रंगी दीखती है। इधर कई महीनों से मेरी नाभि में हल्का-हल्का हर समय दर्द रहता है और जब दर्द कुछ बढ़ता है तो फड़कन भी बहुत होती है। सिर के पीछे, जहाँ गर्दन में गड्ढा सा है, उसी के सीधो-सीध में इतनी अधिक फड़कन होती है। आज सबेरे ताऊजी को खाना खिलाते समय लगा कि जैसे एक आगे को झटका सा लगा, तो आँखों के आगे बहुत ही हल्का कुछ पीला सा प्रकाश हो गया, फिर दोबारा, फिर झटका सा लगकर लगा मानों आँख सी खुली या सोते से उठ पड़ी। यह न जाने क्या है, 'आप' जानें, आप का काम जानें।

भाई, अब तो ऐसा लगता है कि सूक्ष्म-रूप का भी एहसास नहीं होता। यदि बहुत सोचो, तो 'मालिक' का ही रूप सामने आ जाता है। भाई, वह तो स्वयं मुझ मय या मैं ही हो चुका है तो ढूँढने से भला कहाँ मिले। लगता है, वह तो बन्धन मुक्त स्वतन्त्र हो चुका है। अब तो भाई, यह हाल है कि न जाने क्यों 'आप' की बातें अधिक करने से दशा में भद्दापन आता है। न जाने क्यों, ज़ोर-ज़ोर से बोलने से भी दशा में भद्दापन आता है। न जानें यह क्या हो गया है कि ईश्वर को अब अपनी ही तरह मानकर लगी रहूं, बस यही होता है और अपने से super मानकर नहीं बर्दाश्त होता। मैं क्या, मेरा रूप ही क्या, गरीब सफ़ाचट दशा। यही हाल लय का हो गया कि लय-अवस्था तो खुद मैं हो गई। अब मुझे लय अवस्था कहीं दिखलाई ही नहीं पड़ती, तो लय क्या होऊं गी। कुछ ऐसी दशा है कि यदि Balanced State कहूं तो मेरे लिये वह अब अर्थहीन ही ठहरती है। अब वह तो ऐसी दशा है कि मानों किसी ने ज्यों का त्यों खड़ा कर दिया है, और भाई, जिसमें अब ग़म की गम नहीं रह गई। कहने को सफ़ाचट कह लीजिये और क्या लिखूं।

छोटे भाई-बहिनों को प्यार। इति :-

आपकी दीन-हीन, सर्व-साधन विहीना
पुत्री-कस्तूरी

पत्र-संख्या : 462

मेरे परम पूज्य तथा श्रद्धेय श्री बाबूजी, लखीमपुर
सादर प्रणाम। 21.2.55

कृपा-पत्र 'आप' का प्राप्त हुआ। पढ़कर प्रसन्नता हुई। अब 'मालिक' की कृपा से जो कुछ भी आत्मिक दशा है, सो लिख रही हूं।

भाई, अब तो लगता है कि प्रेम के दायरे से कदम ओझल हो चुका। मुझे तो हर समय शून्य सी, बिल्कुल खाली सी दशा लगती है। मुझे तो गहरी या उथली, दोनों शब्द व्यर्थ लगते हैं, क्योंकि दोनों ही मेरी हालत के लिये बेमतलब हैं। जैसे ज़न्नत और

दोज़ख का मानों मेरे लिये अर्थ ही नहीं। मुक्ति का भी बोध नहीं या यों कह लीजिये कि शब्दों का ही मेरे लिये अर्थ नहीं। कुछ ऐसी उदास व खाली हालत है कि 'है' कह लो तो कुछ नहीं, और 'नहीं' कह लो तो कुछ नहीं। मेरे लिये तो दोनों ही समान हैं। भाई, अब जब किसी भी तरह हालत में शिकन ही नहीं आती तो, जो होगी, सो होगी। भाई, अब तो न सिन्धु कहती हूं, न बूंद ही कहती हूं और कुछ न ही कहने में संतोष रहता है, नहीं तो दुविधा हो जावे। इतना कह सकती हूं कि हालत कुछ एक से भी अलग हो गई है, क्योंकि उसमें द्वन्द के थिगरे अब लगते नहीं और एक भी कहा नहीं जाता और वह भी अन्तर की उस सहज दशा से चिमटा हुआ।

भाई, अब तो कुछ ऐसा हाल है कि जैसे पहले मैं अक्सर लिखा करती थी कि ऐसा लगता है कि मानों किसी चीज़ को प्राप्त करने का हृदय या मैं मानों पात्र बन गई हूं, परन्तु अब यह हाल है कि न तो पात्र है, न चीज़ ही अनुभव में आती है। अब तो सफ़ाचट रूप है मेरा। और बाहर भी यही हाल है कि केवल सफ़ाचट मैदान के मुझे न जाने कुछ दीखता ही नहीं। सब कुछ खाली-खाली है और मेरा स्वरूप ही खाली है या खाली रूप हूं। बाहर-भीतर खाली दशा ही फैली हुई है, किन्तु खालीपन तो एहसास में है नहीं, क्योंकि वह तो मैं स्वयं खाली रूप हो चुकी हूं। कुछ आराम सी दशा मेरा रूप होकर फैल गई है। सब ओर एक अजीब आराम है, जो मुझ में फैला है, किन्तु मैं उसे कहने की कोशिश करते हुए भी कह नहीं सकती। मिसाल के तौर पर यों कह लीजिये कि जैसे तकलीफ़ या रोग के बाद शरीर में बड़ा आराम सा आ जाता है। पूर्ण Rest सी दशा है। बाहर, भीतर, कण-कण Rest मय बन चुका है। अब तो भाई, लय का भी, प्रलय का भी, प्रलय हो गया। अब मेरे लिये तो कुछ मानों सार ही नहीं रह गया है। या यों कह लीजिये कि मैं तो बेमतलब एक रूढ़ सी संखया हुई जाती हूं। क्योंकि दशा ऐसी देखती हूं कि उसमें कुछ अब जुड़ ही नहीं सकता। किन्तु ऐसा होते हुए भी कुछ न कुछ तो कहा ही जाता है और कहती हूं, क्योंकि यह मैं ज़रूर देखती हूं कि अभी Rest मय होने पर भी अन्तर के किसी कोने में Restless दशा शेष है। अब तो ऐसी दशा है कि ऐसा समुद्र सामने है कि जिसमें मानों Rest ही Rest का पसारा है, किन्तु जिसमें न यह कहा जा सकता है, न वह। उसे तो चाहे ऐसा कह लो कि मानों मुर्दा, मुर्दे को पढ़ने का प्रयत्न कर रहा हो। उसे पढ़ना तो ऐसा है, मानों मुर्दा, मुर्दा को पढ़ने का प्रयत्न कर रहा हो। चाहे बिल्कुल शान्तिमय वातावरण कह लीजिये।

अम्मा 'आप' को शुभाशीर्वाद कहती हैं। इति :-

आपकी दीन-हीन, सर्व-साधन विहीना
पुत्री-कस्तूरी

पत्र-संख्या : 463

परम पूज्य तथा श्रद्धेय श्री बाबूजी, लखीमपुर

सादर प्रणाम। 1.3.55

आशा है 'आप' को मेरा एक पत्र मिला होगा। मेरी तबियत अब धीरे-धीरे ठीक हो रही है, चिन्ता की कोई बात नहीं है। 'मालिक' की कृपा से जो कुछ भी आत्मिक-दशा समझ में आई है, सो लिख रही हूं।

कुछ ऐसा एहसास में आ रहा है कि वास्तविक Destruction ठीक सामने और शीघ्र आता दीख रहा है। सूखी जमीन पर समुद्र, और समुद्र के स्थान पर पर्वत एवं ज्वालामुखियों व भूकम्पों की धड़धड़ाहट से पृथ्वी गुंजायमान लगने लगती है। सब कुछ लोट-पोट मामला लगता है। कुछ ऐसा लगता है कि माथे से लेकर सिर के पीछे तक जहाँ सीधी माँग खतम होती है, उसके सीध में चार अंगुल और नीचे तक कई सूराख से हो गये लगते हैं और आपस में सम्बन्धित सब हैं।

भाई, न जाने क्या बात है कि अक्सर बैठे ही बैठे तबियत न जाने किस हालत में चिमट कर बिल्कुल Inactive हो जाती है। उस समय कोई हाथ पकड़ कर भी उठाये, तो मानों, ज़रा भी हरकत ही नहीं है, फिर ज़रा सी देर में ठीक अपनी दशा पर आ जाती हूं। अब इसे चाहे कोई यह कहे कि भूल की अवस्था है, चाहे कुछ, क्यों कि एकाएक ही ऐसा हो जाता है। आज रात से, जब से 'आप' ने Sitting दी है, ऐसा लगता है, सारी तेज़ी मानों दशा में पग कर अपनी Individuality खो बैठी। अब तो तबियत में केवल दो ही नज़ारे रहते हैं, एक तो Inactive से सम्बन्धित, दूसरे अपनी दशा में लयलीन सा रहते हुए चलना। अब तो कुछ यह हाल है कि चाहे दुनिया इधर से उधर हो जावे, परन्तु मेरी एक सार दशा Changeless हो चुकी है। चाहे जो बात करूं, चाहे कुछ करूं, परन्तु उसमें अन्तर कहाँ, बल्कि मैं ही अक्सर Inactive सी होकर, विस्मृत सी ही रहती हूं। कभी-कभी यह लगता है कि मानों हालत भीतर ही भीतर काँप सी रही है, परन्तु वह कम्पन कुछ बाईं ओर गोलाई लिये होता है, परन्तु अपनी स्थिर दशा में इसका भी कुछ असर नहीं पड़ता। वह तो ज्यों कि त्यों समान रूप में ही बनी रहती है और यह कोई दशा नहीं, बल्कि यह तो मेरा मानों ढाँचा ही बन गई है। 'मालिक' को प्राप्त करने के लिये ही मानों यह ढाँचा तैयार हुआ है और इसमें Touch करती रहती हुई Inactiveness मानों जान है। किन्तु मैं पहले जैसे बेहोशी की हालत भीतर-बाहर फैली हुई लिखा करती थी, परन्तु अब तो मैं होश की हालत ही फैली लिख रही हूं, क्योंकि बेहोश हालत में अब कुछ होश का रंग चढ़ चुका है। अचेतन अवस्था में चेतन स्वरूप बन कर आ रहा है। या यों कहिये कि दशा अब चेतन और अचेतन का मिश्रण है। मैं अब इसकी अनुभूति से भी विस्मृत

(यानी भूल जाती हूं) हो हो उठती हूं। अब तो लगता है खाली दशा से भी दशा खाली हो चली है। अब तो लगता है कि धरणी के कुल कण–कण में construction समा चुका है और Destruction जिसका Result है।

छोटे भाई–बहिनों को प्यार। इति :-

आपकी दीन–हीन, सर्व–साधन विहीना
पुत्री–कस्तूरी

पत्र–संख्या : 464

प्रिय बेटी कस्तूरी, शाहजहाँपुर
खुश रहो। 22.2.55

तुम्हारे कई खत आये। मेरा आना और न आना–एकसा मालूम होना, इस बात की दलील है कि तुम्हारे ख्याल से अहं का वज़न बहुत कुछ दूर हो चुका है। अहं के माने "मैं हूँ" के लगाये जाते हैं और यह चीज़ अहंकार के दायरे में आती है। यह इसका अंधेरा पहलू है और इसका उजेला पहलू यह है कि दूसरे के एहसास का वज़न अपने दिल पर आवे। गोया यह अहंपने की सूक्ष्म–दशा है। यह दोनों हानिकारक हैं। शुक्र है मालिक का कि पहले का वज़न तो बिल्कुल ही नहीं है और दूसरे का वज़न निहायत ही कम, मगर अभी है ज़रूर। तुम्हें जो Inactivity की दशा से चिमटना एहसास होता है, वाक़ई यह उससे चिमटना नहीं है बल्कि एक.. के बजाय आगे के धुएँ में अभी चिमटना है या यों समझ लो कि गरम पानी के भाप से चिमटी हो, न कि खुद गरम पानी बन गई हो। तुमने यह जो लिखा है कि दुनिया इधर से उधर हो जाये मगर मेरी condition changeless रहती है। इसको changeless condition नहीं कहते, बल्कि दृढ़ वैराग्य इसको कहना चाहिए या वैराग्य की बहुत ऊंची हालत कहना चाहिए। यों changeless होने में भी यह बात पैदा हो जाती है। मगर इस condition और असल changeless condition में अन्तर है। इस वैराग्य की हालत में तो दुनिया के अच्छा–बुरा हो जाने पर निगाह नहीं जाती और उस changeless condition में इस तरफ़ निगाह रहती है। वह तो नशेबाजी की बात है, जो मैंने पहले लिखी और इसमें नशे का लेशमात्र भी गुमान नहीं।

Swami Viveka Nand :- what a nice expression and quite correct. can a Swami give this Kind of expression ? Has any body dare to say so ? This is the Divine wisdom. I would have given you a thousand words as a reward for this Sentence, but as you have a word of your own on these things have no value.

हज़रत क़िबला – भाई यह चीज़ आवेजर से लिखने लायक है। इतना अच्छा Expressions मैंने देखा ही नहीं।

Swami Viveka Nand :– This is a very Important letter.

तुमने बाईं ओर जो गोलाई सा कम्पन लिखा है, उसे ज़रा observe करके लिखो कि इस कम्पन के साथ ज़रा दिल तो नहीं हिलता, फिर मैं इसका जवाब दूंगा। अच्छा, मैं जवाब दिये देता हूं। अगर दिल हिलता है तो इसके माने यह होंगे कि Vibration असल भण्डार से तेज़ आ रहा है, और उसका असर हो रहा है। अगर सिर्फ़ कुछ चिनचिनाहट सी मालूम होती है, तो इसके माने यह होंगे कि दिल उसका पूरी तौर से असर नहीं ले रहा है। बाकी होश और बेहोश के बारे में जो लिखा है, यह सब C_1 की सैर है, जहाँ की हालत एक छाया की तरह से है, यानी इसमें कोई वज़न नहीं।

दूसरे खत में जो विचारों का ताँता लिखा है, तुम बता सकती हो कि वे क्या विचार हैं। वैसे तो असल चीज़ का असर जब भद्दी पर्दों पर पड़ता है, तो कुछ तार की तरह झनझनाहट दे जाते हैं और वह झनझनाहट चूंकि हममें ज़िन्दगी है, विचारों से तस्वीह (उपमा) दे देते हैं। अब जैसा हाल हो, वैसा ही समझ लो।

चौबे जी और अम्मा को प्रणाम और तुम्हारे भाई–बहनों को दुआ।

शुभचिन्तक
रामचन्द्र

पत्र–संख्या : 465

मेरे परम पूज्य तथा श्रद्धेय श्री बाबूजी, लखीमपुर
सादर प्रणाम स्वीकृत हो। 4.3.55

आशा है मेरा पत्र पहुंचा होगा। पूज्य मास्टर साहब के पत्र में लिखा था कि 'आप' की तबियत फिर खराब हो गई थी, सो कृपया लिखियेगा कि अब तबियत कैसी है। 'मालिक' की कृपा से जो कुछ भी आत्मिक दशा है, सो लिख रही हूं।

भाई, अब तो यह हाल है कि मेरे लिये हर चीज़ NIL है। यहाँ तक कि हर हालत भी मेरे लिये अन्त में NIL ही हो जाती है। इधर विचारों का ताँता सा पूरा रहता है, किन्तु मैं अभी तक यह तय नहीं कर पाई हूं कि विचार हैं या यह अनजाने में कहीं कुछ Vibration का result है। हालत को साफ़ कह लीजिये, वरना क्या लिखूं, कुछ कह नहीं बनता। परन्तु लगता है C_1 point साफ़ होकर मेरी आँखों के सामने फैलने लगा है और मैं उसी दशा में भी मानों अपने को पहले से ही मिली सी पाती हूं। न जाने क्या बात है कि जो मैं

चाहती हूं, वह मैं स्वयं नहीं कर पाती हूं क्योंकि दशा तो ऐसी है कि फूंक-फूंक कर कदम पड़ते हैं। अब देखती हूं कि एक Natural Course में 'मालिक' मुझे लिये चल रहा है, जिससे हर अणु-अणु एक अजीब Natural Condition पर आ गया है और दशा भी भीतर-बाहर समान ही रहती है। मैं तो कुछ ऐसा Proof हो गई हूं कि 'हाय' तो मानों मेरे लिये एक व्यर्थ चीज़ हो गई है या यों कह लीजिये कि मेरी हाय में असर नहीं रह गया है या मैं ही Proof हो गई। 'मालिक' को देख कर भी मुझमें प्रेम की उत्पत्ति नहीं होती। मैं तो एक ऐसा यंत्र हो गई हूं कि जो चाहे, तोड़ो, मोड़ो, चाहे कुछ किया जाय, परन्तु यंत्र ज्यों का त्यों ही है और यंत्र भी कहने को कह लीजिये।

अम्मा 'आप' को आशीर्वाद कहती हैं तथा केसर प्रणाम कहती है।

आपकी दीन-हीन, सर्व-साधन विहीना
पुत्री-कस्तूरी

पत्र-संख्या : 466

परम पूज्य तथा श्रद्धेय श्री बाबूजी, लखीमपुर
सादर प्रणाम। 8.3.55

मेरा एक पत्र 'आप' को मिला होगा। यहाँ सब कुशल पूर्वक है। आशा है 'आप' भी अच्छी तरह से होंगे। 'मालिक' की कृपा से जो कुछ भी आत्मिक दशा है, सो लिख रही हूं।

कभी-कभी ऐसा होता है कि जैसे जब मैं सबेरे सो कर उठती हूं, तो आँख खुलते ही ऐसा लगता है, मानों मैं स्वयं अपने से अलग हो गई। यद्यपि देखती हूं, वह अलग दशा भी साम्य अवस्था का स्वरूप ही होती है। लगता है, अपने में से बाहर निकल आई। कुछ यह भी है कि मानों अपने से अलग भी कभी नहीं होती और ऊपर वाली दशा भी लगती है। कुछ समझ में नहीं आता। ऐसा समझ लीजिये कि जैसे आदमी घर से निकल कर अहाते में आ जावे, तो वह घर से भी सम्बन्धित रहता है, बाहर भी निकल आया। देखती हूं कि यह दशा सो कर उठने पर ही नहीं, बल्कि दिन भर में भी, चलते-फिरते, जब मानों एकदम से आँख खुलती है या कुछ अचैतन्यता में होश आता है, तब ऐसी ही दशा पाती हूं, बल्कि भाई, अब तो यह कहूंगी कि जब चैतन्यता की दशा में बेहोशी की दशा का भान होता है तब ऐसी ही दशा पाती हूं। लगता है, अपने घर में चैतन्यता ही है, परन्तु अहाते में बेहोशी की दशा का भान होता है। घर से यद्यपि देखती हूं कि मैं एक ही रहती हूं, अलग होती ही नहीं, परन्तु अहाते में आना शायद जरूरी होता है और अहाते में आने पर सोने-जागने के बीच की दशा हो जाती है और लगता है दशा ने साम्य-अवस्था को भी त्याग दिया। यही नहीं, बल्कि घर में तो भाई ईश्वर भी नहीं, इसलिये तो ईश्वर दर्शन की हालत से भी रिश्ता

टूट गया। मुझे एहसास नहीं होता, किन्तु अहाते में इनकी खुशबू मिलती है। परन्तु मेरा तो एक डग घर में, और एक डग अहाते में, परन्तु जैसे निगाह घर में खोई रहती है। परन्तु अब तो घर ही मेरा घर हो गया है। कुछ यह भी हुआ जाता है कि निगाह में अहाता भी घर हुआ जाता है, क्योंकि मैं स्वयं ही अपना घर जो हुई जाती हूं। मैं घर कहती हूं, परन्तु स्वरूप अपना ही पाती हूं और मैं अपना स्वरूप खुद भूल गई। यों कह लीजिये कि बुलबुले ने पानी को पहिचान लिया। इति :-

आपकी दीन-हीन, सर्व-साधन विहीना
पुत्री-कस्तूरी

पत्र-संख्या : 467

प्रिय बेटी कस्तूरी, शाहजहाँपुर
शुभाशीर्वाद। 13.3.55

पत्र तुम्हारा 8.3.55 का प्राप्त हुआ। अपने स्वास्थ्य के विषय में भी लिखना। एक पत्र मैंने छोटा सा डा. सिन्हा को भी लिखा है, उसकी नकल तुमको मास्टर साहब द्वारा भेज दी थी। लिख तो मैंने दिया है, मगर इसका असर उन पर शायद ही पड़े और वह 'मालिक' हैं अपने, इस लिये उनके जो समझ में आवेगा करेंगे। हमें तो ऐसा व्यक्ति चाहिए कि जो 'मालिक' उसको समझे, जिसकी मिल्कियत छाई हुई है और अपने आप को मोहताज समझे। मोहताज ही को तो 'मालिक' देता भी है और जिसे खुद ही आवश्यकता नहीं और अपनी ही मिल्कियत के झंझटों में जकड़ा हुआ है, उसके पास वह पात्र कहाँ से आ सकता है, जिसको 'मालिक' भर दे।

तुमने अपने पत्र में एक बात बहुत अच्छी लिखी है कि जब तुम सो कर उठती हो तो तुम्हें यह लगता है कि तुम अपने से निकल आई। हमारे यहाँ की Training में एक बात यह है कि मन का सम्बन्ध कुछ न कुछ उसकी असल गति से कर देते हैं। तो सोते समय जब मन के लिये यह कहा गया है कि अभ्यासी को एकदम से जगाना नहीं चाहिये। इसलिये कि उसको धक्का लगता है। अब तुममें यह हालत बहुत उन्नति कर गई है और सोते समय तुम्हारा फैलाव अधिक हो जाता है, जो जागने पर तुम्हें ऐसा मालूम होता है कि तुम अपने आप में से निकली और उस समय अगर तुम ग़ौर करो तो तुम्हें यह भी अनुभूति होगी कि कोई न कोई सोते समय आनन्द ज़रूर रहा है। हालांकि वह आनन्द अब कुछ इस ढंग का है कि सोने और जागने की हालत को अगर compare करो तो कुछ भेद समझ में आ जावेगा, यों गो उसकी अनुभूति करना भी कठिन पड़ेगी। तुम्हारे इस लिखने ने मुझे अपनी हालत के याद करने की याद दिला दी। मगर भाई कोई यह न समझ जाये कि मैं अपनी बड़ाई कर रहा हूं। मगर क्यों कि मेरी ज़ुबान में लगाम नहीं और आदत भी

ऐसी डाल ली है, वह भी इस वजह से कि मेरे कहने सुनने से ही लोगों को इस हालत पर पहुंचने का शौक़ पैदा हो, खैर लिखे देता हूं। जब आदमी सोता है तो, जो उसके सैर करने का स्थान होता है, ज़्यादातर उसी में विचरता है, मगर जब Limitations और Bondages टूट जाते हैं, तो फिर उसका पसारा बहुत बड़ा हो जाता है और मैं तो यह कहूंगा कि ईश्वर से मिलने का वही वक्त होता है। एक बात तुम्हें और बताता हूं कि इन सब Bondages के टूट जाने पर ऐसा क्यों होता है, और क्यों लाज़मी है ? वजह यह है कि Centre के नीचे जो Energy है, उसको वह अपने फैलाव के द्वारा सब में Distribute करता है, यों वैसे भी Energy असल भण्डार से सबको मिलती रहती है, मगर यह रूहानी Energy जिस वक्त कि कम होने लगती है, उस वक्त ऐसी Personality ईश्वर भेज देता है। अब हाल तो मैंने लिख ही दिया, अब तुम किसी का हाल समझो और मुझे तो भाई सोने में बड़ा मजा आता है और कुम्भकरण की नींद मुझे पसन्द है। इसलिये कि मैं उस हालत में अपने घर में विचर लेता हूं और Brighter World में घूमता रहता हूं और वहाँ से जो कुछ भी मुझे मिल जाता है, अपने पास कुछ नहीं रखता। यही वजह है ख्वाह यह गति मेरी हो, या और किसी की। कण-कण आध्यात्मिक Energy से बहुत कुछ भर चुका है। जो लोग या महात्मा इसको grasp करते हैं, वह ज़्यादा फ़ायदा उठा जाते हैं।तो अब कहो बिटिया ! सुख की नींद कौन सोता है। पता नहीं कि वेद में इसको तुरिया या तुरियातीत या कुछ और कहेंगे। तुम बिटिया ! चौबे जी से पूछ कर लिखना कि वेदों में इसके लिये क्या शब्द इस्तेमाल किया है, यह कौन सी नींद कहलाती है। तुम पूछना जरूर, मुमकिन है, वह बतला सकें। मैंने तुम्हारी एक बात का तो जवाब दे दिया, अब बाकी बातें जो हैं, वह C_1 की हैं और जो वाकई हालत है, उसका तरजुमा तुमने अच्छा किया मगर फिर भी अनिवर्चनीय है। अब C_1 की हालत जो है, वहाँ पर अब मैं एक बात देख रहा हूं कि तुम्हारी तो ठहरने की उस जगह पर फिर तबियत चाहती है। मगर यह कम्पन (Vibration) का बीज जो B_1 पर मैंने डाला है, वह अब C_1 पर फिर पैदा हो गया इसलिये कि तुम्हारा उठान आगे जाने को पैदा रहे। इस कम्पन (Vibration) को मैंने जब लखीमपुर में था, खामोश करीब-करीब कर दिया था, मगर उसका बीज नष्ट नहीं किया। अब तुम्हारी जहाँ पर ठहरने की तबियत चाहेगी, यह Vibration ठहरने नहीं देगा। अब सच पूछो तो मेरी मदद की अब बहुत ज़्यादा ज़रूरत नहीं रही और तुम्हारी चाल में Vibration ने खुद-ब-खुद तेज़ी बढ़ा दी। तुम्हारा निकलने का जी न चाहे और कम्पन (Vibration) तुम्हें ऊपर को घसीट ही ले। मगर निगरानी मेरी थोड़ी ज़्यादा बढ़ गई, बस छोटा सा काम इतना ज़रूर बाकी है। या यूं कहो कि कम्पन का Control करना मेरा काम रह गया। मैं जब ज़रूरत समझूंगा, शान्त कर दूंगा। इसलिये कि इस चौकीदारी की चौबे जी तनख्वाह बहुत थोड़ी दे रहे हैं। यह ज़रूरहै कि कुछ दे रहे हैं। मगर मंहगाई का ज़माना है, पेट नहीं भरता। उनसे कह

दो कि मेरी तनख्वाह कुछ और बढ़ा देवें। South India में एक दो साहब और शुरू कर रहे हैं, मगर उनका आना मुश्किल है। वहीं से Training चाहते हैं। अभ्यास मैं उन्हें लिख दूंगा। ईश्वर हर जगह मौजूद है, वह उनकी खुद फ़िक्र कर लेगा। अब तो कुछ ऐसे चिन्ह जरूर ईश्वर की कृपा से मिल रहे हैं कि यह चीज़ जल्दी उन्नति करे। अम्मा से यह कह देना कि वह मेरा जन्मदिन तो मनाती ही हैं, खर्चा 4 या 5 रुपये से अधिक नहीं होना चाहिए।

"सहज-समाधि" किताब जो लिखी है, मैं चाहता हूं कम से कम 40 या 50 सफ़े हो जावें और यह मेरी दुआ है कि जिस दिन तुम लिखने का इरादा करोगी, तुम उसको इतना अच्छा लिखोगी कि तुम्हें खुद ताज्जुब होगा, ईश्वर करे, ऐसा ही हो। अगर हो सके तो मेरी किताबों या खतों में से जैसा मुनासिब समझो कुछ Quotations दे देना। मैं बद-दुआ दूर करने की बहुत संक्षेप के साथ तरकीब बताता हूं। 'लाला जी' ने मुझे यह सब बातें बताई हैं। महात्मा जिस हालत में होगा, उसी हालत से दुआ या बद-दुआ देगा ज़्यादातर। इसलिये जब उसका असर दूर करना चाहे, तो उससे अगले मुकाम पर बद-दुआ दूर करने का ख्याल बाँधे या अगर किसी की ब्रह्म-गति पूरी तौर पर है, इतनी कि जितनी हो सकती है, तो फिर वह एक झटके में उसे खत्म कर सकता है। कोई Point तलाश करने की ज़रूरत नहीं।

शुभ चिन्तक
रामचन्द्र

पत्र-संख्या : 468

परम पूज्य तथा श्रद्धेय श्री बाबूजी, लखीमपुर
सादर प्रणाम। 15.3.55

'आप' का कृपा-पत्र मिला। पढ़ कर समाचार से अवगत हो, प्रसन्नता हुई। 'मालिक' की कृपा से जो कुछ भी आत्मिक दशा का एहसास हुआ है, सो लिख रही हूं।

मेरा तो इधर यह हाल है कि तबियत में हर जगह, हर घड़ी, ऐसा सन्नाटा रहता है कि जैसे, किसी की मौत के बाद, लाश उठ जाने पर, एक अजीब सन्नाटा, एक अजीब हालत छा जाती है। मैं हर समय, हर जगह, ऐसा ही वातावरण में खोई रहती हूं। न तो पूजा के कमरे से निकलने की तबियत चाहती है, और न ही किसी से बात करने की। बस यह जी चाहता है कि मुझ से कोई न बोले, कोई बात न करे। यद्यपि पूजा के कमरे में भी पूजा नहीं करती हूं, बस बैठी रहती हूं। पूजा क्या करूँगी, जब पूजा से प्रेम ही नहीं और पूजा से क्या प्रेम हो, जब 'मालिक' से प्रेम नहीं, क्योंकि 'मालिक' की बातें करने या सुनने को भी

तबियत ही नहीं चाहती, मुझे रस ही नहीं आता। मेरा तो यह हाल है कि जैसे मानों दिल के भी आँसू सूख चुके। अब घर (दिल) क्या है, मशान है, मेरे लिये श्मशान है। तबियत बुझी हुई है, फूंकने पर भी राख ही उड़ती है। अब तो यों कह लीजिये कि अदृश्य भाप की गर्मी के सहारे रास्ता तय हो रहा है और वह भी अब इतनी ठंडी हो चुकी है कि उसमें गर्मी का पता नहीं मिलता और ठंढक की लौ बुझ चुकी। कुछ ऐसी ही अटपटी दशा है। अब तो मुझे लगता है कि 'मालिक' भी मुझ से गुम हुआ जाता है। पहले तो यह हाल था कि – "दिल के आईने में है तस्वीरे यार" और अब यह है कि दिल स्वयं एक बुझी हुई सी तस्वीर बन गया है, जो अदृश्य हुई जाती है। एक अजीब नज़ारा ही कहिये कि जैसे–जैसे 'मालिक' गुम हुआ जा रहा है, वैसे–वैसे निगाह व नज़ारा भी उसी के साथ–साथ डूबता जा रहा है और एक दिन महाप्रलय का सम्राज्य हो जायेगा।

भाई, इतना सा एहसास मुझे सोने–जागने की हालत में ज़रूर लगता है कि जागते में कुछ नहीं, तो भी Limit रहती है, और सोते में तबियत को Limitless पाती हूं। दूसरे यह कह लीजिये कि जागते में तबियत 'मालिक' से अलहदा और सोते में मिली सी रहती है। ऐसा लगता है कि C_1 की सैर खत्म हो चुकी है। कुछ यह देखती हूं कि तबियत जागना चाहती है, तो फिर कोई मानों थोड़ा और, थोड़ा और, करके बार–बार सोने में मिलाये रखता है। कुछ यह भी देखती हूं कि जागने पर तबियत कुछ ज़रूर बंधी या सिमट सी हो जाती है और सोने में स्वतन्त्र, बन्धन–रहित।

अम्मा 'आप' को शुभाशीर्वाद कहती हैं। इति :–

आपकी दीन–हीन, सर्व–साधन विहीना
पुत्री – कस्तूरी

पत्र–संख्या : 469

परम पूज्य तथा श्रद्धेय श्री बाबूजी, लखीमपुर
सादर प्रणाम। 24.3.55

मेरा एक पत्र पहुंचा होगा। यहाँ सब कुशल पूर्वक है। आशा है 'आप' भी सकुशल होंगे। 'मालिक' की कृपा से जो आत्मिक दशा है, सो लिख रही हूं।

न जाने क्या दशा है कि अक्सर ऐसी तबियत अपने आप ही हो जाती है कि रोना–हंसना, बोलना, चलना–फिरना, खाना–पीना, यहाँ तक कि ज़िन्दा रहना भी, दूभर मालूम पड़ने लगता है। ज़िन्दगी में मौत का नशा छाया रहता है। देखने वाले लोग यह समझते हैं कि बहुत बीमार हूं, परन्तु जब तकलीफ़ पूछने पर मैं नहीं बता पाती हूं तो सब लोग जानते हैं कि छिपाती है। मानों मेरे लिये सब प्रलय ही हो गया। तामसी प्रवृत्ति

बिल्कुल हो गई है। न नहाने का मन, न धोने की तबियत, यहाँ तक कि पखाने का भी हाथ न धोऊं , ऐसी ही बैठी रहूं और मैं ऐसी अंधी हूं कि मुझे सिर्फ़अपनी यही तामसी हालत सब ओर दिखाई पड़ती है, मानों तामस का पर्दा छा गया है, आँखे बन्द हैं। पूजा या सत्संग में भी जाने से तबियत भागती है। कोई बोलता है, तो गुस्सा आने लगता है, परन्तु करती नहीं। ज़िन्दगी पर मौत का नशा है और मौत है नहीं। यह मुझे क्या हो गया है श्री बाबूजी ! 'आप' ही बतायें।

यह ऊपर वाली Inactiveness की हालत केवल इसीलिये लगती है और तभी होता है, जब मैं अपने में से दिन–रात निकलती ही नहीं, भीतर ही समाई रहती हूं, तभी प्रलय का नशा सवार रहता है क्योंकि मैं देखती हूं कि जब मैं अपने से बाहर निकलती हूं, तब नशा उतरा लगता है। आँखें खुल जाती हैं, क्योंकि भीतर तो वाकई मानों प्रकृति की भी प्रलय हो चुकी है। हाँ, इधर कल से यह ज़रूर देख रही हूं कि महाप्रलय रहते हुए भी, यानी उसमें समाये या मिले रहते हुए भी अपने से बाहर ही रहने लगी हूं। अब कुछ दशा को देखते हुए यह भी लगता है कि अब मुझे नशे के दौरे का डर नहीं, क्योंकि मेरी सुरति या तबियत ने अपना मुख इससे परे उठा दिया है। अब मेरी दशा के लिये सुरत–सुहागिन शब्द बिल्कुल unfit सा ही बैठता है। अब तो कुछ यह देखती हूं कि हालत में से ज़िन्दगी और मौत, यह दोनों नशे समाप्त हो चुके हैं। जागने–सोने के बीच की अवस्था का भी नशा उतरा सा मालूम पड़ता है। अब तो दशा के लिये न कहीं समुद्र है, न मैदान। अब जो है, वह पता नहीं। क्योंकि मेरी बुद्धि और मन का ही मेरे लिये कुछ अर्थ नहीं रह गया। यहाँ तक कि मेरी आत्मा भी मानों मेरे से ओझल हुई जाती है। कुछ यह भी है कि पहले मैं अपने भीतर, बाहर और स्थूल शरीर पर भी, जब मेरा ध्यान जाता था तो, केवल 'मालिक' ही 'मालिक' का एहसास होता था, परन्तु अब यह भी नहीं है। सब कुछ मानों मेरी निगाह से ओझल हो गया। अब मुझे कुछ नहीं दीखता। मेरी तो समझ मर गई। जीवन–मोक्ष गति भी अहं में मेरे लिये बेकार ही, अर्थहीन ही साबित हुई। अब न जाने भाई, हर दशा का ही अन्त NIL है, या स्वयं मेरा ही अन्त NIL है। लगता है मेरे हृदय का खज़ाना खाली हो गया, लुट गया। अब तो नीरव शान्ति या नीरव प्रलय का साम्राज्य है भीतर, बाहर। अब तो न सावन हरी खेती होती है, न भादों सूखी।

छोटे भाई–बहनों को प्यार। इति :–

आपकी दीन–हीन, सर्व–साधन विहीना
पुत्री – कस्तूरी

पत्र-संख्या : 470

प्रिय बेटी कस्तूरी	शाहजहाँपुर

खुश रहो।	28.3.55

पत्र तुम्हारे सब के सब मिल गये। काम कुछ ज़रूर इन दिनों ज़्यादा है। मद्रासियों के पत्र अक्सर चले आते हैं और उनके जवाब देने पड़ते हैं। हमारे यहाँ ऐसे दो चार ही आदमी हैं, जो mission की ज़िम्मेदारी अपने ऊपर भी समझते हैं। मुमुक्षु आश्रम में जलसा अच्छा रहा। हम और काशीराम वहाँ दो दफ़ा गये और दो रुपया खर्च हो गया। बहुत काबिल लोग आये थे। अब अगर अपने mission की तरक्की की फ़िक्र पैदा करें, तो वह ऐसी है कि सुबह हज़ार तारों का खून करके पैदा होती है और यही आसार दुनिया में पैदा हो रहे हैं और ईश्वर की मन्शा भी यही है कि हम लोग सुबह का मुख देखें। इसलिए हर जगह गड़बड़ी की उम्मीदें हैं। क्या मालूम किसी को कि ब्रह्मपुत्र नदी भी अपना मुंह बंगाल की तरफ़ फेर दे। न मालूम कितनी बातें ऐसी हो सकती हैं। पाकिस्तान का एक बड़ा हिस्सा Barren हो जावे, दरिया खुश्क होने लगे, गरीबी फैलने लगे, गरचे कि यह जो कुछ भी हो रहा है, यह सब उन महात्माओं की ज़िम्मेदारी है, जो जौ बेचते हैं, मगर ग्राहक को गेहूं दिखाते हैं और इसी से अंधेरी बढ़ती जाती है। मैं अभी इन बातों पर रुजू नहीं हुआ हूं, इसलिए कि मुझे फुरसत बिल्कुल नहीं मिल रही है। काम का Pressure बहुत है, दिमाग पचपा रहता है। अगर यहाँ मास्टर साहब ऐसा एक भी आदमी मेरे पास होता तो मैं इन कामों पर रुजू हो जाता जो मुख्य हैं। आदमी तो मैं ऐसा बना ही लेता, मगर कोई ऐसा मिलता ही नहीं और जो है, उसे इस बात की तमन्ना नहीं। जहाँ इतनी बातें लिखीं, वहाँ पर एक खुशखबरी भी है कि हिन्दुस्तान में सोना (Gold) भी बनना शुरू हो गया है और अभी वहाँ उम्मीद है कि जहाँ काशीराम रहते हैं (आसाम में) इसलिये कि हिन्दुस्तान के लिये ज़माना अच्छा आ रहा है और भी कई जगह इसकी शुरुआत है और दक्षिण में विशेष करके और कोई धातु पैदा हो रही है। अब तुम्हारे खत में जो कुछ लिखा है, अब दुबारा कौन पढ़े; कि Reality की झलक तो अच्छी आने लगी है। D_1 पर कल रात 11 बजे तुमको घसीट दिया। यहाँ पर Inactivity की शक्ल कुछ बदली हुई मिलेगी। तुमने यह जो लिखा है कि ज़िन्दगी, मौत के नशे उतर चुके हैं। यह जब वाकई नशा उतर जावे तो Reality की अच्छी हालत कही जावेगी।

ईश्वरीय काम कुछ सुपुर्द किये थे, उनके करने की ज़रूरत नहीं। वह अब हो गये। mission की तरक्की के लिये जो कुछ कर रही हो, ठीक है, वह किये जाओ।

शुभ चिन्तक

रामचन्द्र

पत्र-संख्या : 471

परम पूज्य तथा श्रद्धेय श्री बाबूजी, लखीमपुर

सादर प्रणाम। 28.3.55

कृपा-पत्र 'आप' का आज मिला, पढ़ कर प्रसन्नता हुई। आप ने मुझे D_1 पर खींच दिया, इसके लिये बहुत-बहुत धन्यवाद। 'मालिक' की कृपा से जो कुछ भी आत्मिक-दशा समझ में आई है, सो लिख रही हूं।

भाई, कुछ ऐसा लगता है कि कभी दशा एकदम धुएँ सी हो जाती है, कभी हल्की बेहोशी से नशे की तरह, कभी वहम् की तरह और कभी बिल्कुल नीरव, शान्तिमय ही रहती है। मुझे ऐसा लगता है कि मानों 'मालिक' ही होकर मैं 'मालिक' को चाहती हूं या याद करती हूं क्योंकि बिल्कुल होश या सुधरी दशा में मैंने यही पाया है। लगता है जिन्दगी में से सिज़दा उठ गया। वैसे यह हाल है कि हर आदमी क्या जानवर तक के कदमों पर ही सिर रहता है। अजीब दशा है कि सिज़दा ही सिज़दा है और सिज़दा जिन्दगी में से उठ चुका है। इधर 'मालिक' को अपने में ही सम्पूर्ण रूप से पाती हूं, मानों मुझ में सम्पूर्ण रूप से वह समा गया है। कुछ ऐसी दशा है कि बेहोशी कभी होती नहीं और होश कभी आता नहीं। कुछ यह हाल है कि न सूक्ष्म शरीर, न कारण शरीर, सब मेरी ज़िन्दगी में से उठ चुके हैं। वे तो मानों मुझ में बनाये ही नहीं गये थे और आत्मा ही आत्मा अब शरीर में झलकती है और उसमें भी लगता है 'मालिक' लय हो गया है। अब तो यदि 'कुछ नहीं' कहती भी हूं, तो तबियत एक हल्के बोझ का अनुभव करती है। अब तो लगता है, पंछी पिंजड़े से उड़ कर रम गया। अब तो 'उसके' सेंक की भी अनुभूति नहीं। नीरवता भाँय-भाँय हो रही है। नहीं, नहीं, नीरवता भी मौन पड़ी है, क्योंकि मुझे अब वह भी अपना नाम नहीं लेने देती, क्योंकि इसे कहने से उस हालत में धब्बा सा लग जाता है। असली बात तो यह है कि खाली पिंजड़ा पड़ा रह गया। कुछ यह देखती हूं कि हालत को देखने से अधिक देर तक तो मैं अचल सी होने लगती हूं। अब यह क्या है, 'आप' जानें, 'आप' का काम जानें।

अम्मा 'आप' को शुभाशीर्वाद कहती हैं और केसर 'आप' को प्रणाम कहती है।

आपकी दीन-हीन, सर्व-साधन विहीना

पुत्री - कस्तूरी

पत्र-संख्या : 472

प्रिय बेटी कस्तूरी,
खुश रहो।

शाहजहाँपुर
1.4.55

28 मार्च सन् 55 का पत्र प्राप्त हुआ। आज राम नवमी का दिन है। बड़ा शुभ दिन है। मगर भाई राम की जाप हमने गिनती से की है। नतीजा यह हुआ कि गिनती से हमने पूरा हिसाब बना दिया, और हम उलझन में फंस गये। उलझन तो रह गई और राम गायब हो गये। अब अगर हम राम को पाना चाहें तो, हमको यही चाहिए कि गिनती की उलझनों को हम दूर करके उस चीज़ पर आ जावें, जिस पर हिसाब और Geometry की बुनियाद है। वह चीज़ क्या हो सकती है ? वह नुक्ता ही हो सकता है, जो हर अदद हर लेख में सम्मिलित है, और जब तक वह अदद या गिनती में सम्मिलित नहीं होता, तब तक उसकी हैसियत ज़ाहिर नहीं होती, अर्थात् हमको हर अदद और हर हरफ़ की पहिचान कराने में यही नुक्ता काम देता है। अब हम नुक्ता तो भूल गये, जो सम्मिलित है, सिर्फ़ वह चीज़ें बस सामने हैं और याद हैं। यह तो भाई वही मसल हुई कि हमने अपने घर के अन्दर घर के मालिक को गुम कर दिया। हम मण्डलेश्वर हो जावें या महा मण्डलेश्वर हो जावें, हैसियत हमारी अगर न बदली, तो हमने अपने पसारा में भी इज़ाफा (बढ़ा) कर लिया। नुक्ते को और छिपा लिया और कहीं हमारा मण्डलेश्वर और महा मण्डलेश्वर होने का ख्याल पैदा हो गया, तो भाई हमारे हर हिसाबी पसारे में Square लग गया। अब तो और भी मुश्किल पड़ गई कि इस हैसियत को मिटाने में Square Foot के Formula की भी याद आने लगी और घिसे पड़ते पड़ते यहाँ तक पढ़ना पड़ेगा कि जब तक हम खुद न अचेत पड़ जायें, हमारा फन्दा नहीं छूटता। अचेत पड़ना कठिन है, इसलिये कि हमारे ख़्वाब में तो हमारी हैसियत घूम रही है और चक्कर पर चक्कर पड़ते चले जा रहे हैं। अब कौन हो सकता है कि इससे छुटकारा दिलाये, सिवाय इसके कि ईश्वर खुद जैसे बनाने में मुब्तला या उसी ताकत से बिगाड़ने में मुब्तला हो तो भाई ईश्वर को गर्ज़ ही क्या, इसलिए कि आप अपनी गर्ज़ उसकी गर्ज़ समझ लेते तो मुमकिन था कि उसके ख्याल के रंग में तुम्हारी आह का झटका पहुंच जाता।

अब मैं तुम्हारे पत्र का उत्तर देते-देते तुम्हारी तबियत को, ऊपर जो मैं लिख रहा हूं रुजू करता हूं। हिसाबी दौड़-धूप तो तुम में थी ही कहाँ और अगर हो भी तो बस मण्डलेश्वर और महामण्डलेश्वर और आजकल के महात्मा लोगों की गर्मी का असर आम लोगों पर जो पड़ रहा है, वह कुछ हो सकता है या उनके व्याख्यान का थोड़ा बहुत धुआँ जो कुछ भी विचार के तह पर आ गया हो – वह अब नहीं है। गिनती तो खत्म ही है, नुक्ते की तरफ नज़र है, और वह नज़र अभी ऐसी है कि तुमने अभी उसको (मालिक) अपनी

नज़र में भरा है, इसीलिये मनुष्य और जानवर के क़दमों पर सिर रहता है। अभी ऊंचा उठना है, तब फिर निगाह जब तक कि तुम खुद न चाहोगी, कदमों पर न रहेगी। यह एक हालत है, जबकि 'मालिक' का आभास सबमें होता है और यह तत्वमसि अर्थात् Thou art that, इसको "हमाओस्त" फ़ारसी में कहते हैं और यह अहं-ब्रह्मास्मि से बहुत ही ऊंची हालत है। अहं ब्रह्म को चुपके-चुपके खटखटाता ज़रूर रहता है, इसलिए कि आखीर पर इसी की बदली हुई हालत पर आना है और लोगों के लिये तो अहं ब्रह्मास्मि सच्ची न सही, झूठी ही हालत पर आ जाना बहुत कुछ है। ईश्वर जाने क्या है ? जान वही सकता है, जिसमें जानकारी नहीं रहती और यह बड़ी ऊंची हालत है और फिर उसके बाद जाने क्या-क्या है? यह वही जान सकता है जो न कभी पैदा हुआ हो, न मरा हो। तुमने लिखा है कि कण-कण में झाँकती हूं परन्तु कस्तूरी मिलती ही नहीं, इस टुकड़े का जवाब यह है कि कस्तूरी तो सचमुच खो चुकी, मगर उसकी महक अब भी मौजूद है, इसलिये तुम आगे खुद लिखती हो कि ऐसा लगता है मानों 'मालिक' ही होकर मैं 'मालिक' को चाहती हूं। यह बात और यह महक यह बतला रही है कि अभी Soul की Forgetful State नहीं आई है। यह भी लिखा है कि बेहोशी कभी होती ही नहीं और होश कभी आता ही नहीं, यह आत्मा की असल हालत है। बाकी बातें जो खत में है, वह सब इसी हालत से भिड़ी हुई हैं। उसका एक-एक कर कहाँ तक जवाब दिया जावे।

काशी राम अब आसाम जल्दी जाने वाले हैं और वहाँ खूब रुपया पैदा करेंगे और ईश्वरीय कमाई भी करेंगे। अम्मा और चौबेजी को प्रणाम, तुम्हारे भाई-बहनों को प्रणाम।

शुभ चिन्तक
रामचन्द्र

पत्र-संख्या : 473

परम पूज्य तथा श्रद्धेय श्री बाबूजी, लखीमपुर
सादर प्रणाम। 1.4.55

कृपा-पत्र 'आप' का मिला। समाचार पढ़कर प्रसन्नता हुई। 'मालिक' की कृपा से जो कुछ 'आत्मिक दशा' समझ में आई, सो लिख रही हूं।

भाई, न जाने क्यों मुझे लगता है कि अन्तर की खुशी का भी Bondage समाप्त हो (या टूट) गया, तो अन्दर खुशी भी Unlimited भरी हुई है, परन्तु उस पर check है 'मालिक' के हस्त कमल का। 'वह' डोरी थामे हुए हैं, ज़रा भी ढीली नहीं होने देते। लगता है, जरा सी ढील दी, फिर खींच ली। अब तो लगता है खुशी का भण्डार टिघल कर कुल

कण–कण में अन्दर–बाहर सब भर गया है। कुछ यह लगता है कि मानों मेरी आत्मा भी पिघल कर 'मालिक' में ही समा गई है।

भाई, मेरा कुछ यह हाल है कि अब तो लय अवस्था मेरे लिये बिल्कुल अर्थहीन हो गई है। लाख प्रशंसा दूसरों से लय–अवस्था की करती हूं, परन्तु स्वयं मेरी तबियत पर उसका कोई प्रभाव ही नहीं पड़ता। लगता है कि Inactivity भी खामोश पड़ गई, साम्यवस्था में लय हो गई। न जाने क्या बात है कि असल में तो 'मालिक' का महत्व, 'उसके' गुणों की बड़ाई, 'उसका' Greatness न जाने क्यों कुछ मेरे दिल में नहीं रह गई और प्रयत्न करने का भी जी नहीं चाहता है। अब तो आध्यात्मिकता में भी कोई रुचि मेरी नहीं रह गई। एक बेहोशी का सा नशा या धूमिल छाया की तरह, जो कुछ दशा सी छाई रहती थी, वह साफ़ हो गई। कुछ यह हो गया है कि 'मालिक' का check जो हर समय मुझे लगता था, अब न जाने क्यों बिल्कुल ही धुंधला पड़ गया। निगाह में जाने क्या हो गया है कि अपनी हालत के प्रति तो खैर ठीक था कि एक बिल्कुल साधारण से घरेलू आदमी की तरह रहती हूं, परन्तु अब 'मालिक' को भी मेरी निगाह ऐसे ही देखती है तो मैं कभी–कभी कुछ सिहर सी उठती हूं, कि यह क्या हो गया।परन्तु ग़लती मेरी कुछ भी नहीं है। अब मुझे न नशा है, न नशे के बाद की सुस्ती, बल्कि एक Fresh कह लीजिये, थिर हालत है। बल्कि Innocent हालत है, कह लीजिये तो ठीक होगा। मेरी हालत की दमक जाती रही। अब ऐसी चमक है जो चकाचौंध नहीं करती। कहीं भी, किसी में विशेषता मानों मेरे लिये नष्ट हो गई। सादी सी दशा ही व्याप्त है। इति :–

आपकी दीन–हीन, सर्व–साधन विहीना
पुत्री – कस्तूरी

पत्र–संख्या : 474

प्रिय बेटी कस्तूरी, शाहजहाँपुर
खुश रहो। 7.4.55

मैंने एक पत्र मास्टर साहब के पते से भेजा था, मिल गया होगा। उस पत्र में इस पहली अप्रैल के खत का भी जवाब था, वही हालत अब भी है। D_1 की हालत अभी खुली नहीं है, मगर खुलना चाहती है। इस पत्र में तुमने लिखा है कि खुशी का भण्डार पिघल कर भीतर–बाहर कुल कण–कण में व्यापक हो गया है। यह बिल्कुल आत्मा की हालत है, जिसमें न खुशी है, न रंज, न अपना है, न ग़ैर। तुम इस मैदान में आ गई हो, मगर उसमें अभी लय–अवस्था नहीं हुई है और इसी हालत को तुमने तरह–तरह से लिखा है।

तुमने लिखा है कि 'मालिक' की Greatness दिल में नहीं रह गई है, यह हालत और भी अच्छी है। जब तक हमारी तबियत में Greatness है, बंधन से छुटकारा नहीं मिला और बिना इसके शुरुआत में काम भी नहीं चलता। बाकी जो भी खत में है, आत्मा की ही हालत बता रही है।

अब एक बात नई, खत से अलग लिखता हूं। गीता-प्रेस से एक पुस्तक छपी है - "मन से वार्त्तालाप" और इस बात पर स्वामी शुकदेवा नन्द जी ने भी काफ़ी ज़ोर दिया है। इसका तजुर्बा तो तुम्हारे घर ही में हो चुका है, जिससे साबित है कि किस मुसीबत में लोग पड़ जाते हैं। इसमें शुकदेवा नन्द जी की बड़ी तारीफ (वाह, वाह) हुई है। अब तुम तसफ़िया करो कि स्वामी लोग किस कदर जनता को नुकसान पहुंचा रहे हैं। ईश्वर चाहता है, आध्यात्मिकता पैदा हो, और स्वामी लोग ईश्वर का मतलब पूरा नहीं होने देते। नहीं मालूम क्या होना है। अगर ऐसे स्वामी लोगों को सजा दी जावे तो, इसकी अनुभूति अपनी ज़िन्दगी बाद होगी। और वैसे वे अपने आपको खुद सज़ा दे रहे हैं। यह भी अच्छा है कि स्वामी लोगों को इच्छा-शक्ति ज़्यादा तरक्की किये हुए नहीं होती, वरना ज़हर और तरक्की कर जाता है।

अम्मा को प्रणाम। तुम्हारे भाई-बहनों को दुआ।

शुभ चिन्तक
रामचन्द्र

पत्र-संख्या : 475

परम पूज्य तथा श्रद्धेय श्री बाबूजी, लखीमपुर
सादर प्रणाम। 8.4.55

मेरा एक पत्र 'आप' को मिला होगा। यहाँ हम सब सकुशल हैं और 'मालिक' से प्रार्थना करते हैं कि 'आप' सदा स्वस्थ रहें ताकि 'आप' की कृपा हम सबको बराबर मिलती रहे। 'मालिक' की कृपा से जो कुछ भी आत्मिक दशा है, सो लिख रही हूं।

पिछले पत्र में मैंने जो नशा के बारे में लिखा था, अब समझी कि भाई, वह नहीं था, बल्कि एक सूक्ष्म सी भूल की अवस्था ही छाई हुई थी और अब वह छाई नहीं है, बल्कि देखती हूं कि भीतर-बाहर से सिमटा-सिमटा कर मुझमें लय या पचती जा रही है। दशा का रंग कुछ हल्का भूरा सा है। न जाने क्यों उसे अधिक रमने या देखने या मिले रहने का प्रयत्न करने से मुझ में अचेतना सी छा जाती है, निष्कामता सी छा जाती है। परन्तु अब तो यह हाल है कि जब वह स्वयं मेरा स्वरूप ही हो गई, फिर मिले रहने का प्रश्न ही कहाँ उठता है। यह सब होते हुए भी न जाने क्यों एक धीमी छटपटाहट या Craving सी दिल

में बनी रहती है, परन्तु वह भी कुछ ऐसी है कि उसमें फिर भी दुई का सम्बन्ध नहीं, क्योंकि देखती हूं उसका कोई लक्ष्य नहीं। न जाने क्या बात है कि देखती हूँ मानों भीतर–बाहर का कण–कण संतोष में पैठ गया है या संतोष बन गया है। परन्तु जो Craving है, वह मुझ से परे है। कुछ यह हो गया है कि देखती हूं कि ईश्वरीय–मार्ग में भी चाह कुछ है नहीं और 'मालिक' जो दे देता है, तो मंज़ूर भी है। न जाने क्यों कुछ बेरुचि ने घर कर लिया है कि न 'उसके' ध्यान में रुचि है, न Constant Rememberance में रुचि और न मुझ में जीवन में रुचि है, न मौत में। न जाने क्यों लगता है, जो कुछ मैं बोलूं, या बात करूँ या लिखूं, मानों जैसे बच्चा जब पहली किताब लेकर बैठता है तो हर शब्द उसके लिये नये होते हैं, यही दशा रहती है। अब तो यह हाल है कि जिन्दगी का हर पहलू, सुबह–शाम, मेरे लिये मानों एक नये पहलू के सदृश हैं। किन्तु फिर भी मुझे इनमें कोई रोचकता नहीं। सामने संसार जो कुछ है, जड़, चेतन, सब केवल हल्के धुएँ के समान हैं, बस कुछ नहीं। अब तो यह हाल है कि ज़िन्दगी का एक नया नहीं बल्कि अति प्राचीन पहलू, जो भूले–बिसरे की हालत है, बस जाने क्या है। सादगी, पाक़ीजगी कहने को कह लीजिये, न कुछ नया है, न पुरातन है। मैं अपने भीतर–बाहर कहती हूं, किन्तु मानों बिना किसी Sense के। मुझे अब भीतर–बाहर कुछ अनुभव नहीं होता।

अब तो यह हाल है कि दिन–दिन भर मेरी समझ में नहीं आता कि मैं क्या करूँ। बीच सिर में माँग के बिल्कुल लगे–लगे एक नस सी में ऐसा लगा करता है कि जैसे कोई पतले तार को उँगली से हिलाते–हिलाते छोड़ दे, ऐसे ही वह खटका करता है और उसमें पिपरमिन्ट की तरह कुछ ठंढा–ठंढा सा लगा करता है। कभी–कभी सा लगा करता है। कभी–कभी ठंढक माथे तक में आ जाती है, लेकिन बड़ी महीन सी ठंढक होती है वह। लगता है कि मेरे 'मालिक' को भी लीला का पहलू समाप्त, यहाँ अब समाप्त हो गया।

छोटे–भाई बहिनों को प्यार। इति :-

आपकी दीन–हीन, सर्व–साधन विहीना
पुत्री – कस्तूरी

पत्र–संख्या : 476

परम पूज्य तथा श्रद्धेय श्री बाबूजी, लखीमपुर
सादर प्रणाम। 13.4.55

यहाँ सब कुशल है। आशा है 'आप' भी सकुशल होंगे। 'मालिक' की कृपा से जो भी आत्मिक–दशा समझ में आई है, सो लिख रही हूं।

भाई, ऐसा हो गया है कि दशा ऐसी शायद ठस हो गई है, किन्तु यद्यपि ऐसा नहीं है, परन्तु फिर भी, अचेतन दशा कहूं, तो है नहीं, चेतन दशा कहूं, तो भी है नहीं। खाली कहूं, तो भी नहीं, शून्य कहती हूं, तो भी दशा का वास्तविक रूप नहीं आ पाता है। मेरे लिए सब वृथा है, बेकार है। बात तो यह है कि दशा यह है, जहाँ शब्द ही नहीं, ध्वनि ही नहीं है। स्पर्श भी है या नहीं, इसका होश नहीं। ब्रह्म-दशा कहती हूं, तो भी दशा ठीक अदा हो नहीं पाती है। दशा तो महाशून्य की ओर जुड़ी लगती है। लगता है खालीपन या शून्यता और मर-मिटना भी मानों मिट गया। जाने क्यों उत्सव आदि में, मेरी तबियत में, इतनी अच्छी नहीं रहती कि जितनी उसके बाद। एक अजीब साम्य-अवस्था कह लीजिये कि जिसमें साम्यावस्था भी मिट चुकी है। लगता है बेहोशी की दशा भी मुझ से दूर जा पड़ी है। कुछ ऐसी हालत रहती है कि 'मालिक' से मेरा नाता तो नहीं छूट गया। यद्यपि 'मालिक' जिसे पकड़ लेता है, उसे सहेजता ही जाता है। मेरी तो 'उसकी' ओर से भी केवल एक बेलौस हालत ही रहती है। मुझे न जाने, क्यों 'उससे' मिलने की तड़प नहीं होती। कुछ दर्शन की उत्कंठा ज़रूर बनी रहती ही है। न जाने क्यों 'मालिक' का आकर्षण जो मुझे हर समय अपनी ओर खींचे रहता था, वह भी अब नहीं लगता। पीठ तो पूरी मानों दीमक ने चुन ली है और अब सिर भी।

छोटे भाई-बहनों को प्यार। इति :

आपकी दीन-हीन, सर्व-साधन विहीना
पुत्री - कस्तूरी

पत्र-संख्या : 477

प्रिय बेटी कस्तूरी, शाहजहाँपुर
खुश रहो। 17.4.55

तुम्हारा पत्र 13.4.55 का मिला। तुम्हारा D_1 का स्थान है। इसमें तुम आधे के क़रीब, बल्कि उससे कुछ ज़्यादा फैल चुकी हो। यह तुम्हारी हालत की मैं खबर देता हूं। असल में चेतनता और अचेतनता दोनों में से कुछ नहीं है। अगर चेतनता का भास रहा तो, वह भी एक तरह का फंसाव है और अचेतनता का भास रहा तो उसके माने यह होते हैं कि चेतनता की दूसरी शक्ल में तबियत ठहरी हुई है और इसलिए चेतनता का ख्याल बाकी है। इन दोनों से रहित रहना ही अच्छा है, ताकि उसका Impression हम पर न पड़े इसके बाद भी एक और हालत आती है, जिसको Potentiality कहते हैं। जब हम इसको भी लाँघ जायें तब समझना चाहिये कि अब किनारा करीब है। वक्त को बचाने के लिये संक्षेप के साथ थोड़ा और लिखे देता हूं। ब्रह्म-दशा तो तुम्हारी है, इसमें शक नहीं, मगर समझाने के लिये यों कहना पड़ता है कि जैसे कोई ब्रह्म के गुबार का एहसास कर

रहा हो या उसकी हवा का चक्कर या मंडल में अभी हो। हैं यह सब ब्रह्म की ही चीज़ें। मगर इसका एहसास कि ब्रह्म-गति जब तुम कहती हो, तो कहने भर को रह जाती है। यह चीज़ यह ज़रूर बतलाती है कि उसकी शुद्धताई का कुछ न कुछ अन्दाज़ हो चला है, जिससे यह उम्मीद है कि ब्रह्म के गुबार वाली हालत से ऊंची जाओगी। पंथाई को यह बातें सब आती ही हैं।

बाकी और खत में लय-अवस्था इत्यादि का जो कुछ लिखा है, इन सबका जवाब यही है, जो ऊपर लिखा है। इस ख्याल से बाज़ आओ कि "मालिक से कहीं नाता तो नहीं छूट गया है"। मैं यह समझता हूं कि 'मालिक' की ज़ात से तो नाता छूट गया है, मगर 'मालिक' से बहुत तेज़ जुड़ गया है। Saint तो West में कहलाये जाते हैं और अपने यहाँ सन्त कहते हैं। मगर अभी तुममें सन्त-गति पैदा नहीं हुई है। उम्मीद ज़रूर है, इसलिये तुमको Saint लिखना शुरू किया है, गोया सन्त से Saint लिखना शुरू कियाहै।बस उससे इतना ही अन्तर है, इसलिये Saint लिखता हूं। पीठ और सिर का दीमक से चुनना, जो तुमने लिखा है, इसके मतलब मेरे ठीक समझ में नहीं आये। क्या इससे तकलीफ़ है? और जो कुछ भी है, तुम्हारे एहसास के अनुसार रीढ़ की हड्डी में मालूम होती है या कुल पीठ पर ? और सिर में मालूम होती है तो कहाँ पर ? क्या गुदगुदाहट और सरसराहट को तुमने दीमक का चुनना तो नहीं कहा है? अम्मा व चौबेजी को प्रणाम। भाई-बहनों को दुआ।

शुभ चिन्तक
रामचन्द्र

पत्र-संख्या: 478

परम पूज्य तथा श्रद्धेय श्री बाबूजी, लखीमपुर
सादर प्रणाम। 16.4.55

'आप' का कृपा-पत्र मिला। पढ़कर प्रसन्नता हुई। भाई, मेरे लिये तो Saint शब्द का कोई अर्थ ही नहीं, कोई Importance ही नहीं। जब यह शब्द 'आप' ने लगाना शुरू किया था, तब जो कुछ था, अब वह भी नहीं है और दशा के लिये कहूं कि खालीपन है, तो वह भी अन्दाज़ तक में नहीं आता। अब तो भाई, Saint का Paint भी उतरते-उतरते खत्म हो गया। खैर, जो है, सो 'आप' जानें, 'आप' का काम जानें। 'मालिक' की कृपा से जो आत्मिक दशा है,सो लिख रही हूं।

मैं देखती हूं कि जब कुछ न कह कर चुप हो बैठती हूं, तब मेरी दशा का Sense कुछ न कुछ आ जाता है। गूंगे का गुड़ कहूं, तो मिठास नहीं, न जाने कुछ यह है कि बेहोश रहती नहीं, परन्तु जाने क्यों, जब कोई कहता है- "कस्तूरी, श्री बाबूजी का तुम्हारे

लिये पत्र आया है," तो मैं ले तो लेती हूं, क्योंकि वह मेरी ओर बढ़ाता है, नहीं तो मेरी समझ में नहीं आता कि कौन कस्तूरी, कौन बाबूजी, पता ही नहीं। यही नहीं, बल्कि कोई कुछ कह भी रहा है या नहीं, मुझे पता ही नहीं रहता और उस पर भी मुझे पता नहीं रहता, इसका भी पता नहीं रहता है। मेरी तो अन्तर शक्ति, मेरी अन्तरात्मा सो गई। न जाने मुझे क्या हो गया है कि तबियत ने 'मालिक' के कदमों को भी कहीं छोड़ न दिया हो, क्योंकि तबियत को अब मैं वहाँ भी नहीं पाती। कुछ अजीब तबियत है कि न गाती है, न रोती है और न चुप ही बैठे देखती हूं और उसका चलना भी एहसास में नहीं आता। लगता है मेरे 'प्रभु' कि मैं उस ओर बढ़ चुकी हूं कि जहाँ केवल अंधेरा ही अंधेरा है और अंधेरा भी ऐसा कि जिसमें अंधेरा नहीं है, जिसमें एक अंधेरी, सोई सी अवस्था फैली है। यह मुझे न जाने क्या हो गया है कि अब तक मैं अपनी हालत में हर समय फ़ना सी रहती थी, परन्तु अब मुझसे वह भी नहीं हो पाता है।

अम्मा 'आप' को शुभाशीर्वाद कह रही हैं और केसर तथा बिट्टो प्रणाम कहती हैं। इतिः

आपकी दीन-हीन, सर्व-साधन विहीना
पुत्री - कस्तूरी

पत्र-संख्या : 479

परम पूज्य तथा श्रद्धेय श्री बाबूजी, लखीमपुर
सादर प्रणाम। 19.4.55

आशा है मेरा एक पत्र मिला होगा। यहाँ सब लोग सकुशल हैं। आशा है 'आप' की खाँसी अब तक ठीक हो गई होगी। 'मालिक' की कृपा से जो आत्मिक-दशा है, सो लिख रही हूं।

भाई, अक्सर ऐसा लगता है कि तमाम कुल शरीर पर मानों किसी ने पिपरमिन्ट की बूंदों की वर्षा कर दी हो। ऐसा हो जाता है और बड़ी देर तक ऐसा रहता है, किन्तु बाँई ओर बहुत अधिक रहता है और सिर तथा कुल माथे में, माँग के लगे-लगे में दाहिनी ओर अधिकतर ऐसा हुआ करता है। लगता है कि मैं तो अब ऐसे मैदान में हूं कि जहाँ केवल सुषुप्त अवस्था भी सुषुप्ति अवस्था में फैली हुई है। ऐसा लगता है कि यदि कोई मुझे मरा कह दे तो मरी हूं और ज़िन्दा कह दे तो भी परवाह नहीं। पता नहीं मेरे जीवन का उद्देश्य क्या है। मेरा तो यह हाल है कि कोई किसी को चाहे बाल-विधवा कह कर दया प्रकट करता है, मैं फिर भी चुप की चुप रहती हूं। मुझे कोई विधवा, सधवा नज़र नहीं आता। स्वयं मुझे कोई जैसा कह दे तो वही मेरी समझ में आ जाता है। यहाँ तक कि अनजाना आदमी यदि मंजू, मुन्नी को पूछ बैठे कि ये आपकी लड़कियाँ हैं, तो मेरी समझ में वही

आ जाता है। यदि 'मालिक' की हर समय निगरानी न रहती, तो दुनिया जाने क्या-क्या कह डालती, किन्तु मुझे इसकी भी परवाह नहीं, क्यों कि मुझे दुनिया दीखती नहीं। भाई, एक ऐसी हल्की हालत मेरे कण-कण में समा गई, ऐसी भोली सी दशा मुझमें 'मालिक' ने पाग दी है कि मुझे अनुभव तो होता है, किन्तु चुप रहना अच्छा लगता है और 'अच्छा लगता है' अलग कर दीजिये, तब ठीक होगा। यह हाल भी है कि मैं चुप दशा में ही पग चुकी हूं। मैं तो न कभी बोली थी, न बोलूंगी। न अपना बोलना सुनाई पड़ता है, न दूसरे का। ऐसी अज्ञान, चुप सी हालत है कि जिसे 'मालिक' ही जान सकता है, मैं कह नहीं सकती और यह अज्ञान हालत की भी मुझे याद नहीं रहती।

छोटे भाई-बहिनों को प्यार। इति :

आपकी दीन-हीन, सर्व-साधन विहीना
पुत्री - कस्तूरी

पत्र-संख्या : 480

प्रिय बेटी कस्तूरी, शाहजहाँपुर
शुभाशीर्वाद। 23.4.55

तुम्हारे दो पत्र 16 और 19 अप्रैल के मिले। दोनों का साथ ही साथ जवाब दे रहा हूं। मेरे एक जुम्ले के माने तुम ग़लत समझ गई हो; जो 19 अप्रैल के खत में दर्ज है, वह यह है कि "इस ख्याल से बाज़ आओ कि कहीं 'मालिक' से नाता तो नहीं छूट गया"। इसका मतलब यह है कि नाता बिल्कुल नहीं छूटा है और यह ख्याल नहीं करना चाहिए कि नाता छूट गया। एक तो Iniciation है, यह बिल्कुल पक्का नाता है और जिनका हो गया है, उनका नाता तो कायम ही है। दूसरी चीज़ इससे बढ़ कर है और वह प्रेम और आध्यात्मिकता का रास्ता।

अब मैं तुम्हें समझाता हूं। प्रेम करते-करते जिस्म से अभ्यासी ऐसी हालत पर पहुंच जाता है कि प्रियतम की अंतरिक्ष हालत से नाता जुड़ना शुरू हो जाता है और अभ्यासी की निगाह उसी पर जम जाती है अर्थात् प्रियतम की अंतरिक्ष हालत में वह घुस ही नहीं पड़ता, बल्कि मिलकर एक हो जाता है। अब जब अपने आपको उसमें लय कर दिया, तो ताल्लुक जिस्म को छोड़कर उसी से जुड़ता रहता है। गुरू जिस्म नहीं है, और अगर उसको जिस्म समझा जावे तो कबीर साहब की कहावत के अनुसार वह अभ्यासी गुरू-पशु है पर याज्ञवल्क्य ने अपनी स्त्री मैत्रेई से बहुत सख्त कहा है, जिसका मतलब यह है कि गुरू को गुरू की हैसियत से समझना और पूजना चाहिये। पहले मोहब्बत जिस्म से की जाती है, फिर अभ्यासी आत्मा में सम्मिलित होने लगता है। मैंने पिछले खत में यह

लिखा है कि ज़ात से नाता छूट चुका है मगर मुझसे बहुत तेज़ जुड़ गया है, जिसका मतलब यही था, जो ऊपर लिखा है। कुछन कुछ नाता जिस्म से अभ्यासी का ज़रूर रहता है, मगर उसका एहसास उस वक्त होता है, जब कि वह हालत ले लेता है। ऊपर उठने के माने यही हैं कि गुरू की Innermost condition में लय हो जावे और अगर यह बात नहीं होती तो जीवन का उद्देश्य प्राप्त ही नहीं हो सकता। तुम तो कहीं ऊपर जा रही हो, तुम हमारी इबारत को गलत कैसे समझ गई, जबकि तुम्हें हर बात का खुद एहसास है मुझे उम्मीद है कि तुम अब समझ गई होगी। अगर न समझी हो तो हम फिर समझाने की कोशिश करें। मैं 13 अप्रैल के खत का जवाब पहले दे चुका था, अब आगे जबाब 19 अप्रैल का समझो। तुमने इस खत में लिखा है कि जीवित रहने का मन कुछ नहीं होता, यानी जीवन की ओर से तबियत बेपरवाह सी रहती है आगे यह भी लिखा है कि कोई मुझे मरा कह देतो मरी हूं और ज़िन्दगी की बात चले तो परवाह नहीं। इसका मतलब तो यह है कि तुम जैसी हो, वैसी ही रहो और यह इस बात को साबित कर रहा है, कि ईश्वर ने चाहा तो आगे बढ़कर यह हालत भी आवेगी कि यह एहसास होने लगे कि न कभी तुम पैदा हुई, न मरी; यह बड़ी उम्दा हालत की शुरूआत है। मैंने किसी वक्त इस हालत के बारे में चौबे जी को लिखा है। मगर हालत तो तब है कि जब कोई भी एहसास न रहे और अभ्यासी को यह अख्तियार पैदा हो जावे कि जिस हालत में जब चाहे आ जावे। यह हालतें उसी वक्त पैदा हो सकती हैं, जब कि सिखाने वाले की अंतरिक्ष हालत में पहुंचना शुरू करें और फिर पहुंच जावे। गुरु का जिस्म अगर ख्याल किया जावे तो जिससे कि जानवर बने हैं उसी से वह भी बना है; चीज़ तो वह चेतनता है, जो इसके पीछे है। तुमने अपना उद्देश्य पूछा है; जीवन का उद्देश्य हर शख्स का यही है कि अपने आपको अपने असल में लय कर दे। अब यह उद्देश्य जिस तरह से प्राप्त हो, प्राप्त करे और यह अपनी तबियत पर है कि इस मतलब के सिद्ध होने के लिये अपनी रुचि के लिहाज़ से तरीका इख्तयार करे। अगर जंगल में रहने से यह चीज़ प्राप्त हो सकती है और उसका ख्याल इसके लिये मजबूर करता है तो वही करना चाहिए। और अगर तबियत में इतना ठहराव है कि घर में रहकर उसकी तबियत असल की तरफ़ भागती है तो वह घर ही में रहे और अगर घर में रहकर उसकी वृत्ति सन्यस्त की तरफ जाती है तो इसी हैसियत से उसको घर में रहना चाहिए। लोग ऐसे भी हैं कि घर में रहते हुए शादी वगैरह नहीं करते, इसलिये कि उनकी तबियत इसी क्रिया से उनको फलीभूत कर सकती है, तो वह भी ठीक है। इसलिए तुम कह सकती हो कि जीवन का उद्देश्य हासिल करने के लिये तुम्हारी, संस्कार द्वारा ऐसी ही वृत्ति बन गई कि यही हालत जिसमें तुम हो प्राप्ति के लिये मुनासिब थी, क्योंकि मुख्य चीज़ यही है कि जीवन का उद्देश्य जैसा कि ऊपर लिखा है हासिल करे और उसमें जो भी Sacrifice जरूरत है, करे सो तुमने तो Sacrifice अपने उद्देश्य प्राप्त करने के लिये

की है। तो इससे तो हर coscious मनुष्य को खुश होना चाहिये और तुम्हारी कद्र करनी चाहिए।

तुमने कहीं पर लिखा है कि D_1 पर कुछ सख्ती है, यह एहसास तुम्हारा सही है। ईश्वर ने चाहा, यह चीज़ भी ठीक हो जावेगी। Dr. K.C. Vardhachari का खत आया है, जिसकी नकल भेज रहा हूं। तुम भी इसको पढ़ कर समझ लेना और इसके मुताबिक जैसा मुनासिब हो, इनको फ़ायदा पहुंचाना। वह रोशनी देखना चाहते हैं। उन्होंने खत में यह भी लिखा है कि मैं उनको पैदाइश का दिन और वक्त लिखूं और जिन्दगी में खास बातों की तारीखें। मेरी जन्मपत्री चौबेजी के पास है उसमें पैदाइश का दिन यानी Date of birth देखकर मुझे लिख दो, क्योंकि मेरी माँ यहाँ नहीं हैं, वरना मैं उनसे पूछ लेता। चौबेजी को प्रणाम और तुम्हारे भाई-बहिनों को दुआ।

शुभ चिन्तक
रामचन्द्र

पत्र-संख्या : 481

परम पूज्य तथा श्रद्धेय श्री बाबूजी, लखीमपुर
सादर प्रणाम। 1.5.55

कृपा-पत्र 'आप' का मिला। पढ़ कर प्रसन्नता हुई। मैं तो यह देखती हूं कि मेरी हालत सदैव समान रहती है। खैर, जो कुछ भी हो। 'मालिक' की कृपा से मेरी जो आध्यात्मिक हालत है, वह मैं लिख रही हूं।

मैंने यह देखा है, न मैं कभी मरी थी, न पैदा हुई थी, न मरूँगी। उसका अब यह हाल है कि अब मुझे यह याद तक नहीं पड़ता कि कभी-कभी मुझ में यह थी या हो सकती है। यदि निगाह पीछे देखें, तो आशा है कि केवल उसका आनन्द भर ले सकूंगी, अपना नहीं कह सकती और केवल इसी के लिये क्या, बल्कि जो भी हालत एहसास में आ सकती है, सबका यही हाल है कि Temporary आ सकती है, क्योंकि मैं तो अपने को जल में कमल के पत्ते की तरह सूखी की सूखी पाती हूं। किन्तु एहसास उस **सूखेपन के एहसास** में भी असमर्थ ही है। निर्बोध तबियत रहती है। मेरी दशा में ऊंची, नीची, किसी का भी एहसास नहीं होता। ऐसी दशा है, जैसे मुर्दा नहलाने वाले के हाथ में रहता है, वरना जीवन में न कोई ऊंचाई की बात लगती है। जैसे चलता है, चला जाता है। बिल्कुल मामूली घरेलू सा जीवन हो गया है।

तारीख 24 को रात में बाबूजी को अपनी सूक्ष्म हालत का धब्बा साफ़ करते देखा। मैंने यह देखा कि चाहे मौत ही सामने आवे, किन्तु, अन्दर न तो कुछ भय होता है, न अंतर

की हालत में रंच मात्र भी हरक़त होती है। दशा में मस्ती नहीं, बेखुदी कह लीजिये, वह भी विस्मृत दशा में। एक कुछ यह है कि पहले मैं घर में घुस रही थी और अब घर मुझ में समाया जा रहा है क्योंकि अब मुझे घर का कुछ एहसास नहीं। न जाने क्यों मुझ पर अक्सर खुमारी की हालत आ जाती है, तभी कुछ आलस्य हो जाता है, वैसे ठीक रहती है। कुछ यह है कि मुझे तो केवल 'मालिक' की कृपा व स्नेह का Vibration ही लिये चल रहा है। वरना मुझ में अपना उछाह, उत्साह व प्रेम कभी कहीं नज़र नहीं पड़ता। यही नहीं, स्वयं अपना चलना भी एहसास में नहीं आता, परन्तु न जाने क्यों रुकी हालत तो तुरत पहिचान में आती है।

कुछ यह हो गया है कि मेरी हालत में जो एक तरह की दृढ़ता सी रहती थी, वह नहीं दिखाई पड़ती और शिथिलता भी नहीं कह सकती। हाँ, अब दृढ़ता, उत्साह, प्रेम, सब मुझे पराये से नज़र आते हैं। यानी 'मालिक' की आज्ञा पर तो, उस आज्ञा-पूर्ति के लिये दृढ़ता व उत्साह आ गया, फिर चला गया। जब 'मालिक' जो दे देवे, सोई चीज़ है, फिर कुछ नहीं। इसलिये मुझे अब ताव नहीं आता, तेज़ी नहीं आती। कोई पूजा करता है, तो मैं नहीं जानती कि मेरे Through कुछ पूजा उसकी हुई या नहीं, किन्तु वह तो कहता है – तबियत लगी। मेरे अन्दर तो न ताव है, न ठंढक। मुझे तो जब-जब 'मालिक' कुछ देर के लिये जो दे देता है, सो दे देता है। किन्तु खुमारी आकर कभी-कभी मुझ में आलस्य फैला देती है और देखती हूं कि आलस्य रहते हुए भी मुझ में तो वह कुछ नहीं आता निर्बोध तबियत रहते हुए भी मैं उससे अनभिज्ञ ही रहती हूं।

अम्मा 'आप' को आशीर्वाद कहती हैं। छोटे भाई-बहिनों को प्यार। इति :

आपकी दीन-हीन, सर्व-साधन विहीना
पुत्री – कस्तूरी

पत्र-संख्या : 482

प्रिय बेटी कस्तूरी, शाहजहाँपुर
आशीर्वाद। 4.5.55

तुम्हारा 1 मई का पत्र मिल गया। डा. वर्धाचारी का खत आया, उसकी नक़ल मैं तुम्हारे पास भेज रहा हूं। इसको पढ़ लेना, जहाँ पर समझ में न आवे, चौबेजी से समझ लेना ।इसकी नकल मैं तुम्हारे पास इसलिये भेज रहा हूं कि तुम भी उन्हें Training दे रही हो तुम्हें उनका हाल मालूम होना चाहिए, ताकि तुम उनकी कमियों को समझ लो और उनको दूर करने की कोशिश करो। मैंने तुम्हें जो सत्संगियों की फ़ेहरिस्त दी थी,

उसमें कुछ नाम और बढ़ा लो, अगर मैं उसमें भूल गया हूं– 1. S.K. Raja Gopalan, Engineer at Delhi. 2. Kumara Swami और उनकी बीबी।

तुम्हारे खतों का जवाब देना अब यों मुश्किल पड़ रहा है कि दो ही हालते गहरी होती चली जाती हैं कि इधर से तोड़ना और उधर को जोड़ना अर्थात् बिल्कुल यही हालत हो रही है कि तुम ऐसी लय होती चली जाती हो कि अपने आपको खोती चली जाती हो। तुमने अपने पत्र में लिखा है – "कस्तूरी को यदि चिट्ठी लिखवा दें, तो मैं दे दूंगी।" इसमें वह हालत छिपी हुई है कि इसकी जहाँ तक तारीफ़ की जाये थोड़ी है और यह तुम्हारे खो जाने का पूरा सबूत है।

अभ्यासी जब अपने आप को बिल्कुल लय कर डालता है, तब असली ज़िन्दगी शुरू होती है और उसी हालत में ठीक तौर से यह तीन बातें होना शुरू हो जाती हैं – 1. Divine thought, 2. Divine action और 3. Divine wisdom. इस खत में जो कुछ भी लिखा है, सब लय अवस्था की अच्छी कैफ़ियत है। अभी अन्त दूर है और फिर इसके बाद जो ज़िन्दगी आती है, वह भी लय होना शुरू होती है। अंत–गति मुझे तो यह मालूम होती है कि oneness में पहुंच कर इस चीज़ की खबर न रहे। मैं समझता हूं, इतना जवाब के लिए काफ़ी है। तुम तो ईश्वर की कृपा से बहुत काबिल लड़की हो। तुम से mission को बहुत काफ़ी फायदा पहुंचेगा।

शुभ चिन्तक
रामचन्द्र

पत्र–संख्या : 483

परम पूज्य तथा श्रद्धेय श्री बाबूजी, लखीमपुर
सादर प्रणाम। 12.5.55

'आप' का कृपा–पत्र मिला। 'मालिक' की कृपा से जो कुछ भी आत्मिक दशा है, सो लिख रही हूं। 'आप' ने कृपा करके मुझे E_1 पर खींच दिया है, इसके लिए बहुत–बहुत धन्यवाद।

अब तो कुछ यह हाल है कि यदि कस्तूरी की बात हो रहीं हों, तो सुनती रहती हूं, परन्तु यह ध्यान नहीं जाता कि यह मेरी ही बातें हो रही हैं। कुछ यह देखती हूं कि अपना अन्तर तो ऐसा है कि सारे में निकल जाऊं, घूम आऊं, परन्तु कोई फाटक नहीं पड़ता। सब open पड़ा हुआ है, चाहे कोई आवे, चाहे कोई जावे। भीतर कभी निगाह करती हूं तो ऐसा ही पाती हूं। कुछ यह है कि निगाह करती हूं Heart पर, परन्तु न जानें क्यों लगता है कि मानों Heart तो स्वयं मेरी आँख ही बन गया है। किन्तु भई, कुछ यह भी है

कि मैंने तो Heart कभी देखा ही नहीं, 'मालिक' को ही देखा है। मैंने घर कभी देखा ही नहीं। मेरी निगाह तो घर के 'मालिक' के पीछे लगी रही। अब तो यह हाल है कि घर–बार का पता नहीं, किसी का पता नहीं। बस, चूंकि 'मालिक' के पीछे भागती रही, तो उसकी याद को एक कसक या उस कसक की याद कहीं है, परन्तु वह ऐसी कि पता नहीं कहाँ है और क्यों है। यह कसक भी देखती हूं, अब अन्तर में नहीं रहती, बल्कि इसे Divine कह लीजिये, तो ही ठीक होगा और Heart भी केवल Divine House है, इसके अलावा कुछ भी नहीं। यही नहीं, बल्कि दशा भी मेरी कुछ नहीं। Soul ही मेरी कहीं नहीं। मेरे अन्दर तो Divine Condition और Divine Soul और Divine Spirit ही इस घर को यानी कस्तूरी नामक खोल को Represent कर रही है। कुछ ऐसा है कि दशा भी मेरी अपने में नहीं, बल्कि मानों कहीं धरोहर की तरह एहसास में आती है।

भाई, मेरा तो अब यह हाल है कि न तो वह **एक** ही दीखता है, न अनेक ही और न अब कोई मुझे दीखता है। परन्तु यद्यपि कोई नहीं दीखता, फिर भी न जाने कैसे, विमला को केसर या उमा को विमला तो नहीं समझ जाती। किसी की भी Individuality मुझे नहीं दिखाई पड़ती और न समानता का ही एहसास होता है, क्योंकि मुझे इन शब्दों में कोई तत्व या अर्थ ही नहीं भासता। कुछ यह है कि सब Immortal यानी ऐसे ही लगते हैं कि न कभी पैदा हुआ है कोई, न मरेगा। इसकी ओर कभी स्वप्न में भी एहसास नहीं होता और न जाने क्यों, स्वप्न, स्वप्न नहीं लगता, क्योंकि नींद, नींद नहीं मालूम पड़ती और जागरण, जागरण नहीं लगता, क्योंकि दुनिया, दुनिया नहीं लगती है, शरीर, शरीर नहीं लगता। कुछ एहसास नहीं होता। यहाँ तक कि अब हालत में **केवल** कहने की भी गुंजाइश नहीं पाती हूं।

दशा क्या लिखूं भाई, अब तो आनन्द, आनन्द नहीं है और रंज की भी दशा कह नहीं सकती। Active पना है, एहसास नहीं, और Inactive की दशा भी नहीं है। पहले मैं लिखा करती थी कि दूसरी दुनिया में रह रही हूं, परन्तू अब न जाने क्या हो गया है कि दूसरी दुनिया के भी मानों मेरे लिये कुछ अर्थ नहीं। अब मेरी कोई दुनिया नहीं है। आदमी बोलता है, गाना होता है, किन्तु आवाज़ का एहसास नहीं होता और यद्यपि बात का जवाब ज़रूर देती हूं और ग़लत नहीं देती। यही नहीं, भजन गाती हूं, परन्तु अपनी Voice स्वयं नहीं सुन पाती। बात कहती हूं, तो खुद अपने को यह एहसास, यह पता नहीं रहता कि झूठ कह रही हूं या सच और बात की Sound की गुज़र नहीं। इसलिए अपने पर अब मानो विश्वास नहीं। कोई झूठ कह दे, तो ठीक, सच कह दे तो वही लगने लगता है। किसी को पूजा कराती हूं तो, जब भी कोई यह कह देता है कि आज मन नहीं लगा। क्या आज आपने Sitting नहीं दी, तो मुझे वही लगने लगता है, परन्तु ऐसा होता नहीं। पूजा 'मालिक'

ज़रूर करवाता है। मुझे 'उसीका' भरोसा है। दूसरी दुनिया का एहसास कैसे हो, जबकि मेरी रहनी ही नही रह गई। शब्द रहनी नहीं तो उसका स्थान कहाँ।

छोटे भाई–बहिनों को प्यार। इति :

आपकी दीन–हीन, सर्व–साधन विहीना
पुत्री – कस्तूरी

पत्र–संख्या : 484

परम पूज्य तथा श्रद्धेय श्री बाबूजी, लखीमपुर
सादर प्रणाम। 14.5.55

इधर जो आत्मिक दशा मेरी समझ में आई है, सो लिख रही हूं। भाई, कुछ यह हाल है कि न जाने कैसे जब तक भजन गाती हूं या सुनती हूं तो मानो श्री 'बाबूजी' हर जगह दिखाई पड़ते हैं और उसके बाद फिर जाने क्या हो जाता है, पता नहीं। यही नहीं, बल्कि कुछ यह हाल है कि जहाँ भी, जब भी 'मालिक' को याद करती हूं, तो वहीं पाती हूं, मानों वे पहले से ही उपस्थित रहते हैं। कुछ यह देख रही हूं कि शब्द ज्यों की त्यों भी दशा के लिये उचित नहीं पाती हूं, क्योंकि ज्यों की त्यों कहने में कुछ एक Idea सा पाती हूं, जो मेरी दशा से अछूता ही रहता है। कुछ अज्ञान सी दशा रहती है और इस दशा की ओर भी निगाह में जाने क्यों स्थिरता नहीं है। कुछ यह हाल है कि 'मालिक' सब जगह है, और कहीं नहीं है। ऐसा लगता है कि मानों 'मालिक' ही याद को अपने संग लाता है और फिर ले जाता है। फिर भला वह छोड़े भी तो किस बूते पर, क्योंकि मैं तो बिल्कुल शक्तिहीन, निर्बल हूं। रग–रग शक्तिहीन है, किन्तु चलती–फिरती हूं। शरीर में कमज़ोरी नहीं है। जाने अब मानसिक शक्ति भी मुझमें कभी नहीं फटकती। बस, जब 'मालिक' अपने काम के लिये दे देता है, तब कुछ एहसास होता है। फिर जहाँ काम खतम किया और वह भी गई। एक बात कुछ यह है कि लगता है कि मैं कहीं फैल चुकी हूं। लगता है कोई दशा मुझ में हज्म हो चुकी और अब तो वह हज्म हुई दशा भी मिट चुकी है और बहुत सम्भव है कि वह किसी प्रकार की लय–अवस्था हो क्योंकि यह लय–अवस्था भी देखती हूं कि 'मालिक' अपनी याद के साथ लाता है और फिर ले जाता है। अब मेरा हाल यही है कि मेरा तो सब कुछ वही है, क्योंकि जब उसे देखती हूं, दर्शन करती हूं, तभी मेरे में सब दशा लगती है, वरना कुछ नहीं। चेतना सी ही नहीं रहती।

छोटे भाई–बहिनों को प्यार। इति :

आपकी दीन–हीन, सर्व–साधन विहीना
पुत्री – कस्तूरी

पत्र-संख्या : 485

प्रिय बेटी कस्तूरी, शाहजहाँपुर

शुभाशीर्वाद। 20.5.55

पत्र तुम्हारे 12 व 14 मई के पत्र मिल गये। मैंने पढ़ाई की वजह से केसर के ख्याल का रुख़ कुछ आध्यात्मिकता से हटा कर पढ़ाई की तरफ़ कर दिया, मगर उससे उसका कुछ नुक़सान हुआ। अब मैं नतीजा आने पर उसे ठीक कर दूंगा।

तुम्हारे खतों के जवाब देना अब बड़ा मुश्किल है क्यों कि अब लय-अवस्था और फिर उसकी ज़िन्दगी ही चली जावेगी। ज़िन्दगी के माने बक़ा के हैं, और बक़ा को तुरिया कहते हैं। मेरी समझ से हर लय-अवस्था के बाद एक तुरिया आती है और यही दौर चला जाता है। Fine और Super Fine का हिसाब रहता है। तुमने जो कुछ भी हालत लिखी है, यह सब लय की लय अवस्था बता रही है। जिन-जिन पर तुम Working कर रही हो, उन सब की आध्यात्मिक दशा अच्छी है। माता जी को प्रणाम। तुम्हारे भाई-बहनों को दुआ।

शुभ चिन्तक

रामचन्द्र

पत्र-संख्या : 486

परम पूज्य तथा श्रद्धेय श्री बाबूजी, लखीमपुर

सादर प्रणाम। 23.5.55

आपका कृपा पत्र मिला। पढ़ कर प्रसन्नता हुई। यहाँ सभी लोग कुशल पूर्वक हैं। 'मालिक' की कृपा से जो आत्मिक दशा है, सो लिख रही हूं।

भाई, कुछ यह हाल है कि कुछ दिन पहले एक दिन, दिन में लेट गई और ज़रा सी आँखे मूंद ली, तो आँखें मूंदते ही मानों सिर के पास चारों ओर एकदम से बड़ा भारी लम्बा-चौड़ा साँप लोट गया और फिर एकदम से गायब हो गया। तुरत उठकर देखा तो कुछ नहीं। यह एकाएक कुछ हो गया। अब यह क्या है, 'आप' ही जानें।

अब तो भाई, कुछ यह हाल है कि बच्चे को गोदी लिये फिरती हूं, फिर भी उसकी Touching का अनुभव नहीं होता। यही नहीं, बल्कि कुछ ऐसा लगता है कि कोई शक्ति मेरी तबियत को यहाँ (दुनिया में) खींचे रहती है, जिससे कुछ स्वप्नवत् एहसास या चेत दुनिया के कामों को करने का रहता है, क्योंकि मैंने यहाँ तक देखा है कि मान लीजिये

कि डाक्टर मुझ से कुछ हाल बतावे या कोई सत्संगी अपनी हालत बताता है तो अक्सर मैंने देखा है कि कोई शक्ति मेरी तबियत को नीचे खींचे है। उसी से मैं दूसरों की बात सुन पा रही हूं। बस यही हाल है कि – "एक कहूं तो है नहीं, दूजा कहूं तो गारि"। यही नहीं, न जाने क्या बात है कि, देखती और सुनती आई हूं कि ईश्वर सर्व–व्यापी है, सर्व अन्तर्यामिन है, परन्तु मेरा अब यह हाल है कि मुझे उसके गुणों का या विशेषता का एहसास नहीं होता और असल बात यही है कि मुझे 'वही' एहसास नहीं होता या यों कह लीजिये कि न ईश्वर है, न कोई है। यह सब मानों भ्रम था। वास्तव में कुछ है ही नहीं। न कोई बनाता है, न बिगाड़ता है। न कुछ बनता है, न बिगड़ता है। कहीं कोई शक्ति नहीं और जब कुछ है ही नहीं तो बने–बिगड़े क्या। न समय है, न आदि है, न मध्य है और न अन्त है। यह सब कुछ तो केवल भ्रम था। अब तो 'मालिक' जाने। लगता है मानों निगाह का जाला सा साफ़ हो गया है।

छोटे भाई–बहिनों को प्यार।

आपकी दीन–हीन, सर्व–साधन विहीना
पुत्री – कस्तूरी

पत्र–संख्या : 487

परम पूज्य तथा श्रद्धेय श्री बाबूजी, लखीमपुर
सादर प्रणाम।

'मालिक' की कृपा से यहाँ सब कुशल है। आशा है 'आप' भी कुशल होंगे। मेरी आत्मिक दशा, जो मेरी समझ में आई है, सो लिख रही हूं।

भाई, अब तो कल से ऐसा लगता है कि E_1 की सैर समाप्त हो गई है। अब तो 'मालिक' के हाथों है। मैंने जो निगाह का जाला साफ़ होना लिखा है, उसी के बाद ही मानों E_1 की सैर भी समाप्त हो चुकी है। न जाने अब तो कुछ यह बात हो गई है कि 'मालिक' शब्द का मानों मेरे लिये कुछ अर्थ ही नहीं रह गया है। न उसके लिये कोई जिज्ञासा होती है और न अर्थ ही उसका कुछ निकलता है। अन्तर में कोई change नहींआता। 'मालिक' शब्द में तो मानों मैं ही विलीन हो चुकी हूं, फैल चुकी हूं।

केसर 'आप' को प्रणाम कहती है। छोटे भाई–बहिनों को प्यार।

आपकी दीन–हीन, सर्व–साधन विहीना
पुत्री – कस्तूरी

पत्र-संख्या : 488

प्रिय बेटी कस्तूरी, शाहजहाँपुर

शुभाशीर्वाद। 3.6.55

तुम्हारे दो खत 23 मई और 27 मई के पहुंचे। केसर का भी खत आया। उसके System में वह डोरे तो अब नहीं हैं, मगर अभी यह ज़रूर मालूम होता है कि यहाँ पर डोरे थे। इसके माने ये हुए कि कुछ सूक्ष्म और हवाई रूप में कहने मात्र कुछ है। बाकी हाल जो कुछ उसने अपने खत में लिखा है वह सब यह बता रहा है कि धीरे-धीरे अच्छी उन्नति हो रही है। उसको विस्तार करने में क्यों समय नष्ट किया जाये, इसीलिये कि आपकी हालत खुद प्रशंसा कर रही है।

तुम्हारा यह ख्याल सही है कि तुम्हारी E_1 की सैर समाप्त हो चुकी है। मैं इसको देख चुका था, मगर न जाने क्यों हमें यह स्थान देख-देखकर और खास कर उसी पवित्रता देख-देखकर यही जी चाहता है कि अभी कुछ दिन और रखा जावे और इसीलिए मैंने अभी ऊपर नहीं चढ़ाया है। मगर, खैर अब ज़्यादा नहीं रोकूंगा। तुमने अपने खत में लिखा है कि "मालिक" शब्द के कुछ माने ही नहीं रह गये", यह ठीक है। जिस चीज़ की तलाश थी या जिस 'मालिक' की ज़रूरत थी वह तो तुम खुद होती जा रही हो। यह 'मालिक' या गुरू का दिल में Conception रहना खुद एक बन्धन है। यह तुमने लिखा है, जिसको तुम ठीक तरह से Express नहीं कर सकीं, कि "ईश्वर इत्यादि सब भ्रम था"। यह एहसास बहुत अच्छा है और यह बात बता रहा है कि महा-प्रलय, जहाँ कि सब चीज़ नाश हो जाती है, उस हालत से तुम सम्बन्धित रहने लगी हो। मगर इस असली चीज़ के आने में अभी बहुत समय लगेगा। इसलिये कि इसमें भी बहुत सी हालतें बदलती रहती हैं। इतना तो ज़रूर हो गया है कि Unity का एहसास रखते हुए बहुत कुछ खत्म हो चुका है। तुमने यह जो लिखा है कि 'मालिक' को कब पाऊंगी, और कैसे पाऊंगी, इत्यादि, जब प्रेम ज़्यादा होता है तो यह चीज़ पैदा हो जाती है और फिर करते-करते आदत भी ऐसी बन जाती है कि मंज़िल पर पहुंचने पर भी हम मंज़िल को ढूंढ़ने लगते हैं। तुम्हारे भाई-बहिनों को दुआ।

मुरीद खाल खाल होते हैं, और फ़िदाई हज़ारों में एक।

शुभ चिन्तक

रामचन्द्र

पत्र-संख्या : 489

परम पूज्य तथा श्रद्धेय श्री बाबूजी, लखीमपुर

सादर प्रणाम। 6.6.55

कृपा पत्र 'आप' का मिला। पढ़ कर प्रसन्नता हुई। 'मालिक' की कृपा से जो आत्मिक दशा है, सो लिख रही हूं।

एक दिन प्रार्थना के बाद भजन में न जाने क्या हुआ कि श्री बाबूजी तो सबको प्रत्यक्ष लग ही रहे थे, दूसरे भजन में जब यह लाइन आई कि- "जागो मन, नेकु विचार करो", तो जागो शब्द आते ही actually ऐसा लगा मानों 'श्री चरणों' में से प्रकाश निकल कर हम सब की ओर आया और अकस्मात सब के हृदयों में जैसे ईश्वरीय प्रकाश के दीपक सब एक साथ जल उठे हों। किन्तु न जाने क्यों मेरे हृदय में नहीं जला। भाई, सच तो यह है कि जितना 'मालिक' हमें प्रेम करता है, हम उसे नहीं कर पाते। मैं तो प्रेम और Devotion की परिभाषा ही भूल गई। परिभाषा ही याद करके क्या करती, जबकि मुझ पर तो न जाने क्यों इन शब्दों का कुछ असर ही नहीं पड़ता। पहले मैं देखती थी कि प्रेम या Devotion का नाम आते ही अन्दर टिघलन सी शुरू हो जाती थी, मानों हृदय के आँसू झरने लगते हों। परन्तु अब यह हाल है कि मानों जैसे अन्तर अडिग और अविचल सा बना रह गया है। भाई, अब तो ऐसा मैदान है कि जहाँ पर हद का सवाल कहाँ। न जाने क्यों बेहद का भी एहसास नहीं लगता। सब शून्य पड़ा है। अन्तर-बाहर, सब कुछ शून्य पड़ा है। न जाने क्या बात है कि दिल 'मालिक' के दर्शनों के लिये बेचैन हो हो उठता है, परन्तु न जाने क्यों, देखती हूं कि तबियत ऐसी नहीं बंध जाती कि 'आप' यहाँ आ ही जायें। लगता है, तबियत ने मुझे छोड़ दिया और 'आप' में जा मिली। कुछ ऐसी दशा है कि ऐसा कभी न था, जब मैं थी और न कभी होऊंगी। सब ओर शून्यता व्याप्त है, यही कहना पड़ता है, नहीं तो क्या कहूं, 'आप' ही जानें।

भाई, मेरा तो यह हाल है कि मानो पथराई आँखों के सामने कोई चाहे कितने बढ़िया-बढ़िया चित्र रख दे, परन्तु उसके लिये केवल अन्धकार के कुछ नहीं। जाने क्या बात है कि मै शून्य दशा लिखती हूं, परन्तु शून्यता का एहसास तो नहीं हो पाता। क्या जानूं अब क्या है। कहने मात्र के लिये ही यह शब्द ले लिया है। वैसे तो ऐसा हुआ कि मेरी तो कलई खुलकर 'मालिक' के सामने बिखर गई। अब तो यह कह लीजिये कि-

"बीती सो तो बिसर गई, आगे की सुधि नाहि।
पथराई अंखियान सों, अब तो दीखत नाहिं।।"

आज 'आप' ने कृपा कर के मुझे E_1 से निकाल कर F_1 पर कर दिया है, इसके लिए 'आप' को धन्यवाद देने के लिए मेरे पास शब्द नहीं हैं। अब तो ऐसा लगता है कि

अन्दर–बाहर सुनसान मैदान है। अब तो ऐसा लगता है कि तबियत या दशा में पढ़ने को कुछ रह ही नहीं गया। हाँ, अनुभव में जो कुछ 'मालिक' दे देवे। मेरा तो न कोई है, न मैं किसी की हूं। संसार है या नहीं, कुछ पता नहीं। अब तो मैं वहाँ चल रही हूं कि जहाँ ज्योति की सम्भावना नहीं, अन्धकार कह लें, परन्तु पता नहीं, वह भी है या नहीं।

अम्मा 'आप' को शुभाशीर्वाद कहती हैं। छोटे भाई–बहनों को प्यार।

आपकी दीन–हीन, सर्व–साधन विहीना
पुत्री – कस्तूरी

पत्र–संख्या : 490

प्रिय बेटी कस्तूरी, शाहजहाँपुर
शुभाशीर्वाद। 11.6.55

तुम्हारा पत्र 6 जून का मिला–पढ़ कर हर्ष हुआ। 'मालिक' का धन्यवाद है कि हममें से कोई पथराई आँखों से देखने वाला बन तो रहा है। असल में ब्रह्म–विद्या का दृश्य देखने के लिये पथराई हुई आँखों की ही ज़रूरत है। जब दुनिया को देखने वाली आँख फूट जाती है, तब कहीं इसके ऊपर का दृश्य सामने होता है। आँख फूटने से मेरा मतलब यह नहीं है कि सूरदास की तरह अपनी आँखें फोड़कर भक्ति में मसरुक़ हों। यह ज़रूर है कि उनके लिये उस वक़्त सम्भव है कि यही मुनासिब हो। यों बात यह ज़रूर है कि अगर यह चीज़ कहीं और जगह मिले तो यह कहना ही पड़ेगा कि यह बड़ी कायरता है और पाप भी। तुम्हारे कुल खत में राम–कहानी लिखी है जो इस बात का सबूत है कि innocence की गति है। वह ज़्यादा प्रेम होने में हो जाती है। एक बात मैं और बताता हूं कि अगर इस प्रेम में किसी के बावलापन पैदा हो जाये तो वह रूह (आत्मा) सम्बन्धी प्रेम नहीं। प्रेम तो वही है कि उसका पता न चले और अन्दर ही अन्दर सुलगता रहे। तुमने जो शून्य की अवस्था लिखी है, और यह भी लिखा है कि इस शून्यता का एहसास नहीं होता। इस हालत के लिये अगर खालीपन कहा जावे तो ज़्यादा स्पष्ट होगा।

तुम्हारा ख्याल यह ठीक था कि तुमने F_1 पर कदम रख दिया और यह कदम तुमने अपने आप रखा। मगर हालत यह थी कि एक पैर तुम्हारा E_1 और एक F_1 पर। अब कल 10 जून की रात को 11 बजकर 53 मिनट पर मैंने तुम्हारा दूसरा कदम भी F_1 पर रख दिया। अब तुम्हारा स्थान F_1 है। केसर का भी पत्र मिला। उसकी हालत भी बहुत अच्छी होती जा रही है। तुमने अपने पत्र में राम कहानी लिखी है और उसने प्रेम–कहानी। आजकल मेरी तन्दुरुस्ती बहुत अच्छी है। कोई शिकायत ज़्यादा तकलीफ़देय नहीं है।

रोटी दोनों वक्त खा रहा हूं। Dr. Sen दवा के ज़ोर से खिला देते हैं। A. Ganeshan त्रिचनापल्ली चले गये। ख्याल ऐसा है कि वे सन्तुष्ट हो गये।

अम्मा को प्रणाम, तुम्हारे भाई-बहिनों को दुआ।

शुभ चिन्तक
रामचन्द्र

पत्र-संख्या : 491

परम पूज्य तथा श्रद्धेय श्री बाबूजी, लखीमपुर
सादर प्रणाम। 12.6.55

कृपा-पत्र 'आप' का मिला। यह जानकर प्रसन्नता हुई कि 'आप' का स्वास्थ्य ठीक है। अब 'मालिक' की कृपा से, मेरी जो आत्मिक हालत है, सो लिख रही हूं।

अब तो भाई, दशा क्या है, एक ऐसा आईना कह लीजिये कि जिसमें कोई फ़ोटो नहीं दीखती। यहाँ तक कि अपना चेहरा भी नहीं दीखता। यद्यपि दिन भर चलती-फिरती हूं और उसी के सामने या उसी में, परन्तु तब भी कोई चित्र नहीं, कोई छाँह तक नहीं पड़ती उसमें। ऐसा लगता है कि यह ऐसा आईना है, जो न कभी बनाया गया है, न बिगाड़ा ही जा सकता है, ज्यों का त्यों पड़ा है।

भाई, अब तो कुछ यह हाल है कि जब सब लोग कहते हैं कि तुम खाट क्यों उठाती हो, बच्चों को गोदी क्यों लेती हो, इतना बोझ मत उठाया करो। परन्तु मैं अपनी दशा क्या बताऊं कि मुझे कभी ऐसा लगता ही नहीं कि कोई बोझा मैंने Touch तक किया है। यही नहीं, मैं तो अनबोलती ही हूं। मैं कभी बोलती थी, यह पता नहीं। कभी कुछ बोलूंगी, खबर नहीं। न मेरे पास वाणी है, न शब्द है, न भाव है, और न भावना है। मेरे लिये तो भाई, रात कभी होती नहीं और दिन कभी आता नहीं। हाल कोई है नहीं, बेहाल कहूं तो होश नहीं। कुछ ऐसा है कि हालत को शुद्ध कहूं तो एहसास में नहीं आती। हल्की कहूं तो भी कोई अर्थ नहीं निकलता। हालत बेअसर कह लें तो कह लें। तुरिया अवस्था कहूं तो मानों इससे बिल्कुल ही अनभिज्ञ हूं।

कुछ ऐसा है, न जाने क्यों, कि अक्सर देखती हूं कि खुद अपने बोलने तक का भी जैसे Shock लगता है, यद्यपि अपने शब्द मैं स्वयं ही नहीं सुन पाती। न जाने क्यों अब तो ऐसा लगता है कि मेरी आत्मा पिघल कर बिखर गई। इससे भीतर-बाहर, हर कण-कण, मानों आत्मा ही हो गई है। जब मैं यह सुनती हूं कि अपनी आत्मा को Realise करना है तो मेरे में आत्मा ही नहीं तो मैं Realise क्या करूँगी। वास्तव में Realization

शब्द मेरे लिये कोई माने ही नहीं रखता है। मेरी कुछ ऐसी अनभिज्ञ हालत हैकि पता नहीं 'मैं' क्या करूँ, क्या न करूँ। मैं 'मालिक' की हूं, यह मैं माने हुए हूं। वरना न जाने क्यों मुझे इसका अब एहसास क्यों नहीं हो पाता है।

इधर कुछ यह न जाने क्या बात है कि Heart पर मानों किसी Vibration का shock सा लगा करता है। इधर न जाने क्यों, जो भी कपड़ा पहनती हूं, उसका तार–तार और जो भी चीज़ मेरे शरीर से Touch हो जाती है, उसमें मुझे यही लगता है कि मानों श्री बाबूजी ही भर गये हैं और अपनी ओर देखती हूं तो अपने को 'श्री बाबूजी' से भी खाली पाती हूं। हृदय के कोने–कोने में घूम आती हूं परन्तु श्री बाबूजी को नही पाती हूं। अब तो यह लगता है कि बेचैनी मुझे ढूंढ़ते–ढूंढ़ते पीछे ही रह जाती है। मैं खुद अपने को नहीं जानती, तो उसे कहाँ पहुंचाऊ। यहाँ तक है कि अपनी फ़ोटो को भी पहिचान ही नहीं पाती हूं।

अम्मा 'आप' को आशीर्वाद कहती हैं और केसर प्रणाम कहती है। इति :–

आपकी दीन–हीन, सर्व–साधन विहीना
पुत्री – कस्तूरी

पत्र–संख्या : 492

परम पूज्य तथा श्रद्धेय श्री बाबूजी, लखीमपुर

सादर प्रणाम। 15.6.55

यहाँ सब कुशल हैं, आशा है, 'आप' भी सकुशल होगें। 'मालिक' की कृपा से जो कुछ आत्मिक दशा है, सो लिख रही हूं।

न जाने क्या बात है कि कल 4–5 घंटे मुझे ताऊ जी से बाबूजी की बातें सुनते बीता, परन्तु फिर भी न जाने क्यों, तबियत में बजाय खुशी के एक अजीब उदासीनता ही भरी रही। मैं देखती हूं कि भीतर तबियत में शायद इतनी गाढ़ी उदासीनता पड़ी है कि वह कभी खुश होना जानती ही नहीं। ऊपर तो कभी–कभी खुश होती रहती है, और वह भी 'मालिक' ही रखता है, परन्तु ऊपर की खुशी पृथक ही चीज़ होती है, उससे तबियत का कुछ वास्ता नहीं रहता, क्योंकि बात तो यह है कि उस खुशी की मुझे खबर ही नहीं होती। मुझे तो जाने क्या हो गया कि प्रार्थना, भजन, पूजा करना, सब एक मामूली दिनचर्या की भाँति रह गया है। अब तो भाई, आँखें पथरा गईं, इसकी भी खबर नहीं, क्योंकि इसका भी एहसास नहीं रह गया है। 'आप' के पत्र पढ़ने पर भी मानों कुछ समझ तो कभी आती ही नहीं। अब तो दशा यह है कि, शान्ति नहीं, अशान्ति नहीं, बस दिल में एक ऐसा दर्द सा रह गया है, बस उसके अनुभव में अशान्ति या बेचैनी कह लीजिये और जब वह अनुभव

न हो तो शान्ति कह लीजिये। मैं तो देख रही हूं कि मैं तो मानों एक अंधेर नगरी में घूम रही हूं, जहाँ अंधेरा कहने भर को ले लिया है। अब यह तो ऐसी नगरी है, जिसमें लगता है कि कभी कुछ था ही नहीं, किन्तु फिर भी कुछ भाँय-भाँय नहीं होता कि डर लगे और डर क्या लगे, जब अंधेर नगरी तो मेरा रूप ही हो गया है। हाँ, कुछ न होने से खालीपन में तबियत तो पग सी गयी है। उस कुछ को जब मैं Read करती हूं तो वह 'मालिक' की ऐसी सहज कृपा लगती है कि जैसे, ऐसी खाली नगरी भी मानों मेरे लिए एक Soothing way के समान है। कहानी तो मेरी समाप्त प्रायः है, क्योंकि कुछ कहने के लिये बात नहीं है।

छोटे भाई-बहिनों को प्यार। इति :

आपकी दीन-हीन, सर्व-साधन विहीना,
पुत्री - कस्तूरी

पत्र-संख्या : 493

प्रिय बेटी कस्तूरी, शाहजहाँपुर
खुश रहो 19.6.55

तुम्हारे 12 व 15 जून के पत्र मिले। मैं दोनों खतों का एक साथ जवाब दे रहा हूं। तुम्हारे खतों को देखकर एक टुकड़ा याद आया। यह याद नहीं कि किसका कहा हुआ है। मगर ख्याल यह है कि कबीर ने कहा है- "हाँ, नहीं के बीच जो है सो है"। दुनिया में दो ही सूरतें पाई जाती हैं, ठंडी और गर्म। जो चीज़ इसमें प्रधान है, समझ लो कि हम उसी शक्ल में हैं और जब इनकी प्रधानता जाती रहती है तो वही चीज़ रह जाती है, जो असलियत है। अब इसमें तो तुम्हारा पैराव शुरू है ही, मगर असल चीज़ से फिर भी भारी है। तुम्हारे खत में यह चीज़ मुझे बहुत पसन्द आई कि मेरे लिए रात कभी होती नहीं और दिन कभी आता नहीं, इसके मानी यह हैं कि एकसार हालत चल रही है। हालत तो एकसार ही कहीं जायेगी या समासम, मगर अपनी राख में गर्मी कुछ मौजूद है जिसका एहसास होना बहुत मुश्किल है। तुमने एक बात यह जो लिखी है कि हृदय पर किसी Vibration का shock सा लगा रहता है; हो सकता है कि मेरे दिल का Vibration तुम्हारे दिल में पहुंचता हो और मैं यह इसलिये कहता हूं कि मुझे कुछ अच्छी उन्नति करने के बाद यह कम्पन इस शक्ल में बराबर महसूस होता रहा है जो हमारे गुरू महाराज की तरफ़ से आता था। तुमने यह जो लिखा है कि आत्मा भी गल कर समाप्त हो गई, ऐसा लगता है, सो आत्मा अभी गल कर समाप्त नहीं हुई। यह तो आखिरी मंजिल है, मगर उसके बहुत ख़फ़ीफ ज़रूर आगे होने की उम्मीद मालूम होती है, अभी वह भी पैदा नहीं हुआ। यह भी लिखा है कि Realization शब्द के कोई अर्थ ही नहीं रह गये, और न महत्व, यह ठीक है, इसलिये कि प्रेम में डूबे हुए को यह पता नहीं रहता कि हमारे प्रेम की गरज़ क्या थी।

15 जून का जो खत है, उसका जवाब तो हो ही गया। तुम्हारी लय-अवस्था चल रही है, जो बहुत अच्छी है और बढ़ती चली जा रही है।

अम्मा व चौबे जी को प्रणाम। सब भाई-बहनों को आशीर्वाद।

शुभ चिन्तक
रामचन्द्र

पत्र-संख्या : 494

परम पूज्य तथा श्रद्धेय श्री बाबूजी, लखीमपुर
सादर प्रणाम। 21.6.55

कृपा-पत्र 'आप' का मिला। 'आप' ने जो कुछ लिखा है, वह सब तो 'आप' की इस गरीबनी पर कृपा का फल है। 'मालिक' की कृपा से जो कुछ आत्मिक दशा समझ में आई है, सो लिख रही हूं।

भाई, अब न जाने क्या बात है कि जी चाहता है कि किसी तरह से हर समय सोया ही करूँ, कभी जागूं नहीं। क्योंकि जागने से न जाने क्या परेशानी सी हो जाती है; अच्छा नहीं लगता। वह चैन नहीं मिलता कि जो सोने में आता है।

भाई, मेरा यह न जाने क्या है कि मैं यदि कोई काम भी जैसे रोटी बनाना ही हो, दो दिन ही छोड़ दूं तो फिर जब बनाने जाती हूं तो लगता है कि मानों कुछ बनाना आता ही नहीं, परन्तु 'मालिक' जाने कैसे सब ठीक बनवा देता है। कुछ यह है कि मान लीजिये एक दिन न नहाऊं, तो कभी तबियत तो चलेगी ही नहीं कि नहाऊं। अब देखती हूं कि हर Point को मैदान का फैलाव अनुमान में नहीं आ पाता उससे परे है। मेरा तो यह हाल है कि मैं नहीं जानती कि मुझे उन्नति की फिक्र है या निश्चिन्त हूं। अभी लगता है कि Point ठीक खुला नहीं। मुझे तो जाने क्या हो गया है कि आनन्द चाहे आत्मिक भी कभी आता ही नहीं और कभी गुस्सा या कोई बात बुरी भी लगती नहीं। सब कहते हैं कि ईश्वर से मिलने में बड़ा आनन्द आता है, परन्तु मुझे पता नहीं 'उसमें' भी आनन्द होगा या नहीं। मुझे तो कोई इच्छा भी तो नहीं होती। पूजा भी पता नहीं, मैं करवा पाती हूं या नहीं।

मुझे ऐसा लगा करता है कि अधिकतर सिर में माँग के बाईं ओर आगे पाँचो उंगली रखी हुई हैं, यहाँ तक कि कुछ बोझ सा प्रतीत होता है और फिर जाने क्या इतनी झनझनाहट व सरसराहट या गुदगुदी रहती है कि कुछ कहना नहीं। इसी प्रकार माँग के दाहिनी ओर होती है, परन्तु कम। बाईं ओर की हड्डी के भीतर तो कुछ तेज़ हो जाती है, जिसका असर फिर कुल सिर की नसों तक में रहता है और इससे कभी-कभी बहुत हल्का सा दर्द क्या,

कुछ लपकन सी, कुछ सिर के नसों में रहती है। आगे बहुत ही अधिक और सिर के पीछे उससे कुछ कम। सीधी माँग जहाँ खत्म होती है, वहाँ एक गड्ढा सा लगा करता है। ऐसा लगता है, वैसे तो कुल सिर की Bones व नसों में कुछ न कुछ झनझनाहट व लपकन तो हर समय रहती है और जैसे यह (I) बीच में माँग है तो इधर-उधर की जो बड़ी-बड़ी हड्डियाँ हैं, उनमें प्रकाश भरा हुआ लगा करता है और इसके कारण कुछ न कुछ प्रकाश कुल सिर की हड्डियों व नसों में रहता है, परन्तु हल्का-हल्का सा रहता है, चकाचौंध पैदा नहीं करता।

अब तो भाई, यह हाल है कि समस्त संसार की, जड़ चेतन, पशु-पक्षी, सब की एक समान ही हस्ती लगती है और दशा असली तो यह है कि उसमें से भी हस्ती और एक, इन दो शब्दों को निकाल दीजिये। मेरा तो कुछ यह हाल है कि सब कहते हैं कि care नहीं करती। परन्तु मैं किससे कहूं, क्या कहूं कि जीवन एक खेल था जो खत्म हो गया और मौत एक बहाना थी, जो मिट गई। मुझे जाने इतनी बड़ी ज़िन्दगी में कभी प्रभु की याद आई कि नहीं, कुछ पता नहीं, कभी आयेगी मालूम नहीं। यह सब 'आप' जानें, 'आप' का काम जानें, मुझे क्या।

छोटे भाई-बहिनों को प्यार। इति :

आपकी दीन-हीन, सर्व-साधन विहीना
पुत्री - कस्तूरी

पत्र-संख्या : 495

परम पूज्य तथा श्रद्धेय श्री बाबूजी, लखीमपुर
सादर प्रणाम। 29.6.55

यहाँ सब सकुशल हैं, आशा है 'आप' भी सकुशल होंगें। अपनी आत्मिक दशा, जो मेरी समझ में आई है, सो लिख रही हूं।

अब तो कुछ यह दशा है कि यदि हम हैं तो ऐसे कि जिसका कुछ cause नहीं, और प्रमाण नहीं। एक कुछ मैं यह दशा देख रही हूं कि अब ऐसी जगह है, जहाँ ईश्वर है या नहीं इसका कोई प्रमाण नहीं। यही नहीं, हर चीज़ अब निरालम्ब सी हो गई है मेरे लिये। अब तो ऐसी दशा है कि जिस पर से ईश्वर नाम का भी रंग धुल चुका है। कुछ यह दशा है कि कहाँ तो ईश्वर हर चीज़ में, बाहर-भीतर, जड़-चेतन, सब में सर्वत्र ईश्वर ही लगा करता था, परन्तु अब यह हाल है कि ईश्वर कहीं महसूस ही नहीं होता बाहर-भीतर, कहीं अनुभव नहीं होता। मैं हूं, इसका कोई cause नहीं, कोई प्रमाण नहीं।

अब तो यह हाल है कि लगता है कि जो अब तक था, सो भी खत्म हो गया। यद्यपि यह तमीज़ नहीं कि क्या था और क्या खत्म हो गया। न जाने क्या बात है कि एक छोटे से छोटे अभ्यासी की दशा मुझे अपने से ऊंची लगती है। अब तो दशा का तो यह न जाने क्या हाल है कि भूख कभी लगती नहीं और पेट कभी भरता नहीं। हर छोटे से छोटे अभ्यासी में प्रेम पाती हूं, परन्तु स्वयं उससे अछूती ही रहती हूं। कुछ यह दशा देखती हूं कि चाहे कितना काम, चाहे कितने लोग आ जायें, चाहे चौबीस घण्टे में एक सेकण्ड भी फ़ुर्सत मिले या न मिले, परन्तु Disturbance नहीं होता। लगता है, तबियत के लिये Disturbance शब्द ही बेकार हो गया है। कभी सोचती हूं कि कुछ करती नहीं, तो Disturbance काहे में हो।

केसर 'आप' को प्रणाम कहती है। छोटे भाई–बहिनों को प्यार। इति –

आपकी दीन–हीन, सर्व–साधन विहीना
पुत्री – कस्तूरी

पत्र–संख्या : 496

प्रिय बेटी कस्तूरी, शाहजहाँपुर
खुश रहो। 3.7.55

तुम्हारे 21 जून और 29 जून के पत्र प्राप्त हुए। मैं F_1 की सैर अभी पूरी तौर से न करा सका। कुछ–कुछ खयाल ज़रूर किया है, जिसका फल यह हुआ कि वहाँ पर शक्ति फैलने लगी है; अब सैर भी जल्दी शुरू हो जावेगी। तुम्हारे पत्रों का जवाब देना बड़ा मुश्किल हो गया है, इसलिये कि अब अच्छी लय–अवस्था और फिर उसकी तुरिया ही आती रहती है, और वह कुछ ऐसी चीज़ है कि जिसकी व्याख्या करना शब्दों में बड़ा मुश्किल है। सिर के अन्दर बहुत से स्थान हैं, और लपकन और सरसराहट यह बताती है कि वह जागृति हालत में आ रहे हैं। सिर के बाईं ओर जो पाँच उंगली मालूम होती हैं, अब समझ में आ गया कि वह क्या चीज़ है। यहाँ पर एक ताकत है, जिसमें कौंधे की सी लपक है। वह जब तक कि काबू में नहीं आ जाती, तब तक गुरू महाराज का हाथ उस पर रहता है। इसलिये कि उसमें काबू में आने से पहले ढील दे देना अपने आपको भी नुकसान कर जाती है। भनमनाहट का रहना यह बताता है कि वहाँ की सोई हुई चीज़ अब जग पड़ी है। तुमने गड्ढे के बारे में जो लिखा है, उसका जवाब किसी खत में मैं दे चुका हूं। सिर के पीछे जो कम्पन मालूम होता है, वह ही centre Region है। हमारे यहाँ कुछ Reflection करीब–करीब हर जगह पड़ जाता है। सबको एक हस्ती हो जाना, यह Reality में ज़्यादा पैर जाना है। तुमने एक अजीब बात पूछी है कि जाने 'मालिक' की कभी याद आई है या नहीं। गुमे हुए की याद भी याद करने वाले को गुम कर देती है। लापता का

पता चलाते–चलाते भी इन्सान खुद लापता हो जाता है और यह खुशखबरी इस बात की है कि Infinite के अंदाज़ की तैयारियाँ हो रही हैं और फिर यह सवाल तुमने मुझसे पूछा, यह तो ऐसी बात हुई कि जैसे कोई जन्म के अन्धे से रोशनी की व्याख्या पूछे। तुमने लिखा है कि "मैं हूँ" इसका न कोई cause है, न प्रमाण, यह ठीक है, मगर अभी तुम हो ज़रूर, cause और प्रमाण चाहे समझ में आवे या न आवे। यह और बात है कि होने का भाव बहुत कुछ मिट चुका है। यह मिटने की हालत है। दर्शन तो वही करेगा, जो जीवन–दशा में है और जो मिटी हुई दशा में है, यानी मुर्दा ऐसी हालत में है, उसे तो रंग धुला ही मालूम पड़ेगा और फिर खुद मिट गये तो फिर सब कुछ मिटा ही हुआ मालूम होता है। "आप डूबें, तो जग डूबा"।

श्री विश्वनाथन महायोग महर्षि रमण का कर रहे हैं, साथ–साथ अपने यहाँ का भी अभ्यास कर रहे हैं। उनके लिये भी कुछ न कुछ किये जाता हूं, किन्तु उनमें co-operation की बहुत कमी है। बाकी सब तरक्की कर रहे हैं। 5 जुलाई को डा. वर्धाचारी का खत आ गया, जिसकी नकल उनकी हालत समझने के लिये तुम्हें भेजी जा रही है। खत में Commitment नहीं होता और बड़ा Guarded होता है। इति–

शुभ चिन्तक
रामचन्द्र

कस्तूरी का नोट : श्री बाबूजी ने बताया कि जिस समय F_1 पर पैर रखा, उसी समय Fourth circle में पैर शुरू हुआ।

पत्र–संख्या : 497

परम पूज्य तथा श्रद्धेय श्री बाबूजी, लखीमपुर
सादर प्रणाम। 2.7.55

कृपा–पत्र 'आप' का मिला। पढ़कर प्रसन्नता हुई। 'मालिक' की कृपा से जो कुछ भी आत्मिक दशा है, सो लिख रही हूं।

अब तो कुछ ऐसी दशा है कि आँधी, तूफ़ान तो दूर रहे, कभी दशा के लिये मानों मन्द बयार भी नहीं डोलती। आत्मिक दशा या दुनियाबी दशा एक ही हो गई है। मैं स्वयं यह नहीं समझ पाती कि 'मालिक' को यह आत्मिक दशा लिख रही हूं या क्या, क्यों कि मेरा तो यह हाल है, कि न सांसारिक कहते बनता है और न आत्मिक। यह देखती हूं कि एक Unchangeable condition ही चल रही है। अब तो यह हाल है कि तबियत घर से न भागने को चाहती है और न घर में ही लगती है। इतनी खाली दशा है कि जिसमें सूनेपन

की गुज़र नहीं, क्योंकि ऐसा लगता है कि बिल्कुल खालिस खाली मैदान में ही मैं फैली हुई हूं, बल्कि मेरा तो स्वयं रूप ही ऐसा खाली बन गया है कि जिसमें अक्सर खुद अपने से ही डर सा लगने लगता है। बोलने को तो न जाने क्यों कभी भी क़तई तबियत ही नहीं चाहती है। यद्यपि ध्यान तो कभी करती ही नहीं और देखती हूं कि ऐसी दशा है कि न कभी करवाती हूं। पता नहीं भाई, कि मेरे यहाँ पूजा करने आने वाले लोग कहीं धोखा तो नहीं खा रहे हैं। मुझे कुछ पता नहीं। भाई, दशा क्या है, खुद अपना नमूना है, मैं क्या लिखूं और क्या कहूं।

अम्मा 'आप' को आशीर्वाद कहती हैंऔर केसर प्रणाम।

आपकी दीन–हीन, सर्व–साधन विहीना
पुत्री – कस्तूरी

पत्र–संख्या : 498

परम पूज्य तथा श्रद्धेय श्री बाबूजी, लखीमपुर
सादर प्रणाम। 9.7.55

पूज्य मास्टर साहब के पत्र से आपका समाचार मालूम हुआ। 'आप' स्वस्थ हैं, जान कर प्रसन्नता हुई। 'मालिक' की कृपा से जो कुछ भी आत्मिक दशा है, सो लिख रही हूं।

अब तो दशा तक में भी लगता है, फैलाव तक नहीं हो पाता, क्योंकि देखती हूं कि मुझे तो अब फैलाव तक की ताकत नहीं रही और यह शायद इसलिये है कि देखती हूं कि मुझ में तो दशा को मनन कर सकने तक की ताब और ताकत नहीं रही। अब तक यह दो चीज़े सामने चाहे धुंधली सी ही रहती थीं, परन्तु अब तो लगता है कि बिल्कुल ही सीधी,सादी बिल्कुल स्थिर सी दशा रहती है। स्थिरता का तो यह हाल है, भीतर–बाहर का कण–कण मानों स्थिरता का स्वरूप ही हो गया है, अविचल स्वरूप है। मानों ज्यों का त्यों रह गया है। मानों केवल मेरे लिये तो केवल जड़ ही जड़ रह गया है। क्योंकि देखती हूं कि पेड़–पौधे, ज़मीन–आसमान की तरह ही सब जड़वत हो गया है। मेरा तो ज़र्रा–ज़र्रा भीतर तो भीतर, शरीर तक लगता है कि सब जड़ हो गया है। यहाँ तक कि मुझे धुकधुकी तक का पता नहीं चलता है। कुछ जाने क्या बात है कि कोई चाहे 'मालिक' की चर्चा इस तरह करे कि जिसमें ज़िन्दादिली पैदा हो, परन्तु मैं तो भाई बेअसर हूं। यद्यपि मेरी निगाह में यह ख्याल, बात आने की भी गुंजाइश नहीं रही, फिर भी मुझे एक बार घर में कुछ चर्चा के समय सबने ऐसा ही बताया, सोई लिख रही हूं, क्योंकि मेरा तो यह हाल है कि बेअसर कहने पर भी कोई असर मुझ पर नहीं होता। मुझे तो सब असर ठीक दीखते हैं। कुछ न जाने क्या बात है कि जब कोई निर्गुण, निराकार की चर्चा चलाता है,

तो मुझे दीखता है कि मानों उस निर्गुण, निराकार ने मुझे अपने में समेट कर मुझे उसी रूप में कर दिया है। किन्तु यदि चर्चा किसी की न चले तो मुझे कुछ नहीं लगता।

कल विद्यालय से आ रही थी तो, एकाएक सिर के पीछे, जो 'आप' ने Centre Region का Point बताया है, उस Point के बिल्कुल सीध में सीधी तरफ Point से तीन अंगुल हटकर, लगा कि मानों कोई नस या कोई चीज़ एकदम से टूट गई और इतने ज़ोर से टूटी कि पाँच मिनट तक उस जगह को दबाये खड़ी रही। दर्द वगैरह कुछ नहीं था। उसी जगह पर आज बहुत हल्का सा फिर वैसे ही हुआ। अब कुछ नहीं है। इति :–

आपकी दीन–हीन, सर्व–साधन विहीना
पुत्री – कस्तूरी

पत्र–संख्या : 499

प्रिय बेटी कस्तूरी, शाहजहाँपुर
खुश रहो। 14.7.55

तुम्हारा खत 9.7.55 का मिल गया, जिसमें केसर ने भी अपना हाल लिखा है। Logic और Psychology की जो किताबें प्रह्लाद के पास हैं, उसमें से Psychology की किताब मैं पढ़ूंगा। केसर का हाल बहुत अच्छा चल रहा है, मगर System में थोड़ी सी गड़बड़ी अभी ज़रूर है, वह रफ़्ता–रफ़्ता ठीक हो जायेगी। केसर के खत से मालूम हुआ कि तुम्हारी तबियत खराब है। तुमने क्या Energy ब्रह्माण्ड मण्डल से खींचना बन्द कर दी है। अगर बन्द कर दी हो तो यह दोनों तरीके फिर शुरू कर दो। एक हफ़्ते बाद अपनी तन्दुरुस्ती का हाल लिखना। ईश्वर ने चाहा तुम हफ़्ते भर में काफ़ी अच्छी हो जाओगी।

तुम्हें मेरे काम की इतनी फ़िक्र है कि दिल से दुआ निकलती है। तुम तनख्वाह के लिये रुपये की फ़िक्र मत करो। ईश्वर को देना होगा तो अपने आप देगा और मैं समझता हूं कि इसके लिये किसी से कहने की ज़रूरत नहीं। इसलिये कि जब उसकी तरफ़ से प्रेरणा होगी तो लोगों के दिलों में खुद–ब–खुद ख्याल पैदा होगा।

"मंगबो भलो न बाप से, जो बिधना राखे लाज"।

मैं तो भाई तुम लोगों के लिए ईश्वर से अभी तक सिर्फ आध्यात्मिकता ही माँगता हूं और उसकी कीमत सिर्फ यही हो सकती है कि वह असल मालिक को मालिक समझे और उसकी मौज में राज़ी रहे। तुमने अपने सत्संग में एक बात ग़ौर नहीं की होगी वह यह

कि खुदगर्ज़ों की तादाद ज़्यादा है यही वजह है कि वे कुछ sacrifice करना नहीं चाहते। यह भी ईश्वर ने चाहा दूर हो जायेगी।

तुमने यह जो लिखा है कि फैलाव कभी होता ही नहीं। इसकी वजह यह है कि फैलाव हो चुका है और वह इस कदर स्वाभाविक हो गया कि उसका पता नहीं चलता। ज़मीन और आसमान की तरह तुमने जो जड़वत् होना लिखा है, इसके अर्थ यह हैं कि कुल विचार और ख्याल उस तरफ खिंच चुके हैं, इसीलिये जिस्म का भान भी अब नहीं है। तुम्हें जब ख्याल आ जाया करे तो कुछ गहरी साँस ले लिया करो, ताकि जिस्म में ऑक्सीजन काफ़ी पहुंचता रहे। मेरा तो यहाँ तक हाल है कि जाने कितने अर्से तक मैं साँस लेता ही नहीं हूं। जब महीने दो महीने में ख्याल आ जाता है तो कुछ गहरी साँस ले लिया करता हूं। अब मैं भी इसका ख्याल रखूंगा।

तुमने जो Central Region के करीब नस का टूटना लिखा है, मुझे भी कहीं पर यह तड़खन अभ्यास के वक्त महसूस हुआ था। इसे मानी यह है कि वहाँ की शक्ति जाग गई। दाहिने पैर के अंगूठे की नोंक पर जो जलन लिखी है, वह जलन नहीं है, बल्कि उभार की गर्मी है। वहाँ का Foreign Matter साफ़ हो जाने से यह बात जाती रहेगी। इसका ताल्लुक Central Region से बहुत दूर से है। अंगूठे की जो बीचो-बीच की नस है, यह बिल्कुल central Region से ताल्लुक रखती है। मैंने Training की कुछ बातें जो कहीं पर लिखी हैं, उसमें यह भी लिखा है कि अंगूठे के बीचोबीच में ध्यान करने से central Region खुलता है और इसके बारे में बहुत सी बातें लिखी हैं। बड़ी खुशी की बात है Third World Religion की conference जो जापान में हुई थी, उसमें तुम्हारे Mission का लेख निकल गया।

एक बात तुम्हारे समझने और सोचने के लिये और लिखता हूं, जिससे यह भी तुम्हारे खत के साथ-साथ छापी जानी चाहिए और यह उन लोगों के लिये है, जो जाति का अभिमान (कि जिससे कोई फ़ायदा नहीं, हानि ही हानि है) लिये बैठे हैं। अगर ब्रह्म को अपने ब्रह्म होने का एहसास हो जाये तो वह अपनी हैसियत से गिर जावे और यहाँ तो लोग ब्रह्म-गति में भी नहीं होते और दूसरों को लट्ठ के ज़ोर से अपने आपको ब्रह्म मनवाना चाहते हैं। ऐसे लोग ब्रह्म से दूर ही होते चले जाते हैं और यह चीज़ मनुष्य-सभ्यता के विरुद्ध भी है। मेरा कोई हर्ज नहीं, ब्रह्म कोई बना करे, मगर जब वह अपने गिराव की सूरत पैदा कर लेता है तो अफ़सोस ज़रूर होता है, मगर मजबूरी है। जिसकी किस्मत में ब्रह्म-विद्या न बदी हो और ईश्वर अपनी तरफ़ न खींचना चाहता हो, उसकी यही दशा

होती है। जिसके Group में यह बात पैदा हो गई वह पत्थर बन गया, इन्सान नहीं रहा और उसने एक हवा फैला दी, जिससे दूसरों को भी नुकसान हुआ।

अम्मा को प्रणाम व सब भाई–बहिनों को आशीर्वाद।

शुभ चिन्तक
रामचन्द्र

पत्र–संख्या : 500

परम पूज्य तथा श्रद्धेय श्री बाबूजी, लखीमपुर
सादर प्रणाम। 19.7.55

कृपा–पत्र 'आप' का मिला। समाचार मालूम हुए। मेरा स्वास्थ्य अब ठीक है। 'मालिक' की कृपा से जो कुछ भी आत्मिक दशा है, सो लिख रही हूं।

भाई, मैं देखती हूं कि न जाने क्या बात है कि Point A_1 से F_1 तक घूम आई, परन्तु ऐसा लगता है कि मानों कहीं कुछ अच्छा ही नहीं लगा। बस जो 'आप' मुझे अच्छे लगते हैं, वैसा अच्छा मुझे कहीं लगता ही नहीं। एक कुछ यह देख रही हूं कि हर हालत में, चाहे तकलीफ़ हो या आराम, चाहे कोई आत्मिक दशा हो या न हो, अपने अन्दर एक Everlasting आनन्द का Vibration सा बना ही रहता है। उसे सोते, जागते हर दशा में अपने अन्दर पाती हूं। मैं उसे एहसास करती हूं, परन्तु दशा कुछ यह रहती है कि लगता है, मैं तो लापता ही हो रही हूं, क्योंकि यह Everlasting आनन्द का Vibration रहते हुए भी मुझे यह पता नहीं रहता कि यह मेरे अन्दर है या कहाँ है। हाँ, इसका एहसास शारीरिक तकलीफ़, अधिक होने पर कुछ आता है, नहीं तो मैं तो इतनी खाली हूं कि खाली की खाली रहती हूं। दशाएँ बदलती हैं, गुजर जाती हैं, परन्तु मैं ज्यों की त्यों बनी रहती हूं। इसीलिए किसी बात का एहसास अपने अन्दर तो कभी पाती ही नहीं हूं। यह आनन्द भीतर–बाहर, हर जगह फैला दिखाई पड़ता है। तब लगता है, जैसे ईश्वरीय आनन्द का कोष फैला पड़ा है, आँखें या निगाह, लापता हैं। कुछ ऐसा है कि हर जगह, हर समय न जाने क्या कुछ कम्पन सा पाती हूं और वह इस तरह का, कि जैसे लपकन सी रहती है। यद्यपि मेरी दशा का उससे कुछ सम्बन्ध नहीं है, परन्तु न जाने क्यों मुझे ऐसा दिखाई पड़ता है।

कुछ यह हाल है कि आँखे मूंदे बैठी रहती हूं, परन्तु दशा का अन्दाज़ नहीं लगा पाती। दशा क्या है, एक ऐसी शून्य भीति है कि जिस पर चितेरे अनेकों चित्र बनाकर बिगाड़ा करते हैं, परन्तु उस शून्य भीति को क्या पता। बस मेरा तो यही हाल है, पता

नहीं क्या दशा है। भाई, अब मैं दशा थोड़े ही लिखती हूं, बल्कि केवल Hint भर समझ लीजिये। दशा मेरी क्या, बल्कि देखती हूं सब कुछ, कुछ नहीं हो गया। या यों कह लीजिये कि सब कुछ ज्यों का त्यों है, परन्तु मेरी समझ व निगाह ही जाती रही। परन्तु मैं क्या कहूं मुझे कुछ पता नहीं। लगता है शून्य या खाली हालत में मैं घुसकर अदृश्य हो गई, समा गई। अब तो जिधर देखती हूं, सब शून्य या खाली पाती हूं। न जाने क्या बात है कि खाली कह देने से भी दशा की शोभा नहीं बनती। अब तो 'आप' ही जानें, 'आप' का काम जानें।

केसर 'आप' को प्रणाम कहती है। छोटे भाई-बहिनों को प्यार।

आपकी दीन-हीन, सर्व-साधन विहीना
पुत्री - कस्तूरी